Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

विदेशी ब्राह्मणों की मातृभूमी

यूरेशिया

(ब्राह्मण विदेशीं है इस नए विश्व स्तरीय डी.एन.ए. रिपोर्ट का अंतिम फैसला !)

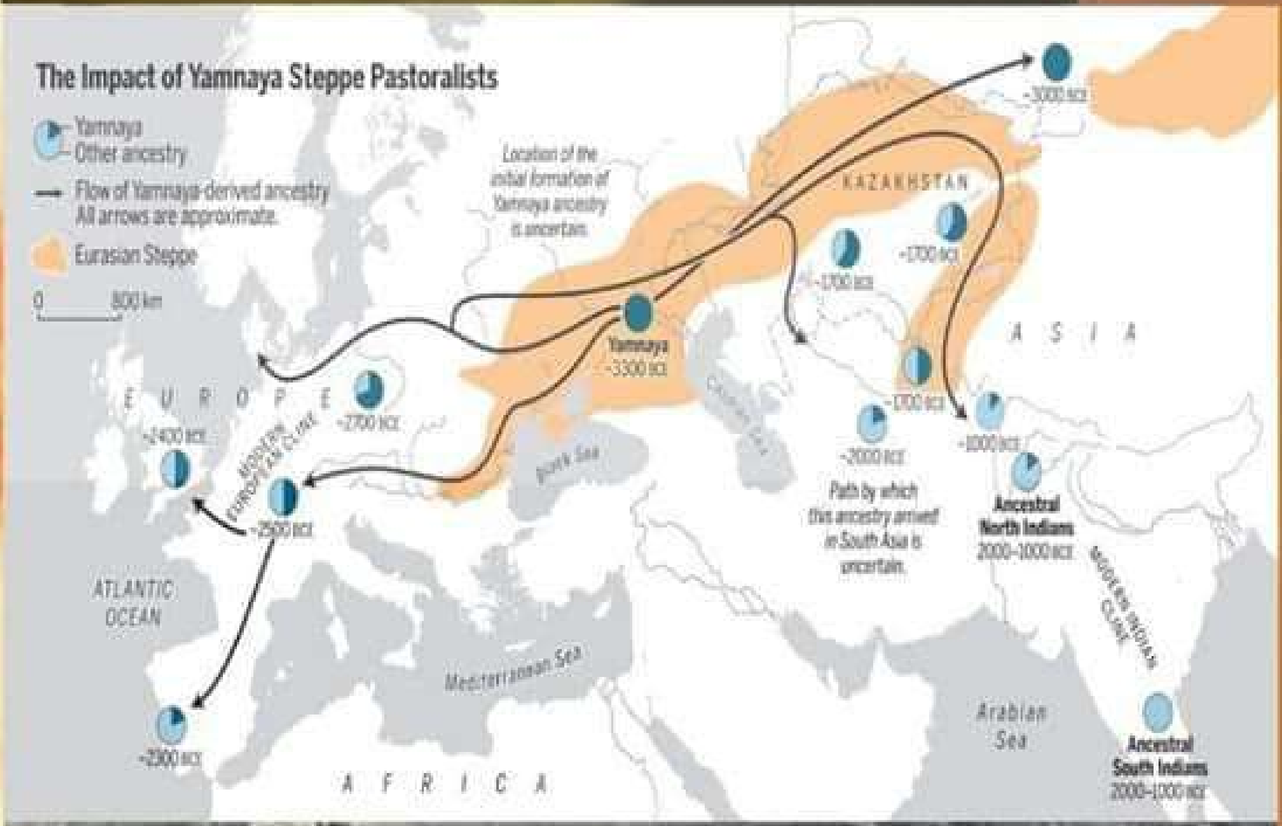

✲ प्रस्तावना ✲

मा. वामन मेश्राम

(राष्ट्रीय अध्यक्ष, बामसेफ, नई दिल्ली)

✲ लेखन एवम् संपादन ✲

प्रो. विलास खरात

(डायरेक्टर, डा० बाबासाहेब आम्बेडकर रिसर्च सेंटर, नई दिल्ली)

प्रकाशक : डा० बाबासाहेब आम्बेडकर रिसर्च सेंटर, नई दिल्ली

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

विदेशी ब्राह्मणों की मातृभूमि

युरेशिया

(ब्राह्मण विदेशी है यह नये वैश्विक डीएनए अनुसंधान का अन्तिम फैसला!)

* लेखन तथा संपादन *

प्रो. विलास खरात

(डायरेक्टर, डॉ. बाबासाहब आंबेडकर रिसर्च सेंटर)

* प्रकाशक *

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर रिसर्च सेंटर

नई दिल्ली - ११०००५

Email - vilaskharat1818@gmail.com

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

विदेशी ब्राह्मणों की मातृभूमि

युरेशिया

(ब्राह्मण विदेशी है यह नये वैश्विक
डीएनए अनुसंधान का अन्तिम फैसला!)

लेखन तथा अनुवाद : **प्रो. विलास खरात**
(डायरेक्टर, डॉ. बाबासाहब आंबेडकर रिसर्च सेंटर, नई दिल्ली)

प्रथम आवृत्ती : ७ मई, २०२०

प्रकाशक : डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर रिसर्च सेंटर
मकान नं. ११२६३, जी.एफ. केलाकोठी
डोरीवालान, गौशाला रोड, रोहतक रोड के पास
नई दिल्ली - ११० ००५

© **संपूर्ण अधिकार प्रकाशक के अधीन**
(खाजगी वितरणासाठी)

टाइप सेटिंग : डॉ. बाबासाहब आंबेडकर रिसर्च सेंटर, नई दिल्ली
मुखपृष्ठ : प्रसाद जाधव, कोल्हापुर
मुद्रक : छत्रपती प्रिंटिंग प्रेस,
सर्व्हे नं. ५,४/३११, केशव नगर, मुंढवा
पुणे - ४११०३६ (०२० २६८१२९३२)

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

– समर्पण –

"मूलनिवासी राष्ट्रवाद के जनक महान सिंधु सभ्यता के प्रवर्तक–पणि अर्थात नाग लोग तथा इन नाग लोगों के महान नेता, महापुरुष तथागत बुद्ध, सम्राट अशोक, फुले–शाहू–आंबेडकर

और

पुरातत्व तथा डीएनए अनुसंधान का निष्पक्षता से अध्ययन करनेवाले अनुसंधानकर्त्ता

सर मॉर्टिमर व्हिलर,

डॉ. मायकेल बामशाद

और

डेव्हिड रिच इन्हें समर्पित"

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ क्र.
	प्रस्तावना (मा. वामन मेश्राम)	८
१.	आक्रमणकारी विदेशी ब्राह्मणों ने हिंसा के जरिये सिंधु सभ्यता नष्ट की - सर मॉर्टिमर व्हिलर	१३
२.	इतिहास में बेहद ज़ालिम, बेरहम लोगों की जानकारी डीएनए संशोधन के जरिये उजागर हुई। - कालिन बारास, ३० मार्च, २०१९	२०
३.	भारत में आर्यों को स्थालांतर नये अनुसंधान से पुष्टि! -टोनी जोसेफ	३३
४.	राखीगढ़ी डीएनए रिपोर्ट के बारे में ब्राह्मण बनिया मीडियाने झूठी खबरें क्यों फैलाई? - प्रो. विलास खरात	४२
५.	डीएनए अनुसंधान के जरिये भारतीय अनुवांशिकता की गुत्थी सुलझी - डॉ. प्रताप चाटसे	५७
६.	डीएनए अनुसंधान की सहायता से खोज, मूलनिवासियों की - संचित धनवे	६९
७.	मूलनिवासी राष्ट्रवाद से ही देश में खुशहाली होगी! -प्रो. विलास खरात	१११
८.	मूलनिवासी राष्ट्रवाद से ही विश्व का कल्याण होगा! -डॉ. प्रताप चाटसे	१४६
	उपसंहार ब्राह्मण आखिर विदेशी !	१५२

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

भाग – II
परिशिष्ट

क्र.	विषय	पृष्ठ क्र.
	(अ) मूल डीएनए रिपोर्ट	१६१
१.	Cell जर्नल की रिपोर्ट हडप्पा सभ्यता की अनुवांशिकता में स्टेप प्रदेश के घुमन्तु या ईरानी खेतिहरों के गुणसुत्र का अभाव (७ सितम्बर २०१९ के Cell डीएनए रिपोर्ट का हिन्दी अनुवाद)	
२)	दि. ३१ मार्च, २०१८ के ९२ साइंटिस्ट की डीएनए रिपोर्टः– दक्षिण और मध्य एशिया की अनुवांशिक संरचना	१९७
	(ब) अखबारों की खबरें	
१)	दि. २१ मई, २००१ द टाईम्स ऑफ इंडिया, 'ऊंचे वर्ण के भारतीय पुरुष युरोपियन वंश के, डीएनए रिसर्च का दावा'	२३७
२)	आर्य को भारतीय साबित करने में अनुसंधानकर्त्ता को कामयाबी – एबीपी माझा दि. ३ सितम्बर, २०१९	२४०
३)	दि. ७ सितम्बर, २०१९ – द टाईम्स ऑफ इंडिया भारत पर आर्यों का आक्रमण हुआ ही नहीं। ऐसा सिंधु संस्कृति की आनुवंशिक अनुसंधान ने कहा	२४१
४)	दि. ७ सितम्बर, २०१९ – द हिंदू – 'सिंधु सभ्यता के मूलनिवासियों में अलग ही अनुवांशिक वंशावल (कुल) थी।' जिमोम रिपोर्ट	

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

दर्शाता है कि, सिंधु सभ्यता में घुमन्तु लोगों की
या इरानी कृषकों के गुणसूत्र मौजूद नहीं। २४३

५) दि. ७ सितम्बर, २०१९ – राजस्थान पत्रिका
'बड़ा खुलासा – हरियाणा के राखीगढ़ी में मिले
हजार साल पुराने अवशेष का अध्ययन –
आर्यों ने भारत पर नहीं किया था आक्रमण,
वे यही के मूलनिवासी थे!' २४६

६) दि. १५ सितम्बर, २०१९ – राजस्थान पत्रिका,
बाडमेर संस्करण. 'इतिहास का वर्तमान : साईन्स जर्नल में
प्रकाशित हुआ ११७ वैज्ञानिकों का अध्ययन,
हाल ही का दावा किया गया था कि आर्य
भारत के रहनेवाले थे।' 'नये डीएनए खोज से
२०१८ के खोज की फिर पुष्टी, आर्य बाहर से ही
भारत में आये थे।' २४७

७) दि. ७ सितम्बर, २०१९ – दै. जागरण,
'विदेशी नहीं, भारत के मूलनिवासी थे आर्य।' २४८

८) दि. ७ सितम्बर – २०१९ – दैनिक लोकमत
'डेक्कन कॉलेज का संशोधन'– डीएनए द्वारा दावा–
'आर्य मूल भारतीय!' २५०

९) दि. ४ अक्तुबर २०१९ दै. अमर उजाला
'भारत में मूलनिवासी का प्रश्न खड़ा करना
विदेशियों की साजिश।' २५१

१०) १ अक्तुबर, २०१९ दै. भास्कर
(अकोला, महाराष्ट्र, संस्करण) संघ प्रमुख
मोहन भागवतने कहा –''भारत हिंदू राष्ट्र है,
इस सच को कोई नहीं बदल सकता।'' २५२

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

११) दि. ११ अक्तुबर, २०१९ दै. लोकमत,
(जालना डॉ. वसंत शिंदे, अंतरराष्ट्रीय जर्नल में
संशोधन प्रकाशित; भारतीय है इसका ठोस सबूत
''हडप्पा संस्कृति के आर्यो का थ्री डी चेहरा तैयार'' २५३

१२) दि. ११ अक्तुबर, २०१९ दै. भास्कर, भोपाल संस्करण
'पहली बार वैज्ञानिकों ने सिंधु घाटी सभ्यता के
लोगों के चेहरे को आकार दिया; वे कैसे दिखते थे
यह अनुमान लगाना आसान।' २५५

१३) पांचजन्य - आरएसएस का मुखपत्र
दि. २० अक्तुबर, २०१९ डॉ. वसंत शिंदे की
पांचजन्य ने ली हुई मुलाकात। २५७

१४) मीडिया में झूठी खबरें फैलाने के लिए
डॉ. वसंत शिंदे को भारत मुक्ती मोर्चा द्वारा
कानूनी नोटिस २६३

****

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

प्रस्तावना

विदेशी ब्राह्मणों की मातृभूमि युरेशिया

विदेशी ब्राह्मणों की मातृभूमि 'युरेशिया' (ब्राह्मण विदेशी हैं यह नये वैश्विक डीएनए अनुसंधान का अन्तिम फैसला) इस किताब की प्रस्तावना लिखने के लिए मुझे विलास खरात ने अनुरोध किया। लॉकडाउन की वजह से मैं घर में बैठा हूँ, इसलिए मेरे पास लिखने के लिए समय है। इस बात को ध्यान में रखते हुऐ विलास खरात के अनुरोध को स्वीकार किया।

डीएनए रिपोर्ट रिपोर्ट–२००१ के पहले की स्थिति :

डीएनए रिपोर्ट आने से पहले भारत में ब्राह्मण विदेशी हैं या नहीं हैं यह विवाद उन्होंने ही निर्माण किया था। क्योंकि, ब्राह्मण इतिहास विषय में, पुरातत्व में, इंडोलॉजी में, भाषाशास्त्र में बड़े पैमाने पर दखल रखते थे। इस वजह से इन विषयों में भ्रांतियां निर्माण करने में कामयाब होते रहे हैं और यह भ्रांतियाँ उन्होंने जानबूझकर निर्माण की हुई थी। यह भ्रांति निर्माण करना इसलिए जरुरी था कि अंग्रेजों को विदेशी घोषित करके अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए मजबूर किया था और इसके लिए उन्होंने १९४२ के भारत छोड़ो आंदोलन का सहारा लिया था। इसलिए उन्हें डर है कि जिस विदेशी होने के आधार पर हमने अंग्रेजों को भारत से भगाया था, उसी सिद्धान्त के आधार पर हमें भी भारत से भगाया जा सकता है। इस डर की वजह से उन्होंने बड़े पैमाने पर भ्रांतिया फैलाई थी। इन भ्रांतियों से उन्हें काफी समय तक फायदा भी हुआ।

फिर डीएनए रिपोर्ट आई :

२००१ में माईकल बामशाद द्वारा डीएनए रिपोर्ट तैयार की गई। डीएनए प्रत्येक व्यक्ति के शरीर में होता है। इसके आधार पर हजारों साल पहले के आपके पुरखे कौन थे, इसका पता किया जा सकता है। माइकल बामशाद ने सारी दुनिया के लोगों का डीएनए इकट्ठा किया और ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों का डीएनए

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

सारी दुनिया से मिलाया तो पता चला कि ब्राह्मणों का डीएनए युरेशिया के लोगों से मिलता है और इससे सिद्ध हुआ कि ब्राह्मण भारत के मूलनिवासी नहीं है। वे लोग युरेशिया में रहनेवाले विदेशी लोग हैं। युरेशिया, भौगोलिक क्षेत्र के तौर पर कालासागर के पास बसा हुआ प्रदेश है और इस तरह से ब्राह्मण विदेशी है यह सिद्ध हो गया।

ब्राह्मणों पर परिणाम :

इस रिपोर्ट का भारत में ब्राह्मणों पर बहुत गंभीर परिणाम हुआ। २००४ में एक गैर-ब्राह्मण सरदार को जिसका नाम मनमोहन सिंह था, उसको प्रधानमंत्री बनाया। जबकि प्रधानमंत्री के लिए सबसे ज्यादा योग्य व्यक्ति प्रणव मुखर्जी थे मगर बंगाली ब्राह्मण थे। प्रधानमंत्री पद का कार्यभार परदे के पीछे से प्रणव मुखर्जी ही देख रहे थे, मगर दुनिया को दिखाने के लिए मनमोहन सिंह को सामने रखा गया था।

२०१४ में आरएसएस के ब्राह्मणों के पास प्रधानमंत्री पद के लिए सुषमा स्वराज योग्य व्यक्ति होने के बावजूद भी नरेन्द्र मोदी को प्रधानमंत्री पद का चेहरा बनाया और सत्ता पर बिठाया। मगर, दिखाई यह दे रहा है कि परदे के पीछे से सारे सत्ता सूत्र ब्राह्मणों के पास है। ये दो बड़ी घटनाऐं सिद्ध करती है कि डीएनए रिपोर्ट ने ब्राह्मणों के सोचने समझने पर काफी गंभीर परिणाम किया।

राखीगढ़ी का डीएनए :

हरियाणा में राखीगढ़ी में काफी पुराने कंकाल मिले, उस समय केंद्र में आरएसएस के ब्राह्मणों की सरकार थी। उन्होंने इसे अवसर माना और राखीगढ़ी में अपना डीएनए मिलने की आशा की मगर, वहां भी ब्राह्मणों का भारतीय डीएनए उपलब्ध नहीं हुआ। उस रिपोर्ट को वसंत शिंदे द्वारा जो डेक्कन कॉलेज पूना के डीन थे और राखीगढ़ी प्रोजेक्ट के प्रमुख थे, उनको दबाव में लेकर उस रिपोर्ट को बदलने की कोशिश की, उसमें उनको कामयाबी नहीं मिली। वसंत शिंदे ने जो रिपोर्ट तैयार की वह लगभग १७ पेजेस की है और विदेशी मैग्जिन में पब्लिश हुई है। उस रिपोर्ट में ब्राह्मणों का डीएनए भारतीय है, ऐसा नहीं बताया। मगर,

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

आरएसएस के ब्राह्मणों ने वसंत शिंदे को मैनेज किया और टीवी पर इंटरव्यू दिलवाया। वहां उसके द्वारा कहलवाया कि ब्राह्मणों का डीएनए भारतीय है। इसके बदले में वसंत शिंदे को एक पद ऑफर किया। आज वसंत शिंदे बहुत बड़े रिसर्च इन्स्टिट्यूट के डायरेक्टर बना दिए गये। ब्राह्मणों ने वसंत शिंदे के द्वारा जो बयान दिलवाया उस बयान के बदले में वसंत शिंदे को लालच दिया, यह बात सिद्ध होती है। इससे यह सिद्ध होता है कि टीवी पर वसंत शिंदे द्वारा दिया हुआ बयान झूठा है। हम लोगों ने वसंत शिंदे को लिगल नोटिस दिया हुआ है। वसंत शिंदे के विरोध में हम कभी भी कोर्ट में केस दायर कर सकते हैं।

विदेशी शोधकर्ताओं ने शिंदे के बयान को नकार दिया :

इस शोध कार्य पर दुनिया भर के विद्वानों की नजर लगी हुई थी, जिसमें पुरातत्व और डीएनए के वैज्ञानिक थे। जब वसंत शिंदे ने ऐसा झूठ बयान दिया तो दुनिया के १०० से ज्यादा डीएनए वैज्ञानिकों ने वसंत शिंदे की बात को नकार दिया। ब्राह्मणों के लिए यह बात बहुत धक्कादायक थी। ऐसी स्थिति में भारत में ब्राह्मणों की सामाजिक, राजनीतिक स्थिति बड़े पैमाने पर डाँवाडोल हो सकती है, ऐसा खतरा ब्राह्मणों को महसूस हुआ। वसंत शिंदे के बयान को नकार देने के लिए १०० से ज्यादा लोगों ने जो बयान दिया वह ब्राह्मणों के लिए बहुत खतरनाक है। उनका कहना है कि युरेशिया के जिन लोगों ने योरोप में हिंसा का ताण्डव किया उन्हीं लोगों ने भारत में भी हिंसा का ताण्डव किया। वहाँ की संस्कृति को, लोगों को हिंसा के द्वारा तहस-नहस किया। यह बातें उन्होंने शोध में जो सामने लायी वह बहुत ही भयंकर बातें हैं। इससे सिद्ध होता है कि भारत में ब्राह्मणों का वर्चस्व हिंसा की वजह से है। हिंसा के द्वारा यह वर्चस्व स्थापित किया है। केवल प्राचीन समय में सिंधुघाटी की सभ्यता को ही नष्ट नहीं किया, बल्कि उस संस्कृति को और शांति प्रिय लोगों को भी नष्ट किया। बाद में बुद्ध की क्रांति के बाद जो मूलनिवासियों ने अपना साम्राज्य चंद्रगुप्त मौर्य और सम्राट अशोक मौर्य के द्वारा विशाल साम्राज्य स्थापित किया और भारत की दुनिया में महान बनाया। उस साम्राज्य को भी हिंसा के द्वारा नष्ट किया और यह बात सम्राट बृहद्रथ मौर्य की

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

हत्या पुष्यमित्र शुंग के द्वारा की गई इससे स्पष्ट होता है। इस उदाहरण से सिद्ध होता है कि इसके द्वारा भारत के मूलनिवासियों पर इस प्रतिक्रांति के बाद वर्ण व्यवस्था, जाति व्यवस्था, अस्पृश्यता, ५२ प्रतिशत ओबीसी पर शूद्रत्व थोपा जाना, नॉमेडिक ट्राईब्स के लोगों को बहिष्कृत करना और आदिवासियों को जंगलों में रहने को मजबूर करना और महिलाओं को दास बनाना संभव हुआ। यह व्यवस्था हिंसा के द्वारा भारतीय लोगों पर थोपी गई व्यवस्था है। इतना ही नहीं, दि. ०९ अगस्त १९४२ को जो भारत छोड़ो आन्दोलन चलाया गया उसमें भी ब्राह्मणों ने भारत पर हिंसा द्वारा अपना वर्चस्व स्थापित किया। आजाद भारत में हिंसा के द्वारा मुसलमानों के विरोध में ६५ हजार फसादात करवाकर हिंसा का सहारा लेकर मूलनिवासी भारतीय लोगों को अपना गुलाम बनाया। संविधान होने के बावजूद भी उन्होंने ऐसा किया। ये सारे उदाहरण इस बात को सिद्ध करते हैं कि हिंसा ब्राह्मणों का स्थायी स्वभाव है। इसलिए भारत के मूलनिवासियों को आजादी कैसे मिलेगी? यह बहुत बड़ा प्रश्न है।

भारत पर ब्राह्मणों ने हिंसा के द्वारा कब्जा किया :

दि. ०९ अगस्त, १९४२ को ब्राह्मणों ने हिंसा के द्वारा कब्जा करने की कोशिश की। मुसलमानों की वजह से यह करना संभव नहीं हो रहा था, यही वजह है ब्राह्मणों ने भारत पर कब्जा करने के लिए भारत का विभाजन किया और पाकिस्तान बनाया। अनुसूचित जाति और जनजाति के लिए भारत में सेपरेट इलेक्टोरेट के द्वारा सत्ता में हिस्सेदारी हांसिल करके आजादी मिल सकती थी। वह आजादी ना मिल सके, इसलिए उन्होंने अंग्रेजों के साथ गुप्त समझौता किया। इस गुप्त समझौते में बहुत सारी बातें हो सकती है। केवल एससी और एसटी को सेपरेट इलेक्टारेट नकारना ही नहीं, बहुत सारे समझौते हो सकते हैं और यह समझौते गुप्त हो सकते हैं। इसका एक बड़ा सबूत १९८४ सिखों का सबसे बड़ा धार्मिक क्षेत्र दरबार साहब पर इंदिरा गांधी ने मिलिटरी के द्वारा हमला किया। जब भारतीय मिलिटरी यह हमला कर रही थी उसमें अंग्रेजों की मिलिटरी भी शामिल थी। भारतीयों को आजादी मिलने के ३७ साल के बाद भी अंग्रेज ब्राह्मण को भारत पर

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

कब्जा बनाए रखने में मदद क्यों कर रहे थे? यह उदाहरण उस गुप्त सौदेबाजी को सिद्ध करता है। यह घटना भी हिंसा के द्वारा घटित घटना थी। संक्षेप में ब्राह्मणों ने भारत पर हिंसा के द्वारा कब्जा किया हुआ है। इस कब्जे को बनाए रखने के लिए देशद्रोह का भी काम किया है, भारत का विभाजन इस बात का सबूत है।

मूलनिवासियों की जागृति :

जैसे-जैसे मूलनिवासियों की जागृति बढ़ रही है और ब्राह्मणों का विदेशी होना केवल सिद्ध ही नहीं हो रहा है, बल्कि करोड़ों लोगों को मालूम भी हो रहा है कि ब्राह्मण हमें गुलाम बनाकर रखना चाहते हैं। इसलिए भारत में ब्राह्मण विरोधी जागृति, संगठन और आंदोलन बढ़ रहे है। इनको उलझाने के लिए मूलनिवासियों को एनपीआर, एनआरआईसी, सीसीए के आधार पर विदेशी साबित करने का षड्यंत्र किया जा रहा है। ब्राह्मणों के पास डीएनए के अनुसार विदेशी साबित होने की वजह से कोई उपाय नहीं मिल रहा है। विदेशी कहने वाले भारतीय लोगों के पास दस्तावेजी प्रमाण ना होने के आधार पर विदेशी साबित किया जा सकता है। ऐसा हो सकता है और इसके आधार पर देश तोड़ने की दोबारा कोशिश हो सकती है। इस परिस्थिती में मूलनिवासियों को जल्द से जल्द जागृत होने की और अपनी आजादी हासिल करने की जरुरत है। दोबारा भारत के विभाजन को पूरी ताकत से रोकने की जरुरत है।

उपरोक्त किताब पर और भी बहुत कुछ कहा जा सकता है, मगर अब इतना ही लिखना चाहता हूं। मुझे विलास खरात ने प्रस्तावना लिखने के लिए अनुरोध किया और अवसर दिया इसलिए विलास खरात को धन्यवाद!

वामन मेश्राम
राष्ट्रीय अध्यक्ष, बामसेफ
नई दिल्ली

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

अध्याय –१

आक्रमणकारी विदेशी ब्राह्मणों ने हिंसा के जरिये सिंधु सभ्यता नष्ट की

–सर मॉर्टिमर व्हिलर

(सर मॉर्टिमर व्हिलर यह विश्वमान्य पुरातत्वविद् हैं। (१८९०–१९७६) वे भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग (Archeological Survey of India) के प्रबंध निदेशक (Director General) भी थे। इतना ही नहीं बल्कि वे शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन (UNESCO) के तरह–तरह के प्रोजेक्ट का प्रतिनिधित्व भी कर चुके है। इससे इतिहास एवं पुरातत्व विषय में उनकी शोहरत पूरे विश्व में मशहूर है। उन्होंने हडप्पा एवं मोहेंजोदारो का नये सिरे से उत्खनन किया और नई खोज की। 'Civilization of the Indus Valley and Beyond' १९६६ का सिंधु सभ्यता पर लिखा गया यह ग्रंथ पूरे विश्व में नवाजा गया। उन्होंने उसमें सबूतों के साथ यह सिद्ध किया कि, विदेशी ब्राह्मणों ने सिंधु सभ्यतापर हमला करके मूलनिवासी सिंधुजन की कत्तल की। सिंधु सभ्यता यह विदेशी आक्रमणकारी ब्राह्मणों की हिंसा से खत्म हो गई यह सबूतों के आधार पर साबित किया। उनका कहना आज डीएनए विज्ञान से प्रमाणित हुआ है। विदेशी ब्राह्मणों का दौर उन्होंने इ.स.पूर्व २००० वर्ष दिखाया और वही दौर सिंधु सभ्यता की बर्बादी का दौर है। विदेशी युरेशियन स्टेप ब्राह्मणों के भारत में आने का काल भी डीएनए विज्ञान ने यही दर्शाया है। इससे व्हिलर की खोज सत्य साबित होती है। आरएसएस के ब्राह्मण शिंदे को आगे करके व्हिलर के नाम से घृणा करते है। दरअसल व्हिलर का कहना ही सत्य साबित हुआ है। पाठक वर्ग को व्हिलर की सटीक खोज क्या थी इसकी जानकारी के लिए उनके ग्रंथ का एक हिस्सा यहाँ अनुवाद के रुप में प्रकाशित कर रहे है।)

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

नष्ट हो रही सिंधु संस्कृति को अंतिम झटका कब लगा? कुछ सालों पहले ही मैंने यह सुझाया था कि, भारतीय उपखण्ड के उत्तर-पश्चिम की ओर के आर्य आक्रमक ही सिंधु संस्कृति को नष्ट करनेवाले मुख्य लोग थे। यह बात आज यदि साबित नहीं कर सकते और मैं यह जो कह रहा हूँ वह शायद गलत भी हो सकता है, किन्तु इतिहास में ऐसा कुछ हुआ ही नहीं यह हम नहीं कह सकते। सैलाब के जल से सिंधु सभ्यता नष्ट हो गई थी यह सिद्धांत जो सबका पसंदीदा विषय बन चुका है, वह कोई सिंधु सभ्यता के पतन का इकलौता कारण नहीं हो सकता क्योंकि हडप्पा और मोहेंजोदरो के घुमावदार मीनार (टावर) पूरी तरह जल के नीचे डूबे नहीं थे। इसके अलावा मुमकिन यह है कि वर्तमान में जिसे हम हडप्पा कहते है, जो सिंधु काल का हरियुपिया शहर था जिसका जिक्र ऋग्वेद में भी मौजूद है। ऋग्वेद अतिप्राचीन काल के मंत्रों से भरे हुये गीतों की रचना है। जिसमें आर्य के आक्रमण का जिक्र किया गया है। आर्य आक्रमकों ने स्थानीक मूलनिवासी सिंधु सभ्यता के लोगों पर शिकस्त पाने का वर्णन ऋग्वेद में मौजूद है।

आम नज़रिये से सोचनेपर नज़र आता है कि, ऋग्वेद में जो वर्णन किया है वो सिंधु सभ्यता के पतन के हालात से हुबहू मेल करता है। वैदिक ऋचाओं में पांच नदीयों के प्रदेश का याने पंजाब एवं उसके इर्दगिर्द के प्रदेश का जिक्र बार बार

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

किया गया है। मूलनिवासी घेरेबंद शहरों पर आक्रमण करके उन्होंने सिंधुजन का किया हुआ नरसंहार का वर्णन उसमें बारबार नज़र आता है। उन शहरों को ऋग्वेद में 'पूर' (याने किला या शक्तीस्थान) कहा गया है। शहर की रक्षा के लिए बनाया हुआ किला या दुर्ग यह पत्थरों से बनाया गया था जिसे ऋग्वेद में 'अस्सामायी' कहा गया है, जिसे मिट्टी की ईटें 'कच्ची या भूनी हुई ईटें' कहा गया है। आर्यों का मूल देव इंद्र का सिंधु सभ्यता के 'किले' या 'पूर' तोड़नेवाला याने 'पूरंदर' कहकर ऋग्वेद में जिक्र किया गया है। आर्यों के नेतृत्व में काम करनेवाले दिवोदास के लिए वह सिंधु सभ्यता के 'निन्यानवे किले' नष्ट करता है। संक्षेप में कहा जाये तो वह सिंधु सभ्यता के किले या पूर इस तरह नष्ट करता है जैसे की समय कपड़ों को जीर्ण कर देता है।

ऋग्वेद में किये गये वर्णन के 'किले' या 'पूर' असल में थे कहाँ? नये अनुसंधान में उजागर हुये दुर्ग में मौजूद टीले हडप्पा तथा मोहेंजोदरो सें प्राप्त हुये है; उसी तरह, हडप्पा समान ऐसे ही स्थान मक्राण में सुर्कागेन जेर सिंध में अली मुराड और अब राजस्थान में कलिबंगन इन स्थानों से प्राप्त हुये है और यह तमाम स्थल इंद्र के दुश्मन के अहम शक्तिकेंद्र थे यह दिखाई देता है। कुछ भी हो, किंतु

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

विकसित सिंधु सभ्यता के लोगों के बैरी कौन थे यह अब तक पहचाने नहीं गये। दुःख की बात यह है कि, भारत के उत्तर-पश्चिम पर आक्रमण करनेवाले आर्यों की तारीख अब भी तय नहीं हो सकी। उस बारे में आज भी उलझनें है। किन्तु इसवी सन पूर्व दूसरे सहस्त्राब्दी के दौर में आर्यों ने भारत पर आक्रमण किया था, यह समझने के लिए पर्याप्त सबूत हैं। पर इ.स.पूर्व पहले सहस्त्राब्दी के मध्यतक वह आक्रमण जारी रहा यह सबूतों के आधार पर नहीं कह सकते।

आकृति ८७ - पहले के मोहेंजोदरो में प्राप्त नींव, कुऐं इन पर जब बाद के काल में मकान बनाये गये तब नये निर्माण कार्य से वे नीचे गहराई में दब गयें। जिससे उपरोक्त चित्र में दिखाये गये मुताबिक अजीब से हालात पैदा हो गये थे। उपरोक्त चित्र में दिखाये गये कुऐं एक नली के स्वरुप में नज़र आते है, जो बाद के काल में बनाये गये थे। जिस आँगन में उसे खोदा गया था वहाँ पर कुऐं का मुँह खुला हुआ नज़र आता है। (ct III,१९) परंतु उस कुऐं को और गहराई में खुदाई करने पर यह दिखाई दिया कि, पहले घरों पर जो परतें जम गई थी वहाँ पर कुआँ खोदा गया था लिहाजा वह जमीन के ऊपर खुला हुआ दिखाई देता है और दोनों के बिच में ईटों के मकान दिखाई देते है।

मोहेंजोदरो के ऊपरी सतह से प्राप्त तकरीबन आधे दर्जन कंकाल पर चर्चा करना अब जरुरी हो गया है। मेरे अलावा कई लेखकों ने उन्हें बहुत कुप्रसिद्ध किया है किन्तु असल में उसे कुछ भी अहमियत नहीं है यह नहीं कह सकते। दुर्भाग्य से उनमें से बहुत से कंकालों की अनुसंधानकर्त्ताओं ने दखल नहीं ली। वह तमाम कंकाल एक ही काल के थे ऐसा कहा जाता है और शहर का वह नवीनतम काल था यह भी कहा जाता है। हालांकि वे ऊपरी सतह से प्राप्त हुये है फिर उसका काल शहर के संहार की शुरुआत का काल था यह नज़र आता है। ऐसा लगता है कि शहर के अंत का काल यही कंकाल दर्शाते है। 'DK एरिया में' दो कंकाल कुऐं की ओर जानेवाली सीढ़ियों पर पडे हुये नज़र आते है। तो दो कंकाल बाहर की ओर रास्तेपर पड़े हुये नज़र आते है। 'Vs एरिया में' मकान नं. XVIII से XXXIII के बीच की गल्ली के रास्ते पर ६ अस्थि-पंजरों का जत्था नज़र आता है। जिसमें एक बालक है और वह अस्थि-पंजर घर के बीचो-बीच, हाथ पाँव

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

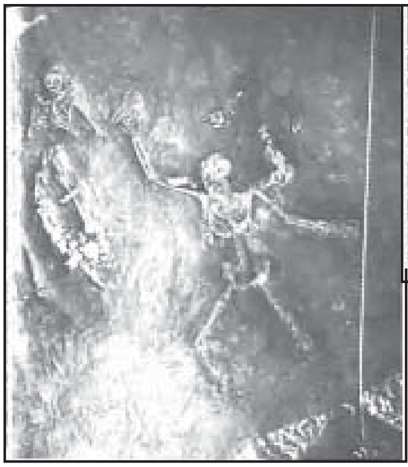

फैलाकर, आढ़े-तेढ़े गिरे हुये हैं। उस मकान के निर्माण का काल कुछ भी हो, किन्तु वह मकान ''वे लाशें उनके इर्द-गिर्द से प्राप्त चिजों की तुलना में बाद के दौर की होगी।'' यह आम तौर पर कहा जाता था। 'HB एरिया' के एक कमरे में पुरुष, महिलाऐं तथा एक बालक कूल १४ लाशें प्राप्त हो गई है; उनमें से कुछ लोगों के बदनपर सिंधु सभ्यता के गहने है, उससे उन्हें हिंसा से मारा गया था ऐसा लगता है, क्योंकि उनमें से दो कंकालों की खोपडी पर कुल्हाडी या तलवार के घाव नज़र आते है। उनका यह हाल अब तक समझ में नहीं आया है। इसका प्रतिवेदन (रिपोर्ट) बेहद बेबुनियाद लगता है। 'उपरोक्त कंकाल यह मध्यम हालात I से अंतिम पड़ाव III इस काल के हो सकते है,' आखिरी पड़ाव I के बाद के काल के भी हो सकते है, किन्तु यहाँ जो तसवीरें दिखाई दे रही हैं उससे उनके कंकाल उपरी सतह के होंगे ऐसा लगता है। सम्भावनाऐं कुछ भी हो सकती है किन्तु यहाँ पर जो तसवीरें नज़र आ रही हैं, उससे वे कंकाल ऊपरी स्तर के होंगे ऐसा लगता है।

८८, ८९ - मोहेंजोदरो के ऊपरी सतह में पुरातत्विक अनुसंधान में बहुत से शव इस तरह बरामद हुये है जैसे हिंसक आक्रमण से उनकी मृत्यु हो गई हो। बायीं ओर खड़े हालत में जो तसवीरें है वे 'HB एरिया' के एक कमरे में बिखरे हुये शव है। दाहिनी ओर की तसवीर में उन्हीं कंकालों की हालत दर्शाई गई है। जिनका कत्ल किया गया उन पीड़ित लोगों के बारे में तरह-तरह के पुरातत्विक

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

रिपोर्ट आगे आ रहे है। जिससे उपर्युक्त लाशों का काल बाद के काल का है यह साबित करने के लिए II 89 यह एक अहम सबूत है।

उन लाशों का दौर बड़ा हो सकता है किन्तु यदि उपर्युक्त तसवीर को सबूत माना जायें तो वह लाशें ऊपरी सतह के होंगे ऐसा लगता है। इसी तरह की पाँच लाशें यह 'HB एरिया' जी.एस.डेलस इन्हें १९६४-६५ में प्राप्त हुये है। जो बड़े बड़े घरों के बिचोबिच मौजूद एक पगडंडी में बीस तथा मिट्टी के ढेर से प्राप्त हुये हैं। वे बाद की अवस्था के होकर पगडंडी में के एक कोने में छिपकर बैठे थे ऐसा लगता है। 'DK एरिया' और एक लाशों का जत्था प्राप्त हुआ। जिसमें पाँच लड़के हैं। वे तमाम लाशें एक के ऊपर एक आड़ी तेड़ी रची हुई तथा जबरन गड्ढे में ठूंसी गई है ऐसा दिखाई देता है। ऐसा लगता है जल्दबाजी में बनाये गये गड्ढे में उन लाशों को फेंका गया होगा। किन्तु पुरातत्वविद् मैंके का हैरतभरा अनुसंधान कहता है कि, "समझने के लिए उस गड्ढें को कबर का गड्ढा कहा गया है किन्तु उस गड्ढे को चारों ओर से दिवार नहीं बनाई गई है और वे गड्ढे खोदे हुए भी नहीं लग रहें है।" फिर से एक बार हम कहाँ हैं? वहाँ कुछ मण्डली के साथ हाथी के दो दाँत थे और उसके बारे में मैके कहते हैं कि, "वे कंकाल एक ही परिवार के थे और जो हस्तिदंत से कलाकृति बनानेवाला परिवार था और वे अपने सामान के साथ भाग कर जानेवाले थे किन्तु हमलावार शत्रू ने उन्हें पकड़ लिया और उनका कत्ल किया। उन लाशों को जल्दबाजी में मिट्टी के निचे दफनाया गया तथा उनके लिए किसी भी प्रकार का दफनविधि नहीं किया गया ऐसा दिखाई देता है।" उनमें से एक लाश के बदनपर सिंधु सभ्यता के कंगण नज़र आते है। मध्यम पड़ाव III के काल के पत्थरी मकान के निचे उन कंकालों की हड्डियाँ इधर उधर बिखेरी हुई दिखाई देती है और उससे यह बदकिस्मत वाक़या बाद के Ia इस पड़ाव में हुआ होगा ऐसा पुरातत्वविद् को लगता है।

हैरानी की तथा अहम बात यह है कि, इन लाशों को मिट्टी से ढंका गया हैं। और मौत के बाद उन्हें जानबुझकर मिट्टी के निचे दफनाया गया है। पूरब के प्रदेशों में शव जल्द ही सड़ जाते है, लिहाज़ा वहाँ रहने के लिए आये नये लोगों को तकलीफ ना हो इसलिए उन शवों को तुरंत ही मिट्टी के निचे ढंका गया हैं।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

आकृति ९०, ९१ – बायीं ओर के दो कंकाल मोहेंजोदरो के 'DK एरिया' में रास्ते पर गिरे हुये नज़र आते हैं। उनकी दूसरी तरफ की तसवीर में इन्हीं कंकालों का समूह डॉ. जॉर्ज एफ. डेक्स इन्होंने १९६४ के उत्खनन में प्राप्त हुआ। वे अपनी सुरक्षा के लिए एक गली में कोने में छिपकर बैठे होंगे, ताकि आक्रमणकारी दुश्मन की नज़र में वे ना आ सके। पगड़ंडी के ईटों की दिवारें तथा नीचे गिरा हुआ कचरा यह अगले पड़ाव का है।

****

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

अध्याय – २

इतिहास के बेहद ज़ालिम, बेरहम लोगों की जानकारी प्राचीन डीएनए अनुसंधान के जरिये उजागर हो गई है।

–कोलीन बारास, मार्च ३०, २०१९

(COFFS COAST OUTLOOK से धन्यवाद के साथ)

५००० बरस पहलें यामनया इस वंश के लोग योरोप के हिंसक आक्रमण पर कूच कर गये थे। उनकी जानकारी हाल ही में आनुवंशिक अनुसंधान के जरिये दुनिया के सामने आ गई है।

स्टोनहेन्ज के विशाल, बड़े बड़े पत्थर तकरीबन ४५०० सालों पहले बनाये गये थे। उन स्मारकों की बुनियाद अबतक विवादग्रस्त होने के बावजूद भी अब हमें आनुवांशिक अनुसंधान के जरिये समझ में आ चुका है कि यह स्थल केवल कुछ सदियों में ही नष्ट होनेवाले वहाँ के निवासी के लिए स्मारक बन गया।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

उसके बाद, इंग्लंड के दक्षिण तट से स्कॉटलैंड के उत्तर-पूर्व किनारे तक के प्रदेश के हरेक ब्रिटिश शख़्स को आनेवाले आक्रमकों ने मार ड़ाला। वे लोक इतनी जल्दी नष्ट कैसे हुये यह अब तक समझ में नहीं आया, किन्तु उन्हें मारकर उनका स्थान हथियानेवाले लोगों की जानकारी अब उजागर हो रही है।

आक्रमण करनेवाले लोग यह पशुपालन करनेवाले यामनया लोग थे, जिन्होंने काला सागर से कॉकेशस पर्बत के उत्तर की ओर युरेशिया के 'स्टेप' प्रदेश पर कब्जा किया था। उन्होंने सिर्फ ब्रिटन पर ही आक्रमण नहीं किया था अपितु ५००० से ४००० सालों पहले उन्होंने तमाम योरोप अपने कब्जे में ले लिया था और उनकी आनुवंशिकता आज भी हमें इस प्रदेश में दिखाई देती है। उनके आगमन से योरोप में सामाजिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र में बड़े परिवर्तन हो गये। मृत व्यक्ति को जमीन में दफनाने की परम्परा यकायक बदल गई। यकायक ही लड़ाकू वर्ग तैयार हो गया और उसके बाद जानलेवा हिंसा की मात्रा बहुत ज्यादा बढ़ गई। स्विडन में गोधेनबर्ग में युनिवर्सिटी में बोलते हुये क्रिस्तियनसेन ने कहा कि, ''मुझे अब पूरा यकीन हो गया है कि, उस वक्त योरोप में बड़ी मात्रा में नरसंहार हो गया है।'' उन्होंने तथा अन्य अनुसंधानकर्ताओं ने जब यह इतिहास इकट्ठा जोड़ने का प्रयास किया, तब यह सवाल हमेशा सताता रहा है कि, क्या यामनया लोग इतिहास के बेहद जालिम लोग थे?

५००० सालों पहले पुरापाषाणयुग में योरोप में ऐसे लोग रहते थे, जो स्टोनहेन्ज समान विशाल स्मारक बनानेवाले लोग थे वे शेती करनेवाले लोग थे तथा मिलजुलकर स्टोनहेन्ज समान स्मारक बनाना उन्हें पसंद था। ''सामूहिक जिंदगी बितानेवाले वे लोग थे।'' ऐसा क्रिस्लियनसेन ने कहा और उन्होंने उनकी विरासत बड़े बड़े पत्थर के स्मारकों में बरकरार रखी है और वे स्मारक उनकी कब्र (मज़ार) के रुप में आज भी मौजूद है। कुछ मज़ारों में तो २०० से भी ज्यादा लोग दफनाये गये है।

वे लोग फ़ितरत से अन्वेषक भी थे। जानवरों के प्राचीन हड्डियों के नमूने से यह नज़र आता है कि, मौजूद पालतू जानवरों का इस्तेमाल किस तरह करें

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

इसका उन्हें ज्ञान था, एवं उन जानवरों की सहायता से भारी चिजें किस तरह उठाई जाये और ढोया जाये इसका उन्हें ज्ञान था। शायद उनके पास पहियोंवाली गाड़ियाँ भी थी और यातायात के लिए उन्होंने प्रारंभिक दौर के रोड भी बनाये थे। वे इकट्ठे होकर एक बड़े नगर की तरह एकत्र रहते थे। जिसे क्रिस्तियनसन ने ''बड़ी बड़ी बस्ती (Mega settlements)'' कहा है ओर एक बड़ी बस्ती में तकरीबन १५,००० लोग साथ में रहते थे।

दूसरे शब्दों में कहा जाये तो, प्राचीन पुरापाषाण युगीन योरोप के लोग यह सामूहिक जिन्दगी बसर करनेवाले, विकसित तथा शांती प्रिय लोग थे। उसके बाद स्टेप लोगों के आक्रमण से सबकुछ बदल गया।

५००० सालों बाद दक्खन पूरब योरोप में जो हिस्सा फिलहाल पूरब के युक्रेन तथा पश्चिम की हंगेरी इन देशों के बिच में हैं। वहाँ पर नये तरीके से शवों को दफ़नाने की परम्परा शुरु हो गई ऐसा लगता हैं। शवों को सामूहिक रुप से दफनाने की बज़ाय हरेक मृत व्यक्ति को अलग अलग दफ़नाने की परम्परा शुरु हो गई। उसे पुरातात्विक भाषा में 'गढ्ढे की कब्र' कहा गया है। मृत व्यक्ति को पूरी तरह लाल रंग के गेरु से रंगा जाता था और कब्र का गड्ढा लकडी की पट्टी से ढंका जात था। उसपर कुछ मीटर तक ऊँचा मिट्टी का छोटा टीला बनाया जाता था। जिसे 'कुरगान' कहा जाता था। इस तरह मृत व्यक्ति को जमीन में दफ़नाने की परम्परा स्टेप विभाग में विकसित हो गई थी जो कि खास तौर पर यामनया लोगों ने शुरु की थी। फिनलंड की युनिवर्सिटी ऑफ हेलसिंकी में पुरातत्वविद् व्होलकर हेयड का कहना है कि, योरोप के अतिप्राचीन इतिहास का वह एक दुःख भरा हादसा था, जिसने वहाँ का सामाजिक रुप पूरी तरह बदल दिया।

उसके बाद निर्माण हुये बदलाव से सबकुछ बिखेर गया। बाद के कुछ दशकों में ही यामनया लोगों समान बरताव तथा उनकी इस्तेमाल की चिजें ४९०० सालों पहले या आसपास तमाम योरोप खण्ड में नज़र आने लगी थी। उसके बाद 'कॉर्डेड विअर पिपल' (बर्तनों पर नक्काशी करनेवाले लोग) इनका मध्य तथा उत्तर योरोप में अस्तित्व नज़र आने लगा था। जिन्होंने बर्तनों पर डोरी (रस्सी) से

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

नक्काशी करने की परम्परा शुरु की और जिन्होंने यामनया लोगों समान बरताव करना प्रारंभ किया। अब सवाल यह पैदा होता है कि, यामनया लोगों के रीति-रिवाज इतने बड़े प्रदेश पर इतनी तेज रफ़्तार से किस तरह फैल गए?

पाँच सालों पहले बहुत से पुरातत्वविदों की एक राय थी कि, कल्पना विकसित होकर प्रसारित होती हैं। जैसे कि, १९९० के उत्तरार्ध में एवं २००० के पूर्वार्ध में नोकिया मोबाईल ने पूरे योरोप को वशीभूत कर लिया था। किन्तु सन २०१५ में अनुवंशशास्त्रज्ञों ने इसे एक वैकिल्पक विचार दिया है। हार्वर्ड मेडिकल स्कूल में डेव्हिड रिच तथा युनिवर्सिटी ऑफ कोपेनहेगेन के इस्के विलरस्लेव इन दोनों के नेतृत्व में मुक्त रुप से काम करनेवाले शास्त्रज्ञों के दो दलों ने (टिम) यह खोज की कि, जर्मनी के प्राचीन मज़ार (कब्र) में दफ़न हुये कॉर्डेडवेअर लोगों में तीन चौथाई लोगों में यामनया लोगों की आनुवंशिकता प्राप्त हो गई। इसका मतलब यह होता है कि, बाद के दौर में जनेऊधारी लोग (Corded Ware People) यह केवल यामनया लोगों का अनुसरण ही नहीं कर रहे थे बल्कि वे तो स्वयं यामनया लोगों के उत्तराधिकारी थे।

बिमारी, जंग एवं मौत का ताण्डव

बहुत से पुरातत्वविदों को हमारी यह कल्पना रास नहीं आई। युरेशियन स्पेट समान समतल प्रदेश से दक्खन-पूरब की ओर का योरोप समान जंगली प्रदेश में यामनया लोग गये होंगे इसपर उन्हें एतबार नहीं है और उससे भी ज्यादा घने जंगल के मध्य तथा उत्तर योरोप समान प्रदेश में वे लोग आगे बढ़ गये यह उन्हें हज़म ही नहीं हो रहा हैं। किन्तु हमारे अनुसंधान से यह साबित होता है कि, इतने घने जंगली प्रदेश में घुसकर यामनया लोगों ने वहाँ के स्थानिक निवासीयों को ही वहाँ से निकाला और जंगली जीवन शैली का तजुर्बा ना होते हुये भी वहाँ के स्थानिक निवासीयों को निकाला और यह सब उन्होंने कुछ ही पुश्तों में (पीढ़ी) किया। इतनी तेज रफ़्तार से यामनया लोगों ने अपना अतिक्रमण किस तरह कामयाब किया होगा इसके बारे में हेयड आज तक सोच रहे थे। किन्तु क्रिस्तियनसेन इन्हें यकिन है कि वे इसका खुलासा कर सकते है और उनकी खोज का स्वरुप यह

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

बिमारी, जंग, तथा मौत का ताण्डव इसपर निर्धारित है।

पहली बात ध्यान में लेने लायक यह है कि, यामनया लोगों के आने से पहले पुरापाषाण युगीन योरोप प्रदेश भी संकट-स्थिति से गुज़र रहा था। वहाँ के खेती से से जुड़े काम की जानकारी पुरातात्विक खुदाई में प्राप्त परागकोश के अध्ययन से निकाली गई तो पुरातत्वविदों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि, ५३०० सालों पहले उत्तर तथा मध्य योरोप की जनसंख्या सिमट रही थी। दिसम्बर २०१८ में, क्रिस्तियनसेन तथा उनके आनुवांशिकीविद् सहकर्मीयों ने एक स्पष्टीकरण किया है। फिलहाल के स्विडन में ५००० सालों पहले पुरापाषाण युगीन लोगों के दाँतों का अध्ययन करने पर उन्हें वहाँ 'महामारी के जीवाणु' (प्लेग बॅक्टेरिया) मिल गये, जो ब्लॅक डेथ इस बिमारी के पहले का स्वरुप था। आगे ज्यादा व्यवच्छेद करने से पता चला कि, ५७०० सालों पहले ही योरोप में प्लेग का फैलाव हुआ था।

दक्खन-पूरब योरोप के निवासीयों की संख्या ऊँचाई पर पहुँचने के बाद इस तरह के वाक़या होते थे, इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है, यह क्रिस्तियनसेन ने कहा है। वे लोग उनकी बस्ती में मेलजोल बढ़ाकर, बड़ी मात्रा में भिड़ बनाकर तथा अस्वास्थकर ढंग से मवेशीयों के साथ में रहते थे और यह संसर्ग प्लेग को पनपने के लिए काफी था। वहाँ से मध्य तथा उत्तर योरोप से संपर्क करने के लिए उन लोगों ने पहियों की गाड़ी तथा रास्ते बनाये थे जिससे प्लेग का फैलाव वहाँ पर भी आसानी से हो गया। ''प्लेग की बिमारी से उन बस्तीयों को आग लगाकर जलाया जाता था तथा वहाँ के लोग वह प्रदेश छोड़कर चले जाते थे और यह सब ५७०० साल के बाद के दौर में हुआ था।'' ऐसा क्रिस्तियनसेन ने कहा है ओर लिहाज़ा वह स्थान बिमारी, तथा मौत का केंद्र बना होगा। और इसी मर्ज़ की वजह से ''५४०० सालों पहले वे लोग वह प्रदेश छोड़कर निकल गये थे।'' ऐसा क्रिस्तियनसेन ने कहा है। इसका मतलब यह है कि, कुछ सदियों बाद जब यामनया लोग योरोप में आये थे तब उनके सामने मूलनिवासी की जनसंख्या थी जो की संख्या से कम तथा शक्ति से दुर्बल हो चुके थे लिहाज़ा जब वे लोग दाखिल हुये तब यामनया लोगों का प्रतिरोध वे नहीं कर सके। फिर भी क्रिस्तियनसेन ने कहा

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

कि, इसका अर्थ यह नहीं कि, यामनया लोग यह इतनी बड़ी मात्रा में फैल गये और योरोपियनों में मेल करके उन्होंने कॉर्डेड वेअर लागों को जनम दिया। वे कहते है कि, इतनी बड़ी मात्रा में यामनया लोगों में जो बढ़ोत्तरी हो गई है वह केवल उनके परिवर्तनशिल तथा आक्रमक स्वभाव की वजह से। यह बता रहे है कि, आक्रमणकारी लोगों में युवा पुरुष थे एवं वे घोड़े पर यात्रा करके नये प्रदेश में दाखिल होते थे। बाद के काल तक भी उनकी महिलाऐं उनके आक्रमण में शामिल नहीं होती थी।

इस अनुमान से, २०१७ में एक विवादग्रस्त आनुवंशिक अनुसंधान उजागर हुआ। उसमें उस काल के योरोपियन कंकाल के डीएनए अनुसंधान ने स्पष्ट किया कि, वहाँ पधारे यामनया समूह में एक महिला की तुलना में आदमी की संख्या ५ से १४ थी। पुरातात्विक सबूतों से यही साबित होता है कि, इस आक्रमण में ज्यादा से ज्यादा आदमीयों की ही भरमार थी। मिसाल के तौर पर उत्तर-पश्चिम डेन्मार्क से दक्खन-पूरब झेंक रिब्लिकन पर्बत तक फैले हुये प्रदेश में हुई खुदाई में आदमीयों की मज़ार (कब्र) एक समान ही थी। किन्तु स्त्रियों की मज़ार में स्थानिक परम्परा के मुताबिक तबदीली थी। यह अनुसंधान इस कल्पना से हूबहू मेल खाता है कि, आदमी तथा उनके वंशज पुत्रों ने अपने पिता के स्टेप प्रदेश की परम्परा बरकरार रखी किन्तु महिलाऐं स्थानिक होने से उन्होंने उस प्रदेश की परम्परा बरकबरार रखी, जिससे उनकी मज़ार में स्थानिक परम्परा के मुताबिक परिवर्तन पाया जाता है।

''कूल मिलाकर इतनी तेजी से बदलाव होने से यह साबित होता है कि, यामनया लोग फ़ितरत से आक्रमक थे।''

क्रिस्तियनसेन के मुताबिक यामनया स्थानान्तरित लोग आक्रमक थे तो योरोपियन लोगों ने उनके आक्रमण का विरोध किया होगा। इसके सबूत जर्मनी के युलाऊ इस स्थान से कॉर्डेड वेअर कब्रिस्तान की खुदाई से प्राप्त होते हैं। इस स्थान पर से गैरमामूली कब्र प्राप्त हो गयी है और हर कब्र में दो से चार शव प्राप्त हुये है। तथा उनमें केवल महिला एवं छोटे बच्चों के ही शव हैं। उन महिलाओं के दातों के

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

आयसोटोप जाँच (परीक्षण) से यह नज़र आता है कि, वे महिला स्थानिक प्रदेश की नहीं थी बल्कि उनमें से १३ में से ५ शवों पर हिंसा/जख्मों के निशान थे। क्रिस्तियनसेन ने इसका अर्थ लगाया है कि, स्थानान्तरित यामनया लोगों ने महिलाओं पर बेरहमी से हमला करके उन्हें जान से मार डाला होगा। इस स्थान पर पुरुषों के शव प्राप्त नहीं हुये है जो कि यह साबित करता है कि, पुरुष बाहर मवेशीयों को चराने के लिए बाहर गये होगे तभी उन्होंने स्थानिक महिलाओं पर हमला किया होगा और उनमें कुछ महिलाऐं मारी गई होगी और भगाई गई महिलाओं को भी उन्होंने यामनया के कब्जे से छुड़ाया होगा।

क्रिस्तियनसेन मेयर उन शवों के अनुसंधान में शामिल थे और ओस्टिओ आर्किओलॉजिकल रिसर्च सेंटर, जर्मनी में बोलते हुये उन्होंने कहा कि, नवपाषाण युगीन योरोप में बड़ी मात्रा में नरसंहार (मास किलिंग) पूरे योरोप में अब तक सुना नहीं था। फिर भी उपरोक्त सबूत यहीं साबित करते है कि, ५००० सालों पहले योरोप में हिंसाचार बहुत बड़ी मात्रा में होती थी। उसी तरह अन्य सबूत भी यही साबित करते है। उन्होंने कहा कि, ''योरोप की खुदाई में प्राप्त कंकालों की खोपड़ी में बड़ी मात्रा में सुराख बनाये गये थे।'' इससे क्रिस्तियनसेन का कहना है कि, सिर में बड़ी मात्रा में जख्म होने से उसपर उपचार के दौरान वहाँ के चिकित्सकों ने उन जख़्मी लोगों के सिर पर सुराख बनाये होंगे।

कुल्हाडी का इस्तेमाल करनेवाले लडाकू

यामनया लोगों के भारी मात्रा में आने से उत्पन्न हुये हिंसा का प्रतिक यदि उलाऊ हैं तो वहाँ पर कूल आक्रमण तथा उससे उत्पन्न हुई हिंसा का प्रतिक नहीं हो सकती। क्रिस्तियनसेन को संदेह है कि, यामनया लोग यह प्रजोत्पादन में स्थानिकों से ज्यादा आगे होंगे लिहाजा उन्होंने स्थानिकों से मिलन करके जल्द ही कॉर्डेड वेअर लोगों की बड़ी मात्रा में उनकी संख्या में वृद्धी तथा बढ़ोतरी की होगी।

इसके पिछे दो वजह होनी चाहिये। कुछ पुरातत्वविदों का कहना है कि, यामनया लोग घुड़सवारी में माहिर थे। युरेशियन स्टेप यह उनकी मूल मातृभूमि

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

छोड़ने से पहले ही उनमें से कुछ लोगों ने कुल्हाडी के इस्तेमाल में महारत हांसिल कर ली थी। यह बात स्टेप प्रदेश के दृश्य में वर्णन किये मुताबिक प्राचीन बड़े बड़े-खड़े पत्थरों के बाजू में कुल्हाडी हाथ में लिए हुये सिपाही का चित्र दर्शाया गया है। वह भी लड़ाई में निपुण होने चाहिये। उनका प्राचीन डीएनए यही दर्शाता है कि, वे बहुत ऊँचे लोग होंगे और उनका रोज का खाना बेहद पोषक होगा। ''वे ज्यादा मात्रा में मटन एवं दुध पर जिते थे।'' ऐसा क्रिस्तियनसेन ने कहा है। ''वे लोग बहुत सेहतमंद, तंदुरुस्त तथा प्रकृति से हृष्ट-पुष्ट थे।'' ऐसा आगे क्रिस्तियनसेन ने कहा है।

लड़ाकू युवा यामनया लोगों ने योरोप के प्रदेश पर आक्रमण किया था इस बात से हेयड सहमत है किन्तु कुछ ही स्थानों की खुदाई से यह बात उजागर हुई है ऐसा उनका कहना है। ''इतने कम मिसालों के आधार पर यामनया लोग हिंसा के जरिये सब तरफ फैल गये और आगे चलकर उन्होंने कॉर्डेड वेअर लोगों को जनम दिया ऐसा नहीं कह सकते'' ऐसा हेयड इन्होंने कहा है।

फिर भी बहुत से पुरातत्वविदों ने डीएनए अनुसंधान के आधार पर उजागर हुये नये नये निष्कर्षों को मान्य किया है। नॉर्वे के ऑस्लो युनिवर्सिटी के मार्टिन फुरहोल्ट इन्होंने यह सवाल खड़ा किया कि, अनुवंशशास्त्रज्ञ (जेनेटिस्ट) योरोप के अतिप्राचीन इतिहास दक्खन-पूरब के यामनया, उत्तर-पश्चिम के कॉर्डेड वेअर लोग इस तरह बड़े गूटों में विभाजित करते हैं, किन्तु इन दोनों ही गूटों में एक ही प्राचीन मूल आनुवंशिकता प्राप्त होती है, ऐसा उनका कहना है।

''एक ही वंश के दो अलग अलग गूट एक समान ही आनुवंशिकता का वहन करती है उनमें भेद करके उन्होंने गलत निष्कर्ष निकाला है ऐसा इतिहास में कई मर्तबा हुआ है।'' यह आगे फुरहोल्ट ने कहा है, नस्ल यह पिता की ओर से प्राप्त आनुवंशिकता से ही बनती है, तो पहचान संस्कृति से तय होती है। ''आनुवंशिक शास्त्रज्ञ नस्ल की ओर देखते है, तो पुरातत्वविद् पहचान की ओर देखते है।'' ऐसा हेयड जवाब दिया।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

देखें : डेव्हिड रिच की बातचीतः न्यू सायंटिस्ट लाईव्ह से ''हमारा ऐतिहासिक सत्य और हम कहाँ से आये है।''

आनुवंशशास्त्रज्ञ तथा पुरातत्वविद् इनमें बहुत ज्यादा फर्क होता है यह समझने की अच्छी मिसाल हैं दक्खन स्पेन के व्हालेन्सीना डे ला कंसेप्सीयन में हुआ अनुसंधान है। उस स्थान पर अनुसंधान करनेवाले पुरातत्वविदों को कब्र में दफ़नाया हुआ एक इन्सान प्राप्त हुआ। उसके पास एक बड़ा चाकू था तथा यामनया समान उसकी सैंडल थी तथा उसके शरीर पर लाल रंग से रोगन किया हुआ था। किन्तु यह शव ४८७५ सालों पहले का है और जेनेटिक्स कहता है कि, ४५०० सालों पहले तक उस प्रदेश तक यामनया लोग पहुँचे ही नहीं थे। ''आनुवांशिक दृष्टि से सोचा जाये तो उस व्यक्ति का यामनया या कॉर्डेड वेअर संस्कृति से कुछ ताल्लुक नहीं है।'' ऐसा हेयड ने कहा। किन्तु सांस्कृतिक दृष्टि से सोचने पर उसका इस संस्कृति से ताल्लुक होने का खुलासा होता है। ऐसा आगे हेयड ने कहा है। इससे मतलब यह है कि, यामनया लोग यह नये प्रदेश में दाखिल होने से पहले ही उनकी रीति रिवाज तथा शवों को दफ़नाने की परम्परा उस प्रदेश में पहुँच गई थी।

प्राचीन इतिहास की घटनाऐं कितनी पेचीदा थी यह जेनेटिक्स से समझ में आता है ऐसा हेयड ने कहा। पिछले साल प्रकाशित हुये अनुसंधान में इस बात का खुलासा हुआ हैं। प्राचीन ब्रिटिश लोग जिन्होंने बड़े बड़े स्टोनहेंन्ज बनाये थे, वे इतिहास से गायब हो गये है। उनके में से कुछ ही अब तक बचे हैं। जिस अनुसंधान से नयी जानकारी उजागर करने के लिए रिच, सिलरस्लेव, हेयड तथा क्रिस्तियनसेन यह जेनेटिक शास्त्रज्ञ इकट्ठे हुये है। इस तरह के अनुसंधान में अनुवंश-शास्त्रज्ञ यह पुरातत्वविदों को पिछे छोड़ रहे है ऐसी ख़बर एक मशहूर समाचार में हाल ही में प्रकाशित हुई हैं। हेयड का तजुर्बा मात्र उस तरह का नहीं है। ''आज भी वो हमारा कहना मानते है।'' ऐसा हेयड ने कहा।

कॉर्डेड वेअर लोगों के कुछ काल पश्चात् योरोप में निर्माण हुये बेल बिकर लोगों की जानकारी प्राप्त करने के लिए उपरोक्त दोनों शास्त्रज्ञ इकट्ठे हो

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

गये। कुछ मामलों में वे यामनया लोगों समान ही थे। वे उनके शवों को एक ही कब्र में दफ़नाते थे। उनके लड़ाकू लोगों की वे तारीफ़ करते थे और उनकी तसवीर बड़े बड़े पत्थरों पर तराशते थे। इससे यही निष्कर्ष निकलता है कि, बेल बिकर लोग (Bell Beaker People) यामनया लोगों के उत्तराधिकारी होंगे। फिर भी पुरातत्वविदों ने यह साबित किया कि, यह केवल अर्धसत्य ही है।

दोनों शास्त्रज्ञों ने संयुक्त अनुसंधान से यह निष्कर्ष निकाला है कि, मध्य योरोप में बेल बिकर संस्कृति का विस्तार करने का यामनया या कॉर्डेड वेअर संस्कृति का जरा भी आनुवंशिक ताल्लुक नहीं है। ऐसा हेयड का कहना है। ''बेल बिकर कल्चर यह पश्चिम आयबेरिया में शुरु हुआ था।'' ऐसा हेयड का कहना है। इसी प्रदेश के पुरातात्विक उत्खनन से प्राप्त ४७०० सालों पहले का तीर का नोक, तांबे का ख़ंजर एवं सुराहीदार बर्तन (Bell-shaped pot) प्राप्त हुये थे। उसके बाद बेल बिकर कल्चर पूरब की ओर फैलने लगा था। किन्तु उनमें से कुछ या ज्यादा लोग वहीं रह गये। ४६०० सालों पहले या आसपास के काल में वे लोग कॉर्डेड वेअर लोगों के पश्चिमी हिस्से तक पहुँच गये जिनके ईर्द-गिर्द अब हमें नेदरलँड यह प्रदेश नज़र आता है। आगे कॉर्डेड वेअर लोगों ने बेल बिकर लोगों की संस्कृति अपनाई। ''उन्होंने बेल बिकर लोगों की तमाम बातें अपना ली तथा वे स्वयं बेल बिकर बन गये।'' ऐसा क्रिस्तियनसेन ने कहा है।

आनुवांशिकता पूरी तरह मिटाई गई

अब यहाँ दो तरह के बेल बिकर कल्चर के लोग रहने लगे थे। एक का मूल आयबेरिया में था, तो दुसरे का ताल्लुक कॉर्डेड वेअर लोगों से था। (जो कि यामनया लोग ही थे) क्रिस्तियनसेन इन्हें लगता था कि, बाद में यामनया बिकर इन्होंने आयबेरियन बिकर से समंदर यात्रा का ज्ञान प्राप्त किया और ४४०० सालों पहले उन्होंने समंदर मार्ग से ब्रिटन की ओर प्रस्थान किया। (नक्शा देखें)। जेनेटिक्स कहता है कि, उसके बाद कुछ पुश्तों तक ब्रिटन के मूलनिवासी लोग गायब हो गये और यह बात बहुत ध्यान देने लायक है। इससे युरेशियन स्टेप लोगों के आक्रमक हिंसा का स्वरुप समझ में आता है- यह लोग युरेशियन स्टेप प्रदेश

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

से यामनया बनकर योरोप में गये एवं कॉर्डेड वेअर में (जनेऊधारी) तब्दील हो गये और तत्पश्चात् आगे वे बेल बिकर के रुप में तब्दील हो गये।

वाकई, उपरोक्त सबूत यही साबित करते है कि, यामनया बिकर्स बेहद ज़ालिम थे। ४५०० सालों पहले आसपास के काल में उन्होंने पश्चिम की ओर आयबेरिया में कूच किया, जहाँ बेल बिकर कल्चर कुछ सदियों पहले ही उदित हुये थे। कुछ सदियों में ही वहाँ के लोगों की आनुवांशिकता में यामनया बिकर्स की आनुवंशिकता की मात्रा में ४०% से बढ़ोत्तरी हो गई और यह निष्कर्ष डेव्हिड रिच इनके बड़े दल ने डीएनए अनुसंधान के जरिये उजागर की। खास बात यह है कि, उस अनुसंधान के डीएनए व्यवच्छेद में इस बात का खुलासा हुआ कि, वहाँ तमाम आदमियों में यामनया लोगों के Y गुणसूत्रों में लक्षण पाये गये। जो यह दर्शाते है कि, वहाँ के लोगों में केवल यामनया आदमियों को ही बच्चे हुये थे। (इसका अर्थ यह है कि, आनेवाले आक्रमणकारी यामनया लोगों ने वहाँ के मूल आदमियों को खत्म किया होगा और वहाँ की महिलाओं से संतान उत्पन्न किया होगा, लिहाज़ा तमाम संतानों में Y गुणसूत्र यामनया के Y गुणसूत्रों से मेल खाते हैं - संपादक)

''आनुवंशिकता की छान-बिन यही दर्शाता है कि, स्टोनहेन्ज, जिसे मूल ब्रिटिशों ने बनाया था यामनया के आगमन पश्चात् कुछ ही सदी में लुप्त हो गये।''

''उपरोक्त दो समूहों की मुठभेड़ दोस्ताना नहीं थी ना ही बराबरी की थी बल्कि स्थानिक पुरुषों को बाहरी पुरुषों ने पूरी तरह से उनके स्थान से हटा दिया।'' डेव्हिड रिच इन्होंने न्यू सायंटिस्ट लाईव्ह से बोलते हुये कहा।

यामनया तथा उनके उत्तराधिकारी बेहद ज़ालिम थे, क्रिस्तियनसेन के इस कहने को उपरोक्त सबूतों से पुष्टि मिलती है। वे लोग ही योरोप में नवपाषाण युग में बड़ी मात्रा में नरसंहार करने के लिए जिम्मेदार थे यह साबित करनेवाला एक आलेख ही लिखने का उनका विचार है। ''नवपाषाण युगीन स्थानिक आदमियों का वंश क्यों नहीं टिक पाया इसका इस तरह खुलासा होता है।'' आगे उन्होंने कहा।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

सबसे हैरतअंगेज बात यह है कि, यह कोई नई कल्पना नहीं है। २० वीं सदी के कुछ अहम पुरातत्वविदों ने यह राय दी कि, ५००० सालों पहले स्टेप लोगों का योरोप में आगमन हुआ था। उनमें से एक मारिया गिंबुतास इन्होंने राय दी है कि, वाकई! वे लोग बेहद ज़ालिम थे और उन्होंने ही योरोप में उस वक्त हिंसक माहौल बनाया था तथा सामाजिक संरचना में तब्दीली करवाई थी। उनके इस विचारों को उस वक्त बहुत खिलाफत का सामना करना पड़ा। ‘‘किन्तु वक्त इस क़दर बदल चुका है कि, अब वर्तमान में गिंबुतास ने १९६० में जाहिर किये विचारों से अनुवंशशास्त्रज्ञ सहमत हो रहे है।’’ ऐसा हेयड ने कहा।

और कहना हो तो यामनया लोगों ने उनकी दृष्टि केवल योरोप तक ही सीमित नहीं रखी। हाल ही में आनुवांशिक अनुसंधान ने यह स्पष्ट किया है कि वे लोग पूरब के भारतीय महाद्वीप में भी घुस गये थे। (‘Europe is not enough’ योरोप ही काफ़ी नहीं है यह आर्टिकल भी पढ़े)

भले ही इतिहास के बेरहम हत्यारे वे लोग ना हो फिर भी वे बहुत बड़े प्रदेश पर दूर तक पहुँच गये थे। इसलिए यामनया लोगों की जानकारी को दुनिया भर में सब तरफ पढ़ा जा रहा है। बड़ी मात्रा में जनसमूहों का स्थानान्तरण होता है यह सोच तो हमारे दिमाग में भी नहीं आई थी। किन्तु वर्तमान सामाजिक तथा राजनीतिक माहौल को देखकर हमें उस पर यकिन हो गया ऐसा हेयड ने कहा। तमाम जागतिक स्तर पर नये नये गुटों को निर्माण करनेवाली शक्ति से अब हम अच्छी तरह वाकिफ़ हो गये है।

योरोप ही काफ़ी नहीं है।

फिलहाल योरोप में रहनेवाले तकरीबन सारे लोगों के आनुवंशिक मूल यह युरेशियन स्टेप प्रदेश के लोगों की आनुवंशिकता से मेल करते है। अब हाल ही में यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि, यामनया तथा उनके वंशज अलग अलग महाद्वीपों में गये और वहाँ के स्थानिक आदमियों का कत्त्ल करके उन्होंने स्थानिक लोगों का नामोनिशान मिटा दिया। अब हमें अनुसंधान से समझ में आ गया है कि, यामनया लोग पूरब की ओर भी गये थे।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

हार्वर्ड मेडिकल स्कूल के डेव्हिड रिच तथा उनके सहचारी द्वारा २०१८ में 'bio Rxiv Preprint server' में लिखे गये अनुसंधान में यामनया लोगों ने कब व किस तरह दुनिया के अन्य स्थानों पर भी घुसपैठ की इसकी जानकारी मौजूद थी। ७००० से ३००० सालों पहले दक्खन एशिया में उस वक्त रहनेवाले तकरीबन सौ से ज्यादा उन्होंने ढूँढ के निकाले कि, ४००० से ३००० सालों पहले यामनया से जुड़ा डीएनए इस क्षेत्र में दिखना शुरु हुआ था।

यह स्टेप पशुपालन लोग मशहूर सिंधु संस्कृति के लोगों में मिल गये होंगे, ऐसा करते हुये उन्होंने 'प्राचीन उत्तर भारतीय' (Ancient North Indians (ANI)) इस समूह को जन्म दिया। यह समूह भारतीय महाद्वीप के दो में से एक समूह है। उसपर भी आनेवाले स्टेप लोगों ने सिंधु प्रदेश की स्थानिक सभ्यता में बड़े ही बदलाव किये। रिच ने आगे न्यू सायंटिस्ट लाईव्ह से बातचित करते हुये कहा कि, भारतीय महाद्वीप में उत्तर भारतीय आनुवांशिकता (ANI) वहन करनेवाले बहुत ज्यादा लोग है और वे एक ही भाषा बोलते है और वे अक्सर (लगातार नहीं) उँचे वर्ण में ही आते हैं।

योरोप की तरह भारत में आनेवाले युरेशियन स्टेप मुख्य रुप से युवा एवं बेरहम पुरुष थे। युके में हडर्सफिल्ड युनिवर्सिटी के मार्टिन रिचर्डस तथा उनके सहकर्मीयों ने अपने अनुसंधान में यह खोज की कि, युरेशियन स्टेप लोग सिंधु प्रदेश में मायटोकॉंड्रियल डीएनए के सिक्वेन्सेस में थोड़ा बहुत बदलाव हुआ है। इसके उल्टे इस प्रदेश में रहनेवाले पुरुषों में ६० से ९०% पुरुषों के Y गुणसूत्र यह यामना के Y गुणसूत्र से मिलते हैं। (यह गुणसूत्र केवल ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य इनमें बड़ी मात्रा में पाये जाते हैं। ...संपादक)

नये आनेवाले लोगों ने महिलाओं के बजाय आदमियों को पिछे छोड़ दिया था और यामनया समान स्थानिक पुरुषों को संतान भी कम होती थी। ऐसा रिचर्डस इन्होंने कहा, ''किन्तु यह क्रिया इतनी सरलता से नहीं हुई होगी।'' ऐसा उन्होंने आगे कहा।

****

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

अध्याय – ३

भारत में आर्यों का स्थानान्तरण नये अनुसंधान से पुष्टि!

–टोनी जोसेफ, दि. १३ सितम्बर, २०१९

''आर्य मध्य एशिया के स्टेप प्रदेश के घुमन्तु लोग थे जो भारत में तकरीबन इ.स.पूर्व २००० से १५०० के दरमियान दाखिल हुये थे जिन्होंने अपने साथ इंडो–योरोपियन भाषा लाई थी।''

– –

पिछली बार मार्च, २०१८ में 'दक्खन व मध्य एशिया की आनुवांशिक संरचना' नाम का एक अनुसंधान लेखापत्र ऑनलाईन प्रकाशित हुआ था, जिसने भारत तथा तमाम दुनिया में सनसनी फैला दी थी। जिसकी अहम वज़ह थी वह लेखापत्र, जिसे अलग अलग क्षेत्र के ९२ दिग्गज शास्त्रज्ञों ने लिखा था और उसमें उन्होंने कहा था कि, इ.स.पूर्व २००० से इ.स. पूर्व १००० इस दौर में मध्य एशिया के स्टेप प्रदेश से लोगों का बड़ी तादाद में स्थानान्तरण हुआ था और उन्होंने ही भारत में इंडो–योरोपियन भाषा लाई थी। उसी तरह स्टेप प्रदेश के लोगों ने इ.स.पूर्व ३००० में योरोप में स्थानान्तरण किया तब वहाँ पर भी वे इंडो–योरोपियन भाषा साथ लेकर गये थे। दूसरे लफ़्ज़ों में कहा जाये तो आर्यों का स्थानान्तरण भारत में हुआ था। इस कल्पना को उपर्युक्त अनुसंधान ने वैज्ञानिक पुष्टि दी है। या साफ शब्दों में कहा जाये तो इंडो–योरोपियन भाषा बोलनेवाले लोग जो स्वयं को आर्य कहलवाते है उनका भारत में बाहर से स्थानान्तरण हुआ हैं।

उस खोज में बहुत सी पहलू ऐसे हैं कि, जो कई लोगों को पसंद नहीं आए और जिससे उस लेखापत्र के खिलाफ अहम विरोध दर्शक रचना यह थी कि वह लेखापत्र विशेषज्ञ से समीक्षित नहीं किया गया और छपाई होने से पहले ही उसे ऑनलाईन प्रकाशित किया। दरअसल वह तो सायंटिफिक रिपोर्ट है और दुनिया के मशहूर अलग अलग ९२ वैज्ञानिकों ने मिलकर तैयार किया है और उनमें

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

बहुत से भारतीय भी है। किन्तु यह बात उनके लिए (विरोधक के लिए) कोई मायने नहीं रखती। उस लेखापत्र में अग्रक्रम में वाघीश नरसिंहन यह हार्वर्ड मेडिकल स्कूल के है, जबकि कुमार सामी थंगराज यह सेंटर फॉर सेलुलर अॅण्ड मोलीक्युलर बॉयोलॉजी के को-डायरेक्टर है तथा साथ में डेव्हिड रिच यह हॉर्वर्ड मेडिकल स्कूल के वैज्ञानिक है, साथ में बिरल साहनी इन्स्टिट्यूट फॉर पॅलीओ सायन्स के नीरज राय तथा डेक्कन कॉलेज के डायरेक्टर वसंत शिंदे भारतीय वैज्ञानिक भी उपरोक्त अनुसंधान में शामिल हैं।

और भी अतिरिक्त सबूत

खैर, अब तो रिसर्च पेपर (लेखापत्र) वैज्ञानिकों से जाँच कर मशहूर जर्नल सायन्स में वह प्रकाशित किया गया है। पिछले साल ९२ से अब उसमें वैज्ञानिकों का इज़ाफा होकर ११७ हो चुके हैं। उस लेखापत्र का नाम 'दक्षिण एवं मध्य एशिया के मानवी आबादी की उत्पत्ति' रखा गया। और अहम बात यह है कि स्टेप से लोगों के स्थानान्तरण के सवाल पर उस लेखापत्र का क्या कहना है? वहीं मुद्दे किन्तु और भी अतिरिक्त सबूतों के साथ। यहाँ पर तुरंत एक उद्धरण दे रहा हूँ और वह महज एक उद्धरण ही नहीं है बल्कि उस लेखापत्र का मूल सार हैं :-

''५२३ प्राचीन मानवों के जिनोम का सिक्वेंसिंग करके से हमने यह दिखाया कि, आधुनिक दक्षिण (दक्खन) एशिया के मानवों के प्रागैतिहासिक आनुवांशिक मानव के वंशज यह ईरान के प्राचीन शिकारी तथा दक्षिण एशिया के लोग इनके मिश्रण से बने हुये वंशज हैं। सिंधु संस्कृति का अन्त होने के बाद वहाँ के लोग दक्षिण-पूरब लोगों से मिल गये। (याने उत्तर पश्चिम भारत का दक्षिण-पूरब हिस्सा जहाँ पर सिंधु संस्कृति पनप रही थी।-संपादक) और उन्होंने दक्खन एशिया में दो में से एक आनुवांशिक आबादी तैयार कर ली। (जिन्हें पैतृक (ancestral) दक्षिण भारतीय कहते है-संपादक) जिनकी वंशागत संतान दक्षिण भारत में रहते हैं। इसके साथ ही वे लोग स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट के लोगों के साथ मिल गये। वे लोग तकरीबन ४ हजार सालों पहले मध्य एशिया से नीचे बढ़ते गये थे और उन्होंने भारत के दो में से एक आनुवांशिक जनसमूह का निर्माण किया।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

(पैतृक उत्तर भारतीय कहते है-संपादक) दक्षिण एशिया के स्टेप आनुवांशिकता की संरचना यह पूरब योरोप के कांस्य युगीन आनुवांशिकता समान ही है। जिसका मतलब यह है कि, एक ही क्षेत्र से दो अलग अलग दिशाओं में फैले हुये लोगों ने योरोप तथा दक्षिण एशिया इन दोनों क्षेत्रों पर प्रभाव डाला और शायद इसलिए इंडो-इरानियन तथा बाल्टिक-स्लेव भाषा में असमान गुण है।''

प्रारम्भिक भारतीय

यह वैज्ञानिक अनुच्छेद निरर्थक बकवाद ना लगे इसलिए इसका अर्थ यह है - दक्षिण पूरब आशिया के अतिप्राचीन घुमन्तु शिकारी (शिकार इकट्ठा करनेवाले लोग) अंदमानी समूहों को कहा गया है। जिसका जिक्र उपरोक्त लेखापत्र में संक्षिप्त में AHG (or Andamanese Hunter Gatherers) किया हुआ है। ये वहीं लोग हैं जिन्हें AASI (Ancient Ancestral South Indians) या प्रारम्भिक भारतीय कहा गया हैं। प्रारम्भिक भारतीय (First Indians) इस शब्द का इस्तेमाल मैंने मेरी किताब पूर्व भारतीय (Early Indians) में किया है। नाम कोई भी इस्तेमाल करो फरक नहीं पड़ता। उन्हें दक्षिण एशिया के घुमन्तु शिकारी AHG या प्रारम्भिक भारतीय कहो - किन्तु तकरीबन ६५,००० सालों पहले आफ्रिका से भारत में स्थानान्तरण किये हुये वंशजों के वे सन्तान है और उसके बाद वे आगे दक्षिण एशिया, पूर्व एशिया और उसके आगे बढ़ते गये।

अतेव, संक्षेप में कहा जाए उसका तो सीधा अर्थ यह है : दक्षिण एशिया के लोगों का मौलिक स्त्रोत यह प्रारम्भिक भारतीय तथा ईरान के घुमन्तु शिकारी के मिश्रण से हुआ है। इस मिश्रण ने जनसंख्या से उत्तर पश्चिम भारत में कृषि क्रान्ति करके हडप्पा संस्कृति को जन्म दिया। जो हडप्पा संस्कृति इ.स.पूर्व २००० के लम्बे में सूखे की वजह से खत्म हो गई और उसके बाद हडप्पा लोगों ने दक्षिण पूरब दिशा की ओर स्थानान्तरण किया (उत्तर-पश्चिम भारत से) वहाँ के प्रारम्भिक भारतीयों से मिलकर पैतृक दक्षिण भारतीय (ASI - Ancestral South Indian) आबादी का निर्माण करने लिए, जिनके वंशज फिलहाल दक्षिण भारत में निवास करते हैं।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

लगभग उसी वक्त हडप्पा के लोग मध्य एशिया से आनेवाले स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट इन लोगों मिल गये और उन्होंने अॅन्सेस्ट्रल नॉर्थ इंडियन (ANI) यह समूह बनाया। दक्षिण एशिया तथा पूर्व योरोप इन दोनों स्थानों पर कांस्य-युगीन स्टेप आनुवांशिकता के लोग प्राप्त होने से मध्य एशिया से स्टेप लोगों का स्थानान्तरण किस तरह हुआ यह समझ में आता है। और इसी से इंडो-ईरानियन एवं बाल्टिक भाषा में इतनी ज्यादा समानता क्यों है यह साबित होता हैं।

स्टेप लोगों का स्थानान्तरण किस तरह हुआ यह उपरोक्त अनुसंधान में और भी स्पष्ट तरीके से बताया गया है। उस अनुसंधान के लेखापत्र में दूसरा कथन यह है कि- ''इ.स.पूर्व २००० से १००० के दरमियान मध्य स्टेप प्रदेश के लोग MLBA (Middle to Late Bronze Age) इस आनुवांशिकता के लोग दक्खन एशिया की दिशा की ओर स्थानान्तरित हुये और इंडस पेरिफेरी क्लाईन के लोगों में मिलकर उन्होंने स्टेप क्लाईन बनाई।''

वर्तमान आनुवांशिक अनुसंधान ने आर्यों के स्थानान्तरण का खण्डन किया ऐसा आपको लगता होगा तो उपरोक्त उद्धरण आपको हैरान कर देगा, फिर आपको इस मामले से निपटना होगा क्योंकि, आपमें सरासर गलतफहमी पैदा करनेवाले सूर कुछ अख़बार, पत्र-पत्रिकाओं ने निकाले। स्टेप लोगों का भारत में स्थानान्तरण के बारे में वैज्ञानिक अध्ययन ने पहले ही जाँच करके और भी ठोस सबूत दिये हैं, किन्तु ''नये आनुवांशिक अध्ययन ने आर्यों के स्थानान्तरण सिद्धान्त को काट दिया।'' ऐसा शीर्षक कई अख़बार और वेबसाईट्स ने देकर अपने हाथ खींच लेना पसंद किया।

तो कैसे भारतीय संचार माध्यम (Media) सीधी बात को घुमाकर बिलकुल ही विरुद्ध बना देती है? इसका जवाब पाने के लिए हमें दूसरे अध्ययन की ओर देखना होगा जो कि उसी वक्त प्रकाशित हुआ था। ४६०० सालों पहले हडप्पा काल के राखीगढ़ी से प्राप्त एक प्राचीन महिला के डीएनए का वह अनुसंधान है और वह Cell जर्नल में प्रकाशित हुआ था एवं २८ वैज्ञानिकों ने मिलकर वह अनुसंधान किया था जिसमें थंगराज रिच, नरसिंहन तथा राय थे और उनके प्रमुख शिंदे थे। उस अनुसंधान का शीर्षक बिलकुल सीधा साधा था -

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

''प्राचीन हडप्पा काल के जिनोम में स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट या ईरानी खेतिहर की अनुवांशिकता की कमी।'' किन्तु इस सीधे शीर्षक से पत्रकारों ने यह निष्कर्ष निकाला कि, भारत में आर्यों का स्थानान्तरण हुआ ही नहीं।

यदि पत्रकार लोगों ने 'सेल' के वैज्ञानिक अनुसंधान के रिपोर्ट का कम से कम सार भी मन लगाकर पढ़ा होता तो उन्हें इतने जल्दबाजी में इस तरह का फैसला लेने की नौबत नहीं आती। उस रिपोर्ट का सार सीधा-सीधा इस तरह है - ''इन लोगों में स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट के बारे में आनुवांशिकता बिलकुल भी नहीं मिली, जिसका मतलब है कि, आज जिस मात्रा में वे दक्षिण एशिया में मौजूद है उसी तरह सिंधु संस्कृति काल में वह दक्षिण एशिया के उत्तर-पश्चिम हिस्से में मौजूद नहीं थी।'' इसका साफ अर्थ है कि, आज के वर्तमान काल में दक्षिण एशिया में स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट आनुवांशिकता सब तरफ मौजूद हैं। किन्तु सिंधु संस्कृति के काल में मात्र वह आनुवांशिकता दक्षिण एशिया में नहीं फैली थी। (आज के दौर में स्टेप आनुवांशिकता दक्षिण-एशिया में सब तरफ किस तरह हैं? नये अनुसंधान में इस बारे में आँकडे भी मौजूद है :- भारत के कुछ जन समूहों में स्टेप आनुवांशिकता की मात्रा ३०% तक हैं।)

इसकी एक ही सम्भावना है कि, हडप्पा संस्कृति के पतन के बाद भारत में स्टेप लोगों का आगमन हुआ था इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है क्योंकि इ.स.पूर्व २००० बाद स्टेप प्रदेश से आर्यों का आगमन हुआ ऐसा समझा जाता था, लिहाजा किसी ने अपने दिमाग में यह सोच लिया कि, इ.स.२६०० के राखीगढ़ी से प्राप्त कंकाल में यदि स्टेप आनुवांशिकता का अभाव पाया गया इसका सीधा मतलब यही है कि उस वक्त वे हडप्पा संस्कृति में दाखिल नहीं हुये थे बल्कि बाद के काल में उनका आगमन हुआ। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो हडप्पा संस्कृति आर्य पूर्व संस्कृति है और उनकी बोलीभाषा भी आर्य के पहले की ही है।

तो, नया क्या?

'सेल' पत्रिका, असल में सच कह रही है कि, इ.स. पूर्व २००० के बाद स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट के साथ इंडो योरोपियन भाषा भारत में आ गई थी। यहाँ पर मैं

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

उस पत्रिका का उद्धरण दे रहा हूँ जिसमें स्थानान्तरण के बारे में एक भी शब्द मौजूद नहीं है कि, इ.स.पूर्व २००० से १५०० के दरमियान मध्य एशिया के स्टेप प्रदेश से भारत में आनेवाले लोग इंडो-योरोपियन भाषा लेकर आये थे। ''हालाँकि, पूर्व योरोप से मध्य एशिया की ओर से दक्खन एशिया में इ.स.पूर्व दूसरी सहस्राब्दी के अर्धांश में इंडो-योरोपियन भाषा का प्रचार होने का प्राकृतिक मार्ग यह आनुवांशिक श्रृंखला के प्रसारण से मेल करता है और उसे प्राचीन डीएनए अनुसंधान के दस्तावेज में ब्यौरेवार स्पष्ट किया है। हक़ीकत यह है कि, दक्षिण एशिया के स्टप पॅस्टोरॅलिस्ट आनुवांशिकता यह पूर्व योरोप के कांस्य युग की आनुवांशिकता से मिलती है (किन्तु पश्चिमी योरोप से नहीं)। यह जानकारी उपरोक्त सिद्धान्त के लिए अतिरिक्त सबूत है। क्योंकि उस सिद्धान्त में बाल्टो स्लाविक तथा इंडो-ईरानियन भाषा से जुड़े हुये कुछ विशेष गुण सांझा किये हैं।''

उनमें से दो मौलिक मुद्दे : हडप्पन कौन थे और आर्य कौन थे, इस सटीक पूर्वकथित निष्कर्ष से नये यह दो नये विषय उजागर हो गये है। हडप्पन लोग वे थे जिन्होंने उत्तर-पश्चिम भारत में कृषि क्रान्ति की थी और उसके बाद उन्होंने हडप्पा संस्कृति का गठन किया जिनमें प्रारम्भिक भारतीय तथा ईरानी लोग थे जो आर्यपूर्व भाषा बोलते थे। आर्य यह मध्य एशिया के स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट लोग है जो भारत में तकरीबन इ.स.पूर्व २००० से १५०० के दरमियान आये थे और भारतीय उपखण्ड में इंडो-योरोपियन भाषा लेकर आये थे। दो अनुसंधानों में क्या फर्क है? कुछ भी नहीं। बल्कि दोनों का निष्कर्ष एक ही हैं। इसमें हैरानी वाली बात नहीं कि, दोनों ही अनुसंधान एक ही समय पर प्रकाशित हो गये थे और उनके लेखक भी बहुत से एक समान ही थे।

किन्तु उन दो अनुसंधानों में से नये अनुसंधान में कुछ अलग है क्या, जो हमें पहले ज्ञात नहीं था? हाँ, कुछ अंश तक। मिसाल के तौर पर, दक्षिण तथा मध्य एशिया की जिनोमिक संरचना के पूर्व अनुसंधान में कहा गया है कि, ईरान से स्थानांतरित हुये और प्रारम्भिक भारतीय के साथ मिश्रित हुये लोग कहते थे कि, ईरानी लोग भारत में खेती विकास के पहले ही आये थे या संसार में पशुपालन शायद ही कही शुरुआत हो गई थी उस वक्त आये थे। दूसरे शब्दों में कहा जाए

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

तो यही स्थानांतरित लोग शिकारी, घुमन्तु लोग थे जिसका मतलब यह है कि, उन्होंने अपने साथ खेती का ज्ञान नहीं लाया था। मेरे 'अर्ली इंडियन्स' इस किताब में मैंने यह बात उजागर की है कि, खेती तन्त्र का इस्तेमाल भारत में खुलकर शुरु हो चुका था और इस मुद्दे के समर्थन में मैंने यह सुझाया था कि, संसार में अन्य कहीं पर भी नहीं बल्कि केवल भारत में ही झेबू मवेशी एवं पाणी की भैस को पालतू बनाने प्रक्रिया भारत में शुरु हो गई थी।

और भी कुछ जानकारी इस प्राचीन स्थानान्तरण पर और रोशनी डाल सकती है। जिस स्थानान्तरण ने भारत की जनसांख्यिकी (डेमोग्राफी) बदल दी। मिसाल के तौर पर पहले के अनुसंधानकर्त्ताओं ने यह कहा था कि, स्टेप लोगों का स्थानान्तरण यह इ.स.पूर्व २००० से १००० के दरमियान हुआ हैं। सायंस जर्नल में नये अनुसंधान ने इसका दौर इ.स.पूर्व २००० से इ.स.पूर्व १५०० के बिच में याने इ.स.पूर्व दूसरी सहस्राब्दी के पूर्वार्ध में ही सीमित किया। इसका कारण यह है कि, इ.स.पूर्व १५०० के बाद मध्य एशिया की जनसंख्या में पूर्व एशियायी आनुवांशिकता अधिक मात्रा में प्राप्त हो गई जिस पर भारत में गौर नहीं किया गया।

नये अनुसंधान में एक और गुगली डाली गई कि, 'भारत के बाहर' स्थानान्तरण हुआ है। यह पहलू भी गुमराह कर रहा है। यदि हम हक़ीकत की ओर इशारा करते है तो हडप्पा लोग उनके पड़ोसी सभ्यता या संस्कृति को अक्सर भेंट दिया करते थे जैसे बॅक्ट्रिया मार्जियाना आर्कियोलॉजिकल कॉम्पलेक्स (BMAC), शहर-ए-सोख़्ता जहाँ से वे व्यापार किया करते थे और उनका सांस्कृतिक सम्पर्क था इसलिए 'भारत के बाहर' स्थानान्तरण ये बिलकुल भी हैरानी वाली बात नहीं है।

किन्तु यदि 'भारत के बाहर' स्थानान्तरण, हमारा मतलब है बड़ी मात्रा में स्थानान्तरण, प्रागैतिहासिक भारतीय का पश्चिम की ओर संस्कृति तथा भाषा का प्रचार करने के लिए हडप्पा से आईसलैंड तक स्थानान्तरण इसका लेशमात्र प्रमाण, आनुवांशिकता या कुछ और यह सिद्ध करने के लिए मौजूद नहीं है। यह उस अध्ययन का भी खण्डन करती है कि, मध्य एशिया से स्टेप लोगों ने

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

स्थानान्तरण से इ.स.पूर्व २००० के बाद में भारत में इंडो-योरोपियन भाषा लाई थी।

डीएनए पर दलीलें

एक सवाल हमेशा खड़ा होता है : थोड़े से नमूने के आधार पर प्राचीन डीएनए अनुसंधान इतने जबर्दस्त कैसे हो सकते है? इसका जवाब है कि सर्वेक्षण के दौरान किसी इन्सान को हाँ या ना इस तरह के सवाल पूछते है उसी तरह जिनोम की ओर देखना महज एक गलती होगी। केवल एक जिनोम भी उसमें उस व्यक्ति की हजारों या सैंकड़ों हजारों सालों पहले की आनुवांशिक जानकारी वहन करते हैं। इसलिए हम जब जिनोम की सिक्वेंसिंग करते है जैसे कि राखीगढ़ी की महिला में एक जिनोम प्राप्त हुआ तो उसके द्वारा हमें उस महिला के हजारों सालों पहले पुरखों के जिनोम की जानकारी उस एक जिनोम से प्राप्त कर सकते हैं, इसलिए जनसंख्या की जेनेटिक स्टडी के कुछ थोड़े से नमूने भी पूरी पहचान मुहैया करवा सकती है।

अहम बात यह है कि, वर्तमान के यह दो अध्ययन बारह प्राचीन डीएनए सॅम्पल पर निर्भर है : राखीगढ़ी से एक, पश्चिम ईरान के शहर-ए-सोख्ता से ८ तथा कॅपिटल बीएमएसी के गोणूर के ३ सॅम्पल इनमें है। पिछले साल जो अध्ययन प्रकाशित हुआ था वह केवल शहर-ए-सोख्ता तथा गोणूर के ३ नमूनों पर निर्भर थे। अब नमूनों की संख्या तिगुना हो गई है।

पिछले साल के अध्ययन में जो ३ सॅम्पल जाँच के लिए, लिये गये थे उन्हें हडप्पा लोगों का प्रतिनिधि इसलिए माना गया था क्योंकि, उस वक्त के अन्य हडप्पा जनसंख्या में से वे बाहरी थे (या पराये थे); वे उनके आसपास के दूसरे लोगों से भिन्न प्रारम्भिक भारतीय की महत्वपूर्ण आनुवांशिकता बड़ी मात्रा में वहन कर रहे थे। इससे स्पष्ट होता है कि वे हडप्पा संस्कृति से स्थानान्तरित हुये थे। नया सेल (Cell) अध्ययन इस मानी हुई बात की पुष्टि करता है कि बाहरी लोग असल में हडप्पा शहर से स्थानान्तरित हुये थे क्योंकि राखीगढ़ी डीएनए के नमूने शहर-ए-सोख्ता तथा गोणूर के ११ नमूनों से एकदम सटीक मेल खाते है। इस तरह पहले की गई खोज को इस पुख्ता जानकारी ने फिर से मजबूती प्रदान की है।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

हडप्पन की भाषा के सवाल पर बोला जाए तो २०१८ के अध्ययन में उनकी भाषा द्रविडी होने का जिक्र किया है। नये दस्तावेज ने और ज्यादा गहराई में जानकारी देकर यही कहा है कि, ॲन्सेस्ट्रल साऊथ इंडियन्स (ASI) लोगों की भाषा द्रविडी ही हो सकती है, क्योंकि हडप्पा लोग, प्रारम्भिक भारतीयों में मिलकर द्रविडी भाषा बोलनेवाले ASI लोग तैयार हो गये हैं। अध्ययन कहता है कि, ''सम्भाव्य परिदृश्य जेनेटिक डाटा पुरातत्व विज्ञान तथा भाषाशास्त्र के साथ जोड़कर देखा गया तो पूर्व द्रविडी भाषा सिंधु सभ्यता के लोगों ने ASI के साथ साथ सिंधु सभ्यता में भी फैलाई।'' अनुसंधान में यह बात भी जाहिर की गई है कि, शहर-ए-सोख्ता तथा गोणूर से प्राप्त हडप्पा के स्थानान्तरित ११ लोगों के प्राचीन डीएनए नमूनों में से दो नमूनों में Y क्रोमोझोम तो A1a1d2 यह हॅप्लोग्रुप प्राप्त हुआ है, जो खास करके दक्खन भारतीयों में पाया जाता है।

पाठक वर्ग तथा मीडिया इन दोनों के लिए एक सवाल है। विज्ञान पर अहवाल पेश करते वक्त बाहर क्या कहा जाता है इसके बजाए दस्तावेज में क्या लिखा है यहीं महत्वपूर्ण है। प्रख्यात अखबार में प्रसिद्ध हुये, विशेषज्ञ समीक्षित दस्तावेज तज्ञ होते है जो कि मशहूर वैज्ञानिकों द्वारा लिखे होते है वे ज्यादा पुख्ता तथा टिकाऊ होते है; पत्रकार सम्मेलन में (प्रेस कॉन्फरन्स) शीघ्र व्यतीत होनेवाला कथन अल्पकालिक एवं औंधा, गलत सुना हुआ या गलतफ़हमी पैदा करनेवाला होता है और कभी कभी तो मौजूद सबूतों से असंगत होता है।

(यह लेखक 'Early Indians : The Story of Our Ancestors and Where We Came From के भी रचनाकार है :)

****

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

अध्याय -४

राखीगढ़ी डीएनए रिपोर्ट के बारे में ब्राह्मण-बनिया मीडिया ने झूठी ख़बरें क्यों फैलाई?

डीएनए अनुसंधान यह सबसे ज्यादा उन्नत तथा सटीक तरीका है। ब्राह्मण बनिया मीडिया को यह बात अच्छे से पता है। एन.डी.तिवारी के बारे में जो विवाद उभरा था उसे डीएनए के जरिये छुडाया गया था। यह बात ब्राह्मण लोग जान गये हैं।

राखीगढ़ी डीएनए रिपोर्ट 'सेल' इस जागतिक अखबार में प्रसिद्ध किया गया। उस अहवाल के बारे में डेक्कन कॉलेज के पूर्व व्हाईस चान्सलर डॉ. वसंत शिंदे एवं नीरज राय इन्होंने मूल अहवाल के खिलाफ तथा लोगों को गुमराह करनेवाले बयान दिये। इस बारे में डॉ. वसंत शिंदे इनको भारत मुक्ती मोर्चा के जरिये कानूनी नोटिस भी भेजी गई। वसंत शिंदे ने जो कुछ भी कहा उसे तोड़ मरोड़कर मीडिया ने छाप दिया ऐसा नहीं कह सकते। मेलजोलकर गलत छापा गया या टीव्ही चॅनल पर दिखाया गया। वसंत शिंदे का इस्तेमाल तीसरी शक्ति कर रही है। सवाल यह है कि यह तीसरी शक्ति है कौन? जो शिंदे या मीडिया का इस्तेमाल गलत मक़सद के लिए कर रही हैं? वह है राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ!

२०१४ के चुनाव ईव्हीएम में घपला करके जिते गये। उसपर भाजपा-आरएसएस ने पाठ्यक्रम में बदलाव करने के लिए पं.दीनानाथ बत्रा को आगे किया। विद्या भारती यह आरएसएस की एक प्रशाखा है। पात्रा यह वेंडी डोनिगर के खिलाफ केस करनेवाले के नाम से मशहूर है। हक़ीकत में नेहरु ने ही भारत में भटग्रस्त पाठ्क्रम लागू किया था। नेहरु ने ही भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद को काशी में २०० ब्राह्मणों के पैर धोने के लिए मजबूर किया था।

राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद ने वैसा किया भी। नेहरु ने इस तरह की चेष्टा करके क्या हांसिल किया? तो भारत में प्रजातन्त नहीं बल्कि ब्राह्मणतन्त्र लागू

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

हुआ है यह सन्देश नेहरु ब्राह्मण को देना चाहते थे। जिस तरह नेहरु ने प्रथम राष्ट्रपति कायस्थ व्यक्ति को शूद्र होने का एहसास दिलाया उसी कृत्य के लिए मोहन भागवत ने अनुसूचित जाति के कोविंद का इस्तेमाल किया। कोविंद इन्हें पुष्कर मंदिर में दाखिला नहीं दिया तथा जगन्नाथ मंदिर में ब्राह्मणों ने उनके साथ धक्का मुक्का किया। मिसालें समान! मक़सद भी एक!

मोहन भागवत ने अगली तैयारी शुरु की थी। उसके लिए तरह तरह की तरकीबें, दाँवपेंच रचे गये। ब्राह्मण विदेशी है यह पहले टाईम्स ऑफ इंडिया में २१ मई, २००१ की सनसनीखेज ख़बर डॉ. माईकेल बामशाद के डीएनए अनुसंधान में छपकर आई थी। इसी आधार पर बामसेफ समान देशव्यापी संगठन ब्राह्मणों को विदेशी कह रहा था। एक तो ब्राह्मण संख्या में महज़ ३.५% तथा अनुवंशिकता से विदेशी। भारतीय जनता हमेशा से ही ब्राह्मण के खिलाफ रही हैं। आरएसएस ने अब विदेशी ब्राह्मणों को देशी करार देने का मंसूबा बना लिया है। इतने में यह भी ख़बर आई थी कि, आर्यों का आगमन हुआ ही नहीं, आर्य भारतीय ही है ऐसी एक समिति बनाई गई वगैरह। पूरी तरकीब यही रहती है कि, अब ब्राह्मणों को भारतीय मूलनिवासी दिखाना जरुरी हैं!

हरियाणा ब्राह्मणों की प्रयोगशाला है। काल्पनिक महाभारत के युद्ध का क्षेत्र हरियाणा में दिखाया जाता है। हरियाणा में इसके पहले राखीगढ़ी में उत्खनन हुआ था। हरियाणा में राखीगढ़ी इस स्थान से कई प्राचीन चिजें चुराकर विदेश में बेची जाती थी। वैसे इस तरह की ख़बर वहाँ के स्थानीय अखबारों में छपकर भी आती थी। राखीगढ़ी हिसार जिले में सम्राट अशोक के शिलालेख तथा बौद्ध वास्तु भी हैं। राखीगढ़ी प्रोजेक्ट डेक्कन महाविद्यालय की ओर से चल रहा था। फिलहाल केंद्र में भाजपा की सरकार आई थी। इस प्रोजेक्ट के लिए केंद्र सरकार ने पूँजी की आपूर्ति की होगी। राखीगढ़ी में जो मानवी कंकाल प्राप्त हुये उसका दौर ४७०० है। राखीगढ़ी डीएनए जांच के लिए विदेश में भेजे गये इस ख़बर को उस वक्त प्रसिद्ध किया गया। सन २०१५ को मैं मेरे सहकर्मीयों के साथ राखीगढ़ी में भेंट देने के लिए गया था। उस स्थान की प्राथमिक जानकारी इकट्ठा करने के पश्चात् डॉ.

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

वसंत शिंदे से मुलाक़ात करने के लिए डेक्कन महाविद्यालय में गया। उन्हें उपहार के तौर पर डॉ. मायकेल बामशाद का डीएनए अहवाल दिया। उनसे इस बारे में वार्तालाप भी किया। वार्तालाप में शिंदे ने कहा कि, ब्राह्मण बाहर से भारत में आये यह तो दुनिया को मान्य है। राखीगढ़ी डीएनए रिपोर्ट आने के बाद बहुत सी बातें उजागर होगी। उसकी रिपोर्ट आयेगी। तो वह रिपोर्ट कब आयेगी इसकी आगे की कार्यवाही के लिए २०१५ से २०१९ के अगस्त माह तक मैंने पूछताँछ की। शिंदे हमेशा की तरह जवाब दे रहे थे कि, दो माह तक आयेगी, अगले साल आयेगी। ऐसा करते करते बहुत समय बरबाद हो गया। शिंदे की इस सम्बन्ध में मैंने दो बार मुलाक़ात की। पिछले साल जब मुलाक़ात की तब शिंदे के ईर्द-गिर्द सुरक्षा कर्मचारी पुलिस मौजूद थी। यह बदलाव कैसे हुआ? उस वक्त उन्हें सरलता से सवाल किया था कि, आप पर वर्तमान भाजपा सरकार का दबाव तो नहीं? उस वक्त शिंदे की शकल देखने लायक थी। वसंत शिंदे बदले हुये नज़र आ रहे थे। शिंदे को व्हाईस चान्सलर का ओहदा भी साजिश के तहत तो नहीं दिया गया? अब सेवानिवृत्त हुये शिंदे फिर से सरकारी नोकरी में उँचे पद पर मोदी के गुजरात में कैसे है? शिंदे फिलहाल-राष्ट्रीय समंदरी विरासत परिसर गांधीनगर (गुजरात) में महानिदेशक (डायरेक्टर जनरल) के पद पर कार्यभार संभाल रहे है।

राखीगढ़ी डीएनए रिपोर्ट दि. ७ सितम्बर, २०१९ को सेल (Cell) जर्नल में ऑनलाईन प्रसिद्ध हुआ। उसकी ख़बर सब तरफ फैलते ही मैंने वसंत शिंदे से तुरंत सम्पर्क किया और उन्हें डीएनए रिपोर्ट की पीडीएफ कॉपी भेजने के लिए गुजारिश की। शिंदे ने कुलभूषण मिश्रा इस शख़्स का नंबर दिया। मिश्रा याने ब्राह्मण। उस इन्सान ने वह रिपोर्ट मेल के जरिये भेज दिया। वह मूल डीएनए रिपोर्ट और प्रसार माध्यम में प्रसिद्ध हुई ख़बर देखकर मुझे झटका ही लग गया। मूल रिपोर्ट तथा ख़बरों में जमीन आसमान का अंतर था। सेल में प्रसिद्ध हुये रिपोर्ट का शीर्षक था कि - 'प्राचीन हडप्पन जीनोम में स्टेप पशुपालक या ईराणी खेतिहरों के वंशावली की कमी' भारत के ब्राह्मणों की मातृभूमि का नाम स्टेप युरेशिया है। राखीगढ़ी डीएनए रिपोर्ट में युरेशियन स्टेप याने ब्राह्मणों के डीएनए मौजूद नहीं है

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

यह रिपोर्ट के शीर्षक का मतलब है। ४७०० सालों पहले महिला के कंकाल में से आखिरकार किसके डीएनए बरामद हुये? तो रिपोर्ट कहता है कि, दक्खन भारतीय द्रविडों के उनमें डीएनए मौजूद है याने मूलनिवासी डीएनए उसमें है। इसका दूसरा अर्थ यह है कि, ब्राह्मणों के डीएनए उसमें नहीं है। अब सवाल यह है कि, ब्राह्मणों के डीएनए उसमें से क्यों नहीं प्राप्त हो सके?

'The Genomic Formation Of South and Central Asia' इस ११७ वैज्ञानिक तथा विशेषज्ञ के डीएनए रिपोर्ट के मुताबिक युरेशियन स्टेप याने जंगली तथा वहशी घुमन्तु लोगों का भारत में प्रवेश इ.स.पूर्व २००० से १७०० इस काल में हुआ। लिहाजा ४७०० सालों पहले याने इ.स.पूर्व २७०० सालों पहले राखीगढ़ी के कंकालों में आर्य ब्राह्मणों के डीएनए प्राप्त होने का सवाल ही नहीं उठता। क्योंकि वे उस वक्त भारत में आये ही नहीं थे! राखीगढ़ी तथा सिंधु सभ्यता पर खासकर प्राचीन सिंधु सभ्यता पर आनुवांशिकता पर लिखनेवाले टोनी जोसेफ इन्होंने दि. ७ सितम्बर, २०१९ को 'New Click-Science' को दिये हुये साक्षात्कार में साफ कहा कि, ''राखीगढ़ी और हडप्पा के अन्य नमूनों में स्टेप वंशावली (ॲन्सेस्ट्री) के डीएनए प्राप्त नहीं हुये। जिससे यही साबित होता है कि, हडप्पा संस्कृति में आर्य नहीं थे।'' हिन्दुस्तान टाईम्स में भी उन्होंने यही कहा था। टोनी जोसेफ इन्होंने सबसे पहले वसंत शिंदे एवं नीरज राय इनके बयान पर एतराज़ जताया।

दि. ७ सितम्बर, २०१९ को वसंत शिंदे तथा नीरज राय मीडिया के समक्ष आकर अनाप-शनाप बकने लगे। कूल २८ विशेषज्ञों ने मिलकर राखीगढ़ी डीएनए रिपोर्ट बनाया। उनमें दुनिया के मशहूर रिच डेव्हिड, वाघीश नरसिंहन थे। वसंत शिंदे एवं नीरज राय इन दोनों ने आगे आकर जो कुछ कहा वह बेतुका तो था ही किन्तु वैश्विक दर्जे के विशेषज्ञों का वैज्ञानिकों की तौहीन करनेवाला था।

वसंत शिंदे को माफी नहीं!

वसंत शिंदे इनका ७ सितम्बर को जो कथन भारतीय प्रसार माध्यम ने दिखाया वह इस तरह था जैसे कि वसंत शिंदे आरएसएस का ही वक्ता है! वसंत

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

शिंदे के नाम का प्रचार माध्यम ने इस तरह इस्तेमाल किया और शिंदे ने भी अपने नाम का इस्तेमाल होने दिया! शिंदे की इजाज़त के अलावा वे उनके नाम का इस्तेमाल करते क्या? कतई नहीं। शिंदे ने ब्राह्मणवादियों का दलाल बनना पसंद किया! दि. ७ सितम्बर, २०१९ के टाईम्स ऑफ इंडिया की मैसूर आवृत्ति में प्रथम पृष्ठ पर शिंदे के नाम से ख़बर छपी। जिसक शीर्षक था – 'आर्यों का आक्रमण हुआ ही नहीं, ऐसा सिंधु सभ्यता का आनुवंशिक अनुसंधान कहता है!' वसंत शिंदे जो अखबार में बोल रहे थे वैसा 'सेल' की रिपोर्ट में है क्या? सेल की रिपोर्ट में ब्राह्मण विदेशी ही है यह साबित हुआ है। विदेशी युरेशियन स्टेप जंगली, बदतहज़ीब ब्राह्मणों ने सिंधु सभ्यता पर हमला किया यह बात तिलक भी कबूल करते है। यह बात नेहरु तथा राहूल सांकृतायन ने भी कबूल की है। आर्यों का आक्रमण हुआ ही नहीं ऐसा शिंदे के मुँह से जो ख़बर छपकर आई उसमें प्रसार माध्यम तथा शिंदे की क्या दिलचस्पी है? उस ख़बर में इतने दाँवे के साथ कहा गया है कि, ''आर्यों का आक्रमण हुआ ही नहीं।'' नीरज राय पक्का आरएसएस का ही आदमी है। उन्होंने भी ब्राह्मणों को मूलनिवासी तय करने की ठान ली। दरअसल, शिंदे तथा राय को पैसे देकर ब्राह्मणों को मूलनिवासी कहो यह गुहार आरएसएस ने लगाई होगी। क्योंकि मूल रिपोर्ट ब्राह्मणों को विदेशी साबित करता हैं फिर भी झूठ बोलने की तो हद ही हो गई! इसी टाईम्स ऑफ इंडिया ने २१ मई, २००१ को डॉ. मायकेल बामशाद की डीएनए रिपोर्ट पर ख़बर छपकर आई थी और उसका शीर्षक था – ''उच्चवर्णिय भारतीय पुरुष योरोपियन वंश के, अनुसंधान का निष्कर्ष!'' इसलिए अब उसी टाईम्स ऑफ इंडिया में एक झूठी ख़बर छापने के लिए तीसरी शक्ति ने बहुत अनुरोध किया होगा। मीडिया पर ब्राह्मण वर्ग का पूरी तरह से कब्जा है। लिहाज़ा कॉमन इंटरेस्ट लेकर झूठी ख़बरें फैलाने में उन लोगों को उनकी भलाई नज़र आई! लेकिन आज नहीं तो कल उनकी पोल खुल जायेगी यह तो तय है। किन्तु युरेशियन स्टेप जंगली ब्राह्मण बेशर्म हैं। उनका एक ही तरीका है झूठ बोलो और वो भी दाँवे के साथ बोलो! ७ सितम्बर, २०१९ को मैसूर आवृत्ति की रिपोर्ट के बारे में सही ख़बर छपकर आई थी। ''सिंधु सभ्यता के

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

अधिवासी अलग ही वंश के थे।'' आर्य युरेशियन ब्राह्मणों के उनमें डीएनए बरामद नहीं हुये ऐसा साफ़ तौर पर कहा गया था। किन्तु 'अलग ही वंश के' इन शब्दों को घुमा-फिराकर इस्तेमाल किये गये शब्दों में यथार्थतः नज़र नहीं आती। दक्खन भारतीय द्रविडों के डीएनए प्राप्त हुये ऐसा खुलेआम कहना चाहिए था। किन्तु 'द हिंदू' की ख़बर ने शिंदे एवं नीरज राव को नग्न किया। टाईम्स ऑफ इंडिया की ख़बर शिंदे ने मॉर्टिमर व्हिलर का जान-बूझकर जिक्र क्यों किया? या ब्राह्मणी मीडिया ने क्यों किया? सर मॉर्टिमर व्हिलर इन्होंने हडप्पा तथा मोहेंजोदरो इन स्थानों पर नये सिरे से खुदाई करके वहाँ पर जो कंकाल प्राप्त हुये थे उसका गहराई से अध्ययन किया था। सर व्हिलर की राय बहुत चौंकानेवाली है, यथार्थतः पर निर्भर है। व्हिलर इन्होंने उस स्थान का नये सिरे से खुदाई कर अपने अहवाल में राय दी थी कि, हिंसा के जरिये ही ब्राह्मणों ने सिंधु सभ्यता नष्ट की। उनकी राय बेहद महत्वपूर्ण है -

''मोहेंजोदरो के ऊपरी हिस्से से प्राप्त तकरीबन आधा दर्जन कंकालों के बारे में विचार-विमर्श करना अब जरुरी हो गया है। मेरे साथ तथा मेरे बाद बहुत से लेखकों ने उसे बेइंतिहा बदनाम किया। किन्तु वाकई में वह महत्वपूर्ण नहीं है ऐसा नहीं कह सकते। दुर्भाग्य से उनमें से बहुत से कंकालों की अनुसंधानकर्ताओं ने जितनी दखल लेनी चाहिये उतनी नहीं ली। वे तमाम कंकाल एक ही काल के थे ऐसा कहा जाता है और शहर का वह नया काल था ऐसा कहा जाता है। यद्यपि वे ऊपरी हिस्से से बरामद हुये होंगे फिर भी उसका दौर शहर के संहार के शुरुआत का दौर था ऐसा नज़र आता है। शहर के अंत का दौर यह कंकाल दिखा रहे हैं। 'DK एरिया' में दो कंकाल कुए की ओर जानेवाली सीढ़ियों पर गिरे हुये नज़र आते है तो दो कंकाल कुऐं से बाहर जानेवाली सीढ़ियों पर गिरे हुये नज़र आते है। 'VS एरिया' में घर क्र. XVIII से XXXIII के बीच संकरी गल्ली पर ६ कंकालों का एक समूह नज़र आता है। उनमें से एक बालक है और यह कंकाल घर के बीच में हाथ पाँव फैलाकर आढ़े तिरछे गिरे हुये नज़र आते हैं। उस घर के निर्माण का दौर जो भी हो किन्तु वह घर बाद के दौर का होंगे। ''वे लाशें उनके

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

ईर्द-गिर्द मौजूद चिजों से ज्यादा अभिनव होंगे।'' ऐसा आम तौर पर बोला जाता था 'HB एरिया' के एक कमरे में पुरुष, महिलाऐं तथा एक बालक, कूल मिलाकर १४ लाशें बरामद हुई है; उनमें से कुछ के बदनपर सिंधु सभ्यता के गहने थे। इससे उन्हें हिंसा के जरिये मारा गया ऐसा लगता है क्योंकि उनमें से दो कंकालों की खोपड़ी पर कुल्हाडी या तलवार के घाव थे।''(Civilization of the Indus Valley and Beyond by Sir Mortimer Wheeler पृ.८०) सर मॉर्टिमर व्हिलर इनसे ब्राह्मण वर्ग नफ़रत क्यों करता है? क्योंकि उन्होंने असलीयत दुनिया के सामने उजागर की थी। शिंदे क्या डेक्कन कॉलेज के शिंदे के गुरु मधुकर केशव ढवलीकर भी जिरह नहीं कर सके। सर मॉर्टिमर व्हिलर इन्होंने जो पुरातात्विक सबूतों के आधार पर कहा था वहीं मुद्दा अब डीएनए रिपोर्ट ने सिद्ध कर दिखाया। ११७ वैज्ञानिक एवं विशेषज्ञों के अहवाल में युरेशियन स्टेप जंगली, बदतहज़ीब (बेअदब) लोगों ने भारत की सिंधु सभ्यता पर आक्रमण दूसरी सहस्राब्दी में दर्शाया था। सर व्हिलर इन्होंने भी वही काल दर्शाया है। इतनी सटीकता सर व्हिलर की है। युरेशियन स्टेप इनका हमला किस तरह हुआ इस बारे में हम दूसरे आलेख में लिखनेवाले है किन्तु व्हिलर का सन्दर्भ आ गया तो यहाँ पर लिखना जरुरी था।

११७ वैज्ञानिक तथा विशेषज्ञों की जागतिक डीएनए अहवाल में विशेषज्ञों की तालीका में अंत में ही सही लेकिन वसंत शिंदे का नंबर था। प्रारंभ में ९२ लोगों के उस डीएनए अहवाल पर भारत के ब्राह्मणों ने हो-हल्ला मचाया। ३० मार्च, २०१८ को वह प्रसिद्ध भी हुआ। अहवाल बनानेवाले विशेषज्ञ थे फिर भी यह हंगामा मचाया गया कि, वह अहवाल विशेषज्ञों को ना दिखाते हुये प्रसिद्ध किया गया। फिर उसमें और २५ विशेषज्ञों की भरती करके ११७ लोगों ने वह अहवाल नये सिरे से और नई जानकारी के साथ जोड़कर सितम्बर माह में ही 'सायन्स जर्नल' में प्रसिद्ध किया। याने ब्राह्मण विदेशी है इस अनुसंधान पर अंतिम मुहर लगाई गई। उस ११७ अनुसंधानकर्त्ताओं में तथा विशेषज्ञों की टीम में डेक्कन के वसंत शिंदे भी थे। मार्च २०१८ से सितम्बर २०१९ इतने लम्बे अरसे

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

में शिंदे ने उस अहवाल पर एक शब्द से भी जिरह क्यों नहीं किया? शिंदे ने राखीगढ़ी के अहवाल पर भी एतराज नहीं जताया। केवल नीरज राय की ऊँगली पकड़कर ब्राह्मणी मीडिया के आगे वे उतना ही बोले जितना उनके मालिक ने उन्हें बोलने के लिए कहा था! शिंदे ने अपनी विश्वसनीयता खत्म की है। उसकी हैसियत इतनी गिर गई कि, वे दोनों दुनिया के स्तर के अहवाल में भारतीय मूलनिवासी के समर्थन में तथा विदेशी ब्राह्मणों के खिलाफ है। उस अहवाल में ब्राह्मण पूरी तरह नग्न हो चुके है। फिर भी संघ परिवार ने लालच तंत्र का इस्तेमाल करके शिंदे का झूठ बोलने के लिए आमादा किया। अब नया प्रमाण 'पाँचजन्य' इस आरएसएस के मुखपत्र में शिंदे की मुलाकात छपकर आई थी उसमें साफ झलक रहा था कि, शिंदे ने बड़ी डीलिंग आरएसएस के साथ कर ली है। शिंदे ने एक अर्थ से बौद्धिक व्यभिचार ही किया!

दि. ६ सितम्बर, २०१९ के 'एबीपी माझा' ऑनलाईन पर – 'आर्य भारतीय ही है यह साबित करने में अनुसंधानकर्त्ताओं को कामयाबी' इस शीर्षक तले ख़बर के साथ एक १७ मिनट का व्हिडिओ भी अपलोड किया। उस ख़बर में कहा गया है कि, ''प्राचीन भारतीय संस्कृति के बीज बोनेवाले आर्य भारतीय ही है और वे भारत के बाहर से नहीं आये थे, यह अनुसंधान के जरिये साबित करने में अनुसंधानकत्ताओं को कामयाबी मिल गई।'' कितना बड़ा बनाया षड्यंत्र है यह? ब्राह्मणी मीडिया अफवाऐं फैलाने में माहिर है। जो नहीं है वह दिखाने की जिद्दोजहद मीडिया ने की। शिंदे का इस्तेमाल ब्राह्मणी छावणी ने किया। शिंदे की जगह यदि कोई ब्राह्मण होता तो गैरब्राह्मण को भरोसा नहीं होता। इसलिए ब्राह्मणों ने मराठा शिंदे का इस्तेमाल भारतीय मूलनिवासी बहुजनों को गुमराह करने के लिए किया। शिंदे ने गद्दारी की, राष्ट्रद्रोह किया।

दि. ७ सितम्बर, २०१९ को दै. जागरण में 'विदेशी नहीं, भारत के मूलनिवासी थे आर्य' इस शीर्षक तले ख़बर छपकर आई। उस ख़बर में शिंदे के नाम पर यह भी छपकर आया कि, आर्य आक्रमण की थेअरी गलत है, आर्य यहीं के है। लिहाजा शिंदे ने कहा कि, ''वह (शिंदे) भारत सरकार से अनुरोध करेंगे की

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

इतिहास के पुस्तकों में इन नए तथ्यों को शामिल किया जाए।'' इसका मतलब विदेशी जंगली आतंकवादी ब्राह्मणों को भारत के मूलनिवासी घोषित करके इस तरीके का नया पाठ्यक्रम भी बनाने की शिफारस भी शिंदे भारत सरकार को करेंगे! वाह रे वाह!! इससे तो साबित होता है कि, शिंदे को आगे करके ब्राह्मण लोग एक नया खेल, खेल रहे हैं। भारत हा देश युरेशियन ब्राह्मणों का नहीं है। पलभर के लिए मान भी ले कि ब्राह्मण यहाँ के ही है, तो फिर उन्होंने वर्णव्यवस्था, जातिव्यवस्था, अस्पृश्यता, आदिवासी का पृथक्करण (segregation), क्रिमिनल ट्राईब एवं महिलाओं की गुलामी क्यों निर्माण की? ब्राह्मण आखिर तक भारतीय समाज का हिस्सा क्यों नहीं बन पाये? पानी पर गिरे हुये तेल की बूँद की तरह वे अलग क्यों रहे? ब्राह्मण विदेशी है इसलिए उन्होंने भारत में आकर आक्रमण करके हिंसा के जरिये कब्जा किया और अपना वर्चस्व कायम किया। ब्राह्मण विदेशी है इसलिए उन्होंने जातिव्यवस्था निर्माण की यह बात डॉ.मायकेल बामशाद ने डीएनए रिपोर्ट में सबूतों के आधार पर सिद्ध की है। उनके रिपोर्ट का शीर्षक ही है - ''भारतीय जाति व्यवस्था के उदय के पीछे आनुवंशिक प्रमाण।'' इस ख़बर के साथ कोष्ठक में खास व्यक्ति नीरज रॉय का वक्तव्य मौजूद है। जिसमें उन्होंने अपराधबोध से कहा है कि, ''अगर आर्य बाहर से आए होते और नरसंहार किया होता तो वे अपनी संस्कृति लाते और हमारी संस्कृति को नष्ट कर देते। मानव कंकाल पर कहीं चोट या घाव के ऐसे निशान नहीं मिले है, जिनसे नरसंहार की बात साबित हो...! बहुत से भारतीय भी विदेश जाते रहे हैं और वापिस आकर वे भारत के अलग-अलग हिस्सों में बस गए'' नीरज रॉय कितने बदमाश इन्सान है यह इस विधान से समझ में आता है। अरे गधे! विदेशी युरेशियन स्टेप ब्राह्मण राखीगढ़ी (हरियाणा) क्या या फिर मौजूदा हालात में पाकिस्तान में मौजूद सिंधु सभ्यता में ४७०० सालों पहले आये ही नहीं थे। वे तो इ.स.पूर्व २००० में आये थे। ४७०० सालों पहले वे राखीगढ़ी में आये ही नहीं तो उनके आक्रमण का या नरसंहार का सवाल ही कहाँ उठता हैं? नीरज रॉय जान-बूझकर लोगों को एहसास करा रहे है कि, आर्य आक्रमण का सिद्धान्त मिथ्या है। शिंदे तथा रॉय राखीगढ़ी डीएनए रिपोर्ट की वजह से चारो खाने चित्त हो गये है। इसी नीरज रॉय ने अक्तुबर

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

माह की ३ तारीख को बीएचयू (बनारस हिंदू विश्वविद्यालय) में चौबे, दुबे, पांडे, मिश्रा इन खुराफाती टोली के साथ कार्यक्रम लिया। कितनी हैरतअंगेज बात है डीएनए रिपोर्ट पर एकही जाति केवल ब्राह्मण वर्ग ही बोल रही है। कुशवाह, यादव, निषाध, अनुसूचित जाति, आदिवासी इन समूहों के विशेषज्ञों को बुलाने के लिए न्योता नहीं दिया जाता। सिर्फ ब्राह्मण ही! यह तो सरासर जबरदस्ती ही है। उस कार्यक्रम में उलटे आलाप लगाये गये कि आदिवासी समूह को मूलनिवासी कहें या ना कहें? इसके बारे में संदेह जताया गया। (दै. अमर उजाला, दि. ४/१०/२०१९, वाराणसी आवृत्ति) याने विदेशी आतंकवादी, जंगली, वहशी एवं घुमन्तु युरेशियन स्टेप ब्राह्मणों ने जबरदस्ती से स्वयं को मूलनिवासी घोषित करना शुरु कर दिया। किन्तु ८५% मूलनिवासी बहुजनों ने यह मानना तो चाहिये ना!

एक मजेदार ख़बर दै. राजस्थान इस पत्रिका में छपकर आई थी। दि. ७ सितम्बर की आवृत्ति में मोटे शीर्षक में छपकर आया था कि, ‘‘आर्यों ने भारत पर नहीं किया था आक्रमण, वे यहीं के मूलनिवासी थे।’’ आर्य तथा द्रविड एक करने की साजिश रची गई। सप्ताह भर बिता नहीं तो बाडमेर के उसी राजस्थान पत्रिका में दि. १५ सितम्बर, २०१९ को पृ. ६ तथा दूसरी एक ख़बर मोटे शीर्षक में छपकर आई थी कि- ‘‘नए शोध ने २०१८ के शोध की फिर पुष्टि, आर्य बाहर से ही भारत में आए थे।’’ याने ७ सितम्बर की ख़बर के खिलाफ यह नई ख़बर छपकर आई थी। ११७ वैज्ञानिकों के डीएनए अनुसंधान ने ब्राह्मण बाहर के ही है यह सबूतों के साथ साबित हुआ है इस बात को राजस्थान पत्रिका ने मान ली। किन्तु यह असली ख़बर अंग्रेजी, हिन्दी तथा अन्य भाषा के अखबारों में छपकर नहीं आई यह भी खास बात है! यानी हकीक़त खुलने के बावजूद भी मिथ्या प्रचार ब्राह्मण-बनिया मीडिया ने जारी रखा!

टोनी जोसेफ से दि. ७ सितम्बर को एक अंग्रेजी समाचार वाहिका ने सवाल किया, जिसका जिक्र हमने पहले ही किया है। वह सवाल इस तरह था, ‘‘इसका अर्थ यह है कि, प्रेस कॉन्फरन्स में वैदिक इंडिया, आर्यों का स्थानान्तरण या अन्य मुद्दे पर अपनी राय देते हुये रिपोर्ट लिखनेवाले अनुसंधानकर्ता यह मूल

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

मुद्दे से हट गये थे ऐसा आपको लगता है क्या?'' इसपर टोनी जोसेफ ने कहा कि–''यह सही है। किन्तु अब बहुत सी बातें अभी हुई है ऐसा नहीं है। २०१७ के 'द हिंदू' में मेरा आलेख प्रकाशित करते वक्त भी २००९ के अनुसंधानकर्त्ता के अटकलों में इसी तरह की गड़बड़ी हो गई थी यह मैंने दिखाया था। वह रिपोर्ट अलग ही कह रहा था और उस रिपोर्ट के अनुसंधानकर्त्ताओं से साक्षात्कार करके अखबारवाले कुछ और ही छाप रहे थे! इसी तरह की अन्य वारदातें भी हो चुकी है।''

इससे मीडिया तथा अन्य प्रसार माध्यम के लोगों ने सबक सिखना जरुरी है कि, मशहूर जर्नल में जब कोई वैज्ञानिक अहवाल प्रकाशित किया जाता है तो उसे पढ़े बगैर किसी और के कहने पर अटकलें निकालकर प्रकाशित करना गलत बात है।

नामचीन अनुसंधान में ऊँचे दर्जे की ख़ूबी तथा दृढ़ता होती है किन्तु प्रेस कॉन्फरन्स में वह नहीं टिक पाती।'' यानी टोनी जोसेफ इन्होंने मीडिया मूल रिपोर्ट के खिलाफ प्रचार कर रही हैं ऐसा जाहिर किया। लिहाजा उनका कहना भारत के हिन्दी, मराठी तथा अन्य प्रांतिक अखबार में छपकर आया ही नहीं। टोनी जोसेफ से सम्पर्क करके मीडिया जो दिखा रही है उसके बारे में पूछताछ की तो उस वक्त उन्होंने यह कबूल किया कि, मीडिया भारतीय जनता को बेवकूफ बना रही है। वसंत शिंदे ने झूठी जानकारी देकर भारतीय जनता के साथ मीडिया के जरिये जालसाज़ी की, इसलिए नोटिस भेजी गई उसपर जोसेफ इन्होंने कहा कि मैं आपके साथ हूँ।

शिंदे व रॉय ने मीडिया के जरिये जो कुछ भी अफ़वाह फैलाई उनमें से एक किवदन्ती यह थी कि आर्य यहाँ के ही है और वे बाहर गये और हजारों सालों बाद वे भारत में फिर से वापिस आ गये। यह फेक थेअरी डॉ. ब्रिजवासी लाल ने रची है। डॉ. सुरज प्रकाश गुप्ता ने उसी तरह भगवान सिंह इस मण्डली ने लोगों की आँखों में धूल झोंककर झूठी बातें लोगों के सामने रख दी। मगर दुनिया के परिप्रेक्ष्य इस तरह की गप्पे टिकनेवाली नहीं थी। शिंदे एवं रॉय इन्होंने मीडिया के

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

जरिये इस तरह की गपशप को और हवा दी। और अपना मजाक उड़ाया। मूल इश्यू को दबाना और नॉन इश्यू को इश्यू बनाना यह इनके लिए हाथ की सफाई का खेल है। बामसेफ ने एक अभियान चलाया था वह याने – ''ब्राह्मण बनिया यह सूचना या जानकारी देने का साधन नहीं है, बल्कि मूलनिवासी बहुजनों के मन–मस्तिष्क पर नियंत्रण रखने का और उन्हें गुलाम बनाने का साधन है।'' यह बात अब फिर से साबित हो गई है।

दै. लोकमत, द टाईम्स ऑफ इंडिया तथा अन्य अखबारों में एक ख़बर छपकर आई कि, राखीगढ़ी डीएनए से आर्यों के पुरखे कैसे दिखाई देते थे उसका आधुनिक तकनीक के जरिये चेहरा बनाया। असल में राखीगढ़ी के कंकालों में एक ही महिला के डीएनए महफूज थे। मायकेल बामशाद कहते है कि, महिलाओं के डीएनए भारतीय ही है। फिर महिला के डीएनए से ब्राह्मण आदमी का चेहरा कैसे बनाया जा सकता है?

पांचजन्य से वसंत शिंदे के असली मालिक के चेहरे से नकाब हटा!

वसंत शिंदे का इस्तेमाल राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कर रही है यह बात पांचजन्य के दि. २० अक्तुबर, २०१९ के संस्करण से खुलकर सामने आ गई। दै. भास्कर मे १ अक्तुबर को अकोला संस्करण में एक ख़बर छपकर आ गई, जिसका शीर्षक था – ''संघ प्रमुख मोहन भागवत ने कहा– भारत हिंदू राष्ट्र है, इस सच को कोई नहीं बदल सकता।'' उस ख़बर में भागवत का एक कथन इस तरह था –''अगर बाहर से कोई भी आए है, तब भी कोई बात नहीं है। हमने बाहर से आए लोगों को भी अपनाया है। हम सभी को अपना मानते है।'' भागवत अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के दौरान सुनील आंबेकर द्वारा लिखित 'द आरएसएस रोडमैप २१ सेंचुरी' इस किताब के विमोचन के वक्त बोल रहे थे। हिंदू राष्ट्र प्राचीन है उसे कोई भी नकार नहीं सकते और उसे कोई भी बदल नहीं सकता ऐसा भागवत पर कहने का वक्त क्यों आ गया? नकारनेवाले कौनसे लोग है? बाहर से कौन लोग आये है? हमने बाहर से आए हुऐ लोगों को अपनाया ऐसा कहकर भागवत ने स्वयं को तथा तमाम ब्राह्मणों को भारत के मूलनिवासी

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

जबरदस्ती से घोषित कर दिया। भागवत को हिन्दू राष्ट्र बनाना है किन्तु उसमें रुकावट ब्राह्मण का विदेशीपण बन गया है। वह रुकावट दूर करने के लिए भागवत ने नीरज रॉय एवं वसंत शिंदे को काम पर लगा दिया। इसके लिए किराये से दो-चार चिल्लर फॉरेनर का भी इस्तेमाल किया। लेकिन मूल डीएनए रिपोर्ट में भागवत हेराफेरी नहीं कर सके। आज की घडी में डीएनए अनुसंधान के अग्रस्थान में मौजूद रिच डेव्हिड, डॉ. मायकेल बामशाद को भागवत खरीद नहीं सके। वे पूरी तरह ब्राह्मणों के खिलाफ ही हैं। डेव्हिड रिच को ब्राह्मणों के पुरखों ने यामनया युरेशियन जंगली, वहशी लोगों को योरोप में जाकर किस तरह नरसंहार किया इसकी वैज्ञानिक तथा पुरातात्विक सबूतों के आधार पर सम्पूर्ण जानकारी है। अन्तर्राष्ट्रीय दर्जे का विज्ञान तथा डीएनए सायंस यह मूल भारतीय मूलनिवासी बहुजनों के समर्थन में है और विदेशी युरेशियन ब्राह्मणों के खिलाफ है। फिर भी संघपरिवार ने 'झूठ बोलो वह भी दाँवे के साथ बोलो' अपने इस आनुवांशिक गुणों का इस्तेमाल करने के इरादे से वसंत शिंदे व नीरज रॉय को आगे करके ब्राह्मण-बनिया मीडिया की सहायता से झूठा प्रचार तेज गती से शुरु किया। किन्तु उनके पास इस मिथ्या प्रचार को भारतीय जनता से प्रतिक्रिया नहीं मिली। अंत में पांचजन्य में शिंदे के मूल मालिक के चेहरे से नकाब हट गया। दसरा को नागपुर के भाषण में भागवत ने 'सभी भारतीय हिन्दू है' यह आलाप फिर से लगाया। वाकई! हिन्दू शब्द संस्कृत में, वेदों में, रामायण में, महाभारत में, गीता में या अन्य किसी भी पुराणों में मौजूद नहीं है। हिन्दू शब्द १२ वीं सदी में भारत में मुगलों द्वारा लाया गया। जिस वक्त भारत में मुगल आये ही नहीं थे तब भारत क्या 'हिन्दूस्तान' था? हिन्दू इस पर्शियन भाषा का अर्थ काला, चोर, डाकू, गुलाम होता है। हिन्दू राष्ट्र याने विदेशी ब्राह्मणों की गुलामी का राष्ट्र! हिन्दू यह संकल्पना ब्राह्मणों ने अपना विदेशीपन छिपाने के लिए दाँवपेच के तहत इस्तेमाल की है। वसंत शिंदे का साक्षात्कार पांचजन्य में छपकर आया, उसमें 'हिन्दू' तथा 'हिन्दू सभ्यता' इसका जिक्र किया गया। शिंदे के मुँह में हिन्दू शब्द डाला गया हो या ना डाला गया हो वे पूरी तरह आरएसएस के झुण्ड में से एक हो गये है। उन्होंने फिर

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

से आर्यों का आक्रमण भारत पर हुआ ही नहीं। आर्य यहीं के है और उन्होंने ही सिंधु सभ्यता निर्माण की इस तरह के सुर निकाले। 'फर्जी है आर्य-द्रविड संघर्ष सिद्धान्त' इस शीर्षकतले शिंदे का साक्षात्कार प्रसिद्ध किया गया। स्वार्थ के लिए शिंदे ने आत्मसन्मान बेच दिया। शिंदे को सेवानिवृत्ति के बाद भी गुजरात में ऊँचे ओहदे पर संघ ने यूँ ही क्यों रखा? शिंदे के पीछे मोहन भागवत का हाथ है यह बात पाँचजन्य से उजागर हो गई। तमाम षड्यंत्र से परदा हट गया! ब्राह्मण डीएनए रिपोर्ट भारतीय भाषा में जैसा का वैसा अनुवाद करके क्यों नहीं प्रकाशित करते? क्योंकि उन्हें उनके साजिश का परदाफाश होगा यह डर हैं।

डीएनए के मुद्दे पर ब्राह्मण कचहरी में नहीं टिक पायेगा!

ब्राह्मणों की झूठी तथा फर्जी ख़बरों का जनता पर जैसा चाहिये वैसा असर नहीं हो रहा हैं। दि. १८ अक्तुबर, २०१९ ऑनलाईन दै. भास्कर में बाबरी मस्जिद राम मंदिर विवाद पर एक ख़बर छपकर आई थी जिसका शीर्षक था - ''आर्य भारतीय उपमहाद्वीप में ही रहते थे। बाहर से नहीं आए : -एक्सपर्ट का दाँवा'' इस शीर्षक तले प्रकाशित किया गया है। राखीगढ़ी डीएनए रिपोर्ट का हवाला देते हुये आर्य बाहर से नहीं आये वे मूलनिवासी ही है यह दावा सुप्रिम कोर्ट में हिन्दू मुवक्किल के वकील पाराशरण इन्होंने किया ऐसा कहा गया है। ''आर्य भारत के मूलनिवासी, रामायण में सीता श्रीराम को आर्य कहकर संबोधित करती है। ऐसे में वे बाहरी आक्रमणकारी कैसे हो सकते है?'' मूल मुद्दा यह है कि, कचहरी में डीएनए पर बहस नहीं चल रही। विवादग्रस्त स्थान पर स्वत्वाधिकार किसका इसपर वह बहस चल रही है। किन्तु ब्राह्मणों के वकील ने राम की आड में आर्य ब्राह्मण यह मूलनिवासी है और वे आक्रमणकारी कैसे हो सकते है? याने काल्पनिक किरदार को ऐतिहासिक बनाने की हिनहिनाहट क्यों लगाई जा रही हैं। कितनी भी योजनाऐं बना लो फिर भी ब्राह्मणों का विदेशीपन छिपाया नहीं जा सकेगा। ब्राह्मण विदेशी है यह बात नये दो डीएनए रिपोर्ट ने दुनिया के सामने उजागर की है। मात्र ब्राह्मण-बनिया मीडिया के झूठे प्रचार के आधार पर आरएसएस ब्राह्मणों को यूँ ही मूलनिवासी घोषित कर रहा है। ब्राह्मणों ने भारत पर ईव्हीएम

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

घोटाले से कब्जा किया है। ईव्हीएम के खिलाफ बहुत बड़ा जनआन्दोलन होने से पहले ही ब्राह्मण लोग भारत में अपनी उपनिवेश घोषित करना चाहते है। इसके लिए 'हिन्दुत्व' एवं 'हिन्दू राष्ट्र' का अधिप्रचार वे कर रहे थे। अब ब्राह्मण मीडिया के जरिये स्वयं ही स्वयं को मूलनिवासी घोषित करके एक नये षड्यंत्र का आरंभ वे कर रहे है। जो ब्राह्मण स्वयं को ब्रह्मा के मुख से प्रसव हुए ऐसा कहते है वहीं ब्राह्मण अब मीडिया के मुँह से प्रसव होकर स्वयं ही स्वयं को मूलनिवासी घोषित कर रहा है। ब्रह्मा के मुँह से प्रसव होने का कोई भी सबूत नहीं है उसी तरह ब्राह्मण यह मूलनिवासी है और वे आक्रमणकारी नहीं थे इसका भी ब्राह्मणों के पास कोई सबूत नहीं है। आनेवाले समय में भारतीय मूलनिवासी बहुजन, ब्राह्मण-बनिया मीडिया को जला डाले ऐसा इन्तजाम मोहन भागवत क्यों कर रहे है? मोहन भागवत ने जो षड्यंत्र रचा है इससे ब्राह्मण लोग बड़े ही पेचिदा हालात में फंस गये हैं। इन पेचिदा हालातों से बाहर निकलने का रास्ता अब ब्राह्मणों को मिलनेवाला नहीं है!

-प्रो. विलास खरात
डायरेक्टर
डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर रिसर्च सेंटर
नई दिल्ली

****

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

अध्याय -५

डीएनए अनुसंधान के जरिये भारतीय आनुवांशिकता की गुत्थी सुलझी

भारत के लोग हजारों जातियों में बँटे हुये हैं। भारत में जितनी विविधता है उतनी दुनिया के किसी भी देश में दिखाई नहीं देती। भारत में रहनेवाले लोगों में इतनी विविधता क्यों है? दुनिया में कहीं भी ना मिलनेवाली वर्णव्यवस्था, जातिव्यवस्था, अस्पृश्यता या महिलाओं की गुलामी केवल भारत में ही क्यों मौजूद है? यदि वे लोग एकदूसरे से भिन्न है तो वे कहाँ से आये है? दुनिया के कौन कौन से हिस्से तथा समूहें में इस अलग अलग जाति जमाति के लोगों का मूल है? अलग अलग जाति-जमाति में बँटे हुये यह तमाम भारतीय लोग एक ही है ऐसा माना जाए तो फिर उन सब का मूल उगमस्थान कौनसा है? उनके पुरखे कौनसे है? उनका मूल कहाँ तक है? इस तरह के हजारों सवालों की जिज्ञासा भारतीय जनसमूह पर अनुसंधान करनेवाले अनुसंधानकर्त्ता के ज़ेहन में निर्माण होते है और इसी जिज्ञासा के तहत संसार के तरह तरह अनुसंधानकर्त्ताओं ने भारतीय के उगम पर अपनी अपनी खोज की है। अतेव इतिहास, भाषा व पुरातत्व क्षेत्र में अनुसंधान इसके पहले ही रचे गये है और उन सबका कहना यही है कि, भारतीय उपखण्ड में इ.स.पूर्व २००० के बाद (याने तकरीबन ४००० सालों पहले युरेशियन स्टेप लोगों ने भारत पर आक्रमण किया और वहाँ की विकसित सिंधु सभ्यता नष्ट की और सिंधु सभ्यता के पतन के बाद भारत में सही मायने में अलगीकरण की प्रक्रिया शुरु हो गई और एकसंघ भारत के मूलनिवासी अलग अलग जाति-जमाति में बँट गये। इसपर अनुसंधान इतिहास, भाषाशास्त्र, मानववंशशास्त्र एवं पुरातत्वशास्त्र के अनुसंधानकर्त्ताओं ने अपने अपने तरीके से खोज करके ब्राह्मण बाहर से ही आये हैं यह नतीजा निकाला किन्तु उस खोज में ठोस सबूत नहीं थे इसलिए ब्राह्मणों ने हमेशा उस खोज के अर्थ को उलट-पुलट करके 'Arya Migration Theory'

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

गलत है यह दिखाने का प्रयास किया। किन्तु डीएनए अनुसंधान इतना विशुद्ध, पारदर्शक, सटीक है कि, उसमें संदेह जताना या विकृत करना इन चिजों को बिलकुल भी स्थान नहीं है।

विज्ञान याने सीधे सबूतों पर निर्धारित शास्त्र है। ''बाप दाखव नाहीतर श्राद्ध कर'' (पिता दिखा नहीं तो अंतिम संस्कार कर) इस मराठी कहावत की तरह प्रत्यक्ष सबूतों पर निर्भर विज्ञान की भूमिका होती है। अफ़वाह को, काल्पनिक अनुमान को या किन्तु-परन्तु पर निर्भर अंदाज को विज्ञान में बिलकुल स्थान नहीं होता है। लिहाजा, विज्ञान का निष्कर्ष हर हाल में सटीक, ईमानदार होता है। इसलिए वैज्ञानिक अनुसंधानपर एवं उसके निष्कर्ष पर, खास करके डीएनए के अनुसंधानपर और उसके निष्कर्ष पर संदेह नहीं जताया जा सकता।

भारत समान अलग-अलग जनसमूह के विशाल देश में तो डीएनए अनुसंधान वाकई में मूल्यवान तोहफा है। भारत के बारे में सभी लोग इस गुत्थी में उलझे हुये है कि, ब्राह्मणों ने हजारों सालों से स्वयं को अन्य से किस तरह भिन्न रखा? इस देश में शक, कुषाण, हुण, पोर्तुगीज, डच, अंग्रेज आदि अलग-अलग विदेशी आक्रमक अलग-अलग समय में आये; उनमें से कुछ लुटपाट करके चले गये तो कुछ यहाँ के स्थानिक लोगों में पूर्णरुप से मिल गये। किन्तु ब्राह्मणों ने ऐसा नहीं किया! वे पहले भी भिन्न थे और आज भी भिन्न हैं। भारतीय लोगों में मिल जाने का उन्होंने कभी प्रयास ही नहीं किया। उल्टे अपनी भिन्नता किस तरह उभाड़कर रखे इसीका उन्होंने प्राचीन काल से प्रयास किया है। भिन्नता बरकरार रखने की अहम वजह है कि, ब्राह्मणों में अनोखी विदेशी आनुवांशिकता मौजूद है! भारत के ब्राह्मण युरेशियन स्टेप प्रदेश के यामनया वंश के लोग है। यह बात मौजूदा हालात में डीएनए अनुसंधान से साबित हो गई है। प्राचीन काल के बेहद जंगली, खूँखार, वहशी तथा असभ्य लोग याने यामनया लोग है!! इन यामनया लोगों ने प्राचीन काल की दुनिया की विकसित सिंधु सभ्यता, मेसोपोटामियन सभ्यता एवं योरोपियन सभ्यता नष्ट की है और बाद में कुटीर (कुटिया) की संस्कृति निर्माण की! भारत के मूलनिवासी लोग फिर से विकास ना कर सके, इसलिए यामनया के

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

वंशज ब्राह्मणों ने भारत में वर्णव्यवस्था लागू की और उन्हें गुलाम बनाया।

यामनया लोग जहाँ गये वहाँ के पुरुषों को कत्ल किया और उनकी स्थानिक महिलाओं से संतान उत्पन्न की। हडप्पा, मोहेंजोदरो शहरों पर हमला करके वहाँ के पुरुषों को मारकर महिलाओं को बंदी बनाया। किन्तु सिंधु प्रदेश (फिलहाल पाकिस्तान में है) याने पूरा भारत नहीं! सिंधु के पूरब की ओर आने के बाद अलेक्झांडर को जैसे स्थानिक मूलनिवासी राजा एवं जनता ने प्रतिरोध किया, बिल्कुल वैसा ही प्रतिरोध पूरब की ओर जाते हुये यामनया लोगों को हुआ। इतने विशाल भारत उपखण्ड के पुरुषों का कत्ल करना उनके लिए मुमकिन नहीं था इस बात का उन्हें एहसास हो गया। पूरब के बलवान राजा को हराना नामुमकिन था यह उनकी समझ में आ गया तब यामनया ब्राह्मणों ने रणनीति बनाई। राजा को परास्त करने के बजाए उन्हें नियंत्रण में रखने की व्यूहरचना उन्होंने बनाई। प्राचीन भारत में राजा ही पुरोहित (Priest King) हुआ करते थे लेकिन ब्राह्मणों ने पुरोहित यह ओहदा स्वयं के पास रख लिया और वे राजा के सलाहगार बन गये और बाद में राजा को आदेश देकर अपने इशारों पर नाचने के लिए मजबूर करने लगे। बाद में राजा की मदत से इन विकृत लोगों ने भारत में वर्णव्यवस्था स्थापित की।

तथागत बुद्ध को ब्राह्मणों का यह खेल समझ में आ गया। इसलिए ब्राह्मणों की तरह ही मूलनिवासी लागों में भी राजा तथा प्रजा से सलाहगार (रहनुमा) निर्माण हो सके इस मक़सद से उन्होंने भिक्खु संघ की स्थापना की। राजा का सलाहगार बनकर उसे उचित परामर्श देना; उसी तरह जनता को भी सलाह देना यह भिक्खु का अहम कार्य था और है। भिक्खु के उचित तथा नैतिक मूल्य के परामर्श से राजा तथा जनता प्रभावित हो गई और उन्होंने धम्म को अपनाया। राजा प्रसेनजीत, बिंबिसार इन्होंने भारत में धम्म तथा संघ का विस्तार किया तो सम्राट मौर्य ने दुनियाभर में धम्म तथा संघ का विस्तार किया। भिक्खु यह उत्कृष्ट मार्गदर्शक एवं सलाहगार बनने से ब्राह्मणों को कोई भी नहीं पुछता था। इसलिए विकृत तथा हिंसक ब्राह्मणों ने मौर्य साम्राज्य नष्ट कर दिया और विरोधी

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

भिक्खुओं का नरसंहार किया। फिर से मूलनिवासी भारतीयों में कोई क्रांतिकारी बुद्ध जन्म ना ले सके इसलिए ब्राह्मणों ने तमाम मूलनिवासी भारतीयों को 'शूद्र' घोषित किया और मनुस्मृति लिखकर उन्हें शस्त्र, संपत्ती एवं हक़ से महरुम कर दिया।

सम्राट अशोक के काल में ब्राह्मणों की व्यवस्था तहस-नहस हो गई थी। विकृत ब्राह्मणों से मूलनिवासी भारतीयों की उन्नति देखी नहीं गई। वे विदेशी होने से मूलनिवासी भारतीयों के लिए उनके मन में हमेशा घृणा व नफ़रत उबलती है। इसी नफ़रत के मनोविकार से ही उन्होंने मूलनिवासी भारतीयों के गौरवशाली मौर्य साम्राज्य को नष्ट कर दिया और मनुस्मृति की रचना करके भारतीयों पर जाति व्यवस्था तथा अस्पृश्यता लाद दी। वे विदेशी है यह एहसास ब्राह्मणों के दिमाग में निरंतर होता है इसलिए वे हमेशा गले में 'जनेऊ' धारण करते है जिससे उन्हें विदेशीपन का एहसास रहे। जनेऊ यह उनके विदेशीपन का प्रतिक है! इसी एहसास से ब्राह्मणों ने बौद्ध काल में भी अपनी भिन्नता को बरकरार रखा और स्वयं को शुद्ध बौद्ध कहलाने की बजाए वे स्वयं को 'ब्राह्मण-बौद्ध' कहलवाया था। अन्य लोग अपनी पहली पहचान भूलकर कट्टर बौद्ध बनते थे। मगर ब्राह्मणों ने उनकी 'ब्राह्मण' यह पहचान बौद्ध बनने के बावजूद भी कायम रखी। आगे कुछ सदियों पश्चात बौद्धों को 'हिन्दू' यह नाम देकर ब्राह्मणों ने उन्हें जोड़ा गया बौद्ध शब्द हटाया और वे फिर से ब्राह्मण बन गये।

मूलनिवासी भारतीयों की बौद्ध यह पहचान प्राप्त करने के लिए और उनपर ब्राह्मणों का वर्चस्व स्थापित करने के लिए उन्हें समतामूलक बौद्ध धम्म से दूर करना जरुरी था और विषमतावादी हिन्दू धर्म में शामिल करना जरुरी था। बौद्ध धर्म समतावादी धर्म होने से विषमतापर निर्भर स्वयं का धौंस जमानेवाले ब्राह्मणों को वह धर्म वहनीय नहीं था। उन्हें ऐसा धर्म चाहिये था, जो विषमता का पोषक तथा समर्थक हो। इसलिए मनुस्मृति पर आधारित विषमतावादी हिन्दू धर्म की रचना मध्ययुगीन काल में की गई। पूरा भारत ही मौर्य काल में बौद्ध था। उन्हें विषमतावादी हिन्दू बनाने के लिए ब्राह्मणों ने बौद्ध विहारों को मंदिरों में तब्दील

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

कर दिया और बौद्ध मूर्तियों को हिन्दू देवी-देवता में तब्दील कर दिया। बौद्ध ग्रंथ जला दिये और उसपर निर्भर रामायण, महाभारत, गीता, पुराण एवं उपपुराण इस तरह के काल्पनिक ग्रंथ रचे। इन ग्रंथों में ब्राह्मणी वर्चस्व के मामलों को विशिष्ट रुप से दर्शाया और उसका प्रचार दिन रात किया। संक्षेप में कहे तो स्वयं को श्रेष्ठ कहलवाने के लिए ब्राह्मण किसी भी हद तक जा सकते है।

इसके बावजूद भी मूलनिवासी लोग विदेशी ब्राह्मणों को अहमियत देने के लिए तैयार नहीं थे। तब विदेशी ब्राह्मणों ने भिक्खुओं का सरेआम कत्ल करके उनके स्थान पर वे राजा-महाराजा के सलाहगार, मंत्री बन गये। और राजशक्ति का इस्तेमाल करके उन्होंने उनकी श्रेष्ठता लोगों पर लाद दी। जिससे जातिव्यवस्था निर्माण हो गई। **जिन लोगों ने ब्राह्मणी वर्चस्व को प्रतिरोध किया, उन्हें ब्राह्मणों ने अस्पृश्य घोषित कर दिया और उन्हें व्यवस्था के बाहर कर दिया। अस्पृश्य बनाना याने नागरिकत्व का अधिकार खत्म करना है। नागरिकत्व ना होने से अस्पृश्य बने हुये मूलनिवासी लोगों का भोजन, पानी, जमीन तथा अन्य किसी चिजों पर हक़ नहीं रहा।** भोजन पानी की जरुरत भी उन्हें भिक्षा माँगकर पूरी करनी पड़ती थी। जिससे उनके हालात जानवर से भी बदतर हो गये। यह जातिव्यवस्था एवं अस्पृश्यता फुले-शाहू-आंबेडकर तक चल रही थी।

इस तरह सिंधु संस्कृति के पतन से वे भारत में संविधान लागू होने तक विदेशी युरेशियन स्टेप ब्राह्मणों ने मूलनिवासी बहुजनों पर बेइंतिहा जुल्म ढाये, उनकी सैंकड़ो पीढ़ियाँ ध्वस्त कर दी, उनपर बर्बरतापूर्वक अत्याचार किये। शूद्र एवं अतिशूद्र के नामतले विदेशी भट ब्राह्मणों ने मूलनिवासी भारतीयों से जानवर से भी बदतर बर्ताव किया। उन्हें भोजन और जल के लिए तड़पाया। क्या अपने ही देश के बंधुओं के साथ कोई इतना जालिम बर्ताव कर सकता है? बिलकुल भी नहीं। एक विदेशी ही दूसरे विदेशी के साथ इतनी क्रुरता से पेश आ सकता है। विदेशी ब्राह्मणों ने भारत के मूलनिवासी लोगों का नरसंहार किया। उनकी विकसित सिंधु सभ्यता एवं बौद्ध सभ्यता नष्ट की। जीवन के हर एक क्षेत्र में हक़ों से महरुम रखकर उन्हें गुलाम बनाया। इतना खूँखार कृत्य कोई विदेशी टोली ही दूसरी टोली

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

से कर सकता है। ब्राह्मणों ने भारत के मूलनिवासी के साथ पिछले चार हजार सालों से इतना जालिम बर्ताव किया। इससे यही साबित होता है कि, भारत के लिए ब्राह्मण विदेशी ही है। वे केवल विदेशी ही नही बल्कि क्रूर, वहशी, खूँखार एवं बदतहज़ीब विदेशी युरेशियन स्टेप आक्रमक हैं।

ब्राह्मण विदेशी है यह स्वयं ब्राह्मण बाल गंगाधर तिलक ने उनके 'आर्क्टिक-होम इन द वेदाज्' इस ग्रंथ में कहा है, जिसमें उन्होंने कहा है कि, हम ब्राह्मण लोग उत्तर ध्रुव से भारत में आये हैं ब्राह्मणों के कूल बर्ताव की तथा तिलक के कहने की अब जेनेटिक सायन्स ने भी पुष्टि की है। नये डीएनए अनुसंधान से यह मामला उजागर हुआ है कि, ब्राह्मणों के पुरखे युरेशियन स्टेप प्रदेश के निवासी है इ.स.पूर्व २००० से १५०० के दरमियान वे भारत में पधारे हैं।

डीएनए (डिऑक्सीरायबो न्युक्लिक ॲसिड) यह संघटक मानव के जिस्म की हर एक पेशी में मौजूद होता है। डीएनए रचना के मुताबिक़ मानवी जिस्म की बनावट तथा क्रिया निर्धारित होती है। वक्त के साथ जिस्म में जिस तरह बदलाव होता है उसी तरह डीएनए की संरचना में भी होते है, जिसे म्युटेशन्स (Mutations) कहा जाता है। इन म्युटेशन्स की सहायता से मानवी समूह एकदूसरे से किस तरह भिन्न है या उनके पुरखे कौन थे यह समझ में आता है। हर एक व्यक्ति कौनसे समूह का घटक है तथा हर समूह का किस प्राचीन वंश से ताल्लुक है यह डीएनए अनुसंधान के अलग अलग तंत्रज्ञान की सहायता से खोजा जा सकता है। प्राचीन अश्मयुगीन काल से प्राप्त मानवी कंकालों से उनका अतिप्राचीन डीएनए अलग किया जाता है और उसकी समानता वर्तमान मानवी समूह के डीएनए से की जाती है। अतिप्राचीन मानवी कंकालों से डीएनए मानवी खोपड़ी के कान के पीछे पेट्रस अस्थि (Petrous Bone) से प्राप्त किया जाता है। इसके लिए ड्रिल की सहायता से पेट्रस अस्थि का पावडर किया जाता है। हार्वर्ड मेडिकल स्कूल, इंग्लंड, युनिवर्सिटी कॉलेज एवं मॅक्स प्लॅक इन्स्टिट्यूट फॉर इव्होल्युशनरी ॲन्थ्रॉपॉलॉजी, लिपझिग, जर्मनी इन तीनों स्थानों पर ही मानवी अस्थि से डीएनए अलग करने की तकनीक मौजूद है। उसके बाद डीएनए की

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

लाइब्रेरीज बनाकर उसकी सिक्वेन्सींग की जाती है। सिंगल एन्डेड डीएनए सिक्वेन्सेस की फिर GRCh37 इस ह्युमन रेफरन्स के साथ मॅपिंग की जाती है। उसके बाद प्रिन्सीपल कंपोनंट ॲनालिसिस (PCA) व ॲडमिक्श्चर कलश्चरिंग ॲनालिसिस (ACA) की सहायता से अतिप्राचीन काल की आनुवांशिकता की (Ancient Ancestry) खोज की जाती है और उसकी समानता बाद में तरह तरह के मानवी समूहों के डीएनए के साथ की जाती है। इससे वर्तमान के अलग-अलग जाति एवं समूहों के अतिप्राचीन पुरखे कौन थे यह पता चलता हैं।

डीएनए अनुसंधान इतने सत्य, ईमानदार तथा दोषरहित है कि, केवल एक डीएनए की सहायता से उस इन्सान के पुरखे कौन थे और उससे उनका वर्तमान उत्तराधिकारी कब पृथक हुआ, इस मामले को अब तक कितने बरस बित गये है, इसकी सटीक जानकारी प्राप्त होती है। उसी तरह वर्तमान के एक जनसमूह के लोग कौनसे प्राचीन आनुवंशिकता से है और उनके आपस में कितने आनुवांशिक ताल्लुकात है इसकी पूरी जानकारी डीएनए अनुसंधान के जरिये प्राप्त होती है। अनुवंशशास्त्र ने (जेनेटिक्स) इस तरह की गुत्थी सुलझाने का मौका आधुनिक विज्ञान ने हमें दिया यह हमारे लिए बहुत बड़ा तोहफ़ा ही है। पुरातत्वशास्त्र की सहायता से भी भारतीय इतिहास की घटना को सुलझाने का प्रयास वैज्ञानिकों ने किया है। ब्रिटिश पुरातत्व अनुसंधानकर्त्ता सर मॉर्टिमर व्हिलर इन्होंने २० वीं सदी में सिंधु सभ्यता का उत्खनन किया था और वह सभ्यता कितनी विकसित थी और उसे विदेशी आक्रमक युरेशियनों ने किस तरह नष्ट की यह सबूतों के आधार पर उत्खनन से सिद्ध किया है। सर मॉर्टिमर व्हिलर ने एकदम खुलकर कहा है कि, बाहर से आनेवाले घुमन्तु युरेशियन आक्रमकों ने भारत की सिंधु सभ्यता इ.स.पूर्व २००० के आसपास नष्ट की है। उनके इस निष्कर्ष को अब आधुनिक डीएनए ने पुष्टि दी है।

भारत के ब्राह्मण विदेशी है उनका डीएनए युरेशियन लोगों से ज्यादा मिलता है इस पर आनुवांशिक निष्कर्ष सबसे पहले अमरीका के जेनेटिक वैज्ञानिक मायकेल बामशाद ने निकाला। उन्होंने हैदराबाद के मोलेक्युलर बॉयोलॉजी के

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

वैज्ञानिकों को साथ में लेकर सन १९९५ से २००० के दरमियान भारत के डीएनए पर अनुसंधान किया। इसके लिए उन्होंने भारत के अलग-अलग जाति समूहों के लोगों के खून के नमूने लिये और उनके डीएनए की समानता काले समंदर नजदीक युरेशियन लोगों के डीएनए से की। तब उन्हें खौफ़नाक नतीजे प्राप्त हुये। उनके डीएनए अनुसंधान से यह हक़ीकत सामने आ गई कि, उत्तर भारत के ऊँची जाति के लोगों का डीएनए युरेशियन लोगों से ज्यादा मेल करता है, उस पर भी ब्राह्मणों का डीएनए सबसे ज्यादा मेल करता हैं।

मायकेल बामशाद की अनुसंधान की ख़बर भारत के टाईम्स ऑफ इंडिया इस अंग्रेजी अखबार में २१ मई, २००१ को छपकर आई और तमाम भारत में एक ही सनसनी फैल गई। भारत की ऊँची जाति के लोगों की युरेशियन लोगों से आनुवांशिकता में सबसे ज्यादा करीबीयाँ है; याने वे विदेशी है ऐसा मायकेल बामशाद के डीएनए अनुसंधान का कूल निष्कर्ष था। खास बात यह है कि, महिलाओं का डीएनए भारतीय महिलाओं के साथ मिल रहा था। इसका कारण युरेशियन आक्रमकों ने आते वक्त अपनी महिलाओं को नहीं लाया था। उन्होंने यहाँ की ही महिलाओं का इस्तेमाल संतान उत्पत्ति के लिए किया था। इसलिए ब्राह्मणों की महिलाओं का डीएनए (मायटोकॉन्ड्रियल डीएनए) युरेशियन महिलाओं के साथ नहीं मिलता बल्कि भारतीय महिलाओं के साथ मिलता है।

मायकेल बामशाद के अनुसंधान से यह साबित हुआ कि, भारत के ब्राह्मण पुरुष विदेशी हैं। इसलिए उन्होंने केवल ब्राह्मण पुरुषों को ही श्रेष्ठ दर्जा दिया और ब्राह्मण महिला समेत तमाम महिलाओं को शूद्र करार दिया। उसी तरह भारत के मूलनिवासी पुरुष उनसे आनुवांशिकता से भिन्न होने से ब्राह्मणों ने भारतीय पुरुषों को शूद्र-अतिशूद्र वर्ग में धकेल दिया। इसी तरह मायकेल बामशाद के अनुसंधान से ब्राह्मणों की वर्णव्यवस्था तथा जातिव्यवस्था का खुलासा हुआ। लिहाजा, उपरोक्त डीएनए अनुसंधान की सहायता से बामसेफ तथा भारत मुक्ति मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष मा.वामन मेश्राम इन्होंने पूरे भारतभर ब्राह्मण विदेशी होने का जनजागृति का कार्यक्रम शुरु किया और एक ही सनसनी फैला दी। इस

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

कार्यक्रम से डरकर विदेशी ब्राह्मणों ने ईव्हीएम का इस्तेमाल चुनावों में बड़ी मात्रा में करना तय किया और बहुजन नेतृत्व का अन्त किया।

अपनी पोल खुल गई यह देखकर षड्यंत्रकारी ब्राह्मणों ने तुरंत रणनीति बदली और वे विदेशी ना होकर भारतीय मूलनिवासी ही है यह गलतफहमी पैदा की। इसके लिए उन्होंने 'आर्य' शब्द का सहारा लिया। डॉ. बाबासाहब आंबेडकर इन्होंने आर्य विदेशी होने से इनकार किया था इस तरह का प्रचार ब्राह्मण तथा उनके चेलों ने करना शुरु कर दिया। दरअसल, आर्य शब्द यही मूलनिवासी बौद्धों का शब्द है। पाली भाषा में 'अरिय' याने श्रेष्ठ या प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। बौद्ध धर्म यह श्रेष्ठ धर्म होने की वजह से उसे आर्यधर्म कहा गया और उसके अष्टांगिक मार्ग को आर्य अष्टांगिक मार्ग कहा गया। डॉ. बाबासाहब आंबेडकर को इसका एहसास था कि आर्य यह भारतीय बौद्धों का शब्द है। इसलिए आर्य बाहर से आये है इस विधान के वे खिलाफ थे। इस विधान का उन्होंने विरोध किया था, किन्तु ब्राह्मण विदेशी है इस बात पर वे कायम थे। फ्रेंच जिस तरह ब्रिटिशों के लिए विदेशी है उसी तरह ब्राह्मण तमाम भारतीयों के लिए विदेशी है ऐसा डॉ. बाबासाहब आंबेडकर कहते थे।

हम विदेशी नहीं है यह दिखने के लिए ब्राह्मणों ने दूसरी कपोल-कल्पना रची, याने ब्राह्मणों के पुरखे पहले भारत से योरोप की ओर गये और बाद में योरोप से फिर से भारत वापिस आये। किन्तु मौजुदा हालात में डीएनए अनुसंधान ने यह साबित कर दिया है कि, भारत से उत्तर-पश्चिम दिशा की ओर कोई गये नहीं बल्कि उत्तर-पश्चिम युरेशिया से भारत की दिशा में स्टेप लोग आये है एवं उन्होंने ब्राह्मण जाति बनाई।

ब्राह्मण झूठे एवं काल्पनिक किस्से फैलाने में बेहद माहिर है। भारत का सत्य इतिहास दबाने के लिए उन्होंने वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, भगवद-गीता, पुराण व उपपुराण लिखकर काल्पनिक एवं झूठा इतिहास मूलनिवासी भारतीयों के मथ्थे जड़ दिया। वह उन्हें हजम हो इसलिए हर साल, चुके बगैर, रामलीला, रावणदहन इस तरह के सांस्कृतिक कार्यक्रम से वह लोगों के दिमाग

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

बूरी तरह ठूंस दिया। मगर अब ब्राह्मण मिथ्या गप्पे लड़ाने में कामयाब नहीं होनेवाले है। मध्ययुगीन काल में मूलनिवासी बहुजनों को ब्राह्मणों ने शिक्षा से महरूम रखकर, अज्ञानी रखने से उन्होंने ब्राह्मणों के पुराण के किस्सों पर भरोसा किया। उसी तरह उनके पास सोशल मीडिया एवं देशव्यापी संगठन ना होने से वे ब्राह्मणों किवदन्तियों के खिलाफ नहीं जा सके। अब हालात बदल चुके है। अब मूलनिवासी भारतीयों के पास सोशल मीडिया है; उसी तरह बामसेफ, भारत मुक्ति मोर्चा समान देशव्यापी एवं अन्तरराष्ट्रीय संगठन है। लिहाजा, ब्राह्मणों की हर एक कपोल-कल्पना बेपर्दा हो रही है।

वे विदेशी नहीं है यह बताने के लिए ब्राह्मणों ने डीएनए अनुसंधान का ही सहारा लेने का तय किया। इसके लिए उन्होंने हरियाणा के राखीगढ़ी से प्राप्त कंकालों से लाभ लेने की ठान ली। उनका मक़सद पूरा करने के लिए उन्होंने राखीगढ़ी खोज करनेवाले टीम के प्रमुख प्रो. शिंदे को अपनी ओर खिंच लिया। संसार के ९२ वैज्ञानिकों ने इकट्ठे होकर जागतिक स्तर पर डीएनए अनुसंधान किया एवं उसका रिपोर्ट ३१ मार्च, २०१८ को प्रकाशित किया। उस रिपोर्ट में उन्होंने खुलकर कहा कि भारत के ब्राह्मण युरेशियन स्टेप प्रदेश से आये हुये है। उपरनिर्दिष्ट रिपोर्ट की जाँच विशेषज्ञ मण्डली ने नहीं की है और वह किसी भी जर्नल में प्रकाशित नहीं हुआ है बल्कि ऑनलाईन प्रस्तुत किया गया यह वजह बताकर ब्राह्मणों ने उस रिपोर्ट से इन्कार कर दिया। तब दुनिया के मशहूर एवं विशेषज्ञ कूल ११७ शास्त्रज्ञ इकट्ठे हुये। जिनमें डेव्हिड रिच, पॅटरसन समान दुनिया के नामचीन विशेषज्ञ भी थे। भारत के शिंदे एवं रॉय यह दोनों भी (९२ व ११७ के टीम में) शरीक थे। इन शास्त्रज्ञों ने पिछले साल का ही रिपोर्ट विशेषज्ञों से समीक्षित (Peer Reviews) दुनिया की मशहूर सायंटिफिक जर्नल 'नेचर' में ६ सितम्बर, २०१९ को प्रकाशित किया। उसमें साफ निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया था कि, भारत के ब्राह्मणों का मूल उदय स्थान युरेशियन स्टेप प्रदेश है। वहाँ से युरेशियन स्टेप आक्रमक इ.पूर्व २००० के बाद (तकरीबन ४००० सालों पहले) भारत की दिशा में आये थे ओर उन्होंने इ.स.पूर्व २००० से १५०० के दरम्यान विकसित सिंधु सभ्यता नष्ट की थी।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

दुनिया के विशेषज्ञ, अनुसंधानकत्ताओं ने ब्राह्मणों के विदेशीपन के बारे में डीएनए का सबूत देने से अब ब्राह्मणों को बोलने के लिए जुबान ही नहीं रही।

फिर भी फितरत से षड्यंत्रकारी ब्राह्मण कभी बदलनेवाले नहीं हैं, क्योंकि उनकी आनुवंशिकता में फरेब है। वे भारत के लिए विदेशी नहीं है यह दर्शाने के लिए ब्राह्मणों ने प्रो. शिंदे को साथ में लेकर एक दिन के बाद याने ६ सितम्बर, २०१९ को 'सेल' जर्नल में राखीगढ़ी के डीएनए का रिपोर्ट प्रकाशित किया। उस अनुसंधान में अन्य विदेशी अनुसंधानकर्ता भी शरीक थे इसलिए शिंदे उसमें कुछ भी बदल नहीं कर सका। राखीगढ़ी के डीएनए अनुसंधान में यह दर्ज किया गया है कि, राखीगढ़ी का कंकाल महिला का है और इ.स.पूर्व २६०० (याने तकरीबन ४६०० सालों पहले का) है, वह कंकाल इ.स.पूर्व २६०० का (४६०० पहले का) हैं और भारत में ब्राह्मण इ.स.पूर्व २००० बाद आये (यानी करीब-करीब ४००० सालों बाद) याने, राखीगढ़ी से बरामद महिला का कंकाल जीवित थी तब ब्राह्मण युरेशिया से भारत आये ही नहीं थे, बल्कि उसकी मृत्यु पश्चात् ६०० सालों बाद वे भारत में आये थे। यानी राखीगढ़ी की महिला कंकाल की २० पीढ़ियों के बाद ब्राह्मण भारत में आये थे। राखीगढ़ी की महिला का एवं उसके समकालीन सिंधु सभ्यता का युरेशियन स्टेप प्रदेश के ब्राह्मणों के पुरखों से तब कुछ भी ताल्लुक नहीं था। यही वजह है कि, राखीगढ़ी के डीएनए रिपोर्ट में ब्राह्मणों के डीएनए प्राप्त नहीं हो सके। मगर यही सूत्र पकड़कर ब्राह्मणों ने यह ख़बर उड़ाई कि, राखीगढ़ी के डीएनए में ब्राह्मणों के डीएनए प्राप्त ना हो सके इसका अर्थ यह है कि, ब्राह्मण भारत में बाहर से आये ही नहीं अपितु, वे भारत के ही मूलनिवासी हैं!

सीधा सीधा सत्य यह है कि, ब्राह्मण उस वक्त (इ.स.पूर्व २६०० में) भारत में आये ही नहीं होंगे तो उनका डीएनए उस कंकाल से कैसे प्राप्त होगा? और इससे वे भारत के मूलनिवासी कैसे साबित होंगे? दुनिया के विशेषज्ञों की ९२ एवं ११७ की टीम ने दोनों रिपार्ट में (३१ मार्च, २०१८ व ६ सितम्बर, २०१९ की रिपोर्ट) स्पष्ट किया है कि, भारत पर युरेशियन स्टेप लोगों का आक्रमण इ.स.पूर्व २००० से इ.स.पूर्व १५०० के दरमियान (याने तकरीबन ४००० सालों से ३५००

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

सालों के दौरान) हुआ है। इसलिए, वर्तमान भारत के ब्राह्मणों में युरेशियन स्टेप लोगों की आनुवांशिकता प्राप्त होती है। याने,राखीगढ़ी के डीएनए रिपोर्ट का तथा ब्राह्मणों के उगम का जरा भी ताल्लुक नहीं है। राखीगढ़ी के डीएनए रिपोर्ट ने सिर्फ यही कहा है कि, उपरोक्त कंकाल यह सिंधु कालीन मूलनिवासी भारतीय महिला का है। मगर फिर भी उस रिपोर्ट का झूठा निष्कर्ष ब्राह्मणों ने निकाला। इसके लिए उन्होंने मीडिया को इस काम पर लगा दिया और 'आर्य भारतीय ही है' इस शीर्षक तले झूठी रिपॉर्टिंग पूरे भारतभर की। प्रो. शिंदे ने भी रिपोर्ट में जो प्रकाशित किया उसके उलटा मीडिया में बोलना शुरु कर दिया। शिंदे के इस दोगलेपन से भारत मुक्ति मोर्चा इस देशव्यापी संगठन ने प्रो. शिंदे को अदालत के जरिये समन जारी किया। तब कहीं शिंदे की बोलती बंद हो गई।

'झूठ और दाँवे के साथ' बोलने में विदेशी ब्राह्मण बेहद माहिर हैं। समय समय पर रणनीति बदलना, षड्यंत्र करना, झूठ बोलना यही उनके गुण उन्हें विदेशी साबित करते है। ब्राह्मण भारत में विदेशी हैं। अब यह बात जगप्रसिद्ध हो चुकी है। विदेशी लोगों को दूसरे राष्ट्र में जाकर वहाँ के मूलनिवासी लोगों पर राज करना, उनका शोषण करना या उनके साथ षड्यंत्र करने का बिल्कुल भी हक़ नहीं है, फिर भी पिछले चार हजार बरसों से विदेशीपन के जज़्बे से ब्राह्मण भारतीय लोगों पर जुल्म कर रहे हैं, उनपर राज कर रहे है। १९९३ के युनो के जाहीरनामा के मुताबिक़ किसी भी विदेशी को मूलनिवासी लोगों पर राज करने की अनुमति नहीं है ऐसा साफ दर्ज किया हुआ है। किन्तु ब्राह्मण विदेशी होकर भी हम पर राज कर रहे है इसकी भारत के मूलनिवासी लोगों का जरा भी भनक नहीं लग रही है। इसलिए इसकी जानकारी देकर जागरूक करने के मक़सद से यह किताब लिखी गई है।

भारत के लोगों ने जल्दी ही जागरूक होकर भारत मुक्ति मोर्चा इस देशव्यापी संगठन के तहत एकजूट होकर विदेशी ब्राह्मणों के जाल से स्वयं को आज़ाद कर ले।

–डॉ. प्रताप चाटसे

******

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

अध्याय –६

डीएनए अनुसंधान की सहायता से मूलनिवासी की खोज

भारत के इतिहास में हडप्पा संस्कृति का अनूठा स्थान है। अंग्रेज के शासनकाल में १९२१–२२ में हडप्पा संस्कृति के शहर के उत्खनन की शुरुआत हो गई। हडप्पा संस्कृति के पहले भारतीय इतिहास की शुरुआत ही वैदिक संस्कृति से होती है ऐसी आम ऐतिहासिक समझ थी। याने ब्रिटिशपूर्व काल में उस वक्त भारतीय लोगों को तथा शासनकर्ता को भारतीय इतिहास की कितने संजीदगी से चिंता थी यह भी एक अध्ययन का विषय है। सिंधु संस्कृति की खोज से एवं उसके बाद हुये उत्खनन से भारतीय इतिहास के लिए एक अतिप्राचीन पहलू खुल गया और उनमें से प्राचीन भारतीय संस्कृति के वैभव की सुनहरी किरणें बाहर आ गई। उत्खनन में जो अवशेष आते गये, उनमें एक विशाल संस्कृति की मौजूदगी उजागर होती गई। भारतीय संस्कृति की शुरुआत वैदिक संस्कृति से होती है इस धारणा को जबरदस्त झटका लग गया।

भारतीय तथा विदेशी इतिहासकार वैदिक संस्कृति, बौद्ध संस्कृति, जैन संस्कृति और वर्तमान भारतीय संस्कृति इनके साथ बरामद हुई संस्कृति की नाल कहाँ तक जुड़ी हुई है इसका खोज कर रहे थे। बौद्ध संस्कृति तथा जैन संस्कृति यह दोनों ही संस्कृति वैदिक संस्कृती के बाद की संस्कृति है ऐसी गलतफ़हमी थी। इसलिए कुछ विदेशी इतिहासकार को छोड़कर अन्य इतिहासकारों ने हडप्पा संस्कृति के सन्दर्भ से इन दो संस्कृतियों को नज़रअंदाज कर दिया। प्राप्त अवशेषों की बराबरी वैदिक ग्रंथ एवं उनमें वर्णन किये हुये समाज व्यवस्था, आर्थिक व्यवस्था, लोकजीवन, नगररचना, धार्मिक व्यवस्था से करने लगे। इनमें से सीधे सीधे दो गुट का निर्माण हुआ। एक गुट हडप्पा संस्कृति यह वैदिक संस्कृति के पहले की संस्कृति है और वैदिक याने आर्य लोगों ने उसपर आक्रमण करके नष्ट

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

कर ली थी, दूसरा वैदिक संस्कृति हडप्पा संस्कृति सम्बद्ध था। पहला गुट पुरातत्विक अवशेष तथा वैदिक साहित्य के वर्णन पर निर्भर था। भारत के ब्राह्मणवादी इतिहासकारों ने कोई भी सबूत ना देते हुये वैदिक साहित्य के वर्णन को पुरातत्विक बातों को नज़रअंदाज करके हडप्पा संस्कृति यह वैदिकों ने स्थापन की यह अनैतिहासिक रचना करना प्रारम्भ कर दिया।

१९२१ से २०१९ तकरीबन एक सदी तक भारतीय संस्कृति याने हडप्पा संस्कृति किसने स्थापित की इसमें बेइंतिहा मिलावट चल रही है। मगर इस चर्चा को अब हमेशा के लिए पूर्णविराम दिया गया।

७ सितम्बर, २०१९ को 'सेल' पत्रिका में हडप्पा संस्कृति का सबसे बड़ा शहर राखीगढ़ी में मानवी कंकाल की डीएनए रिपोर्ट प्रकाशित हुई और हडप्पा संस्कृति वैदिक आर्यो ने स्थापित नहीं की बल्कि भारत के मूलनिवासी लोगों ने स्थापित की और इ.स.पूर्व २००० से १५०० के दरमियान यामनया लोगों ने यानी आर्य या युरेशियन खूँखार घुमन्तु नरसंहारक टोली के आक्रमण ने विशाल हिंसाचार करते हुये हडप्पा शहर ध्वस्त कर दिया। उत्तर भारतीय मूलनिवासी लोगों को शूद्र घोषित किया और अन्य मूलनिवासी भारतीयों को दक्खन की ओर विस्थापित होने के लिए मजबूर कर दिया। यह बात शास्त्रीय दृष्टि से सिद्ध हो गई। प्रस्तुत लेख में हम डीएनए अनुसंधान के आधार पर मूलनिवासी लोगों के इतिहास की खोज करनेवाले हैं।

क्या है डीएनए अनुसंधान?

डीएनए अनुसंधान के Y क्रोमोझोम और मायटोकाँड्रियल mDNA यह क्रांतिकारी खोज हैं। जिससे दुनिया के मानव का इतिहास और उसने कहाँ कहाँ स्थानान्तरण किया, कहाँ कहाँ आक्रमण किया इसका वैज्ञानिक अध्ययन करना मुमकिन हुआ। इतिहास लेखन की दृष्टि से डीएनए की यह दो संकल्पनाऐं अहम हैं। mDNA में से Y क्रोमोझोम यह जो घटक है वह घटक पुरुष की ओर से उसके पुत्र की ओर स्थानान्तरित होती है और मायटोकाँड्रियल mDNA यह माता की ओर से उसकी कन्या की ओर ट्रान्सफर होता है। जब दो पुरुषों के Y

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

मायक्रोमोझोम समान होते है तब उसका अर्थ यह है कि, वे दोनों पुरुष एक ही पुरखे से उत्पन्न हुई संतान हैं। उसी तरह जब दो महिलाओं का मायटोकाँड्रियल mDNA समान होता है तब इसका अर्थ यह होता है कि, वे दोनों स्त्रियाँ एक ही मूल स्त्री की संतान हैं। मायटोकाँड्रियल डीएनए और Y क्रोमोझोम इससे दुनिया के हर एक इन्सान का एवं जनसंख्या का मूल ढूंढने में वैज्ञानिकों को कामयाबी मिली। इस अनुसंधानपर निर्भर आधुनिक काल में २०१८ को प्रकाशित हुई रिच डेव्हिड इनकी किताब WHO WE ARE AND HOW WE GOT HERE यह क्रांतिकारी किताब है। जिसमें उन्होंने धरती के तमाम मानव का तथा स्थानान्तरण का इतिहास रचा है।

जनसंख्या जनुक शास्त्र में DNA अनुसंधान की या मानवी DNA अध्ययन की दो शाखाऐं बनाई गई है, जैसे :-Y क्रोमोझोम हॅप्लोग्रुप और मायटोकाँड्रियल mDNA हॅप्लोग्रुप. दुनियाभर में मायटोकाँड्रियल mDNA हॅप्लोग्रुप को अहम चार हिस्सों में बाँटा गया है। L0,L1,L2, और M7 याने दुनियाभर की महिलाओं का मायटोकाँड्रियल mDNA इन चार समूहों में बाँटा गया हैं। उसी तरह दुनियाभर के Y क्रोमोझोम हॅप्लोग्रुप को भी चार अहम समूहों में बाँटा गया है। वे समूह इस प्रकार है... A, B, CT तथा D. इन समूहों की कई उपशाखाऐं हैं। दुनियाभर में जैसे जैसे लोगों के स्थानान्तरण होता गया वैसे वैसे इन शाखाओं में उपशाखा तैयार होती गई।

सिंधु संस्कृति के लोगों के तथा भारत में आज निवास करनेवाले लोगों के इतिहास के सन्दर्भ का हम यहाँ पर चर्चा करनेवाले है इसलिए DNA अनुसंधान के आधार पर हम भारतीय लोग याने मूलनिवासी लोग इनके इतिहास का सन्दर्भ ले रहे है। इस सन्दर्भ में कुछ DNA रिपोर्ट का हम अध्ययन करनेवाले है। उसी तरह राखीगढ़ी का DNA रिपोर्ट आने के बाद आखिर कौनसी चिजों में तब्दीली हो गई है इसपर परामर्श करनेवाले है। इसी परिप्रेक्ष्य में इस घटक पर हम अन्य भाषा शास्त्रीय, ऐतिहासिक या पुरातत्व शास्त्रीय सबूतों पर ज्यादा जोर ना देते हुये या उन्हें ज्यादा अहमियत ना देते हुऐ DNA अनुसंधान पर निर्भर भारतीय मूलनिवासी लोगों की खोज करनेवाले है।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

मूलनिवासी लोगों के DNA अनुसंधान के सन्दर्भ में कई अनुसंधान रिपोर्ट प्रकाशित हुये है। उन सभी रिपोर्ट का सन्दर्भ यहाँ करना मुमकिन नहीं या उनका विश्लेषण करना भी मुमकिन नहीं है। तमाम रिपोर्ट का विश्लेषण करना तथा उसके मुताबिक लेखन करना यह एक स्वतंत्र किताब का विषय है। DNA अनुसंधान के बाद भारतीय या दुनियाभर के इतिहास लेखन के लिए एक अनूठा तथा विशाल क्रान्तिकारी एवं वैज्ञानिक साधन जुट गया है। भारत के इतिहास लेखन में कई बार सबूतों की किल्लत से कुछ बातें उजागर करना आज तक नामुमकिन होता था या ब्राह्मणवादी इतिहासकार मौजूद सबूतों को विकृत करते थे या उसको तोड़-मरोड़ करके प्रस्तुत करने में वे माहिर थे जिससे भारतीय इतिहास का बेइंतिहा विकृतिकरण किया है। आज भी आधुनिक युग में, अनुसंधान एवं बहुत ज्यादा वैज्ञानिक सबूत मौजूद होने के बावजूद भी इतिहास का बड़ी मात्रा में विकृतिकरण तथा तोड़-मरोड़ करना शुरु है। किन्तु DNA अनुसंधान से एंव इतिहास लेखन के स्रोत अब बहुत से बहुजनों के लिए विद्यमान होने से उन्हें विकृतिकरण करना असंभव है और किया भी तो अब हम उनका मुकाबला करने में समर्थ है। अब हम मूलनिवासी भारतीयों के मूलनिवासीत्व साबित करनेवाला पहला अनुसंधान देखते है।

मायटोकॉन्ड्रियल मॅक्रोहॅप्लोग्रुप M की शृंखला मूल भारतीय

'In situ origin of deep rooting lineages of mitochondrial Macrohaplogroup 'M' in India (Kumarasamy Thangaraj , Gyaneshwer Chaubey ,Vijay Kumar Singh ,Ayyasamy Vanniarajan, Ismail Thanseem Alla G Reddy and Lalji Singh)

१५ जुन, २००६ को BMC Genomics इस पत्रिका में कुमार स्वामी थंगराज, ज्ञानेश्वर चौबे व अन्य कुछ मशहूर अनुसंधानकर्त्ता की सहायता से रिपोर्ट प्रसिद्ध हुआ। उस रिपोर्ट में जिन्होंने जो बातें रखी है उसका हिन्दी सार आगे दिया गया है... ***"भारत में मुख्य हॅप्लोग्रुप M एवं N प्राप्त होते हैं। उनमें से N पर पहले ही बहुत अनुसंधान हो चुके हैं। अब बचा मॅक्रोहॅप्लोग्रुप M यह***

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

तकरीबन ६० फीसदी भारतीयों के मायटोकाँड्रियल डीएनए का (mDNA) ग्रुप है। मॅक्रोहॅप्लोग्रुप M के उगम व विस्तार के बारे में बहुत से विवाद हो चुके है। यह ग्रुप मुख्य रुप से आशिया में मौजूद है और भारत के मंगोलाइड और अन्य भारतीय लोग ज्यादातर इसी ग्रुप से है। इस सन्दर्भ में एक सिद्धान्त यह रचा गया था कि यह ग्रुप बहुत बड़ी मात्रा में इथियोपिया से प्राप्त होता है इसलिए यह मूल आफ्रिकन है। भौगोलिक दृष्टि से देखा जाए तो M यह ग्रुप केवल अफ्रिका तक सीमित है। वह अफ्रिका से प्राप्त होता है तो उसका काल बहुत प्राचीन होना चाहिये। क्योंकि उसे आशिया में या दुनियाभर पहुँचने के लिए बहुत समय लगना जरुरी है। किन्तु यह अन्तर्विरोधी है। भारत की ६०% जनसंख्या में प्राप्त होनेवाला M यह ग्रुप अफ्रिका में उदय होकर और केवल इथियोपिया से प्राप्त होना और इतनी लम्बी दूरी तक भारत में आना और अफ्रिका तथा भारत के दरमियान अन्य किसी भी जनसंख्या में ना मिलना यह मुमकिन नहीं। इसके लिए लिया हुआ जरुरी समय और उसके उपघटक का किया हुआ बँटवारा इससे मॅक्रोहॅप्लोग्रुप M के उदय एवं प्रसार की फिर से रचना करना जरुरी है।

अध्ययन के अन्त में सबसे अहम एक बात समझ में आती है वह यह कि, मॅक्रोहॅप्लोग्रुप M की तमाम शाखाऐं मूल भारत में ही तैयार हो गई है। इसमें दूसरी किसी भी मध्यावकाश में हॅप्लोग्रुप की मिलावट या मिश्रण नहीं हुआ है। इस मॅक्रोहॅप्लोग्रुप की सितारे समान रचना यह दिखाता है कि, इन सब का सबग्रुप मूल भारत में ही स्वतंत्र तरीके से विकसित हुये और समदंर किनारे की सहायता से तमाम भारतभर फैल गया। इसी तरह मिलावट नहीं हुये मॅक्रोहॅप्लोग्रुप M की दुनिया के अन्य ग्रुप के साथ बराबरी करने के बाद यह नज़र आता है कि यह ग्रुप मूल दक्खन आशिया और प्रमुखतः से भारत में उदय हुआ तथा इस ग्रुप को किसी भी तरीके की भाषा का बंधन नहीं है।''

अब इस रिपोर्ट में क्या है और उसका क्या तात्पर्य है इसके बारे में परिचर्चा करते है। इस रिपोर्ट के लिए अनुसंधानकर्त्ताओं ने कुछ अहम संप्रदायों

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

का DNA परीक्षण किया। वे संप्रदाय हैं केरल के पनियान (PANIYAN) इस संप्रदाय के लोग द्रविडीयन भाषा बोलते है, ओरिसा की गडबा (GADABA) इस संप्रदाय के एस्ट्रो एशियाटिक भाषा बोलते है, गुजरात की रातवा (RATWA) इस संप्रदाय के इंडो-योरोपियन भाषा बोलते है, कर्नाटक की रँडम (RANDAM) इस संप्रदाय के लोग द्रविडीयन भाषा बोलती है, गुजरात की रातवा (TADAVI) इस संप्रदाय के लोग इंडो-योरोपियन भाषा बोलते है, आंध्र प्रदेश के परधान (PARDHAN) इस संप्रदाय के लोग द्रविडीयन भाषा बोलते है और अंदमान टापू के ओंग (ONGE) इस संप्रदाय के लोग अंदामानी भाषा बोलती है। छह अलग-अलग भाषा बोलनेवाले संप्रदाय के लोग एक ही मॅक्रोहॅप्लोग्रुप से विकसित हुये है और उस मॅक्रोहॅप्लोग्रुप की जनसंख्या फिलहाल भारत में ६० फ़ीसदी है।

यदि हम इस संप्रदाय का मुआयना करते है तो वे तमाम संप्रदाय के लोग आदिवासी से जुड़े हैं। अब सवाल यह है कि, यदि साठ फ़ीसदी लोगों को मॅक्रोहॅप्लोग्रुप एक ही है तो आज भारत के ६० फ़ीसदी लोग आदिवासी हैं क्या? आज आदिवासी ६०% नहीं है। भारत में आदिवासी की जनसंख्या करीब-करीब सात से आठ फ़ीसदी के आसपास है। किन्तु इस मॅक्रोहॅप्लोग्रुप के लोगों की जनसंख्या तो भारत में ६० फ़ीसदी है। इसका अर्थ यह है कि, आज भारत में रहनेवाले ६० फ़ीसदी लोगों के पुरखे मॅक्रोहॅप्लोग्रुप M के आदिवासी है। याने आज जिन बहुजनों की जाति आदिवासी नहीं है उनके मूल आदिवासी ही है यानी की मूलनिवासी हैं। वर्णव्यवस्था और जाति व्यवस्था विकसित होने के पहले यह लोग एक ही मूल समूह के थे यह वैज्ञानिक सबूत है।

हम सबको एक बात तीव्रता से महसूस होती है कि, अपने समाज में कुछ कुलनाम (Surname) या करीब-करीब पूरे कुलनाम सभी जातियों में दिखाई देते हैं। एक ही कुलनाम शूद्र जाति में, अस्पृश्य जाति में और आज जिसे आदिवासी घोषित किया गया है उस जाति या NT, DNT एवं जिसे गुनहगार जाति घोषित किया गया है उस जाति में प्राप्त होते हैं। मिसाल के तौर पर 'भोसले' कुलनाम को ही देख लो। यह कुलनाम महाराष्ट्र में शूद्रों की सबसे बड़ी जाति

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

'मराठे' में मौजूद है, यही कुलनाम अस्पृश्य जाति में भी है, यही कुलनाम ओबीसी जाति में भी है, यही कुलनाम NT, DNT तथा जिसे गुनहगारी जाति घोषित किया गया है उनमें भी है, यही कुलनाम आदिवासी एवं आज बीहड़ या खाड़ी में रहनेवाली जाति में है।

जिन बहुजनों की जाति मॅक्रोहॅप्लोग्रुप है किन्तु M मध्ये शामिल नहीं है वे जातियाँ मॅक्रोहॅप्लोग्रुप N इस ग्रुपमध्ये शामिल है और यह दोनों ग्रुप भारत की L3 इस मूल मायटोकाँड्रियल ग्रुप के घटक हैं।

DNA के वैज्ञानिक अनुसंधान पर निर्भर यह रिपोर्ट एक बात पर साफ साफ रोशनी डालता है कि मॅक्रोहॅप्लोग्रुप M एवं मॅक्रोहॅप्लोग्रुप N यह जिन लोगों में मौजूद है वे लोग मूल भारतीय हैं और आधुनिक मानव जब से धरती पर बस्ती करके रहने लगा तब से वे भारत के मूलनिवासी हैं। जिन्होंने भारत में यहाँ की संस्कृति की नींव डाली। खेती-बाड़ी की शुरुआत की। व्यापार-कारोबार विकसित किया तत्पश्चात् विशाल शहरों का निर्माण किया। इस पूरे दौर में उन्होंने भारत में शुरुआत का विस्तार समंदर किनारे, तट पर एक ही मार्ग से किया ऐसा दिखाई देता है। दूसरी अहम बात यह रिपोर्ट विशेष रुप से दर्शाती है कि, भारत की तमाम महिलाओं में मौजूद मायटोकाँर्डियल mDNA यह एक ही है और वे L3 इस मूल मायटोकाँड्रियल मॅक्रोहॅप्लोग्रुप के है। इसका दूसरा अर्थ यह है कि, भारत की तमाम महिलाऐं एक ही मूल स्त्री के वंशज है और उनमें दूसरे किसी भी महिलाओं के मॅक्रोहॅप्लोग्रुप मायटोकाँड्रियल mDNA की मिलावट नहीं है।

दुनिया के वैज्ञानिक उन-उन देशों की महिलाओं के मूल स्त्री पूर्वज को मायटोकाँड्रियल इव्ह यह नाम देते है। भारत के प्राच्यविद्या पंडित शरद पाटील इनका कहना है कि भारत की मूल स्त्री सत्ता चलानेवाली सबसे पहली मूल महिला है निऋती। यह सिद्धान्त मान ले और भारत की प्राचीन स्त्रीप्रधान सभ्यता, स्त्री प्रमुख थी यह मान ले तो DNA के इस अनुसंधान ने हमें अपनी प्रमुख निऋती दी है ऐसा कहने में कोई एतराज नहीं होगा और हम निऋती की एक ही मॅक्रोहॅप्लोग्रुप L3 के पूरे उत्तराधिकारी है यह कहने में कोई आपत्ति नहीं होनी

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

चाहिए।

इस रिपोर्ट की भाषा-संबंधी छान-बीन करने पर एक सवाल उभरता है कि एकदम कन्याकुमारी से काश्मीर तक और कच्छ से अरुणाचल तक पूरी महिलाऐं, फिर वे किसी भी जाति की हो या कोई भी भाषा बोलनेवाली हो एक ही मूल स्त्री के वंशज है। यानी एससी, एसटी, ओबीसी, मायनॉरिटी एवं उच्चवर्णिय पुरुष के घर में रहनेवाली महिलाओं का DNA सबका समान ही है। याने तमाम महिलाऐं इस भारत के मूलनिवासी हैं।

भारत की जातिव्यवस्था व वर्णव्यवस्था का इतिहास यदि ध्यान में लिया जाये तो वर्णव्यवस्था अन्तरवर्णिय विवाह को मंजूरी नहीं देता, यह हम देख चुके है। उसी तरह अन्तरजातिय विवाह पर भारतीय पुरुष प्रधान संस्कृति में पाबंदी थी। इस दृष्टि से तमाम जाति के, उँचे जाति के तथा अनुसूचित जाति, ओबीसी, मायनॉरिटी इनके घर की महिलाऐं तथा उच्चवर्णिय जाति की महिलाऐं यह समान कैसे है यह सवाल उभरता हैं। वे समान है या समान वंश की यह अब साबित हो गया हैं। एससी, एसटी, ओबीसी के घर की महिलाऐं मूलनिवासी हैं इसलिए उनके घर में है यह हम मान सकते है क्योंकि एससी, एसटी, ओबीसी के पुरुष Y क्रोमोझोम भारत के मूलनिवासी है यह साबित हुआ है, इसलिए वह बिलकुल प्राकृतिक है। किन्तु ऊँचे वर्ण के पुरुषों के घर की, या वर्णव्यवस्था में ऊँचे जाति के घर की महिलाऐं शूद्र जाति की महिला कैसे हुई या शूद्र जाति की महिलाओं ने उनके घर में कैसे शिरकत की यह एक गुत्थी ही है। किन्तु DNA अनुसंधान ने यह गुत्थी भी सुलझ गई है।

इस बारे में ब्यौरेवार परामर्श हम अगले पहलू में बतानेवाले है और उपरोक्त पहलू पर हम मॅक्रोहॅप्लोग्रुप M तथा N भारत के मूलनिवासी है और भारत के तकरीबन ६० फ़ीसदी जनसंख्या मॅक्रोहॅप्लोग्रुप M से जुड़ी हुई है यह हमने देखही लिया। इसके पहले के अनुसंधान ने अन्य जो मायटोकाँड्रियल डीएनए है वे मॅक्रोहॅप्लोग्रुप N के है और यह दोनों ग्रुप L३ इस ग्रुप से निकले हुये है यह हमने देख ही लिया है। उसी तरह भारत के एससी, एसटी, ओबीसी समेत तमाम

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

महिला मूलनिवासी हैं यह साबित होता है।

अब हम पुरुषों की आखिर क्या हालत है यह देखनेवाले है। पुरुषों के डीएनए का इतिहास या कौनसे पुरुष का गुट कौनसे दूसरे पुरुष से मेल करते है या कौन से दो पुरुषों के Y क्रोमोझोम डीएनए एक दूसरे से जुड़ते हैं इसपर उनके पुरखे कौन थे यह साबित होता है यह हमने पहले ही देख लिया है। भारत के पुरुषों की संरचना आखिर क्या है और वे दुनिया के कौनसे पुरुष से मिलते है यह देखने के लिए हमें पुरुषों के Y क्रोमोझोम लायनेज याने Y क्रोमोझोम की वंशावली देखना जरुरी है। इस सन्दर्भ में एक क्रांतिकारी अनुसंधान २००१ में Genome Research नाम की मशहूर पत्रिका में प्रसिद्ध हुआ है।

जाति में बँटे हुये भारतीय की उत्पत्ति के सबूत आनुवांशिक विज्ञान में

Genetic Evidence on the Origins of Indian Caste Populations

(Michael Bamshad,Toomas Kivisild,W. Scott Watkins,Mary E. Dixon,Chris E. Ricker,Baskara B. Rao, Mastan Naidu,B.V. Ravi Prasad,P. Govinda Reddy,Arani Rasanayagam,Surinder S. Papiha,Richard Villems,Alan J. Redd,Michael F. Hammer,Son V. Nguyen,Marion L. Carroll,Mark A. Batzer,and Lynn B. Jorde) 'Genetic Evidence on the Origins of Indian Caste Populations' इस नाम से मायकेल बामशाद तथा उनके सहकर्मीओं ने भारत के तमाम पुरुषा एवं महिला के DNA लेकर उस सन्दर्भ में अनुसंधान करके एक रिपोर्ट प्रकाशित की है। इस अनुसंधान ने २००१ में भारत में सनसनी फैला दी। इस अनुसंधान का सार हम देखनेवाले है क्योंकि उससे भारत के पुरुषों का बँटवारा और पुरुषों की संरचना समझने में हमे आसानी होगी। इस रिपोर्ट का सार निम्नांकित है...

"भारत में सौ करोड़ भारतीयों की निर्मिती किस तरह हुई यह हमेशा ही एक चर्चा का मुद्दा रहा है। भारत की आनुवांशिक संरचना यह भारतपर अब

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

तक हुए कई आक्रमणों से प्रभावित हुई है। भारत पर हुआ हाल ही का आक्रमण याने पश्चिम आशिया के इंडो-योरोपियन भाषा बोलनेवाले लोगों ने उत्तर पश्चिम दिशा से किया हुआ आक्रमण है। उन्होंने भारत पर आक्रमण करके यहाँ की द्रविड भाषा बोलनेवाले लोगों को विस्थापित किया गया और दक्खन की ओर खदेड़ दिया। उन्होंने ही भारत में जाति व्यवस्था एवं वर्ण व्यवस्था तैयार की एवं स्वयं को श्रेष्ठ घोषित कर दिया। भारत पर इस आक्रमण का भारतीय लोगों पर क्या असर हुआ यह जाँचने के लिए हमने इन लोगों का मायटोकाँड्रियल डी एन ए (mDNA)और Y क्रोमोझोम पर अनुसंधान किया। हमने कूल ८ जाति के तथा अलग-अलग स्तर के २६५ अलग-अलग पुरुषों के डी एन ए ७५० आफ्रिकन, आशियाई, योरोपियन एवं भारतीयों से मिलाकर देख लिया। महिला के मायटोकाँड्रियल डीएनए एकदूसरे से मिलाने पर वे सब समान है यह हमारी समझ में आया। पुरुषों के Y क्रोमोझोम एकदूसरे से मिलाकर देखने पर उँचे वर्ण के पुरुषों के Y क्रोमोझोम युरेशियन लोगों के Y क्रोमोझोम के साथ मिलते जुलते हैं यह दिमाग में आ गया। जिससे एक बात समझ में आती है कि उँचे वर्ण के पुरुष भारतीय पुरुषों से नहीं मिलते बल्कि वे योरोपियन पुरुषों से मिलते-जुलते है। अलबत्ता निचली जाति के लोगों के (SC ST OBC) लोगों के Y क्रोमोझोम एक दूसरे से जुड़ते है याने वे एकदूसरे से मिलते-जुलते हैं। किन्तु उँचे वर्ण के पुरुषों के Y क्रोमोझोम योरोपियन लोगों से मिलते-जुलते हैं।’’

इस डीएनए रिपोर्ट का और उसके पहले हमने देखी हुई डीएनए रिपोर्ट का सार यह है कि भारत की तमाम महिला मूलनिवासी हैं याने तमाम जाति के घर में जो महिलाऐं है वे एक ही मायटोकाँड्रियल mDNA की है किन्तु भारत के पुरुष एक ही Y क्रोमोझोम yDNA के नहीं है। भारत के एससी, एसटी, ओबीसी तथा अन्य पिछडी जाति यानी पूरे मूलनिवासी लोगों के Y क्रोमोझोम yDNA समान है और एकदूसरे से मिलते हैं। इस सन्दर्भ में और एक रिपोर्ट हम देखनेवाले है। मगर फिलहाल इन दो रिपोर्ट का निष्कर्ष यह है कि यदि तमाम महिलाऐं समान है और पुरुष असमान है और उँचे वर्ण के पुरुष युरेशियन लोगों से मिलते जुलते

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

है तो इन लोगों के क्रोमोझोम yDNA युरेशियन लोगों से मिलते-जुलते होने की वजह क्या है?

यदि उँचे वर्ण के पुरुष भारत के मूलनिवासी होते तो उनके क्रोमोझोम yDNA यह भारत के अन्य जाति के लोगों के साथ मिलने चाहिए थे। किन्तु वे उस तरह नहीं मिल रहे है। लिहाजा, उँचे वर्ण के पुरुष मूल भारतीय नहीं है यह साबित होता है। उँचे वर्ण के पुरुष कहाँ से आये और उन्होंने आने के बाद आखिर क्या असर हुआ इसका हमने डीएनए अनुसंधान तथा अन्य रिपोर्ट के जरिये परामर्श लेने ही वाले है उसके पहले हम दूसरे एक अहम डीएनए रिपोर्ट का जायजा लेनेवाले है। इस रिपोर्ट के अध्ययन का विषय यह है कि उँचे वर्ण के पुरुष यदि भारत के अन्य पुरुषों के साथ मिलते-जुलते नहीं हैं तो भारत में आज जो आदमी है वे आदमी एवं उनके घर में तथा समाज में जो महिलाऐं है वे भी जाति में बाँटे हुये हैं। भारत में तकरीबन छह हजार जातियाँ हैं। इन जातियों में जो पुरुष है उनके Y क्रोमोझोम yDNA एकदूसरे से मिलते है याने उन्हें मिली हुई जाति की पहचान यह नक़ली है यह साबित होता है। इसे और स्पष्ट करने के लिए हमें एक और DNA रिपोर्ट का अध्ययन करना जरुरी है।

पिछड़ी जाति और आदिवासी इनमें समानता :
Y क्रोमोझोम और मायटोकॉन्ड्रियल DNA का निष्कर्ष

(Genetic affinities among the lower castes and tribal groups of India: inference from Y chromosome and mitochondrial DNA)

(Ismail Thanseem, Kumarasamy Thangaraj, Gyaneshwer Chaubey,Vijay Kumar Singh, Lakkakula VKS Bhaskar, B Mohan Reddy, AllaGReddy and Lalji Singh)

ईस्माईल थांसिम, कुमारस्वामी थंगराज और ज्ञानेश्वर चौबे इन्होंने अन्य अनुसंधान की सहायता से ७ अगस्त, २००६ को BMC Genetics नाम की मशहूर पत्रिका में एक रिपोर्ट उपरोक्त शीर्षक तले प्रसिद्ध की। इस अनुसंधान का

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

असर और निष्कर्ष इसका सार अब हम देखनेवाले है। इसका सार निम्नांकित है :

"भारत की आदिवासी जनसंख्या एवं अन्य जनसंख्या इनमें किसी भी तरीके से फ़र्क नज़र नहीं आ रहा है। उँचे वर्ण के लोगों का पश्चिम योरोपीय लोगों से ताल्लुक था यह खोज में दिखाई दिया। खासकर भारत उत्तर-पश्चिम (वायव्य) दिशा में, इसके अलावा Y क्रोमोझोम की कतार में भारत के आदिवासी तथा अन्य जनसंख्या एवं उँचे वर्ण की जनसंख्या इनमें फ़र्क नज़र आता है। आदिवासी लोगों के क्रोमोझोम वंशावली और अन्य निचली जाति के लोगों के Y क्रोमोझोम वंशावली समान है और उनका एकदूसरे से ताल्लुक है। किन्तु उँचे वर्ण के लोगों से वह मिलता नहीं है। खासकर भारत के मूल हॅप्लोग्रुप M89, M52 और M95 सह भारत की निचली जाति एवं आदिवासी लोग इनमें मौजूद होता है लेकिन उँचे जाति के लोगों में नहीं। इस अध्ययन के अंत में यह समझ में आया है कि, ९८ फीसदी लोगों का मायटोकॉंड्रियल डीएनए mDNA, चाहे वे द्रविडीयन भाषा बोलनेवाले हो या इंडो-योरोपियन भाषा बोलनेवाले हो, समान हैं। भारत के तमाम निचली जाति की निर्मिती भारत के मूल आदिवासी लोगों से हुई है और भारत में पलेस्टेशन दौर में बाहर से जो आक्रमण हुआ था वह उँचे वर्ण के पुरुषों का था। इंडो-योरोपियन लोगों का भारत पर आक्रमण होने के बाद उन्होंने यहाँ के आदिवासी लोगों से स्वयं को उँचा घोषित किया और जातिव्यवस्था तैयार हो गई।

हमारा अध्यनन यह घोषित करता है कि, भारत के ९८ फीसदी महिलाओं से मिली विरासत यह द्रविड भाषा बोलनेवाले और इंडो-योरोपियन भाषा बोलनेवाले जिसमें समानता है और उनमें बहुत ही कम अन्तर है। Y क्रोमोझोमच्या लायनेज में निचली जाति के लोग एवं उँची जाति के लोग इनमें फ़र्क है। निचली जाति के लोग जिन्हें संविधान की भाषा में अनुसूचित जाति और जिन्हें अन्य पिछड़ी जाति ऐसा कहा जाता है उनकी आदिवासी लोगों के साथ गज़ब की समानता हैं। यह समूह जो कि भारत का ८५% लोगों का समूह है एवं हिन्दू जाति व्यवस्था में शामिल है। इन सब में मूल भारत में अभ्युदय हुआ ग्रुप M52, M95 एवं M89 यह बड़ी मात्रा में प्राप्त होता हैं। यह नतीजा

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

या अनुसंधान यह साबित करता है कि, उँचे जाति के लोगों की बजाए भारत के निचली जाति के लोग आदिवासी लोगों से अधिक जुड़ते है एवं समान है। याने अन्य पिछड़ी जाति एवं अनुसूचित जाति लोगों का उगम आदिवासी लोगों में से ही हुआ है। फिलहाल उँचे वर्ण के लोगों में थोड़ी बहुत मात्रा में पाये जानेवाले इस ग्रुप के लाईनेज आम तौर पर ३५०० सालों पहले वे भारत में आन के बाद हुये मिश्रण का नतीजा है।''

यह रिपोर्ट बुनियादी तौर पर क्रांतिकारी ही है। इसके पहली रिपोर्ट में भारतीय लोग मूलनिवासी है और युरेशिया के लोगों का भारत के उँचे वर्ण के लोगों के साथ गहरे ताल्लुकात है या DNA के ताल्लुक है या खून का रिश्ता है यह साबित करता है। किन्तु भारत में केवल उँचे वर्ण एवं निचली जाति में ही संघर्ष नहीं अपितु जिन लोगों को वर्ण-व्यवस्था में शूद्र घोषित किया गया है और उसके बाद अन्य जो लोग आदिवासी है, अनुसूचित जाति के है उनमें भी बेइंतिहा संघर्ष करवाया गया है। उनमें असमानता ईश्वरी है और यह शुरु से ही है, यह सिद्धान्त लादा गया और इसे इन लोगों ने कबूल किया हैं।

फुले-शाहू-आंबेडकरी आन्दोलन इन सब लोगों के एकजूट होने पर ही तवज्जो देनेवाला तथा ८५ बनाम १५ यह सिद्धान्त रचनेवाला पहला वैज्ञानिक आन्दोलन है। DNA अनुसंधान से फुले-शाहू-आंबेडकरी आन्दोलन की तथा इस आन्दोलन की बुनियाद मजबूत करने के लिए बामसेफ की प्रासंगिकता और वैज्ञानिकता सिद्ध की है। इस सदी के उत्तरार्ध में बामसेफ की शुरुआत हो गई और फुले-शाहू-आंबेडकर का आन्दोलन १९७८ से बामसेफ ने अपने कंधे पर निहायत ही काबिलियत से ढोया हैं।

DNA अनुसंधान से बुद्ध के बहुजनों का सिद्धान्त जाति पर निर्भर सिद्धान्त नहीं था तथा बामसेफ के लोग बाबासाहेब एवं बुद्ध का आन्दोलन विकृत कर रहे है उसी तरह बामसेफ ने रचे हुये ८५% बनाम १५% इस सिद्धान्त को कोई भी वैज्ञानिक आधार नहीं है ऐसा प्रचार करनेवाले लोगों की कनपट में सनसनाता हुआ तमाचा लग चुका है। इस रिपोर्ट से जो बातें सिद्ध हुई है वह यह कि, भारत

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

का जो बहुजन समाज है या जो मूलनिवासी समाज है वह एक ही वंश का है आदिवासी लोगों से विकसित हुआ हैं याने उनका उगम एक ही है। इस रिपोर्ट ने मूलनिवासी राष्ट्रवाद के सिद्धान्त को मजबूत किया है। केवल मजबूत ही नहीं किया बल्कि इस तरह की बुनियाद रची है कि जिसपर कल के उम्दा भारत की तथा एससी, एसटी, ओबीसी इन ८५ फ़ीसदी जनता की आज़ादी की विशाल इमारत खड़ी रहनेवाली हैं।

अब तक की DNA रिपोर्ट के अध्ययन के अन्त में एक बात ध्यान में आ गई है, अनुसूचित जाति, जनजाति एवं अन्य पिछड़ी जाति, जनजाति उसी तरह आदिवासी और उनमें से धर्म परिवर्तित मूलनिवासी बहुजनों की जाति फिर वे उत्तर भारत में रहनेवाली हो या दक्खन भारत में रहनेवाले हो, या कोई भी भाषा बोलनेवाले हो, एक ही वंश के है, या डीएनए के मुतबिक समान है एवं उँचे जाति के पुरुष यह भारतीय वंश के पुरुष के किसी भी जाति के लोगों से मिलते नहीं हैं।

अपनी तीसरी रिपोर्ट के विश्लेषण के बाद हम इस नतीजे पर पहुँचे है कि भारत की जातिय, सामाजिक, आनुवंशिकी, राजकिय आधारपर तथा धार्मिक आधार पर साफ़ तौर पर बँटवारा ८५% बनाम १५% है और उसे वैज्ञानिक आधार है। भारत में उँचे वर्ण के शासक तथा निम्न वर्ण के शोषित इस तरह बँटवारा किया गया हैं यह साबित हुआ है। किन्तु DNA के नये अनुसंधान के विकृतिकरण से नाजायज तरीके से सबूतों को बदलने का क्लायमॅक्स अभी बाकी है। ऐतिहासिक तथा वैज्ञानिक अनुसंधान को आज तक कितनी बड़ी मात्रा में फांसी पर लटकाया गया होगा और जो मूल सबूत है उन्हें कितनी बड़ी मात्रा में हड़ताल लगाया गया होगा इसका अंदाजा आयेगा ऐसी एक असली सत्यकथा हमारे सामने उजागार हो रही है।

यह किस्सा है २१ वीं सदी के तमाम संचार माध्यम, सोशल मीडिया, आधुनिक साधन एवं हर एक अनुसंधान पर नज़र रखनेवाले विदेशी लोग होने के बावजूद ऐतिहासिक तथा वैज्ञानिक सत्य के साथ ऐसी ब्लैकमेलिंग की जाती है और ऐतिहासिक सत्य किस तरह विकृत तथा मिलावट करके लोगों के सामने रखा

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

जाता है उसका उम्दा नमूना हम अब देखनेवाले है।

यह असली हक़ीकत हो चुकी है डेव्डिड रिच के साथ। डेव्हिड रिच यह फिलहाल दुनिया भर में मशहूर एवं अव्वल दर्जे के DNA अनुसंधानकर्त्ता हैं। WHO WE ARE AND HOW WE GOT HERE उनके इस मशहूर किताब में वह वाक़या दर्ज किया गया है। भारत के इतिहास के बारे में इस किस्से की शुरुआत २००७ को होती है। Luca Cavalli Sforza की किताब है जिसका नाम है 'द हिस्टरी अंड जॉग्रफी ऑफ ह्युमन जीन्स' (The history and geography of human genes) उन्होंने इस किताब में अंदमान ज़जीरे के कुछ मूलनिवासी लोगों का जिक्र मौजूद है वह उन्होंने पढ़ लिया। उस जिक्र में Sforza इन्होंने यह राय दी थी कि अंदमान ज़जीरे पर रहनेवाले लोग यह आफ्रिका में मानव की निर्मिती हुई है तब से सबसे पहले मूलनिवासी लोग है और शायद उनसे ही भारतीय लोगों की निर्मिती हो गई होगी।

यह पढ़ने के बाद डेव्हिड रिच इन्होंने 'सेंटर फॉर सेल्युलर अंड मॉलिक्युलर बायोलॉजी' (CCMB) हैदराबाद के दो वैज्ञानिक लालजी सिंग एवं कुमार स्वामी थंगराज इन्हें एक खत भेजा और उनसे पूछा कि अंदमान के लोगों की आनुवांशिकता के बारे में ब्यौरेवार अध्ययन कर सकेंगे क्या? सिंह एवं थंगराज खुशी से राजी हो गये। उन्होंने इकट्ठे काम करने की चाहत जताई और कहा कि अंदमानी लोगों के साथ भारत भूमि के लोगों के DNA का भी अध्ययन करते हैं। इसके बाद डेव्हिड रिच इन्होंने हैदराबाद के सीसीएमबी में तकरीबन भारत के ३०० ग्रुप का DNA सॅम्पल अध्ययन के लिए ले लिया।

कुछ दिनों बाद थंगराज, डेव्हिड रिच इनके बोस्टन के लॅबोरटरी में गये। वे कुछ खास महत्वपूर्ण DNA सॅम्पल लेकर गये थे। इस तरह अंदमान में रहनेवाले मूलनिवासी लोग और फिलहाल भारत में रहनेवाले तमाम जाति में बँटे हुये लोग इनके सीसीएमबी के करीब करीब ३०० ग्रुप के सॅम्पल पर अनुसंधान करना शुरु हो गया। शुरुवात में उन्होंने पूर्वानुमान तहक़ीकात करना शुरु किया कि योरोपियन लोग और भारतीय लोग एक ही लागों से तैयार हुये लोग हैं। अध्ययन

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

पश्चात् उनकी समझ में आया कि फिलहाल जो भारतीय जनसंख्या एक संघ नहीं है बल्कि वह अलग अलग लोगों के संघर्ष तैयार हो गई है। इसके अलावा एक घटक है वेस्ट युरेशियन यामनया। जिनमें तीन तरीके के लोग है। एक योरोपियन, मध्य ऐशियाई एवं नियर इस्टर्न याने प्राच्य एशियावासी। इन सबका एक ग्रुप है जिसे वेस्ट युरेशियन या यामनया या स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (त्रिणमय इलाके के खूँखार चरवाहे) और दूसरा है पूर्व एशिया के यानी मूलनिवासी भारतीय, जिसकी चर्चा हमनें पहले के रिपोर्ट में की है।

अंदमान निकोबार के लोग और भारत के तमाम लोगों के डीएनए अनुसंधान से डेव्हिड रिच और उनके सहकर्मी को इस बात की पुष्टि हो गई थी भारत में दो तरीके के सुस्पष्ट जनसंख्या के गुट है एक वेस्ट युरेशियन और दूसरा ईस्ट एशियन (मूलनिवासी भारतीय) इन दो गुटों के संघर्ष से भारत की जनसंख्या तैयार हो गई है। यह क्रान्तिकारी अनुसंधान लेकर डेव्हिड रिच और उनके सहकर्मी निक पॅटरसन हैदराबाद को थंगराज एवं लालजी सिंह से मिलने आये। उन्होंने इन दोनों को अनुसंधान के नतीजे बताये। उसके बाद जो पूरा वाक़या हुआ उसे डेव्हिड रिच के शब्दों में निम्नांकित है...

"२८ अक्तुबर,२०१८ के वे २४ घंटे, बतौर अनुसंधानकर्त्ता मेरे जिन्दगी के सबसे ज्यादा तनावग्रस्त २४ घंटे थे। जब हम दोनों, मैं और मेरे सहकर्मी निक पॅटरसन हैदराबाद को हमारे अनुसंधान के नतीजे पर थंगराज एवं सिंग के साथ परामर्श करने के लिए गये थे। हमारी २८ अक्तुबर को हुई बैठक चुनौतीपूर्ण थी। सिंग एवं थंगराज यह दोनों ही पूरा प्रोजेक्ट नष्ट करने के लिए धमका रहें ऐसा महसूस हो रहा था। हमारी मीटिंग के पहले हमने उन्हें इस अनुसंधान का सार दिखाया था। वह सार यह कहता था कि आज की भारत में जो जनसंख्या है वह दो बहुत ही अलग अलग जनसंख्या से तैयार हुई है और उनमें से एक जनसंख्या वेस्ट युरेशियन है। सिंग एवं थंगराज इन्होंने हमारे इस अनुसंधान पर एतराज जताया। उनका यह कहना था कि, यह अनुसंधान यह दिखाता है कि वेस्ट युरेशियन से समूह में लोग भारत आये। उनका यह कहना

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

था यह नतीजा निकालने के लिए उनके पास कोई ठोस सबूत नहीं है। उन्होंने यह भी दलीलें की कि हो सकता है कि भारत से लोग बाहर गये हो। अर्थात उन्हें स्वयं को ही साफ पता है कि विगत हजारों सालों से भारत के मूल लोग यहीं पर रह रहे है और यहाँ से कोई भी बाहर गया नहीं है क्योंकि उन्होंने स्वयं उनके स्वयं के मायटोकाँड्रियल mDNA अनुसंधान से यह साबित किया था। उनके पास मौजूद मायटोकाँड्रियल mDNA डाटा साथ में तमाम आनुवंशिक डाटा जाँचकर देखें बगैर भारत में इस तरह का युरेशियन आक्रमण होने का सिद्धान्त रचनेवाले अनुसंधान में शामिल होने को वे तैयार नहीं थे। उनकी बातों से यह नज़र आ रहा था कि, भारत में वेस्ट युरेशिया से बड़ी मात्रा में आक्रमण हुआ है यह कहना यह बात राजनीतिक नज़रिये से बहुत घातक है। वे खुलकर यह बातें नहीं बोल रहे थे किन्तु भारत पर हुये इस आक्रमण से भारतीय उपखण्ड में अहम बदलाव हुये थे जिससे भारतीय उपखण्ड को बेहताशा बदला गया था इससे जाहिर है कि यह बात बहुत संजीदा थी।

'वेस्ट युरेशियन' और 'भारतीय' इनके ताल्लुकात स्पष्ट करने के लिए सिंग एवं थंगराज इन्होंने एक नई परिभाषा सुझाई, 'जेनेटिक शेअरिंग' आनुवांशिक बँटवारा जैसे की वेस्ट युरेशियन और भारतीय इनमें समान उत्तराधिकारी देनेवाली प्राचीन जनसंख्या दिखाई देगी। हमारा अनुसंधान यह दिखा रहा था कि भारतीय जनसंख्या यह दो बहुत अलग अलग लोगों का मिश्रण है किन्तु उनका यह कहना था कि दो अलग लोगों का मिश्रण हुआ ही नहीं। हम सकते में आ गये! उसी पल मुझे ऐसा लगा कि, राजनीति दबाव तले हमें हमारा अनुसंधान प्रसिद्ध करने से रोका जा रहा है।

हमारे कंपाउंड के बाहर हिन्दू की सबसे बड़ी छुट्टी में से दिवाली त्यौहार की आतिषबाजी चल रही थी। छोटे बच्चे चलती हुई ट्रक के नीचे जलती हुई फुलझडीयाँ फेंक रहे थे। मैं और मेरे सहकर्मी पॅटरसन इन्होंने सिंग एवं थंगराज इनके अनुसंधान संस्था के गेस्ट रुम के कमरे में स्वयं को बंद कर लिया और सोचने लगे की आखिर हो क्या रहा है! हमारे अनुसंधान का सांस्कृतिक

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

नतीजा शनैः शनैः हमारी समझ में आ गया और स्पष्ट हो गया। फिर हम एक बीच की परिभाषा ढूँढने लगे, जो वैज्ञानिक दृष्टि से बराबर हो और अन्य पूरी बातों का भी संवेदनात्मक विचार कर सके।

दूसरे दिन तमाम ग्रुप फिर से सिंग के ऑफिस में इकट्ठे हो गये। हम मिलकर बैठ गये और इन दोनों प्राचीन भारतीय गुटों के लिए दो नये नाम ढूंढे। हमने लिखा कि भारत की आज की जनसंख्या दो बहुत अलग अलग जनसंख्या का मिश्रण है।

ANI (Ancestral North Indian) अॅन्सेस्ट्रल नॉर्थ इंडियन और अॅन्सेस्ट्रल साउथ इंडियन ASI (Ancestral South Indian) जो कि मिक्स होने से पहले दो अलग अलग ग्रुप थे। जैसे की आज योरोपियन और पूर्व एशियाई हैं। ANI के योरोपियन, मध्य एशियाई, पश्चिम एशियाई एवं कॉकेशस इन लोगों से ताल्लुकात हैं। किन्तु हमने उनपर सटीक स्थान का दाँवा नहीं किया या उनकी मातृभूमि का या किसी प्रकार के स्थानान्तरण का जिक्र नहीं किया। जो ASI है जो फिलहाल मौजूद है उनका दुनिया के या भारत के बाहर किसी भी या दूसरी जनसंख्या से ताल्लुक नहीं है। हमने यह दिखाया है कि ANI और ASI यह भारत में नाटकिय ढंग से एकदूसरे में मिश्रित हो गये हैं। इसका मतलब यह है कि भारत में अब की जनसंख्या यह वेस्ट युरेशियन लोगों से जुड़े लोग एवं विविधता भरे व और करीबी पूर्व आशियायी लोग और दक्षिण एशियाई लोग इनका कम ज्यादा मात्रा में मिश्रण हैं। कोई भी ग्रुप आनुवांशिक दृष्टि से शूद्ध है यह दाँवा नहीं कर सकते।''

यह आधुनिक अनुसंधान के इतिहास की सबसे बड़ी दग़ाबाजी है। पेशवे के दफ्तर का अध्ययन करते वक्त एक ब्राह्मण अध्ययनकर्ता को नाना फडणवीस के रखैलीयों की तालिका बरामद हो गई थी। वह तालिका उसने अपनी जाति बंधुओं के कुकर्म का या चरित्रहिनता का सबूत अन्य किसी के भी हाथ ना लगे इसलिए वह तालिका एहतियात से गटक ली यह पता था, किन्तु आधुनिक काल में वैज्ञानिक अनुसंधान को ब्लैकमेल करके अपना विदेशीपन छिपाने के लिए

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

ब्राह्मण किस हद तक जाऐंगे और अपने कौशल्य का अनुसंधान के मूल गूदे को ही विकृत करने के लिए इस्तेमाल करेंगे इसका यह उम्दा नमूना है। इससे प्राचीन तथा मध्ययुगीन भारत के इतिहास के सबूतों के सन्दर्भ में ब्राह्मण इतिहासकारों ने कितना विकृतीकरण किया होगा इसकी केवल कल्पना ही करना ठीक होगा।

भारत की तमाम जनसंख्या के अध्ययन के अन्त में निक पॅटरसन तथा रिच डेव्हिड यह दो वैज्ञानिक जिस नतीजे तक पहुँचे थे वे नतीजे ऐसे थे कि भारत का इतिहास या भारत की आज की जनसंख्या इन दोनों को साफ़ ग्रुप में बाँटा गया हैं। एक ईस्ट युरेशियन और दूसरा मूलनिवासी भारतीय। इस तरह की रचना हो गई होती जो भारत की जातिय संरचना है, जातिय गुलामी है, वर्णव्यवस्था में जो शूद्र लोग है वे मूल भारतीय है और जिन लोगों ने वर्णव्यवस्था लागू की वे लोग वेस्ट युरेशियन है यह बात लोगों के फौरन समझ में आती और यहाँ से अगले तमाम अनुसंधान में वेस्ट युरेशियन और इंडियन इस तरह के दो शब्द साफ़ तरीके से प्रचलित हो गये होते। जिससे भारत में यह जो संघर्ष इ.स.पूर्व २००० से १५०० के दरमियान हुआ और आज तक हो रहा है उसका स्वरुप लोगों को सामने उजागर हो गया होता। किन्तु इतिहास की दृष्टि से एवं अनुसंधान की दृष्टि से बहुत स्पष्ट यह दो संकल्पना एकदम अस्पष्ट, पेचीदा, संदिग्ध, एवं गुमराह करनेवाली इस तरह की संकल्पना में बदलाव किया गया।

ANI इस संकल्पना का हम यदि हिन्दी में अनुवाद करते है तो उसका अर्थ होता है उत्तर भारतीयों के पुरखे और ASI इस संकल्पना का यदि हिन्दी में अनुवाद किया तो उसका अर्थ होता है दक्षिण भारतीयों के पुरखे। इसलिए भारत के इतिहास की यह दोनों संकल्पना को जटिल किया गया या विकृत किया गया है। इन दोनों शब्दों के अलावा दो पूर्णतया सटीक एवं अब तक इस्तेमाल किये गये शब्द यही सही थे किन्तु उसका विकृतिकरण किया गया। वे शब्द हमें फिर से तैयार करने होंगे और यहाँ से अगला पूरा अनुसंधान तथा लेखन प्रचार ANI एवं ASI यह दो शब्द जिस मूल शब्द से बने है उस ANI = **वेस्ट युरेशियन** तथा ASI=**मूलनिवासी भारतीय** इन शब्दों का इस्तेमाल करना जरुरी है। नहीं तो यहाँ से अगले अनुसंधान में यदि हमने ANI तथा ASI इन शब्दों का इस्तेमाल

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

किया तो इतिहास की जनसंख्या का एवं फिलहाल मौजूद जनसंख्या के निश्चित स्थान का या गुट का निश्चित ज्ञान नहीं होगा और इतिहास में जो दग़ाबाजी हो चुकी है वह दग़ाबाजी फिर से दोहराई जाएगी।

२००८ के बाद जो कुछ जेनेटिक अनुसंधान प्रकाशित हुए है उस प्रकाशित हुये अनुसंधान में ANI तथा ASI यह दो ही परिभाषा बदली गई और संदेहात्मक शब्द प्रचलित किये गये एवं उन्हें अधिकृत किया गया। इस तरह मूल शब्दों का विकृतिकरण करके अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर वैज्ञानिक को ब्लॅकमेल करके उसका रुप बदलने से यहाँ से अगले अनुसंधान जो है वह हम यदि देखते है तो उसमें वेस्ट युरेशियन लोगों के लिए या उँचे वर्ण के लोग है उनके लिए ANI उत्तर भारतीयों के पुरखे एवं ASI दक्षिण भारतीयों के पुरखे इस तरह की शब्दरचना की गई है। जिससे साफ़ तौर पर लोगों के समूह का बोध नहीं होता है।

ANI और ASI इन संकल्पना को रचने से दूसरा एक अहम संघर्ष देश में निर्माण करने की साजिश ब्राह्मणों ने रची है। यह संघर्ष है दक्षिण भारतीय बनाम उत्तर भारतीय। असल में दक्षिण भारत के एससी, एसटी, ओबीसी और मायनॉरिटी के लोग फिर वे कोई भी भाषा बोल रहे हो और उत्तर भारत के एससी, एसटी, ओबीसी और मॉयनॉरिटी के ८५% बहुजन लोग फिर वे कोई भी भाषा बोलते हो यह एक ही वंश के है यह सिद्ध हुआ है। इसके पहले दो-तीन रिपोर्ट हमने देखें है उस रिपोर्ट में हमने देखा है कि, L3 नाम के ग्रुप में से M तथा N यह दो ग्रुप बन गये और भारत के तमाम ८५ फीसदी लोगइसी ग्रुप के उत्तराधिकारी हैं। किन्तु वेस्ट युरेशियन एवं मूल भारतीय (इंडियन) यह संकल्पना थी, यह संकल्पना छिपकर ANI याने उत्तर भारतीयों के पुरखे और ASI याने दक्खन भारतीयों के पुरखे इन संकल्पनाओं को आगे लाया गया जिससे आक्रमक आर्य या यामनया या स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट लोग ईस्ट युरेशियन है और भारत में केवल १५ फीसदी है इस बात को अनुसंधान में हेराफेरी करके छिपाया जा सके। इसके अलावा उत्तर भारतीय लोगों में उन्हें मिश्रित किया गया याने जो खूँखार यामनया लोग वेस्ट युरेशिया से इ.स.पूर्व २००० से १५०० के दरमियान भारत में आये उन्हें उत्तर भारतीय सारे लोगों में मिलाया गया एवं अल्पसंख्य लोगों को बहुसंख्य किया गया। उसी तरह

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

८५% एससी, एसटी, ओबीसी लोग यह मूल भारतीय है उनका आधा बँटवारा करके दक्खन भारतीय के साथ जोड़ा गया और उनकी आबादी कम की गई। भारत में जो चल रहा १५% युरेशियन यामनया आर्य बनाम ८५% मूलनिवासी संघर्ष है उस संघर्ष को भौगोलिक संघर्ष का रुप देने का प्रयास किया गया है।

महाराष्ट्र के ऊपरी हिस्से के तमाम लोग इंडो-योरोपियन भाषा बोलनेवाले लोग थे याने उत्तर भारतीय एवं महाराष्ट्र की दक्षिण दिशा के जो तमाम लोग है वे द्रविडीयन भाषा बोलनेवाले लोग है। आज के काल में उत्तर भारतीय लोग याने इंडो-योरोपियन भाषा बोलनेवाले लोग है उनकी तादाद ज्यादा हैं। इसके अलावा दक्षिण भारत के साऊथ इंडियन लोग है उनकी संख्या कम है। ANI एवं ASI से इन दोनों में संघर्ष लगाया गया तो जो अल्पसंख्य आक्रमणकारी ब्राह्मण है जिन्होंने प्राचीन भारतपर आक्रमण किया था वे छिप जाते हैं।

यही तरीका राजनीति में भी हमें दिखाई देता है। मिसाल के तौर पर एससी, ओबीसी के तमाम लोगों को हिन्दू घोषित करके ब्राह्मण लोग उनका नेता बनता है और देशपर राज करता है यह हम विगत सत्तर सालों से देख ही रहे है। यही संकल्पना इतिहास में उन्होंने लागू की और डेव्हिड रिच तथा उनके सहकर्मी को जो अनमोल अनुसंधान किया उस अनमोल अनुसंधान पर उन्होंने कालिख पोत दी, उसे विकृत किया और दो बहुत अवैज्ञानिक एवं बूरी तरह से गुमराह करने की संकल्पना विकसित की जिससे प्राचीन भारत के इतिहास का बहुत बड़े पैमाने पर विकृतिकरण किया गया। यह विकृतिकरण रोकने के लिए हमें जिन चिजों का प्रचार करना जरुरी है वह ANI इस शब्द का मूल अर्थ वेस्ट युरेशियन यामनया है और ASI इस शब्द का मूल अर्थ मूलनिवासी भारतीय है।

इस रिपोर्ट में ब्राह्मण केवल मूल रिपोर्ट के दो सटीक नाम बदलकर संदेहास्पद नाम डालने में कामयाब नहीं हुये बल्कि उन्होंने इस रिपोर्ट को ज्यादा से ज्यादा संदेहास्पद बनाने की पूरी कोशिश की। रिच डेव्हिड इन्होंने उनकी किताब में जो वाक़या बयान किया है उससे और एक पहलू हमारी समझ में आता है कि वेस्ट युरेशियन लोग जिन्होंने थंगराज एवं उनके ग्रुपने ANI घोषित किया वे आखिर कहाँ के है इसका जिक्र किसी भी तरीके से करने पर पाबंदी लगाई गई

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

जिससे इस रिपोर्ट में वेस्ट युरेशियन यामनया लोग यह भारत में किस प्रदेश से आये इसका किसी भी तरीके से जिक्र हमें बाद में प्रकाशित हुये रिपोर्ट में दिखाई नहीं देता है।

उँचे वर्ण के लागों में युरेशियन स्टेप या खूँखार यामनया लोगों का DNA ३९% से ७७ फीसदी प्राप्त होता है, इसका उस रिपोर्ट में जिक्र किया गया और आगे उन्होंने यह भी कहा कि भारत में अब कोई भी अमिश्रित वंश के लोग नहीं है। कोई भी हम एक वंश के लोग है यह दाँवा ना करे। यह निष्कर्ष देने के लिए डेव्हिड रिच और अन्य अनुसंधानकर्त्ता पर दबाव डाला गया। लिहाजा यह रिपोर्ट ब्राह्मण और उनके ग्रुपने किया हुआ ब्लैकमेलिंग को आधार बनाकर वैज्ञानिक सत्य के आसपास किन्तु पूरा सत्य ना कहनेवाला प्रकाशित किया गया। फिर भी इस रिपोर्ट में बहुत सारी जानकारी हमारे लिए अहमियत रखती है। अर्थात इस रिपोर्ट को अब नेचर नाम की मशहूर पत्रिका में ANI तथा ASI इस नाम के साथ प्रकाशित किया है इसलिए उसे एक तरह से शोहरत प्राप्त हो गई है। इसलिए मौजूदा हालात में भी ब्राह्मण सब तरह का बल प्रयोग करके वैज्ञानिक अनुसंधान को, ऐतिहासिक सबूतों को किस तरह विकृत करता है या मॅनिप्युलेट करता है यह बात हमारी समझ में आ चुकी है।

भारतीय जनसंख्या के इतिहास की पुनर्रचना

Reconstructing Indian population history

David Reich, Kumarasamy Thangaraj, Nick Patterson, Alkes L. Price & Lalji Singh

२४ सितम्बर,२००९ को रिकन्स्ट्रक्टींग इंडियन पॉप्युलेशन हिस्टरी इस नाम का अनुसंधान nature नाम की मशहूर मासिक में प्रसिद्ध हुआ। जिसमें बहुत सारी बातें उजागर हो गई है। जिसमें एक अहम बात खुल गई है कि, वेस्ट युरेशियन यामनया लोग जिन्होंने इ.स.पूर्व २००० से १५०० के दरमियान भारत पर आक्रमण किया, जो प्रोटो इंडो-योरोपियन भाषा बोलते थे, जो संस्कृति के पहले की भाषा है। वह भाषा लेकर वे भारत आ गये। संस्कृत यह मूल भारतीय भाषा

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

नहीं है। आज जो एससी, एसटी, ओबीसी एवं मायनॉरिटी के लोग है जो की उत्तर काश्मिर से दक्खन की ओर कन्याकुमारी तक रहनेवाले मूल लोग है उनकी मूल भाषा द्रविडीयन थी। वह भाषा कौनसी है यह यदि स्पष्ट नहीं है फिर भी उत्तर भारत में खूँखार वेस्ट युरेशियन यामनया लोगों ने आक्रमण करने के बाद संस्कृत पहले की भाषा लाई, वह भाषा तथा द्रविडीयन भाषा के मिश्रण से उत्तर भारत के तमाम इंडो-योरोपियन भाषा की उत्पत्ति हो गई और यह सिद्धान्त इस अनुसंधान से मजबूत हो गया है।

लिहाजा अब हम खुलकर कह सकते है कि मूल भारतीयों की भाषा द्रविडीयन है। फिर वह प्राचीन भारत की या दक्षिण भारत की सबसे प्रमुख भाषा और सबसे प्राचीन भाषा तामिल हो सकती है या उसके पहले तमिल ब्राह्मी या अन्य काई भी अतिप्राचीन द्रविड हो सकती है। उसके पश्चात् एक अहम खोज तथा अनुसंधान इस पेपर ने उजागर किया है वह यह कि अंदमान निकोबार ज़जीरे पर रहनेवाले लोग और भारत में रहनेवाले एससी, एसटी, ओबीसी एवं मायनॉरिटी याने ८५% बहुजन लोग यह एक ही ग्रुप के लोग है या यह लोग एक ही L3 नाम के मायटोकाँड्रियल ग्रुप से तैयार हो गये है।

अब तक की DNA रिपोर्ट के अध्ययन में एक बात समझ में आ गई है वह यानी मूल भारतीय मूलनिवासी लोग और वेस्ट युरेशियन खूँखार यामनया लोग यह दो अलग अलग घटक भारत में मौजूद है और वे युरेशियन स्टेप प्रदेश से भारत में आये है। किन्तु भारत में आने के बाद उन्होंने वर्ण व्यवस्था निर्माण की और उसके बाद वहाँ के तमाम लोगों को शूद्र घोषित किया किन्तु यहाँ की सभी महिलाऐं जिन्हें हमने DNA रिपोर्ट में देख चुके है कि मूलनिवासी है जिन्हें शूद्र घोषित करने की वजह यह है कि खूँखार यामनया आक्रमक ने भारत में आते वक्त अपना परिवार साथ लेकर नहीं आये या वे केवल पुरुष ही थे इस तरह का निष्कर्ष निकलता है। किन्तु यह निष्कर्ष वैज्ञानिक दृष्टि से और मजबूत करने के लिए हमें और एक DNA अनुसंधान के रिपोर्ट का अध्ययन करना जरुरी है।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

भारतीय उपखण्ड का जननिय कालक्रम बड़े पैमाने पर लैंगिक पक्षपातपूर्ण बिखराव दर्शाता है।

A genetic chronology for the Indian Subcontinent points to heavily sex-biased Dispersals

Marina Silva, University of Huddersfield, Andreia Brand, Instituto Portugus de Oncologia,T eresa Rito, University of Minho, Joana Barbosa Pereira, University of Porto

दिसम्बर, २०१७ में A genetic chronology for the Indian Subcontinent points to heavily sex-biased Dispersals इस नाम से मरीना सिल्वा तथा अन्य इनकी एक रिपोर्ट BMC Evolutionary Biology नाम की पत्रिका में छपकर आई थी। इस रिपोर्ट ने वेस्ट युरेशियन खूँखार यामनया इनकी तरह तरह की आक्रमणकारी टोली ने भारत पर इ.स.पूर्व २००० से १५०० के दरमियान आक्रमण किया यह साबित किया। उस तरह इस आक्रमण में केवल पुरुष ही आये थे और उन्होंने साथ में महिलाओं को नहीं लाया था यह साबित किया। उसी तरह आक्रमणकारी जब भारत में आये तब वे तीन तरह के गुट में बँटे हुये थे यह भी उन्होंने साबित किया। यह रिपोर्ट एक अहम रिपोर्ट है। इस रिपोर्ट का सार निम्नांकित है।

“भारतीयों की मातृ विरासत यह वरीयता से भारतीय है किन्तु पितृ विरासत यह विगत दस हजार बरसों के बीच की है। जिसमें ताम्रपाषाण युग में मध्य आशिया से जो आक्रमण हुये वे प्रमुखता से आदमीयों के ही थे। जिन्होंने उनके साथ इंडो–योरोपियन घुमन्तु एवं चरवाहे समाज में चल रही पितृसत्तात्मक पितृगृह तथा पितृवंशिक समाज व्यवस्था भारत में लेकर आये। इंडो योरोपियन लोगों का भारत में आना यह बड़े पैमाने में विस्तार का एक हिस्सा था कि, पोंटिक कॅस्पियन स्टेप इस हिस्से से सब तरफ फैल गये थे। इस स्थानान्तरण में वरीयता से पुरुष ही थे यह क्रोमोझोम के विस्तार से दिखाई देता है। इसमें दूसरी

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

बात हमें यह दिखाई देती है कि इस क्रोमोझोम का विस्तार आम तौर पर ५००० से ३५०० सालों पहले हुआ था।

आमतौर पर इ.स.पूर्व पाँच हजार सालों पहले इस स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट टोलीयों ने योरोप पर तथा मध्य आशिया के मार्ग से आशियापर आक्रमण करना शुरु कर दिया। आनुवंशशास्त्र के अध्ययन से हमें एक बात समझ में आती है कि, जो घटनाऐं या वाक़या योरोप में छोटी मात्रा में हुये थे वही वाक़ये भारतीय उपखण्ड में बड़ी मात्रा में हुये है। जिससे भारत के मूलनिवासी लोगों पर यामनया लोगों के आक्रमण का असर हुआ उसी तरह योरोपीय लोगों की संस्कृति पर भी इसी तरह का असर हुआ। योरोप में आमतौर पर ९००० सालों पहले खेती की शुरुआत हुई या शेती पहुँची उसके बाद यामनया स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट टोली का आक्रमण हुआ। Y क्रोमोझोम का R1a यह जीन है वह जिस तरह घुमन्तु हालात में और इंडो-योरोपियन भाषा लेकर दक्खन आशिया में आये उसी तरह R1b यह ग्रुप योरोप में फैल गया और वे उस स्थान पर इंडो-योरोपियन भाषा लेकर गये। किन्तु योरोप में जो हुआ वह और दक्खन आशिया यानी भारत में जो हुआ उसमें एक अनूठा फ़र्क है वह फ़र्क है कि इंडो-योरोपियन स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट यामनया के आक्रमण के बाद उस स्थान की मूल नॉन इंडो-योरोपियन भाषा नष्ट हो गई किन्तु भारत में ऐसा नहीं हुआ। भारत में अब भी एक चौथाई लोग उनकी मूल द्रविडीयन भाषा बोलते हुये नज़र आते है। भारत पर या दक्खन आशिया पर आक्रमण योरोप आक्रमण से भी दूसरी अहम दृष्टि से भी अलग था। योरोपियन लोगों के आक्रमण के बाद हमें उस स्थान पर Y क्रोमोझोम बहुत बड़ी मात्रा में पॅस्टोरॅलिस्ट लोगों में या घुमन्तु यामनया इन लोगों में प्राप्त हुआ है। किन्तु भारत में वह इतनी ज्यादा मात्रा में प्राप्त नहीं हुआ है।''

इस रिपोर्ट का अध्ययन करते वक्त हम आधुनिक भारतीय लोगों के DNA का अध्ययन करते करते प्राचीन भारती लोगों के DNA की ओर आ गये। DNA के उपरोक्त रिपोर्ट का विश्लेषण करने के पहले और उस बारे में प्राचीन

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

DNA के अन्य रिपोर्ट का ताल्लुक जाँचने के पहले हम अपने मूल पहलू पर गौर करते है। जिससे हमने इस आलेख की शुरुआत की थी।

७ सितम्बर, २०१९ का DNA रिपोर्ट। हम इस रिपोर्ट की सहायता से प्राचीन भारतीय हडप्पा सभ्यता किस तरह उन्नत हुई और प्राचीन युरेशियन स्टेप से आये हुये खूँखार यामनया टोली ने यह संस्कृति किस तरह बरबाद कर दी और उसका क्या नतीजा हुआ इसका अध्ययन करनेवाले हैं।

प्राचीन हडप्पाई जीनोम में स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (पशुपालक यामनया या आर्य) या ईरानी किसान की विरासत मौजूद नहीं

An Ancient Harappan Genome Lacks Ancestry from Steppe Pastoralists or Iranian Farmers

Vasant Shinde, Vagheesh M. Narasimhan,Nadin Rohland, Swapan Mallick, Matthew Mah,Mark Lipson, Nathan Nakatsuka, Nicole Adamski, Nasreen Broomandkhoshbacht, Matthew Ferry, Ann Marie Lawson, Megan Michel, Jonas Oppenheimer, Kristin Stewardson, Nilesh Jadhav,Yong Jun Kim, Malavika Chatterjee, Avradeep Munshi, Amrithavalli Panyam, Pranjali Waghmare, Yogesh Yadav, Himani Patel, Amit Kaushik, Kumarasamy Thangaraj, Matthias Meyer, Nick Patterson, Niraj Rai, and David Reich

७ सितम्बर को सेल नाम की पत्रिका में प्रकाशित हुये इस रिपोर्ट ने हडप्पा सभ्यता यहाँ की मूलनिवासी लोगों ने निर्माण की और उसमें बाहर के किसी भी जनसंख्या का सहयोग नहीं है उसी तरह इ.स.पूर्व २००० से १५०० के दरमियान स्टेप पेस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) टोली ने भारत पर आक्रमण किया एवं इंडो योरोपियन भाषा लेकर आये थे यह निष्कर्ष निकाला। यह भारत के इतिहास की बुनियाद को उलट पुलट कर देनेवाला अनुसंधान है।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

२००८ से प्राचीन DNA ने इतिहास लेखन में क्रांती करके इतिहास पुनर्लेखन को मजबूती प्रदान की और कुछ पहले के सिद्धान्त को पुख्ता कर दिया। किन्तु प्राचीन भारतीय हडप्पा सभ्यता का प्राचीन aDNA मौजूद नहीं था। जिससे जीनोम के सहारे इतिहास लेखन करना मुश्किल था। ७ सितम्बर के रिपोर्ट ने यामनया आर्य लोगों ने भारतपर आक्रमण किया की नहीं इस विवाद पर परदा डाल दिया तथा यामनया लोगों ने आक्रमण किया यह साबित कर दिया। इस रिपोर्ट में आखिर क्या लिखा है यह संक्षेप में देखते है।

"हम सिंधु संस्कृति का प्राचीन जीनोम का रिपोर्ट प्रस्तुत कर रहे है। हमने जिन इन्सानों के जीनोम मिलाये है उन इन्सानों की प्रोफाईल दुनिया में अन्य कोई भी व्यक्ति समूह के प्रोफाईल से अलग है। उन इन्सानो में ईरान एवं तुर्कमेनिस्तान में रहनेवाले सिंधु संस्कृति के बाहर के ११ लोग जो कि सिंधु संस्कृति के सम्पर्क में थे, उनमें प्राचीन ईरानी किसान तथा दक्खन पूर्व एशियाई हंटर गॅदरर्स इनकी विरासत मौजूद है। किन्तु यह विरासत ईरानी खेतिहर तथा सिंधु संस्कृति के इन्सान के पुरखे याने दक्खन पूर्व एशियाई हंटर गॅदरर्स, आधुनिक मानव आफ्रिका से दुनिया भर फैलने के पहले का है। इस अनुसंधान से यह पूर्वानुमान गलत होता है कि दक्खन एशियाई लोगों में प्राप्त प्राचीन ईरानी किसान की विरासत यह ईरानी किसान बड़ी मात्रा में पूरब से आने से प्राप्त हुआ। इसके अलावा ईरानी पहाड़ी इलाके के जीनोम का एवं सिंधु संस्कृति के जीनोम का अध्ययन करने के बाद यह समझ में आता है कि यह दोनों ही जीनोम अलग अलग हंटर गॅररर्स के ग्रुप्स से निर्माण हुये हैं। जिन्होंने एक दूसरे में ना मिलाते हुये या दोनों ग्रुप के लोग एक दूसरे के सम्पर्क में ना रहते हुये अलग अलग खेती करना शुरु किया। इन इन्सानों के जीनोम में स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (पशुपालक खूँखार यामनया चरवाहें) इनकी विरासत प्राप्त नहीं हुई क्योंकि जिस तरह वे भारत में है उसी तरह सिंधु सभ्यता विकसित होते वक्त वे स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (पशुपालक खूँखार यामनया चरवाहे) सिंधु सभ्यता में नहीं थें।"

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

इस सारांश के बाद हम इस रिपोर्ट का ब्यौरेवार निष्कर्ष क्या निकलता है वह देखते है।

"सिंधु संस्कृति का जो DNA परीक्षण किया गया है वह DNA एक महिला का है। इस महिला का मायटोकाँड्रियल mDNA यह U2b2 हॅप्लोग्रुप का है यह ज्ञात हुआ। यह हॅप्लोग्रुप फिलहाल मौजूदा ४०० हॅप्लोग्रूप के साथ मिलाया गया। उसका निष्कर्ष ऐसा निकला कि यह हॅप्लोग्रुप अन्य ४०० ग्रुप में से किसी से भी मिलता जुलता नहीं है इसका मतलब यह ग्रुप दक्खन एशिया में अनूठा है।

इस अनुसंधान के निष्कर्ष कहते है कि, एशिया एवं योरोप में खेती करने का तरीका Fertile Crescent (ईरान तुरान इजराईल आदि) से पहले किसानों ने नहीं लाया। बजाए इसके पूर्व अनातोलिया के हंटर गॅदरर्स इन्होंने योरोप में तथा आज तक पक्के तौर पर ज्ञात नहीं है, उस स्थान पर दक्षिण एशिया में खेती में अन्य कोई भी लोग स्थानान्तरित ना होते हुये आज़ादी से शुरुवात की। इसका मतलब यह नहीं है कि, बाद के काल में खेती अर्थव्यवस्था में पहुँचाने में लोगों के हलचल या कोई अहमियत नहीं है; मिसाल के तौर पर प्राचीन DNA अध्ययनकर्ता ने इसकी दखल ली है कि, इ.स.पूर्व ६५०० के बाद अनातोलियन हंटर गॅदरर्स से विकसित हुये पश्चिम अनातोलियन किसानों ने योरोप में खेती का प्रचार किया। दक्षिण एशिया में भी इसी तरह की खेती का विकास होकर किसानों ने बड़ी मात्रा में इस हिस्से में उसका प्रचार करने की संभावना है। इस तरह खेती का दक्षिण एशिया में विकास हुआ है या नहीं इसकी तहकीकात नहीं की गई किन्तु खेती के पहले तथा तुरंत बाद DNA मौजूद होने पर उसे निश्चित किया जा सकेगा।

हमारे अनुसंधान का भाषिक असर भी हुआ है। अब फिलहाल दक्षिण एशिया में बोली जानेवाली इंडो योरोपियन भाषा के बारे में एक अनातोलियन हायपोथेसिस है। इसके मुताबिक इंडो योरोपियन भाषा या अनोतोलियन किसान के साथ ईरानियन पहाड़ी इलाके के मार्ग से दक्षिण एशिया में आया। किन्तु

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

हमारे अनुसंधान में हमने यह दिखा दिया है कि, सिंधु संस्कृति के जीनोम में अनातोलीयान किसानों की विरासत नहीं उसी तरह जो विरासत ईरानियन किसानों की है वह इरानीयन किसानों के पहले के हंटर गॅदरर्स की है। भाषा लोगों के स्थानान्तरण के साथ दूसरे प्रदेश में जाती है इसलिए यह इंडोयोरोपियन भाषा विस्तार का कुदरती मार्ग इ.स.पूर्व दूसरे सहस्राब्दी के पूर्वार्ध में (इ.स.पूर्व २०००-१५००) पूर्व योरोप से मध्य एशिया मार्ग से दक्षिण एशिया में यह है जो कि प्राचीन DNA ने साबित किया है। दक्षिण एशिया से प्राप्त स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट की विरासत पश्चिम योरोपिय लोगों की ओर से नहीं है बल्कि पूर्व योरोपियन लोगों की ओर से आई है एवं बाल्टो साल्विक भाषा तथा इंडो ईरानियन भाषा की समानता और भी मजबूत करती है। हमने जिस सिंधु संस्कृति के लोगों का विश्लेषण किया है वह व्यक्ति तथा अन्य सिंधु सभ्यता से जुड़े हुये ११ व्यक्ति इनकी विरासत सिंधु सभ्यता के विकास की ऊँचाई तक (वायव्य) पश्चिम-दक्षिण हिस्से में खेती करनेवाले तमाम किसान में प्राप्त होती है। उसी तरह इनमें स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट तथा ईरानियन किसानों की विरासत बिलकुल नहीं है, यही विरासत बाद के तमाम दक्षिण एशियाई लोगों में हैं सिंधु संस्कृति का DNA का एक नमूना या १२ लोगों के नमूने यदि इस संस्कृति के लोग कौन थे यह बताने के लिए काफ़ी है तो फिर भी इस संस्कृति का कॉस्मोपोलिटिन स्वरुप साबित करने के लिए काफ़ी नहीं है। भविष्य में अनुसंधान की दिशा यह है कि इस संस्कृति के ज्यादा से ज्यादा व्यक्ति का प्राचीन aDNA विश्लेषण करके संख्यात्मक जानकारी प्राप्त करनी चाहिये या संस्कृति की विरासत किस तरह बँट गई उसकी जनसंख्या की रचना की ख़ासियत क्या है यह समझना चाहिये।''

हमने राखीगढ़ी की महिला का डीएनए रिपोर्ट देखा है। इसके पहले हमने मरीना सिल्वा के रिपोर्ट का अध्ययन किया। हमने देखा है कि, उसमें उन्होंने यामनया लोगों की जानकारी दी है। ७ सितम्बर के डीएनए रिपोर्ट के पहले हमारे पास युरेशिया के, अनातोलिया के तथा ईरान के प्राचीन डीएनए रिपोर्ट है। सिंधु संस्कृति के रिपोर्ट का विश्लेषण करते वक्त दो पहलू उजागर होते है। यह जो DNA है वह भारत के मूलनिवासी लोगों का DNA है। क्योंकि इस mDNA

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

की दूसरे किसी भी mDNA के साथ मिलाया गया तो वह मेल नहीं करता। यानी सिंधु संस्कृति के लोग दक्षिण एशिया के बेजोड़ लोग हैं। याने यह मूलनिवासी लोग हैं।

अब संस्कृति की बुनियाद की पहली नींव हम देखते है। सभी तरह की मानवी बस्ती में आफ्रिका से बाहर आने के बाद तमाम आधुनिक मानव हंटर गॅदरर (शिकार इकट्ठा करनेवाले) थे यह नज़र आता है। क्योंकि धरती पर यह हंटर गॅदरर (शिकार इकट्ठा करनेवाले) पहली बार जमीन पर कब्जा करने के लिए घुमते हुये हमें नज़र आते है। जिन जिन स्थानों पर यह हंटर गॅदरर पहली बार स्थिर हो गये वह उनकी मूल भूमि थी। क्योंकि उसके पहले संबंधित भूमिपर किसी भी तरीके का आधुनिक मानव हमें दिखाई नहीं देता। इसलिए लोगों ने खेती को कहाँ शुरुआत की यह बहुत अहम बात है।

संसार के इतिहास का तथा प्राचीन डीएनए का अध्ययन करने पर हमें अब तीन तरीके के खेती के प्रमाण उपलब्ध होते हैं। पहला है अनातोलियन किसान। यह दुनिया के पहले किसान है, उन्होंने अनातोलिया में खेती की शुरुआत की। उसके बाद दूसरी खेती की शुरुआत ईरानियन किसान ने Fertile Crescent जो कि आज के ईरान तथा इजराईल का हिस्सा है वहाँ पर की गई। हमने जब सिंधु संस्कृति के अनुसंधान का निष्कर्ष देखा तब इन दोनों किसानों के अंश या उत्तराधिकारी सिंधु संस्कृति में हमें प्राप्त नहीं हुआ हैं। उसी तरह दूसरा एक निष्कर्ष हमें उपरोक्त अनुसंधान पढ़ने पर ध्यान में आता है, वह यह कि दक्खन एशिया में याने भारत में याने सिंधु संस्कृति में स्वतन्त्र रुप से खेती की शुरुआत हुई थी। खेती को आखिर कहाँ पर शुरुआत हुई थी इसका DNA मौजूद नहीं है फिर भी वास्तव में कहाँ शुरुआत हुई थी यह बतानेवाला आर्किओलॉजिकल प्रमाण हमारे पास है।

भारतीय उपखण्ड में खेती को सबसे पहले शुरुवात इ.स.पूर्व ९००० के आसपास मेहरगड़ में हुई थी। मेहरगढ़ से खेती के सबूत प्राप्त हो गये है। वहाँ का DNA उपलब्ध ना होने से DNA अनुसंधानकर्ता ने यदि यह सबूत सिद्ध नहीं हो सके फिर भी आर्किओलॉजिकल साधनों के जरिये वे सबूत सिद्ध हो चुके है।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

मेहरगड़ यह सिंधु संस्कृति का प्रमुख शहर मोहेंजोदरो से महज़ तीन सौ किलोमीटर की दूरी पर है और सिंधु संस्कृति का प्राचीन गाँव है। इसके पहले तमाम प्राचीन DNA अनुसंधान यह मानकर या समझकर चलते थे कि अनातोलियन फार्मर्स और ईरानियन फार्मर्स लोगों ने सिंधु संस्कृति में खेती की शुरुआत की एवं इन्ही लोगों ने बाद में सिंधु संस्कृति में शहर बनाने की शुरुआत की व बेइंतिहा विकसित संस्कृति का अभ्युदय किया था। किन्तु यह हायपोथेसिस को ७ सितम्बर के डीएनए रिसर्च ने खारिज किया। उसी तरह इस DNA अनुसंधान ने दूसरी एक अहम बात साबित की कि, इ.स.पूर्व ९००० से मेहरगड़ में जो खेती की शुरुआत हुई थी इ.स.पूर्व २००० से १५०० तक निरंतर चल रही थी ओर खेती संस्कृति से इस संस्कृति का विकास होते होते नागरी संस्कृति तथा पूरी तरह कारोबार-उद्योग इनपर निर्भर कॉस्मोपॉलिटन संस्कृति विकसित हुई ऐसा हमें दिखाई देता है।

इस DNA अनुसंधान ने दूसरी एक अहम बात पर रोशनी डाली यह हमें समझ में आता है कि, इंडो-योरोपियन भाषा बोलनेवाले लोग इ.स.पूर्व २००० से १५०० के आसपास सिंधु संस्कृति में इंडो-योरोपियन भाषा लेकर आये थे। बिलकुल यही काल ऋग्वेद में तथा अन्य आर्किऑलॉजिकल प्रमाणों में आर्यों के भारत पर आक्रमण के सन्दर्भ में दर्शाया गया है। आर्य लोग स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) लोग है व स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) लोग सिंधु संस्कृति पर आक्रमण करने के लिए आये थे यह साबित हुआ है। इसलिए सिंधु संस्कृति का विकास इ.स.पूर्व ९००० से १५०० के दौरान तेज रफ्तार से हुआ और इ.स.पूर्व २००० से १५०० के दरमियान पूर्व योरोप से मध्ये एशिया मार्ग से स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) लोगों ने भारतपर आक्रमण किया और सिंधु संस्कृति पर हमला करके बेहताशा कत्लेआम करके सिंधु संस्कृति के मूल द्रविडीयन लोगों को दक्खन की ओर स्थानान्तरित करने को मजबूर किया यह निष्कर्ष अब सौ फ़ीसदी DNA तथा आर्किओलॉजिकल अनुसंधान के जरिये साबित हुआ है।

अब हम मरीना सिल्वा का जो दिसम्बर २०१७ में प्रकाशित हुआ

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

डीएनए रिपोर्ट क्या कहता है देखते है। इस रिपोर्ट में उन्होंने यह साफ़ किया है कि इस स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) लोग दो दिशा से आक्रमण करने के लिए निकले। एक शाखा योरोप में आक्रमण करने के लिए गई और दूसरी शाखा भारत में आ गई। आक्रमण हो रहा था या स्थानान्तरण हो रहा था तब स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) लोगों में तीन प्रमुख ग्रुप थे इसका जिक्र भी मरीना सिल्वा इन्होंने अपने अनुसंधान में किया है। इसका मतलब यह है कि जब स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) लोगों की शाखा भारत में आई उसके पहले ही तीन तरीके के वर्ण मौजूद थे एवं यहाँ भारत में आने के बाद उन्होंने चौथा शूद्र का वर्ण तैयार किया। अब भारत में आने के बाद उन्होंने शूद्र का चौथा वर्ण तैयार किया किन्तु योरोप में जो शाखा गई उसने योरोप में चौथा वर्ण तैयार नहीं किया इसकी क्या वजह है इस बारे में ज्ञानवाद करते है।

स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया)

मूल भारतीयों की सिंधु संस्कृति की तबाही यह स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) इन लोगों ने आक्रमण करके किया यह हमने देखा ही है। किन्तु जो स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) लोग भारतपर आक्रमण करके भारत में वर्णव्यवस्था स्थापन करने में कामयाब हो गये वे लोग आखिर कहाँ के थे और उनका स्वरुप कैसा था यह देखना जरुरी है।

युरेशियन स्टेप यह मध्य योरोप से चीन तक फैला हुआ तकरीबन ८००० किलोमीटर लम्बाई का त्रिणमय क्षेत्र है। इस हिस्से में इ.स.पूर्व ५००० के आसपास एक अजब तरीके के मिश्रित लोग इकट्ठे होना शुरु हो गया। उनमें से कुछ ईरानियन DNA के तो कुछ तुरानी DNA के लोग थे। योरोपियन स्टेप प्रदेश में साधन कम तथा विषम वायुमण्डल का त्रिणमय क्षेत्र है। स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) लोगों ने इस प्रदेश के रिसोर्से का ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल करना शुरु कर दिया। उन्हें वहाँ पर पहियों वाली गाड़ी, (रथ) एवं इस प्रदेश में सबसे तेज दौड़नेवाला जानवर घोड़ा यह अहम संसाधन उपलब्ध हो गए। इन लोगों में इ.स.पूर्व २००० के आसपास Sintashta नाम का एक अनूठा कल्चर विकसित

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

हुआ। यह सिंतास्थ कल्चर रथ बनाने में, घोड़े को पालतू बनाने में और आधुनिक तरीके के हथियार बनाने में वे माहिर थे। घोड़ा, रथ तथा आधुनिक हथियार की सहायता से इन लोगों ने पूरी तरह से योरोप में नर संहार का ताण्डव ही कर दिया। मरीना सिल्वा इन्होंने उनका रिपोर्ट पेश किया है और हम लोग ऊपर उसका सारांश देख चुके है। उस रिपोर्ट में उस योरोप तथा दक्खन एशिया इन पर स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) आक्रमण के दो अहम पहलू में भिन्नता दिखाई देती है और वह दो भिन्न पहलू कौनसे है इस पर अब हम चर्चा करते है।

स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) लोगों ने दोनों दिशा से दुनिया भर आक्रमण करना शुरु कर दिया। उनकी एक शाखा सीधे योरोप में गई। दूसरी शाखा भारत में आ गई और उसने सिंधु संस्कृति के साथ संघर्ष प्रारम्भ कर दिया।

योरोप में गई हुई शाखा योरोप के पहले के मूलनिवासी किसानों के साथ भिड़ गई और उनके साथ बेहताशा संघर्ष हुआ यह हमें aDNA अनुसंधान में तथा आर्किऑलॉजिकल सबूतों में नज़र आता हैं। आर्किऑलॉजिकल सबूतों में बहुत से अनुसंधानकर्ताओं ने इन लोगों ने योरोप के स्टोन हेन्ज निर्माण करनेवाले शांतिप्रिय किसान आदमीयों को सरेआम कत्तल कर दिया इस निरीक्षण का जिक्र किया हुआ है। उसी तरह का निरीक्षण मरीना सिल्वा इन्होंने भी अपने DNA अनुसंधान में दर्ज किया है उनका कहना था कि योरोप में अब मौजूदा हालातों में वहाँ के मूलनिवासी लोगों का क्रोमोझोम पूरी तरह नष्ट हो चुका है। इसका अर्थ स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) लोगों ने योरोप में जाने के पश्चात् वहाँ के पुरुषों का नरसंहार किया एवं वहाँ की मूलनिवासी महिलाओं से संतान उत्पन्न करके मौजूदा योरोपियन जनसंख्य को जनम दिया।

आर्किऑलॉजिकल सबूतों में तो बहुत ही भयानक सबूत हमें दिखाई देते हैं इन लोगों में एक ख़ासियत दिखाई देती है, स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) लोग आने के बाद उन्होंने निजी कब्र बनाना शुरु कर दिया। जिसमें उन्होंने इन लोगों के साथ बड़ी कुल्हाड़ी, फरसा (परशु) रखना शुरु कर दिया। जिस प्रदेश में, मिसाल के तौर पर योरोपिय प्रदेश में स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) लोग

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

गये वहाँ पर वहाँ के लोगों के नरसंहार के बाद केवल शमशान बची हुई थी। याने पहले के लोगों की शांतिप्रिय संस्कृति को इन हिंसक तथा असभ्य जंगली लोगों ने हिंसाचार की सहायता से खत्म की और उसके स्थान पर अपनी पितृ-प्रधान, पितृगृही तथा पितृवांशिक समाज स्थापन कर दी।

इन लोगों ने योरोप में जाने के बाद वर्ण व्यवस्था तैयार नहीं की क्योंकि योरोप में मौजूद तकरीबन पूरे आदमीयों का उन्होंने कत्तल कर दिया और नरसंहार किया इसलिए उन्हें प्रतिरोध करनेवाले ज्यादा पुरुष शेष नहीं बचे थे। किन्तु भारत के स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) लोग आम तौर पर ४००० इ.स.पूर्व के आसपास टोली से आना शुरु हो गया और इ.स.पूर्व १५०० के आसपास सिंधु संस्कृति का शहर नष्ट किया हुआ या उस स्थान पर नरसंहार किया हुआ हमें नज़र आता है। यह बात योरोप में स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) लोगों ने की वह बात याने वहाँ के पुरुषों की सिर कलाम करके कत्तल करना भारत में इन लोगों के मुमकिन नहीं हुआ क्योंकि योरोप में जिस तरह किसान की संस्कृति थी उसी तरह किसानों की संस्कृति स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया)लोग भारत में आये तब नहीं थी। भारत में उससे भी ज्यादा विकसित, एक तरह से व्यापारी तथा नगरी (शहरी) संस्कृति मौजूद थी उसी तरह इस संस्कृति का दायरा भी कुछ नगरों तक सीमित नहीं था। सैंकड़ो नगर सिंधु के जरिये विकसित हो गए थे। इसलिए इन लोगों का यहाँ के मूलनिवासी लोगों के साथ बेहताशा संघर्ष हुआ। इसके बहुत से सबूत हमें स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) लोगों के ऋग्वेद इस ग्रंथ में दिखाई देते है। ऋग्वेद में जो वर्णन है उसमें जिनके पास दुर्ग (किले) है उन लोगों के साथ स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) लोगों का जबर्दस्त संघर्ष हुआ। इन लोगों ने इंद्र को गुजारिश की यह हम देखाते है। यह सब बातें एक एक बात की ओर इशारा करता है वह यह कि शुरुआत में इन लोगों के आक्रमण को यहाँ के मूलनिवासी लोगों ने घास नहीं ड़ाली। किन्तु सिंधु संस्कृति के लोग शांतिप्रिय एवं सभ्य होने से युद्ध में घोड़े समान विकसित जानवर व रथ पर सवार स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) लोगों को मुक़ाबला करना मुश्किल होने लगा।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

सिंधु संस्कृति के शहर में बहुत से स्थान पर लोगों के कंगाल एक ही जगह पर बिखरे हुये या रास्ते पर अस्तव्यस्त और कुऐ में फेके हुये प्राप्त हुए। उनके सिर पर, शरीर पर, गर्दन पर जख्मों के गहरे निशान मौजूद है यह भी कुछ इतिहास लेखकों ने दर्ज किया है। इस तरह का संघर्ष शुरु होने पर एक एक नगर संघर्ष में खिंचा गया। जिससे मूलनिवासी सिंधु संस्कृति के लोग दक्खन की ओर विस्थापित हो गये और उन्होंने दक्षिण में अपनी संस्कृति बनाना प्रारम्भ कर दिया यह हाल ही में तामिलनाडू के काझाडी से प्राप्त अवशेषों से साबित होता है।

स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) लोग केवल पुरुष ही आये थे इसलिए उन्हें परिवार बढ़ाने के लिए महिलाओं की जरुरत थी इसलिए उन्होंने सिंधु संस्कृति की महिलाओं का अपहरण करके उन्हें अगवा करके या हमला करके उनके साथ विवाह करके गृहस्थी बसाना शुरु कर दिया। यही वजह है कि, उन्होंने आक्रमण करने के बाद जो वर्ण व्यवस्था तैयार की उस वर्ण व्यवस्था में यहाँ की मूलनिवासी महिलाओं को शूद्र घोषित कर दिया। उसी तरह जिन पुरुष लोगों का वे नरसंहार नहीं कर सके उस बेशुमार जनसमूह को उन्होंने शूद्र वर्ण घोषित कर दिया।

मरीना सिल्वा इन्होंने साबित किये मुताबिक स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) लोगों में जो तीन प्रमुख ग्रुप थे उसमें उन्होंने वर्णव्यवस्था में स्वयं को उँचे वर्ण का दर्जा लिया और यहाँ के सिंधु संस्कृति के मूलनिवासी लोगों को शूद्र घोषित कर दिया यह हम हम सबूतों के आधार पर कह सकते हैं। मरीना सिल्वा इन्होंने दूसरा अहम फर्क योरोप और भारतीय लोगों पर स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) लोगों ने किये आक्रमण में स्पष्ट किया है। वह यह कि योरोपिय लोगों की या वहाँ के मूलनिवासी लोगों की जो भाषा थी उनमें से तकरीबन सम्पूर्ण भाषा को इस स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) लोगों ने नष्ट कर डाली। आज योरोप में ज्यादा से ज्यादा इंडोयोरोपियन भाषा बोली जाती है। यह भाषा वहाँ की स्थानिक भाषा तथा इंडो-योरोपियन स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) लोगों ने उनके साथ लाई हुई भाषा का मिश्रण होकर बनी हुई भाषा है। भारत में इस तरह

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

की भाषा हमें दिखाई नहीं देती। भारत में करीब करीब एक चौथाई लोग मूलनिवासी भारतीयों की यानी सिंधु संस्कृति के मूलनिवासी द्रविडीयन भाषा बोलते हुये नज़र आते है।

संस्कृत के पहले की भाषा प्रोटो संस्कृत इस भाषा में प्राचीन शिलालेख सीरिया देश में मौजूद है। इस शिलालेख में ऋग्वेद के तमाम देवता का जिक्र मौजूद है। स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) लोग जब भारतपर आक्रमण करने के लिए आये तब उनके साथ उनकी प्रोटो इंडो-योरोपियन या प्रोटो संस्कृत भाषा लेकर आये थे। यहाँ के द्रविडीयन लोगों के साथ उन्होंने द्रविडीयन भाषा का संस्कार या संकर करके भारत की इंडो-योरोपियन भाषा विकसित कर ली। बहुत से द्रविडीयन भाषा के शब्द इंडो-योरोपियन भाषा में उधार लिये गये। इंडो-योरोपियन भाषा मूल द्रविडीयन भाषा पर स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) लोगों की भाषा का संस्कार होकर तैयार हुई भाषा है। इसलिए मूलनिवासी लोगों की भाषा द्रविडीयन भाषा है यह सिद्धान्त यथार्थ है।

स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) लोगों का भारत पर आक्रमण का क्या असर हुआ यह जाँचना महत्वपूर्ण है। क्योंकि इस आक्रमण से भारत की शकल-सुरत ही बदल गई पाँच हजार सालों पहले दुनिया में इतनी उन्नत संस्कृति केवल भारत में ही मौजूद थी। वह संस्कृति आज नष्ट हो चुकी है या विकृत की गई है। उस संस्कृति की कौन कौन से ख़ासियत स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) लोगों ने नष्ट की इसकी तहक़ीकात करना जरुरी है।

सबसे पहली ख़ासियत है नागरी संस्कृति का संहार या नागरी संस्कृति का विनाश। स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) लोग यह अर्ध सभ्य वहशी घुमन्तु चरवाहे थे। वे एक स्थान पर नहीं रहते थे। उनके चिजों के वहन करनेवाली गाड़ियाँ, घोड़े और साथ में मवेशी एवं हिंसा के लिए हथियार वरीयता से परशु (फरशा) या कुल्हाड़ी लेकर वे पूरे योरोप और भारतभर भटक रहे थे। उनके हिंसक, आक्रमक आक्रमण से भारत में सिंधु संस्कृति के उन्नत नगर ध्वस्त हो गए। लगातार आक्रमण से तंग आकर और बेहताशा हिंसाचार से तंग आकर

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

हडप्पा संस्कृति के लोग दक्खन की ओर स्थानान्तरित हो गये। जो लोग उत्तर भारत में रह गये उन्हें स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) लोगों ने वर्ण व्यवस्था बनाकर शूद्र घोषित कर दिया और उनसे तमाम मेहनत, मशक़्क़त के काम करवाना शुरु कर दिया।

नागरी सभ्यता का संहार होने से कारोबार का भी संहार हो गया। कारोबार का संहार होने से बड़े शहर ध्वस्त हो गये। सिंधु संस्कृति के काल में बड़े बड़े बन्दरगाह (नौकाश्रय) मौजूद थे। इसीसे दुनिया के अन्य देशों के साथ या अन्य संस्कृति के साथ कारोबार चलता था। वह कारोबार नष्ट हो गया। स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) लोग यहाँ की शहरी व्यवस्था पर हावी हो गये किन्तु उन्हें इस व्यवस्था का संचालन करना नहीं आया और वह आना भी मुमकिन नहीं था। देहाती, जंगली लोगों के लिए शहर का प्रबन्धन चलाना नामुमकिन था। इसलिए शहर की साफ़ सफाई की आदतें नष्ट हो गई। सफाई की आदतों में सिंधु संस्कृति के पानी की ड्रेनेज सिस्टम अलग थी और पिने के पानी की व्यवस्था अलग थी। मोहेंजोदडो इस शहर में ७०० कुऐं बरामद हुये है, टॉयलेट की व्यवस्था भी नष्ट हो चुकी थी। नागरी से घुमन्तु, अर्धजंगली देहाती सभ्यता की भारत में शुरुआत हो गई। सिंधु संस्कृति में घरों में वरीयता से हर घर में टॉयलेट थे। वर्तमान में हम जिस तरह का कमोड भारतीय कमोड की तरह इस्तेमाल करते है उसी तरह के कमोड सिंधु सभ्यता में भी दिखाई दिये। हम टॉयलेट साफ़ करने के लिए तांबे का लोट इस्तेमाल करते है या बाल्टी से पानी लेने के लिए प्याले का इस्तेमाल करते है, सिंधु संस्कृति के लोगों में टॉयलेट में इस्तेमाल के लिए खास तरह का छोटा तांबे का बर्तन था। इस बर्तन को पानी में डूबोकर उलटा करने की बजाए उस बर्तन के पिछवाड़े में एक छेद बनाया गया था ताकि बड़े बर्तन से टॉयलेट साफ़ करने के लिए पानी लेकर बर्तन उलटा भी करने की नौबत ना आये इतनी मतिसूक्ष्मता से सिंधु सभ्यता के लोगों ने अपनी नागरी सभ्यता में उन्नत कर ली थी।

सिंधु सभ्यता की ड्रेनेज सिस्टम इतनी सटीक एवं विकसित थी कि, शहर

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

का मलप्रवाह बाहर ले जाने के लिए मुख्य जलवाहिनी से आदमी चल सकता था। इतनी ज्यादा उन्नत सफाई की आदतें अपनी मूल सभ्यता में हमें नज़र आई है। शहर में बिचोबिच बहुत बड़ा स्नानगृह था। उसी तरह उस स्नानगृह के आजूबाजू में छोटे छोटे कमरे दिखाई दिये। यानी सिंधु संस्कृति सफाई पर सबसे ज्यादा जोर दिया गया था। पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) आर्यों के आक्रमण के पश्चात् भारतीय शहरी सभ्यता का देहाती सभ्यता में तब्दीली हो गई। ३००० सालों पहले लादी गई वर्णव्यवस्था आज भी तमाम भारत में जारी है यह आपके ध्यान में आयेगा।

पॉप्युलेशन मिक्स्चर एवं महिलाओं की गुलामी

प्राचीन तथा आधुनिक DNA अनुसंधान के तकरीबन तमाम DNA अनुसंधान यह भारत में पाप्युलेशन मिक्स्चर स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) लोगों का तथा मूलनिवासी भारतीय लोगों का मिक्स्चर हो चुका है यही सिद्धान्त प्रस्तुत करते है। किन्तु यह सिद्धान्त छलावा है। यदि भारत में पॉप्युलेशन मिक्स्चर बड़ी मात्रा में हो गया होता तो आज भारत में विभक्त जाति मौजूद नहीं होती या इतने दिनों तक वर्णव्यवस्था अस्तित्व में नहीं होती। जिस तरह योरोप में सभी लोगों का पॉप्युलेशन मिक्सर हो गया है और आज उन लोगों में स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) लोगों का वाय क्रोमोझोम प्राप्त होता है उसी तरह के क्रोमोझोम भारतीय लोगों में भी प्राप्त होते। किन्तु हालात ऐसे नहीं है।

स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) लोगों के आक्रमण का एक लक्षण मिश्रण हुआ या नहीं यह देखने के लिए हमने ध्यान में लेना चाहिये। स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) लोग जब भारत में आये तब वे उनके साथ महिलाऐं लेकर नहीं आये थे। लिहाजा उन्हें भारत की महिलाओं को या मूलनिवासी महिलाओं से विवाह करके या अगवा करके विवाह करना लिए जरुरी था। नहीं तो उनका परिवार बढ़ना नामुमकिन था। इसलिए स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) लोगों के प्राचीन ग्रंथ में दुल्हन का किस तरह अपहरण करें, अपहरण करने के बाद कौनसा विवाह करें, जबरदस्ती करने पर कौनसा विवाह करें आदि वर्णन मौजूद है।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

आज उँचे वर्ण के लोगों के घरों में जो महिलाऐं है वे मूलनिवासी भारतीय महिला है यह साबित हो चुका है। उन्होंने मूलनिवासी भारतीय महिलाओं के साथ विवाह करके या अगवा करके लेकर गये बगैर उनकी संतान उत्पन्न नहीं हो सकती थी इसलिए इस पृष्ठभूमि पर एक बात पर गौर करना चाहिये वह यह कि पॉप्युलेशन मिक्स्चर हुआ है वह वर्ण व्यवस्था की उँचे वर्ण के लोगों ने उनके घरों में जो महिलाऐं विवाह करके गई है उनमें बड़ी मात्रा में हुआ है। स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) पुरुष तथा मूलनिवासी महिलाओं से जो संतान उत्पन्न हुई है उनमें मिक्सचर होना बिल्कुल कुदरती है। किन्तु पॉप्युलेशन मिक्स्चर यह भारत की ख़ासियत नहीं है।

भारत में आज भी वर्ण व्यवस्था के मुताबिक शूद्र वर्ण के लोग उँचे वर्ण के लोगों से अलग हैं। जैसे कि, ईस्ट योरोपियन लोगों से वेस्ट योरोपियन लोग अलग है, उसी तरह के निरीक्षण बहुत से DNA अनुसंधानकर्त्ता ने दर्ज किये है। इसलिए भारत में फिलहाल कोई भी मूलनिवासी नहीं एवं सभी लोग मिक्स है यह सिद्धान्त भारत को लागू नहीं होता।

उसी तरह हमने पहले देखे हुये अनुसंधान में एक बात खुल गई है कि एससी, एसटी, ओबीसी के लोग एक ही L3 नाम के aDNA से विकसित हुये है। लिहाजा, पॉप्युलेशन मिक्स्चर होते वक्त इस मिक्स्चर का ताल्लुक महिलाओं की गुलामी से है। सिंधु संस्कृति पर पॅस्टोरॅलिस्ट खूँखार यामनया लोगों ने हमला करने के बाद तथा वर्णव्यवस्था लागू करने के बाद यहाँ की महिलाओं को अगवा करना या जबरदस्ती करना मुमकिन नहीं था। इसलिए उन्होंने वर्णव्यवस्था में 'कन्यादान' नाम की रस्म मुकम्मल करके अपने घर में महिलाओं को शांति से किस तरह लेकर जाना मुमकिन होगा इसका इन्तजाम कर लिया।

बिच के काल में इन्होंने आक्रमण करने के करीब करीब एक हजार सालों के भीतर वर्ण व्यवस्था विकसित की तब तक उन्हें महिलाओं की जरुरत थी उनकी संतान उत्पत्ति के लिए या परिवार बढ़ाने के लिए इसलिए शुरुआत में भारत के मूलनिवासी लोग तथा अन्य लोग की महिलाओं के रुप में मिश्रण होना

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

संभव है किन्तु DNA अनुसंधान से हमारी एक बात समझ में आती है कि, आमतौर पर इ.स.पूर्व २०० से इ.स.२०० के दरमियान वर्णसंकर जबरदस्ती से बंद किया गया।

इ.स.पूर्व २००० से १५०० के दरमियान पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) भारतपर आक्रमण करने आये उसके साधारणतया ८०० सालों बाद याने इ.स.पूर्व छठवीं सदी में तथागत गौतम बुद्ध एवं महावीर इन्होंने आन्दोलन शुरु किया। इस आन्दोलन के असर से, जाहिर है समाज तथा वर्णव्यवस्था थोड़ी शिथिल हो गई होगी। किन्तु इ.स.पूर्व १८५ के आसपास ब्राह्मणों ने याने स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (खूँखार यामनया) लोगों ने बृहद्रथ का कत्ल करके व्यवस्था अपने कब्जे में ले ली और मनुस्मृति लागू कर दी। इस काल के बाद भारत में जाति व्यवस्था का उदय हुआ यह DNA ने साबित कर दिया। इस काल में DNA में बेइंतिहा बॉटलनेक प्राप्त होते है याने वर्ण तथा जातिय बंधन मजबूत कर दिये गये। मनुस्मृति का कानून बनाया गया। उसके बाद आज तक हम देखते है कि, शूद्र वर्ण के लोगों के साथ उँचे वर्ण के लोग मिक्स नहीं होते।

आधुनिक काल में संविधान लागू होने के पश्चात कुछ मात्रा में मूलनिवासी जाति के आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न लोगों को, प्रशासन में उँचे ओहदे पर काम कर रहे लोगों को या राजनीति में उँचे ओहदे पर विराजमान लोगों को पॅस्टोरॅलिस्ट खूँखार यामनया ब्राह्मणों की कन्या के साथ विवाह करने की मिसालें हम देख रहे हैं। यह तरीका ३००० सालों पहले थोड़ा बहुत वर्ण संकर हो गया इसका जवाब दे सकता है। ऐसे कुछ अपवाद छोड़कर भारत के एससी, एसटी, ओबीसी यह मूलनिवासी लोग तथा वर्ण व्यवस्था के ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य याने पॅस्टोरॅलिस्ट खूँखार यामनया लोग इनमें आज भी वर्णसंकर नहीं होता यह एक हक़ीकत है। इसलिए भारत में आज कोई भी मूलनिवासी नहीं और पूरे लोग समान है यह जो सिद्धान्त DNA के जरिये प्रस्तुत करने की कोशिश हो रही है यह सिद्धान्त DNA के मूल अनुसन्धान का कुप्रयोग करने का सिद्धान्त हैं पॅस्टोरॅलिस्ट खूँखार यामनया आक्रमकों का भारत पर आक्रमण का क्या असर हुआ इसके बारे में बिल्कुल

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

सटीक विश्लेषण एवं निरीक्षण Genetic Evidence for Recent Population Mixture in India इस नाम से प्रिया मूरजानी, कुमारस्वामी थंगराज इनके The American Journal of Human Genetic इस पत्रिका के ५ सितम्बर, २०१३ के रिपोर्ट में प्रकाशित हुआ है। उनका निरीक्षण या अनुसंधान आगे दर्ज है।

"इ.स.पूर्व १९०० से इ.स.पूर्व ४२०० यह काल भारत में मौलिक बदलाव का काल था। इस काल में सिंधु संस्कृति का नागरीकरण नष्ट करके उसे ग्रामीण संस्कृति में तब्दील किया गया। गंगा की घाटी में जनसंख्या बड़ी मात्रा में बढ़ गई। शवों को दफ़नाने का तरीका बदल गया और पहली बार इंडोयोरोपियन भाषा तथा वैदिक धर्म भारतीय उपखण्ड में उदय हुआ।" इस रिपोर्ट के निरीक्षण को यदि हम गहराई से देखते है तो आज भारत की जनसंख्या ८५% बहुजन समाज को गुलाम बनानेवाला स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट खूँखार यामनया इनका वैदिक धर्म इन लोगों ने साधारणतया १९०० से १५०० के आसपास भारत में स्थापन किया और यहाँ की नागरी या शहरी सभ्यता नष्ट की। सामाजिक, सांस्कृतिक अनुशासन नष्ट किया। बड़ी मात्रा में जनसंख्या में बढ़ोत्तरी हो गई और आज हमें जो भारत में बेहताशा अनुशासनहीनता, पाजीपन, गुलामी नज़र आती है उसकी शुरुआत वैदिक धर्म के याने स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट खूँखार यामनया धर्म के उदय से हुई। इस धर्म ने १९०० के आसपास वर्णव्यवस्था विकसित करके मूलनिवासी सिंधु सभ्यता के निवासी को शूद्र घोषित कर दिया।

फुले शाहू आंबेडकरी आन्दोलन के परिप्रेक्ष्य में सिंधु संस्कृति का DNA रिपोर्ट

सिंधु संस्कृति किसने तैयार की और किसने नष्ट की यह सवाल अब सवाल नहीं रहा। मूलनिवासी लोगों ने सिंधु संस्कृति विकसित की और आज हम उसके उत्तराधिकारी है यह तमाम मूलनिवासी बहुजन समाज के रोम-रोम में अभिमान एवं जोश-ख़रोश निर्माण करनेवाली बात है। फुले-शाहू-आंबेडकर आन्दोलन की तथा मूलनिवासी राष्ट्रवाद की शुरुआत ज्योतिराव फुले इनके

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

साहित्य के मूलनिवासी लोगों के जिक्र से हुई है। ८५% बनाम १५% यह जो मूलनिवासी राष्ट्रवाद का सिद्धान्त है वह ७ सितम्बर के DNA अनुसंधान से बहुत मजबूत हो गया है। इस सिद्धान्त के आधार पर भविष्य में समता, स्वतन्त्रता, बंधुता, न्याय इसपर निर्भर विकसित कॉस्मोपॉलिटन सभ्यता तथा दुनिया के तमाम लोगों को समान न्याय देनेवाली संस्कृति विकसित करने की एवं मानवतावादी व्यवस्था विकसित करने की जिम्मेदारी मूलनिवासी राष्ट्रवाद पर, साथ में फुले-आंबेडकरी आन्दोलन पर आ चुकी है। हम सब सिंधु संस्कृति के उत्तराधिकारी है इस जिम्मेदारी को मजबूत इरादे से पूरी करते हैं, बस इतनी ही उम्मीद है!

–संचित संभाजीराव धन्वे
Activistsanchit@gmail.com

****

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

अध्याय -७

मूलनिवासी राष्ट्रवाद से ही देश में ख़ुशहाली होगी!

-प्रो. विलास खरात

फुले-शाहू-आंबेडकर के परिप्रेक्ष्य में डीएनए रिपोर्ट :

फुले-शाहू-आंबेडकर यह ब्राह्मणी वर्चस्व के खिलाफ थे। महात्मा राष्ट्रपिता जोतिराव फुले यह ब्राह्मणों का आर्य भट्ट ईरानी ब्राह्मण कहकर अपने लेखन में जिक्र करते थे। ब्राह्मण विदेशी तो है ही अलबत्ता वे दंगा-फ़साद में माहिर, वहशी, हत्यारे, आतंकवादी भी है ऐसा भी कहा है। परशुराम एवं पेशवे यह आतंकवाद के प्रतिक है और ब्राह्मण उनपर मगरूरी जताते है इस बारे में भी महात्मा फुले ने उनकी सख़्त भूमिका अदा की। ''धूर्त आर्यभट्ट के पुरखों को पहले अपने शूद्र, अतिशूद्र के पुरखों पर बेहताशा जुल्म ढाते वक्त उन्हें लज्जा नहीं आई और उसी तरह अब के आर्यों के उत्तराधिकारी को भी हम शूद्र, अतिशूद्र को फर्जी धर्म तथा राजनीति से तरह-तरह के छक्केपंजे करके हमें ठगते वक्त लज्जा नहीं आई। इससे आर्य लोगों में कतई इन्सानियत नहीं है, यही सिद्ध होता है।'' आधुनिक भारत में म.फुले ने जो स्वाभिमानी आन्दोलन शुरु किया उसका मूल सत्व यही था कि, शूद्र-अतिशूद्र बनाम शेटजी, भटजी! ब्राह्मण विदेशी है। इसलिए उन्होंने स्वयं को श्रेष्ठ घोषित कर दिया और यहाँ के नेटीव यानी मूलनिवासी बलिस्थानी लोगों को ब्राह्मणी वैदिक धर्म में गुलाम घोषित किया है। इसलिए महात्मा फुले सवाल उठाते है कि, गुलामों का तथा गुलाम बनानेवालों का धर्म एक हो सकता है क्या? वैदिक आतंकवादी ब्राह्मण एवं उनके धर्म को आड़े हाथों लेकर उन्होंने कहा कि, ''विजयी आर्यभट्टों ने अतिशूद्र को विद्या ग्रहण ना करने देना यह उनका धर्म नहीं, अलबत्ता यह उनके इन्तिक़ाम लेने का तरीका है - पराजित अज्ञानी जनता को कुटिलता से वश में करना यह उनका धर्म नहीं, अलबत्ता यह उनका फरेब है - सरकारी काम पर नियुक्त होते ही अज्ञानी जनता से रिश्वत लेना यह कामगारों का धर्म नहीं है अलबत्ता यह उनका सरकार से दग़ाबाजी करने का हुनर है - मेहनत किये बगैर धर्म प्रलोभन से अज्ञानी जनता को

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

लूट कर कामचोरी से खाना यह सुलझे हुये सज्जन आर्यभट्टों का धर्म नहीं अलबत्ता यह उनकी ठगबाज़ी है। भोंदू वीरों से स्थानिक अंग्रेज सरकार के खिलाफ बग़ावत करके अज्ञानी शूद्र अतिशूद्र को संकट डालना यह शातिर पेशवे तथा फडके का धर्म नहीं, बल्कि यह उनकी राजद्रोह की साज़िश है – अन्य तमाम लोगों को तुच्छ मानकर स्वयं को पवित्र मानकर साँझ को देवपूजा करना (सोवळे) यह भट्ट ब्राह्मण का धर्म नहीं, बल्कि दुनिया में सब निम्न एवं अपवित्र मानने की जाति मक्कारी है। वेश्या का मुखरस पिकर घर आने पर सोवलेचार (साँझ को देवपूजा करके पवित्र होना) करना यह सज्जन मानव का धर्म नहीं अपितु यह उनकी अपवित्रता है – निर्वाह के लिए जर्जर जानवर खाना यह मांग, महार आदि का धर्म नहीं बल्कि यह उनकी लाचारी तथा साधनहीनता है – यज्ञ एवं श्राद्ध के बहाने ताज़ा मवेशी का बर्बतापूर्ण वध करके खाना यह आर्यभट्ट ब्राह्मणों का धर्म नहीं बल्कि यह उनकी मांसाहार के प्रति आस्वादन है।''[२] वैदिक धर्म की गुलामी से मुक्त करनेवाले महात्मा फुले वाक़ई सत्यशोधक हैं। ब्राह्मण विदेशी है और वे ही मूलनिवासी समाज की गुलामी का कारण है। महात्मा फुले समाज में जाकर भाषण दिया करते थे। उस वक्त रेकॉर्डींग तंन्त्र मौजूद नहीं था। प्रिंट तन्त्र विकसित था। उनके भाषण के सार निकालकर सावित्रीमाई फुले ने लिखकर रखे थे। उनके भाषण का एक संग्रह सावित्रीमाई फुले समग्र साहित्य में दिखाई देता है। जिसमें म. फुले ब्राह्मणों को सीधे विदेशी कहते थे। विदेशी ब्राह्मणों के खिलाफ मोर्चा निकालनेवाले महात्मा फुले यही असली राष्ट्रपिता है। ''ब्राह्मणों का यहाँ पर नहीं प्रयोजन, भगा दो उन्हें ज्योति कहे।'' इस तरह बागी स्वर उन्होंने उस वक्त निकाला। इतना ही नहीं बल्कि अपने मृत शरीर पर भी ब्राह्मणों की परछाई भी ना पड़ने दो यह सन्देश उन्होंने अपने वसीयतनामा में दर्ज करके रखा।[३] महात्मा फुले यह आधुनिक भारत में सामाजिक क्रांति के प्रमुख है। उन्होंने उस वक्त धर्मशास्त्र का प्रशोधन करके ब्राह्मणों को विदेशी कहा। डीएनए विज्ञान ने उनके विचारों को विजयी घोषित किया है!

महात्मा फुले की विरासत आगे चलकर छत्रपति शिवाजी महाराज के सच्चे उत्तराधिकारी शाहू छत्रपति महाराज ने चलाई। उन्होंने भी ब्राह्मणों ने विदेशी कहा इतना ही नहीं बल्कि उन्होंने ब्राह्मणों को आतंकवादी जमात कहा है। उन

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

आतंकवादी का सरदार बाल गंगाधर तिलक के बारे में महाराज ने उद्गार निकाले थे कि ''तिलक को जगह पर ही गोली दाग़कर मार देना चाहिये।''[४] महाराज ने २० फरवरी, १९१८ को मि. कर्टिस को खत में लिखा था कि – ''बेहद एहसान फ़रामोश तथा सनातनी होती है ब्राह्मण की जाति।'' शाहू महाराज की हत्या करने का भी तिलक ने कई बार प्रयास किया था। वेदोक्त मामले में तिलक ने शाहू महाराज तथा तमाम मराठों की 'शूद्र' कहकर कहकहें लगाये। शाहू महाराज ने अपने जीवन में एक भविष्यवाणी की थी वह –''इस तरह दक्खन के ब्राह्मण तमाम भारत के लिए एक बड़ी मुसीबत बननेवाले है और गैरब्राह्मणों ने उनके वर्चस्व आज़ाद होकर ब्राह्मणों को कमजोर करके ही हम उनके धोखे को रोक सकते है।''[५] आज के दौर में शाहू महाराज का ज़ाहिर किया हुआ भविष्य कथन सच हुआ है। चित्पावन ब्राह्मण दक्खन के जो ब्राह्मण है वे केवल महाराष्ट्र के लिए ही खतरा नहीं बना बल्कि पूरे देश के लिए खतरा बन चुका है! उसकी जिंदा मिसाल आरएसएस के चित्पावनी ब्राह्मण है। आरएसएस पर भी इसी चित्पावनी आतंकवादी ब्राह्मणों का सबसे ज्यादा वर्चस्व तथा नियंत्रण है।

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर को फुले-शाहू की विरासत मिल गई। महात्मा राष्ट्रपिता फुले इन्हें तो वे अपना गुरु ही मानते थे। 'शूद्र पहले कौन थे?' यह ग्रंथ उन्होंने महात्मा फुले को समर्पित किया है। इसी ग्रंथ के अधुरे विधान लेकर आरएसएस के ब्राह्मण बहुजन समाज को गुमराह करने का काम कर रहे है। शिंदे तथा नीरज रॉय इन्होंने राखीगढ़ी डीएनए रिपोर्ट के जरिये डॉ. बाबासाहब आंबेडकर इनके ग्रंथ का सहारा लेकर लोगों को भ्रमित कर दिया था। फुले-शाहू-आंबेडकर के काल में डीएनए विज्ञान नहीं था किन्तु उन्होंने ब्राह्मणों को विदेशी ही कहा है।

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने सन १९१६ को एम.ए. ॲन्थ्रॉपॉलॉजी इस विषय के लिए प्रस्तुत किया हुआ प्रबंध 'कास्ट इन इंडिया' इसमें जाति उत्पत्ति तथा संरचना के बारे में चौंकानेवाले निष्कर्ष दिये हैं। ब्राह्मणों ने जाति की निर्मिती को हथियार के तौर पर इस्तेमाल किया यह निष्कर्ष उस प्रबंध में मौजूद था। डॉ. मायकेल बामशाद इन्होंने २००१ को जागतिक स्तर पर जाति व्यवस्था की उत्पत्ति के बारे में डीएनए रिपोर्ट भी प्रसिद्ध किया उसमें भी आनुवंशशास्त्र के जरिये यही

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

साबित हुआ है कि, ब्राह्मणों ने जाति व्यवस्था की निर्मिती करने के लिए महिलाओं का औजार के तौर पर इस्तेमाल किया। यह बात उजागर हुई है। 'शूद्र पहले कौन थे?' यह ग्रंथ १९४६ को लिखा गया। अंग्रेज भारत छोड़ने के लिए जल्दबाजी कर रहे थे। उस वक्त गैर ब्राह्मणों ने अपने राजनीतिक हक़ प्राप्त करने के लिए दौड़धूप के उस दौर में उन्होंने वह ग्रंथ लिखा। डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने भारत में घटनेवाले बुनियादी राजनीतिक स्वरुप का गहाराई से अध्ययन करके बेहद उँचे वैचारिक स्तर के ग्रंथ की रचना की। ब्रिटिशों ने रचे हुये 'आर्यन इन्वेंशन थेअरी' को ब्राह्मणों ने प्रतिरोध क्यों नहीं किया या उसे कचरे की टोकरी में क्यों नहीं फेंका इसकी सटीक वजह बताते हुये कहते है कि, ''इस थेअरी के मुताबिक आर्यो ने यहाँ पर आक्रमण करके भारत के लोगों पर फ़तह हांसिल की, वे विजेता थे इसलिए आर्य ब्राह्मणों ने अन्य भारतीयों से स्वयं को श्रेष्ठ जताने के जज़्बे को लोगों के ज़ेहन में डालने का उनका मक़सद पूरा हो रहा होगा, इसलिए इस थेअरी को उन्होंने पूरी ताकत से ऊपर उठाया हैं।''[६] इस तरह आर्य आक्रमण का सिद्धान्त एवं उनका ब्राह्मण वर्ग होनेवाले समर्थन का खुलासा डॉ. बाबासाहब आंबेडकर इन्होंने किया है। ''दास एवं दस्यु यह भारत के जंगली लोग थे, ऐसा योरोपियन ग्रंथकारों का कहना है वह सरासर गलत है।'' यह राय डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने व्यक्त की है। ब्राह्मण यह वंश से श्रेष्ठ वर्ग कहलाता है इसलिए वह आर्य है यह विचार डॉ. बाबासाहब आंबेडकर को बिलकुल मंजूर नहीं है। ब्राह्मणों से भी यहाँ के बहुजन लोग श्रेष्ठ है। केवल उन्हें वैदिक धर्म की गुलामी से वर्ण एवं जातिव्यवस्था से पूरी तरह से गुलाम बनाया है। फिर भी इस ब्राह्मणी वर्चस्व के खिलाफ शूद्रों का किस तरह संघर्ष जारी है इसका इतिहास इस ग्रंथ में है। ब्राह्मण वंश से श्रेष्ठ है यह कहना झूठ है और इस बात को सिद्ध करने के लिए यह ग्रंथ है।

ब्रिटिशों ने भारत छोड़ते वक्त गांधी तथा नेहरु के साथ गुप्त समझौता किया। उसके मुताबिक बड़ी मात्रा में ब्रिटिशों को पैसा दिया गया। इतना ही नहीं बल्कि भारत की पहचान सिंधु सभ्यता के प्रान्त को तोड़कर एक अलग देश बनाने की गुप्त साज़िश को भी ब्रिटिशों से ब्राह्मणों ने मंजूरी प्राप्त कर ली। ब्राह्मणी वर्चस्व के लिए ही भारत का विभाजन हुआ है। ब्रिटिशों के साथ ब्राह्मणों ने समय-समय

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

पर समझौता किया है। संस्कृत वाङ्मय का अध्ययन ब्रिटिशों ने करना प्रारम्भ किया तब उन्हें हैरानी हुई कि इतने बड़े जनसमूह पर अल्पसंख्य ब्राह्मण वर्ग किस तरह काबू करता है? इस सवाल का जवाब ढूंढने के लिए ब्रिटिशों ने ब्राह्मणों के मनु का याने मनुस्मृति का अध्ययन करने के लिए सर विल्यम जोन्स को मनुस्मृति इस ग्रंथ का अंग्रेजी में अनुवाद करने के लिए कहा। सन १७९२ में मनुस्मृति का अंग्रेजी में अनुवाद किया गया। उस मनु के कानून पर जोन्स की क्या राय है यह भी पूछा गया। सर विल्यम जोन्स ने अपनी राय देते वक्त कहा कि -

"संक्षेप में मनुस्मृति के कानून को भारत समान आध्यात्मिक तथा तात्विक समृद्धि के समाज में ईश्वर का आदेश ही मानते है। इसलिए करोड़ों भारतीय जनता का, जिनपर हमें राज करना है, योरोप एवं ब्रिटन के राजनैतिक एवं व्यापारिक लाभ पर सोचने से हम भी इस कानून का जितना हो सके उतने धाराओं को बरकरार रखना चाहिये। क्योंकि भारतीय जनता को वे पवित्र तो हैं ही इसके अलावा उन्हें केवल इस तरह के कानून ही समझ में आता है। ब्राह्मणों को सत्ता के बदले केवल उनकी जिन्दगी, जायजाद और धर्म की सुरक्षा की उम्मीद ही ब्रिटन से है।"[७] यही लक्ष्य था ब्राह्मण एवं ब्रिटाशों का। ब्राह्मणों ने कोई भी विदेशी शासक आये उन्होंने अपना वर्चस्व बरकरार रखा। उनका यह वर्चस्व बरकरार रहे इसलिए 'राष्ट्रवाद' इस मीठे शब्दों में उन्होंने उसका वर्णन किया है। ब्राह्मणों के वर्चस्व का अगला कदम है 'हिन्दू राष्ट्रवाद'।

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर का पूरा साहित्य ब्राह्मणवाद के खिलाफ है। वे दुश्मन से दाँवपेच से लड़ते थे। बुद्ध-मौर्य अपने-अपने काल में जिस तरह दुश्मन से दाँवपेच से लड़ते थे उसी तरह डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने उनके काल में दाँवपेच बनाकर ही दुश्मन से लड़े लेकिन उन्होंने उनका लक्ष्य तथा मक़सद नहीं बदला। आज़ाद भारत में नये दाँवपेच बनाकर ही वे दुश्मन से लड़े। उन्होंने कभी भी दुश्मन से समझौता नहीं किया।

प्रथम लोकसभा के कालावधि में डॉ. बाबासाहब आंबेडकर दि. २८ अक्तुबर, १९५२ को पंजाब राज्य के लुधियाना शहर में सभा के लिए गये थे। लाखों जन समुदाय समक्ष उन्होंने कहा कि, ब्राह्मण बाहर से आये है वे विदेशी है।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

उनके ही शब्दों में देखो –''जब आर्य भारत में आये तब वर्ण व्यवस्था कार्यरत हो गई। लोगों को उनके जन्म से सामाजिक दरजा दिया गया। किसी को ब्राह्मण कहा गया, किसी को क्षत्रिय, किसी को वैश्य, किसी को शूद्र और अन्य को 'अस्पृश्य' इस श्रेणी के मुताबिक अस्पृश्य सबसे निचले तथा समाज से पूरी तरह से परे थे। सवर्ण हिन्दू और अस्पृश्य इनके ताल्लुक पाँव और जुता इसी तरह के है। हम जब घर में दाखिल होते है तब जुता बाहर ही रखते है। उसी तरह 'अछूत' लोगों को समाज के बाहर रखा गया और उन्हें किसी भी तरह के हक़ नहीं दिये गये। सवर्ण हिन्दू के जरिये (ब्राह्मण द्वारा) हमसे किया गया अपमानजनक बर्ताव हमनें सैंकड़ों सालों तक भुगता है और अब भी सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक दृष्टि से हो रहे जुल्म हम भुगत ही रहे हैं।''[८] डॉ. बाबासाहब आंबेडकर के भाषण में स्पष्ट कहा है कि, ''आर्य जब भारत आये'' इसका अर्थ ब्राह्मण बाहर के थे याने उनके लिए भारत आये इस तरह शब्द प्रयोग किया गया है। ब्राह्मण विदेशी है और उन्होंने यहाँ आकर आक्रमण किया और षड्यंत्र रचकर उन्होंने वर्णव्यवस्था कायम की एवं उस आधार पर विदेशी ब्राह्मणों का वर्चस्व कायम हुआ।

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर को नेहरु ने प्रथम लोकसभा चुनाव में घोटाला करके पराजित किया इसलिए चुनाव आयोग के खिलाफ उन्होंने मुकदमा भी दायर किया था। भंडारा संसद उपचुनाव में वे १९५४ को उम्मिदवार बने। दि. २१ अप्रैल, १९५४ को भंडारा में जाहिर सभा हुई। उस वक्त दो लाख जनसमूह उन्हें सुनने के लिए इकट्ठा हो गया था। उस वक्त उन्होंने नेहरु को ही विदेशी घोषित कर दिया। ''पंडितजी के पुरखे ३००० सालों पहले भारत में आये। किन्तु आज भी उन्हें लगता है कि, मैं पहले काश्मिरी हूँ और बाद में भारतीय हूँ। तब मुझे हैरानी होती है कि, जो मनुष्य स्वयं को अभिमान से पहले हिन्दी (भारतीय) नहीं कहलवाता, उसे भारत का प्रधानमन्त्री होने का क्या हक़ है?''[९] इस विधान में ३०० के आगे एक शून्य रह गया था तत्कालीन रायटिंग अँड स्पीचेस के संपादक हरी नरके ने इसके बारे हमारे समक्ष गलती कबूल की थी। क्योंकि वहाँ केवल ३०० संख्या थी। नेहरु जाति से काश्मिरी ब्राह्मण है। नेहरु के पुरखे ३००० सालों पहले भारत पर आक्रमण करने आये थे यही इसका सीधा अर्थ है। डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ब्राह्मणों को विदेशी कहते थे इसका और एक ठोस प्रमाण है!

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

इस बारे में और एक उद्धरण देना हो तो डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने नाग यह संकल्पना बार बार इस्तेमाल की हैं। सिंधु सभ्यता में जो लोग है उन्हें भी नाग याने 'पणि' ऐसा कहा जाता है। नाग यह ब्राह्मणों को अपने शत्रू मानते थे। नालंदा, तक्षशिला नागों की स्मृति में बनाया गया है। महाराष्ट्र तो नागभूमि ही है। नागपंचमि यह त्यौहार इन्हीं नागों के सम्मान में किया जाता है। नाग यह टोटेम यहाँ के मूलनिवासी लोगों के लिए है। वि.का.राजवाडे इन्होंने भी यह बात कबूल की है कि, महाराष्ट्र के गाँव वेदविरोधी थे क्योंकि वे नागवंशीय है। कोंकण भी नागों का मुख्य केंद्र था। २३ कुलनामों की तालिका सबूत के तौर पर देकर राजवाडे ने कबूल किया कि, ''यानी इस कुलनाम के कोंकण में कई मराठे नागवंशी लोग हैं, इस विधान करने की ओर रूझान होता है।''[१०] शिंदे, नागवे, वणवे, तळेकर, फणिकर इन कुलनामों में नाग लोगों की निशानी हैं। तब नागवंशीय यह वैदिक धर्म के अटल दुश्मन थे इसलिए वैदिक ग्रंथों में उनकी बेहद घृणा की गई है। डॉ. नवल वियोगी इनकी राय में तमाम भारत में नाग लोगों का मक़ाम तथा साम्राज्य था इसका पुरातत्विक सबूत मौजूद है। पणि से नाग यह परम्परा गैरब्राह्मणों को ब्राह्मणों से दूर करती है।

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने १४ अक्तुबर, १९५६ को बुद्ध धर्म को अपनाया तो उसके मुख्य वजहों में से बौद्ध धर्म यह नागों का धर्म है यह एक वजह है। उनके ही शब्दों में देखते है - ''इस स्थान (नागपुर) को चुनने की वजह अलग है। जिन्होंने बौद्ध इतिहास को पढ़ा है उनकी समझ में आएगा कि, भारत में बौद्ध का प्रचार यदि किसी ने किया है तो वह नाग लोग है। नाग लोग आर्यो के भयंकर दुश्मन थे। आर्य एवं अनार्य इनमें लड़ाईयाँ तथा कोपाकुल युद्ध हो चुके थे। आर्य लोगों ने नागों को जलाने के प्रमाण पुराणों में प्राप्त होते है। अगस्ति मुनीने उनमें से केवल एक नाग मनुष्य को बचाया। उनके ही हम वंशज है। जिन नाग लोगों को इतना जुल्म सहना पड़ा उन्हें ऊपर उठने के लिए किसी महापुरुष की जरुरत थी, उन्हें वह महापुरुष गौतम बुद्ध में मिल गया। भगवान बुद्ध का उपदेश नागलोगों ने सबसे पहले भारत में प्रसारित किया। ऐसे हम नाग लोग है। नाग लोगों की प्रमुख बस्ती नागपुर तथा आसपास के इलाके में थी। इसलिए इस शहर को 'नाग-पुर' याने नागों का नगर ऐसा कहते है। यहाँ से कूल २७ मिल की दूरी पर नागार्जुन की

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

पहाड़ी है। नजदिक ही बहती हुई नदी है वह नाग नदी है। याने इस नदी का नाम यहाँ पर रहनेवाले लोगों से ही दिया गया। नागों की बस्ती से जो नदी बहती है वह नाग नदी है। यह स्थान चुनने की प्रमुख वजह यह है। नागपुर इसलिए चुना गया है।''[११] नाग यह वंश है इसी अर्थ से डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने उस शब्द का इस्तेमाल किया। नाग यही इस देश के असली मूलनिवासी है इस अर्थ से वह शब्द है। सत्तर के दशक में भंडारा जिले के पवनी में जो उत्खनन हुआ वहाँ पर नाग लोगों के कई प्राचीन प्रतिमा प्राप्त हुई। इसलिए डॉ. बाबासाहब आंबेडकर के उपरोक्त विधान को पुरातत्विक आधार है। नाग यही असली मूलनिवासी है और उनका लगातार ब्राह्मणों से संघर्ष होता रहा है।

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर की राय में जिन्हें हम हिन्दू कहते है उनमें से ब्राह्मण छोड़कर सारे लोग नागवंश के है। भारत के इतिहास में बौद्ध धर्म बनाम वैदिक धर्म के बिच चलता हुआ लगातार संघर्ष, इसके अलावा और कुछ नहीं है भारत के इतिहास के बारे में यही सबसे भिन्न परिभाषा है और यही यथार्थ है। डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने यह सटीक राय दी है कि, ऋग्वेद के अंतिम दसवे काण्ड में पुरुषसुक्त क्यों जोड़ा गया? नागों की कत्तल करने के पश्चात ही उसे जोड़ा गया और नागों को शूद्र घोषित किया गया जिन्हें आज ब्राह्मण हिन्दू कहता है। डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने आर्य ब्राह्मण तथा नाग इनके बिचो बिच एक भेदनेवाली रेखा खिंच ली हैं क्योंकि वे दोनों ही भिन्न वंश के लोग है। उनके ही शब्दों में पढ़ें – ''मौजूदा हिन्दू कहलानेवाले बहुत से लोग नागवंशीय हैं। जिन नाग लोगों ने आर्य के पहले भारत में बस्ती बनाई थी वे आर्यों से ज्यादा सुसंस्कृत थे। उनपर आर्यों ने फ़तह हांसिल की, इतने पर ही आर्यों की संस्कृति उनसे श्रेष्ठ नहीं होती है। आर्यों के जित की और एक वजह थी वह है उनका वाहन। आर्य घोड़े पर सवाल होकर लड़ते थे तो नाग पैदल लड़ते थे। आर्य-नागों की लड़ाई जी-जान से लड़ी गई। महाभारत के खाण्डव वन तथा सर्पसत्र इन किस्सों पर से मनगढ़ंत परत हटाई गई तो इन आर्य-नाग युद्ध का भयंकर स्वरुप उजागर होता है। आर्योंने खाण्डन वन दहन के समान यानी Scorched Earth Policy के कृत्य करके नागों को नष्ट कर दिया। इस विध्वंस से अगस्ती ने एक नाग को बचाया, ऐसी एक कहानी है। कहानी में अतिशयोक्ति है फिर भी नागों की बस्ती पूरी तरह नष्ट करने

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

के लिए आर्य कितनी जिद्दोजहद करते थे यह इससे दिखाई देता है। पराभव से नागों के मन में आर्यों के लिए नफ़रत थी। परीक्षीत के प्राण हरनेवाला तक्षक यह कोई साप नहीं बल्कि एक नागवंशी रहनुमा था। आर्य लोगों के मन में नागों के बारे में पनप रही नफ़रत की मिसाल कर्ण तथा अर्जून इनके कर्णार्जुन युद्ध के पहले अनंत यह नागवंशीय योद्धा कर्ण से मिल गया और वह अर्जून के खिलाफ मदद करने का आश्वासन देने लगा। कर्ण ने मदद स्वीकार करने से इनकार कर दिया। क्योंकि कर्ण आर्य था और अनंत यह नाग था। आर्यों ने आपसी युद्ध के लिए नागों की सहायता लेना वर्जित था।''[१२] इन तमाम प्रमाणों से डॉ. बाबासाहब आंबेडकर यह ब्राह्मणों को विदेशी एवं भिन्न वंश के मानते थे यह अपनेआप ही सिद्ध होता है।

ब्राह्मणों की राय में भी ब्राह्मण विदेशी

ब्राह्मण विदेशी है यह बात ब्राह्मण-बनिया नकार नहीं सके। बाल गंगाधर तिलक चित्पावन ब्राह्मण होकर आतंकवाद के जनक है। तिलक ने ही आधुनिक भारत में दंगल करवाई थी। तिलक पर तरह तरह के दंगल तथा हत्याकाण्ड की तहक़ीकात होकर चिरोल आयोग ने तिलक को राष्ट्रद्रोही करार दिया था। तिलक स्वयं को पेशवा ब्राह्मणों का उत्तराधिकारी मानते थे। दूसरे बाजीराव के साथ उनके खानदान के लोग थे। तिलक ने १८९८ को 'आर्क्टिक होम इन द वेदाज' इस ग्रंथ की रचना की। और सन १९०३ को प्रकाशित किया था। तिलक ब्राह्मणों के मूलस्थान के बारे में डंगे की चोट पर कहते थे कि, ''आज तक दुर्बोध माने गये कुछ वैदिक कथन का नये शास्त्रीय खोज के मुताबिक अर्थ निकाला जाए तो वैदिक काल के लोगों के पुरखों की बस्ती हिमकाल के पूर्व उत्तर ध्रुव के नजदीक कही तो थी इस तरह की अटकलें जरुर करना पड़ता है।''[१३] तिलक ने उनके उस ग्रंथ में मान्य किया कि, आर्य ब्राह्मण गाय मारकर खात थे। इंद्र ने बड़े बड़े पुर नष्ट किये इसलिए उसे पुरंदर कहते है। इंद्र ने वृत्रा पर हमला किया। वृत्र यानी पणि या नाग लोग। सिंधु सभ्यता का महान राजा शंभर इनकी ब्राह्मणों ने बेरहमी से हत्या की यह कहते हुये कमाल की ख़ुशी तिलक के चेहरे पर थी। मेघवंशी (नागवंशी) वृत्र की हत्या ब्राह्मणों ने करवाई इसका जिक्र वेदों में

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

है यह कहते हुये तिलक को घमण्ड महसूस हो रहा था। नगरों पर हमला करने के पहले नदी के सेतु को ब्राह्मणों ने तोड़ दिया उसके बाद में जानलेवा हमला किया।

तिलक ने यह बात मान ली कि, आर्य ब्राह्मणों ने सिंधुवासीयों पर हमला किया। ‘‘नई जमीन की खोज में ध्रुव से दक्खन की ओर आते वक्त जिन अनार्य लोगों से उनकी मूठभेंट हो गई उनका संहार करके या अपनी जान हथेली पर लेकर उन्होंने उनपर जो वर्चस्व स्थापित किया जिससे उनकी (अनार्य) मूल तरक्की उँचे दर्जे की थी ऐसा नहीं कह सकते।’’[१४] तिलक ने इशारा किया कि, ब्राह्मणों ने सिंधुवासी मूल लोगों का हत्याकाण्ड किया याने यह उनका खास हुनर है। उनके इस विधान से जो अर्थ निकलता है वह ब्राह्मणों के दृष्कृत्य तथा हिंसा का खुलेआम समर्थन ही करता है। बाल गंगाधर तिलक को शाहू महाराज आतंकवादी यूं ही नहीं कहते थे!

मोहनदास करमचंद गांधी

यद्यपि, गांधी तीसरे वर्ण के थे फिर भी वे स्वयं को आर्य ही कहते थे। वे जनेऊ पहनते और चोटी (Topknot) रखते थे। गांधी ने आधुनिक भारत में ब्राह्मणवाद मजबूत किया। गांधी यह वंशवादी थे वे दक्षिण आफ्रिका में काले निग्रों से वांशिक भेद करते थे और वे ब्रिटिशों को ख़त के जरिये इत्तला भी कर देते थे। गांधी यह वंशवादी थे इसलिए उन्हें ‘नोबेल प्राईज’ नकारा गया। ‘The South Affrican Gandhi’ इस हाल ही में प्रकाशित हुई किताब में अश्विन देसाई एवं गुलाम वाहेद इन लेखकों ने गांधी की हक़ीकत उजागर की है। इस ग्रंथ से ब्राह्मणवादीयों में तुफान ही आ गया। उस ग्रंथ में गांधी के समग्र वाङ्मय का एक ख़त उद्धृत किया गया है। वह ख़त आज डीएनए के अध्ययनकर्ता के लिए अतिरिक्त जानकारी हो गई। गांधी कहते है कि – ‘‘इतिहास कहता है कि, आर्यों का मूल स्थान भारत नहीं बल्कि वे मध्य एशिया से भारत में आये थे और उनका एक परिवार भारत में आकर बस गया तो दूसरा योरोप में बस गया। इतिहास बताता है कि भारत सरकार उस वक्त सही मायने में सभ्य (शिक्षित) सरकार थी। आर्यों का तमाम साहित्य उसके बाद ही विकसित हुआ। जब दुनिया में अन्य राष्ट्र तैयार भी नहीं हुये थे उस वक्त भारत विकास की चरमसीमा पर था और मौजूदा

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

भारतीय उनके उत्तराधिकारी हैं।''[१५] गांधी ने उस वक्त ब्रिटिशों से खुलकर स्वयं को तथा ब्राह्मणों को योरोपियन वंशज कहा था। डीएनए विज्ञान ने प्रमाणित किया है कि, योरोप में जंगली, वहशी स्टेप युरेशियनों ने आक्रमण करके वहाँ के आमदीयों का कत्तल करके वहाँ की महिलाओं से संभोग किया। स्टेप युरेशियन यह बहुत ही ज़ालिम तथा वहशी थे। उन्होंने भारत की सिंधु सभ्यता पर हमला किया और उन्होंने महान सभ्यता नष्ट कर दी यह बात गांधी अहंकार के साथ कहते है। सिंधु सभ्यता महान थी तो वहशी, जंगली एवं असभ्य ब्राह्मण बहुत कम उन्नत थे। उन्होंने सिंधु सभ्यता का नाश करके अपना नाम दुनिया में एक बदनाम जमात के तौर पर मशहूर कर दिया। यह बात अब कोई भी नकार नहीं सकते। क्योंकि अब विज्ञान तथा डीएनए सायन्स से इसे मान्यता प्राप्त हो गई है।

गांधी ने तो आगे २७ दिसम्बर, १९२४ को यह बात कांग्रेस के ३९ वे राष्ट्रीय अधिवेशन में रखी थी कि, आर्यों की तरह ही अंग्रेज भी आक्रमणकारी है। ''आर्य जाति के आक्रमणकारियों (हमलावार कौमों) ने हिन्दुस्तान के मूलनिवासीयों को (कदीमी बाशिन्दो) से अगर ज्यादा बुरा नहीं तो कम से कम बिल्कुल वैसा ही सलूक किया जैसे कि हमारे अंग्रेज आक्रमणकारी आज हमारे साथ कर रहे हैं।'' गांधी नेहरु ने जिन्दगीभर अंग्रेजों को अपना भाई कहकर उनसे दोस्ती निभाई थी। चिरोल इन्होंने उनके अहवाल में तिलक के बारे में एक बात दर्ज की है वह है- ''अंग्रेज लोग सर्व सत्ता हमारे हाथ में देकर, वे केवल नाम के राजा होंगे तो अब भी उनके और हमारे बिच में सुलह हो सकती है।'' इसका अर्थ क्या है? ब्राह्मणों से मित्रता बढ़ाकर अंग्रजों ने इस देश में रहना है। होमरुल इसका अर्थ अंग्रजों को भारत से निकाल देना नहीं बल्कि शासन प्रशासन में ब्राह्मणों को बराबरी का हिस्सेदार बनाना और अंग्रेजों ने भारत में दिर्घकाल तक राज करना यह है। ब्राह्मणों ने चलाया हुआ आज़ादी का आन्दोलन, आज़ादी का आन्दोलन नहीं था बल्कि विदेशी ब्राह्मणों का भारत पर कब्जा प्राप्त करने का आन्दोलन था। इसी कब्जे को ही आगे ब्राह्मणों ने 'राष्ट्रवाद' नाम का नया मोड़ दे दिया!

पंडित जवाहरलाल नेहरु ने डिस्कवरी ऑफ इंडिया इस ग्रंथ में लिखकर रखा है कि, ब्राह्मण विदेशी है और उन्होंने खैबरखिण्ड के रास्ते से भारत में

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

दाखिल होकर आक्रमण किया तथा सिंधु सभ्यता का नाश किया। नेहरु ने इंदिरा को लिखे हुए ख़त अर्थात् 'पिता की ओर से पुत्री के नाम ख़त' इसमें साफ भाषा में लिखा है कि, ब्राह्मण विदेशी तथा आक्रमणकारी थे –

"आओ देखें पहले भारत वर्ष में क्या हुआ। हम पहले देख चुके है कि, उस प्राचीनकाल में मिश्र की तरह भारत में सभ्यता मौजूद थी। उस समय भारत में जो लोग निवास करते थे उनका नाम द्रविडियन था। उन्ही लोगों के वंशज आज दक्षिण भारत में मद्रास के चारों तरफ रहते हैं। उत्तर से आर्यों ने इन द्रविडों पर आक्रमण किया। प्राय: इन लोगों का मध्य एशिया में एक बहुत बडा समूह होगा। जिनको भोजन न मिलने के कारण अन्य देशों में बसना पडा।।"[१६] नेहरु स्वयं को उस आक्रमणकारी ब्राह्मणों की सन्तान मानते थे। नेहरु यह नाम भी नहर इस शब्द से रखा गया है। नदी के किनारे रहनेवाले काश्मिरी ब्राह्मण! डॉ. बाबासाहब आंबेडकर भी उन्हें विदेशी ब्राह्मण कहते थे।

पेशवे ब्राह्मण पर अनुसंधान करनेवाले ना.गो.चापेकर यह चित्पावन ब्राह्मणों में बहुत मशहूर व्यक्ति है। वजह यह है कि उन्होंने चित्पावन ब्राह्मणों का इतिहास लिखा। चापेकर ने यह बात भी मान ली है कि, चित्पावन ब्राह्मण ज़ालिम लोग है। उनका औजार परशुराम की कुल्हाड़ी है। इरावती कर्वेबाई एवं भांडारकर भी चित्पावन को विदेशी ही मानते थे। चापेकर लिखते है कि – "चित्पावन ब्राह्मण कहीं से भी आये; वे जहाँ से आये वहाँ से डर के मारे भागकर आये ऐसा मान भी ले तो भी वे औरतों को छोड़कर आये होंगे ऐसा हमें नहीं लगता। कुछ औरतें तो उनके साथ आये ही होंगे। कुछ एक को औरतें नहीं होगी, कुछ की यहाँ आते आते राह में ही मृत हो गई होगी; ऐसे आदमीयों को यहाँ की महिलाओं से विवाह करना जरुरी था। चित्पावन की औरतें गोरे रंग की थी ऐसा सबसे पहले प्रसिद्ध है। अंबा की ओर की महिलाऐं गोरे रंग के लिए मशहूर है ऐसा नहीं लगता। गोकर्ण से निचे गोरे रंग की महिलाऐं मौजूद है। या साथ लाई गई औरतें गोरे रंग की होनी चाहिये।" आगे चापेकर चित्पावन ब्राह्मणों की मृखाकृति वर्णन करते हुये कहते है कि – "चित्पावन गौर वर्ण के, सुनहरे बालों के और भूरे रंग की आँखे इस तरह उनका वर्णन है और यह शास्त्रीय कसोटी पर खरा उतरा है।"[१७]

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

ब्राह्मण मण्डली यह बात खुलकर कहते है कि, ब्राह्मण विदेशी है और उनका वंश भारतीय नहीं है। चित्पावन ब्राह्मण एवं बिहार के भूमिहार ब्राह्मण यह दोनों ही बहुत ज़ालिम किस्म के है। उत्तर प्रदेश के पुरोहित ब्राह्मणों का डीएनए युरेशियन स्टेप जंगली लोगों से २००% मिलता है ऐसा ११७ वैज्ञानिकों ने डीएनए परीक्षण द्वारा सिद्ध किया है।

राहुल सांस्कृत्यायन की राय में

केदारनाथ ऊर्फ राहुल सांस्कृत्यायन यह हिन्दी साहित्य जगत के बहुत ही मशहूर शख़्स है। उन्होंने सन १९४२ को ग्रंथ प्रकाशित किया था। उन्होंने 'मानव समाज' व 'मध्य एशिया का इतिहास' यह ग्रंथ लिखकर ब्राह्मण विदेशी तथा आक्रमणकारी है यह बात पुरातत्विक आधार पर स्वीकार की है। ब्राह्मण वोल्गा नदी से निकले सीधे गंगा प्रदेश की ओर हमला करते हुए किस तरह आये इसका पाँच हजार सालों का इतिहास सीधे-सरल भाषा में उन्होंने रचा है। 'वोल्गा से गंगा' इस ग्रंथ में इतना सटीक किस तरह लिखा होगा इसलिए सांस्कृत्यायन इन्होंने पाँच खण्डों में लिखा हुआ 'मेरी जीवनयात्रा' किताब के नये सिरे से मैंने पन्ने पलटे। उनके जीवन चरित्र के खण्ड २ में सन १९३०-३१ के दरमियान वे हडप्पा व मोहेंजोदरो देखने के लिए गये थे इसका जिक्र मौजूद है। सर जॉन मार्शल इनका उत्खनन कार्य एवं उनके पुरातत्विक अहवाल उस वक्त मशहूर हुये थे। सिंधु सभ्यता की ओर पूरी दुनिया का ध्यान खींचा गया था। मोहेंजोदरो की ऐतिहासिक वास्तु के बारे में राहुल सांस्कृत्यायन इन्होंने पहले ही पढ़ा था। फोटोग्राफ्स देखे थे। उन्होंने उस वास्तु को रूबरू देखा तब वे लिखते है - ''शहर की सड़कें, पानी की नालियाँ, पाँच हजार वर्ष पहले के आर्यो से पुराने सिन्धु वासियों के नागरिक जीवन के उत्कर्ष को बतला रही थी। उनके ईंटो के घर, ईंटो के कूएँ, उनके स्नानागार सभी इस बात के साक्षी थे, कि ताम्रयुग में भी वहाँ के लोग बहुत समृद्ध जीवन बिता रहे थे।''[१८] हडप्पा तथा मोहेंजोदरो नगर एवं उनके ऐतिहासिक वास्तु सांस्कृत्यायन इन्होंने प्रत्यक्ष देखने के बाद उसके बारे में 'वोल्गा से गंगा' में सटीक वर्णन किया है। उस वर्णन के बारे में मामले अब हम देखनेवाले हैं-

१) आखिर असुर राजा और उनके पुरोहित मूर्ख नहीं होते, वह हम

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

आर्यो से ज्यादा चतुर होते है। उनके नगरों जैसा नगर बनाने के लिये हमे उनसे बहुत सीखना पडेगा। उनकी पण्य-वीशी (बाजार), उनके कमल-शोभित सरोवर, उनकी उच्च अट्टालिकाये, उनके राजपथ ऐसी चीजें है, जिन्हे शुद्ध आर्य-भूमियों में नहीं पाया जा सकता। मैंने उत्तर सौवीरके असर-परित्यक्त नगरों को देखा है, और इस नव पराजित नगर को भी; हम आर्य उनके पुराने नगरों को प्रति-संस्कार (मरम्मत) करके भी उस रुप में कायम नहीं रख सके और यह नया नगर जिसे कहते है, शबर ने स्वयं बसाया था- वह देवपुर जैसा है।''[१९]

२) युरेशियन ब्राह्मण जंगली व वहशी थे। उन्होंने सिंधु जन का लिबास देखकर पहनना प्रारंभ किया -''सुवास्तु में और उससे पहले आर्य कपास के वस्त्र का नाम भी नहीं जानते थे किन्तु यहाँ हम लोग उसे पहनते है। गर्मियों में वह सुखद होता है।''[२०]

३) युरेशियन ब्राह्मणों ने सिंधु सभ्यता पर बेरहमी से आक्रमण किया इसके बारे में -''असुर-सेना को आशा न थी, कि पीत केश एकाएक उन पर आ धमकेंगे। पीत-केशों के लम्बे भालों और खडगों के सामने वे देर तक न ठहर सकें, लेकिन आर्य-बल उन्हें सिर्फ पराजित करके नहीं छोडना चाहता था। वह इन निर्वास काले असुरों को बतलाना चाहता था कि पीत-केशियों पर नजर डालना कितने खतरे की बात है। असुर सेना को भागते देख पुरुधान ने सार्थ को सूचना भेजी और अपने सवारों को ले पुष्कलावती पर आ धमका। असुर सैनिकों की भाँति उनका नगराधिपति भी इसकी आशा नहीं रखता था। असूर अपनी पूरी शक्ति को इस्तेमाल करने का मौका नहीं पा सके, और आसानी से असूर दुर्ग तथा नगराधिपति पीत-केशों के हाथ में आ गये। पीतकेश असुरों के इस विश्वासघात से बहुत उत्तेजित थे। उन्होंने बडी निर्दयता-पूर्वक असुर पुरुषों का वध किया। नगराधिपतियों को तो नगर के चौरास्ते पर ले जा असुर-प्रजा के सामने एक-एक अंग काटकर मारा। उन्होंने स्त्रियों, बच्चों और व्यापारियों को नहीं मारा यदि उस वक्त दास बनाने की इच्छा होती, तो सम्भव है पीत केश (आर्य) इतना अधिक वध न करते। पुष्कलावती के बहुत से भाग को उन्होंने आग लगाकर जला डाला। यह प्रथम असुर-दुर्ग का पतन था।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

असुरों और पीत-केशो के महान विग्रह देवासुर संग्राम का इस प्रकार प्रारंभ हुआ।''[२१]

४) सिंधु जन की भाषा के बारे में -

''और इस अपार सागर में असुर अपनी विशाल नौकाओं को निर्भय होकर चलाते। वर्षो-महिनों के रास्ते जाते, और सागर से नाना प्रकार के रत्न लाते है। असुरों के साहस और चतुराई का यह भी एक नमुना है। यही नहीं, एक बात तो तुने सुनी भी न होगी मित्र! असुर बिना मुँह से बोले-बातचीत कर सकते है।''

''बिना बोले! क्या कहा मित्र!! ''हाँ, बिना बोले। मिट्टी, पत्थर, चमडे के दे दो, एक असुर उस पर कुछ चिन्ह खींच देगा, और दुसरा सारी बात समझ लेगा। जितना हम दो घंटा बात करके नहीं समझा सकते, उतना वह पाँच-दस चिन्हों को खींचकर बतला सकते है। यह बात आर्यों को कभी नहीं मालूम थीं। अब हमारे आर्य उन चिन्हों को सीख रहे है, किन्तु वर्षो लगाने पर भी उनका सीखना पूरा नहीं होता।'' ''तब, जरुर असुर हमसे अधिक चतुर थे।''[२२]

इन तमाम मंत्रणा से साबित होता है कि, युरेशियन स्टेप ब्राह्मण कितने जंगली, वहशी उसी तरह ज़ालिम भी थे। योरोप में गये हुये युरेशियन स्टेप जंगली लोगों ने वहाँ के आदमीयों का कत्लेआम किया। वहाँ पर समाज अनुन्नत था। उन्हें लूटा। उनकी महिलाओं से संभोग किया और वहाँ पर नई प्रजाति को जन्म दिया। जिस स्थान पर पुरानी सभ्यता थी उनका नाश इन जंगली युरेशियन लोगों ने किया। भारत में उन्होंने सिंधु जन के पुरुषों का कत्लेआम किया। उन्होंने इस स्थान पर वर्णव्यवस्था निर्माण की और यहाँ की जनता को शूद्र बनाकर गुलाम किया। दुर्गा भागवत तथा मधुकर ढवळे इन्होंने इस खूँखार ब्राह्मणों के दुष्कृत्य का खुलकर समर्थन किया है। मात्र इन दोनों ने जातिव्यवस्था यह सिंधु जनों ने ही बनाई ऐसा बिन पेंदे का तर्क प्रस्तुत किया है। वर्णव्यवस्था यह ब्राह्मणों का उपज है इसका प्रमाण ऋग्वेद के पुरुषसुक्त में मौजूद है। इसलिए इस झंझट से यह भट मण्डली बचकर निकल नहीं सकती। तो उन्होंने जाति व्यवस्था का इलज़ाम सिंधु जनों पर थोंप दिया, किन्तु उसमें कुछ भी हक़ीकत नहीं है। केवल ब्राह्मणों को बचाने की वह निष्फल कोशिश है। ढवलीकर यह डेक्कन कॉलेज के होने से जिन्दगीभर

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

उन्होंने ब्राह्मणों के चरबी की ही चिन्ता की। सेवानिवृत्ती के पश्चात् वे भांडारकर संस्था के सदस्य हो गये। भांडारकर संस्था में यह तमाम षड्यंत्र यूं ही नहीं पकाये जाते है!

ब्राह्मण विदेशी होने का आरएसएस का सबूत

ब्राह्मण हमेशा दाँवपेच बनाकर, तरह तरह के षड्यंत्र रचकर अपना वर्चस्व बरकरार करता है। माधव गोलवलकर ने यह बात शंकरमठाचार्य को लिखे हुये २० दिसम्बर, १९६४ के खत में कही हैं –''खास तौर पर जाति विशेष तथा आनुवंशिक अस्पृश्यता को लेकर जो प्रक्षोभ निर्माण हुआ है, वह सर्वविदित ही है...

समाज की सुव्यवस्थित धारणा कर समाज को सुगठित शक्तिसंपन्न तथा इहपरत्र से कल्याण–प्राप्ति के लिए समर्थन करनेवाले धर्म की कुछ रीतियों में इस लक्ष्य को ध्यान में रखकर परिवर्तन करने हेतु नवीन रीतियों की स्थापना करना, पुरानी अनावश्यक या अहितावह रीतियों को छोड देना विगतकाल में आवश्यकता नुसार पूर्वाचार्यो द्वारा किया गया है। आगे भी देशकाल परिस्थिति को सोचकर आवश्यक रीतियों का स्वीकार व अनावश्यक या अहितकारक रीतियों को उपेक्षा करने की दृष्टि से उचित व्यवस्था देने का तत्कालीन आचार्यो का धर्मगुरुओं का अधिकार भी पूर्व सूरियों ने ऋषियों ने स्पष्ट तथा निर्देशित किया है।''[२३] इससे यह साबित होता है कि, ब्राह्मण वर्ग हमेशा दाँवपेच रचकर ही षड्यंत्र करता है। दाँवपेच के तहत ही ब्राह्मणों ने 'हिन्दू' शब्द का स्वीकार किया। वह उन्होंने क्यों स्वीकार किया यह हम आगे देखनेवाले है।

बाहर–बाहर इस्लाम व इसाई द्वेष फैलाकर अनुसूचित जाति, जनजाति एवं ओबीसी इन्हें 'हिन्दू' इस नाम के तहत इकट्ठे करना यह कूटनीति रचकर ही संघ ने काम किया है। अल्पसंख्य ब्राह्मण बहुसंख्य लोगों पर इसीलिए राज करता है। संघ परिवार ने जब देशभर बम विस्फोट करने की योजना बनाई उस वक्त उन्होंने जानबूझकर अभिनव भारत समान आतंकवादी संगठन की निर्मिती की। उसका और संघ का ताल्लुक नहीं होता तो प्रज्ञा ठाकूर को मध्यप्रदेश में भाजप का उम्मिदवार बनाकर ईव्हीएम घोटाला करके चुनकर लाते क्या? सन २००८ में

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

लेफ्टनंट कर्नल प्रसाद पुरोहित ने जो गुप्त मीटिंग रखी थी उसका व्हिडिओ रेकॉर्डिंग करके रखा था। जब महाराष्ट्र एटीएस ने उनका लॅपटॉप जप्त किया तब उन्हें उसमें ४८ हिस्सें (२४ व्हिडिओ और २४ ऑडिओ) प्राप्त हुये। उनमें से ४-५ हिस्सों का ही शब्दांकन करके उसे चार्जशीट साथ में कचहरी में पेश किया गया। फरीदाबाद में हुये अभिनव भारत की मीटिंग में संविधान विरोधी एवं देश विरोधी जो बहस हुई वह इस तरह है -

(अ) मौजूदा राज्यघटना को मिटाकर उसके बजाए वेदों तथा स्मृति पर निर्धारित हिन्दू राष्ट्र की स्थापना करना।

१) पुरोहित (पान नं. ६१) : We will fight the Constitution, will fight the nation, this nation is not ours.

(अर्थात- यह कौम हमारा नहीं है इसलिए हम इस कौम के खिलाफ और संविधान के खिलाफ लड़ेंगे।)

२) पुरोहित (पान नं. ६४) : We have to fight the Constitution, We have to fight for our independenc.

(हमें संविधान के खिलाफ लड़ना ही होगा, हमें अपनी आज़ादी के लिए लड़ना ही होगा।)

३) पुरोहित (पान नं. ६९) : इस संविधान को मानना ही नहीं है। Knocking down ये एकही तरीका है जरुरी।

४) उपाध्याय (पान नं. ७२) : This Constitution is not applicable to us, will not be acceptable to us; another Constitution will come into place; then Hindu Rastra is established.

(यह संविधान हमारे लिए अनुकूल नहीं है, हमें स्वीकार करने लायक नहीं है; दूसरा संविधान इसके स्थान पर आयेगा और तब हिन्दू राष्ट्र स्थापित होगा)

ब) हिन्दू राष्ट्र की नये राज्यघटना का स्वरुप :

१) सुधाकर द्विवेदी (पृष्ठ क्र.६७) : ''राज्यव्यवस्था का हमारे यहाँ

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

कुछ पौराणिक शास्त्र है। हमारी जो स्मृतियाँ है वही हमारा संविधान है समाज की। इस समय १४ स्मृतियाँ है हमारे इस देश में, उन सारे को इकट्ठा कर लीजिए।''

२) पुरोहित (पृष्ठ क्र. ६८) : ''इस देश में हमें वेदों के मुताबिक जो बताया गया है। सनातन हिंदू धर्म, वैदिक धर्म, वो चाहिए।''

यह सब करने के लिए अर्थात् ब्राह्मणी राष्ट्र की स्थापना के लिए पुरोहित ने उस बैठक में भी यही कहा था कि, नेपाल, इस्रायल इन देशों से उनका समझौता हुआ है। इस्रायल ने उनकी चार शर्ते मान ली है।

क) अभिनव भारत एवं आरएसएस के गहरे ताल्लुक :-

१) डॉ. आर.पी.सिंग (पृष्ठ क्र.७०) : ''लेकिन दुर्भाग्य रहा कि, उत्तरांचल में बहुत प्रयास करने के बाद भी आज हमारी सरकार (बीजेपी सरकार) माओवादीयों का खुला समर्थन कर रही है। ये बात मैने संघ के बडे अधिकारीओं को बोला। मा.मोहन भागवतजीसे मैं मिला था; दो घंटे मिलके सब बताया था। वहाँ के पुलिस चीफ सुभाष जोशी को बोला था। मैं उनसे मिला भी था दो बार। हमारी बात लगातार होती रहती है!''

२) पुरोहित (पृष्ठ ७३) :- (बैठक हाल ही में दाखिल हुये मनुष्य का परिचय करवाते हुये) ''इनका परिचय बी.एच.शर्मा प्रेमसिंगजी। दो बार Member of Parliament (BJP), 1940 से स्वयंसेवक, काफी संघर्षमय जीवन अबतक।''

३) पुरोहित (पृष्ठ क्र. ८९-९०) : Variaous Political Government and Non-Government Bodies will be infiltrated मतलब एक example हमेशा देता हूँ। मतलब एक captain या major बैठा था दिल्ली के अंदर जो काम होने के लिए तीन महिने time लगाता था। एक phone call के ऊपर हो गया क्योंकि वो संघ का था, मैं संघ का था। बिना जाने समझ में आया की, वह संघ में रह चुका है। मैंने उसे फोन किया और कहा ये काम करना है। UP का व्यक्ति था। बोला सर हो जायेगा। एक दिनके अंदर काम हो गया।''

उस मीटिंग के शब्दांकन के पन्ने थे। वह दस्तावेज कचहरी में पेश किये

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

गये है। उसकी प्रमाणित प्रतिलिपि इसके पहले आयजी एस.एम.मुश्रिफ से हमें प्राप्त हो गई थी। अभिनव भारत तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का आयएसआय यह आतंकवादी संगठन से केवल ताल्लुक ही नहीं था अपितु उनसे बम विस्फोट के लिए आर्थिक सहायता भी मिलती रही इसकी कबूली असिमानंद ने अपने कबूली जवाब में दी है।

"मुझे यह भी पता चला था कि सुनील जोशी, भारतभाई के साथ नागपुर में इंद्रेश जी से मिले थे और इंद्रेशजी ने भारत भाई के सामने सुनील को ५०,०००/- रुपये दिये थे। कर्नल पुरोहित ने भी एक बार मुझे बताया था कि, इंद्रेश जी आयएसआय के एजंट है और इसके पुरे डॉक्युमेंट उसके पास है। लेकिन कर्नल पुरोहित ने मुझे वह डॉक्युमेंट कभी नहीं दिखाए।" इससे यही साबित होता है कि, इंद्रेश कुमार, लेफ्टनंट कर्नल प्रसाद पुरोहित तथा भागवत के आयएसआय इस आतंकवादी संगठन से गहरे ताल्लुकात है। इस सन्दर्भ में और ठोस सबूत फरीदाबाद की बैठक में ही डॉ.आर.पी.सिंग कबूल करते है कि, अपना आझाद चैनल का काम जारी है और उसके लिए कुछ पैसे लग रहे है जिसके लिए अंडरवर्ल्ड का डॉन दाऊद ने पैसा दिये है। (पृ.८९) इसका क्या अर्थ है? मूलनिवासी लोगों के राष्ट्र पर कब्जा करने के लिए बाहर के देश से, आतंकवादी से सहायता लेकर यह नये आक्रमण की तैयारी तो नहीं है? ब्राह्मण विदेशी है, पराये है, अगन्तुक है इसलिए उन्होंने देश के खिलाफ कृत्य किया। इससे यही साबित होता है कि २६/११ के हमले में आरएसएस का सीधा ताल्लुक था। पूर्व आय.जी. मुश्रिफ इन्होंने सबूतों के साथ किताब में कहा है। अजमेर शरीफ बम विस्फोट में आरएसएस के लोगों को मुजरिम करार दिया गया था। जयपुर के नॅशनल इन्वेस्टीगेशन एजेंसी (एनआयए) के खास कचहरी में अजमेर दरगाह ब्लास्ट के बारे में मुकदमे की सुनवाई में ३ लोगों को मुजरिम करार दिया गया जो सीधे आरएसएस से ताल्लुक रखते है। वे है भावेश देवेंद्र गुप्ता एवं संघ का पूर्ण कालिक कार्यकर्ता सुनील जोशी। जोशी की बाद में संघ के लोगों ने ही हत्या की है ऐसा उनके घर के लोगों ने अंकुश लगाया।

लेफ्टनंट कर्नल प्रसाद पुरोहितने फरीदाबाद की अपनी गुप्त बैठक में

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

कबूल किया कि, यह देश ब्राह्मणों का नहीं है इसलिए उन्हें राष्ट्र एवं संविधान के खिलाफ कार्य करना होगा। देश में बम विस्फोट करके संविधान के खिलाफ माहौल बनाना यह उसके पिछे का मकसद था। भारतीय संविधान ही नष्ट करके उसके स्थान पर मनुस्मृति को ही संविधान बनाना यही उनका अजेंडा था। हिन्दू राष्ट्र यह ओबीसी वर्ग का समर्थन प्राप्त करने के लिए है, असलियत में वेदों पर निर्भर याने वर्णाश्रम धर्म अर्थात् वैदिक धर्म की पुनर्स्थापना करना याने ब्राह्मणों की कौम भारत में स्थापन करना यही उनका मूल मक़सद है। इसलिए उनके 'हिन्दू राष्ट्रवाद' के पिछे गुप्त मक़सद इसी बहाने हमारी समझ में आता है।

लेफ्टनंट कर्नल पुरोहित का असली आतंकवादी चेहरा:–

लेफ्टनंट कर्नल पुरोहित जब कारागर के बाहर आ गया तब उसने मीडिया के समक्ष कुछ ऐसा कहा कि वह महान देशभक्त ही है। प्रज्ञा ठाकूर एवं लेफ्ट. कर्नल श्रीकांत प्रसाद पुरोहित इन्हें भाजपाने ईव्हीएम घोटाला करके सत्ता हांसिल करने के बाद रिहा कर दिया। दि. ११ फरवरी, २०११ को 'आजतक' तथा अन्य वृत्तवाहिनी एवं अख़बार में समचार छपकर आए थे। जिसका शीर्षक था 'कर्नल पुरोहित ने रची थी संघ नेताओं की हत्या की साजिश –आरएसएस' उस समाचार में कहा गया था कि –''मालेगांव, अजमेर और हैदराबाद विस्फोट मामलें में सरकारी जांच को दुष्प्रचार की साजिश का हिस्सा बताते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) ने इन मामलों की निष्पक्ष एवं पारदर्शी ढंग से जांच करने के लिए एक स्वतंत्र आयोग गठित करने के वास्ते प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को पत्र लिखा है और मुलाकात के लिए समय मांगा है।'' ...

पत्र की जानकारी देते हुए अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख मनमोहन वैद्य ने कहा, ''संघ का स्पष्ट मानना है कि कर्नल पुरोहित की भूमिका राजनीतिक थी और वह अपने विवेक के आधार पर कुछ नहीं कर रहा था। उसकी कोशिश संघ और सहयोगी संगठनों में दरार पैदा करने की थी। उसने सरसंघचालक भागवत और इंद्रेश कुमार को मारने की साजिश रची जिसका पता महाराष्ट्र एटीएस के आरोपपत्र से चलता है।'' यदि लेफ्टनंट कर्नल प्रसाद पुरोहित एवं प्रज्ञा ठाकूर यह

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

मोहन भागवत, इंद्रेश कुमार को मारनेवाले थे, तो उन्हें कैदख़ाने से बाहर छोड़ने के बाद उसका विरोध आरएसएस या भैयाजी जोशी ने फिर से क्यों नहीं किया? प्रधानमन्त्री नरेंद्र मोदी को दुबारा चिट्ठी क्यों नहीं लिखी? २००९ के चुनाव में प्रज्ञा ठाकूर को भाजपने तिकिट दी तब आरएसएस ने उसको प्रतिरोध क्यों नहीं किया? प्रज्ञा ठाकूर तथा अन्य सभी आतंकवादी को भाजपा, आरएसएस महान देशभक्त क्यों मान रहे है? उलटे बिच के काल में दक्खन भारत में संघ के लोग बम विस्फोट के साथ पकड़े गये ऐसी ख़बरें क्यों छपी थी क्योंकि वहाँ पर भाजपा की सरकार नहीं थी इसलिए आरएसएस भाजपा के लोग एएसआय के साथ जुड़े है और ख़बरें बनाकर जानकारी देते है यह समाचार भी आया था। खास तौर पर वे तमाम लोग ब्राह्मण थे। बम विस्फोट में ब्राह्मण मण्डली का ही हाथ था यह विशेष! बिच के काल में ठाणे में शस्त्र का भण्डार बरामद हुआ वह इन्सान भी ब्राह्मण ही था!

लेफ्टनंट कर्नल प्रसाद पुरोहित आखिर कौन है यह बात एक अंग्रेजी अख़बार 'इंडियन एक्सप्रेस' ने अगस्त २०१७ को दो दिनों तक समाचार देकर जाहिर की। किन्तु यही ख़बर भारत के किसी भी हिन्दी, मराठी या अन्य वृत्तवाहिनी ने प्रसारित नहीं की। पुरोहित का आरएसएस का असली आतंकवादी चेहरा बतानेवाली वह ख़बर हिन्दी में अनुवाद करके उसे जैसे के वैसे प्रस्तुत कर रहा हूँ ताकि नकली राष्ट्रवादी का पर्दाफाश हो सके।

पहली ख़बर :-दि. २४ अगस्त, २०१७ ''आर्मी उनकी तरफ से है यह कर्नल पूरोहित ने कहा। आर्मी ने मगर उसकी पोल खोल दी!''

दीप्तिमान तिवारी, नई दिल्ली,

मालेगाँव बम विस्फोट २००८ के प्रमुख अपराधी कर्नल श्रीकांत प्रसाद पुरोहित इन्हें सुप्रिम कोर्ट ने बेल मंजूर करने के बाद नई मुम्बई के तलोजा कारागृह से बाहर निकलते हुये नज़र आ रहे है। कर्मठ हिन्दूत्ववादी संगठन में एक जासूसी करनेवाले अफसर के तौर पर वह उस संगठन में घूस गया था और वैसी जानकारी भी उसने उनके वरिष्ठ अफसर को दी थी इसी बात पर कचहरी में उसकी ज़मानत

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

मंजूर हो गई।

मिल्ट्री मेरी तरफ़ से है ऐसा उसने उस साक्षात्कार में बारबार कहा था किन्तु गुप्तचर विभाग सूचित करने के बाद डायरेक्टर जनरल ऑफ मिल्ट्री इंटेलिजंस ने (डीजीएमआय) जब उनकी तहक़ीकात की तब उनके ध्यान में आया कि, जाँच होगी इसकी ख़बर मिलते ही उसने स्वयं को बम विस्फोट के मामले से दूर रखने का प्रयास किया और महाराष्ट्र एटीएस ने यह साध्वी प्रज्ञासिंग ठाकूर को हिरासत में लेनेवाले है इसका पता लगते ही उसने इसकी गुप्त जानकारी निकालना शुरु कर दिया।

जाँच पड़ताल में यह भी कहा गया है कि, ‘‘संबंधित अफसर बहुत दग़ाबाज है और शस्त्र के गैरकानूनी मामले में उलझा हुआ है और इन मामलों को दबाने का वह काम कर रहा है।’’

जाँच अहवाल में यह भी कहा गया है कि, उसकी पत्नी अपर्णा पुरोहित ने यह कहा है कि, हो सकता है कि, उन्हें इस्लाम के लिए बहुत घृणा है और इसलिए वे मुस्लिम के खिलाफ गतिविधियों में उलझ गये।

२७ जुलै, २०११ को पेश किये गये जाँच अहवाल पर उस वक्त एडीजीए (एमआय) जनरल प्रमुख (बी) मेजर के दस्तख़त है। उस अहवाल में कहा गया है कि, ‘‘इस तरह की गतिविधियों में लेफ्टनंट कर्नल पुरोहित उलझे होने से प्रथम जानकारी उस वक्त के इंटेलिजन्स ब्युरो के डायरेक्टर ने इस वक्त के आर्मी चीफ को २२ अक्तुबर, २००८ को दी थी। उस वक्त पंचमढ़ी के एईसी ट्रेनिंग कॉलेज में अरबी भाषा सिखने के लिए पुरोहित ने अपना नाम दर्ज किया था। जिसमें मालेगाँव बम विस्फोट में ८ लोग मारे गये थे तथा अन्य ८० लोग जख़्मी हो गये थे, वह विस्फोट २९ सितम्बर, २००८ को हुआ था।

किन्तु एमआय के डायरेक्टर जब पुरोहित की तहकीकात करने के लिए पंचमढ़ी पहुँचे तब उनकी मुलाकात की गुत्थी तुरंत सुलझ गई। क्योंकि पुरोहित के पुणे के घर पर एटीएस ने मारे हुये छापे के बारे में तथा साध्वी प्रज्ञासिंग ठाकूर के बम विस्फोट में साँझेदारी के बारे में मीडिया ने रिपोर्टिंग करना शुरु कर दी थी।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

मतलब कुछ निर्धारित मामलों में अपनी तहक़ीकात होगी यह पुरोहित की समझ में आ चुका था। इसलिए बम विस्फोट में शामिल लोगों के साथ अपना नाम ना जोड़ सके लिहाजा उन्होंने अपने करीबी लोगों को मोबाईल बंद करने को तथा फर्जी नाम का इस्तेमाल करने के लिए कहा।'' ऐसा अहवाल में कहा गया है।

आगे अहवाल में कहा है कि, ''एटीएस की ओर से साध्वी को गिरफ़्तार करने की पुष्टि उनके दूतों से होते ही उन्होंने एससीएलयू कंपनी का आयओ (देवलाली) इन्हें फोन करके इसकी जानकारी दी और साध्वी प्रज्ञासिंग ठाकूर का ही मालेगाँव बम विस्फोट मामले में हाथ है यह अहवाल जबलपुर के सीसीएलयू टिम को लिखने के लिए कहा।''

अहवाल में यह भी कहा है कि, ''जाँच के दौरान उनका बर्ताव बेहूदा था और लगातार नदारद रहना, बेहद धर्मांध फितरत रखना और पंचमढ़ी में स्थायिक हुये रिटायर्ड एईसी अफसर से सेमी आटो कारबाइन खरीदना इस तरह के मामले जाँच के दौरान खुल गये है।''

''तहक़ीकात करनेवाले अफसर ने जब उनकी पत्नी से मुलाकात की तब उन्हें बेहद ताज्जुब लगा और उसने उनपर इल्जाम लगाया कि, धार्मिक गतिविधियों से दूर रहने का कहनेपर भी उन्होंने उसकी एक बात ना मानी, आगे उसने यह भी कहा कि, उन्हें इस्लाम के प्रति बेहद घृणा है और इसलिए उनके खिलाफ गतिविधियों में वे हमेंशा लिप्त रहते होंगे।'' ऐसा अहवाल में कहा गया है।

जाँच में आगे यह भी उजागर हुआ कि, पुरोहित के पास अनोखा ग्रंथालय था। जिसमें शिवाजी, अरबी भाषा एवं छोटे बच्चों पर लिखी हुई किताबें थी, ''मुस्लिम दृष्टिकोन में एक मराठी लेखक ने लिखी हुई किताब का उसने ख़ास करके जिक्र किया है। हिन्दू महासभा की (सावरकर गुट) एक किताब उसके घर में थी। एक बन्द पड़े हुये ग्रंथालय से उसने शिवाजी की किताब प्राप्त की यह बताने के लिए उन्हें बहुत अभिमान लगता है। एक पूरानी तलवार भी उनके घर में है। जो पेशवेकालीन मराठा सैनिक की है ऐसा उनका कहना है।'' यह अहवाल में कहा गया है।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

अहवाल में कहा है कि, ''पुरोहित के पास एक एसयुव्ही गाडी तथा ६ फोन थे।'' ७ अक्तुबर से २४ अक्तुबर इस काल में उन्होंने इन मोबाईल फोन का इस्तेमाल अपने साथीदारों को फोन कॉल तथा एसएमएस के जरिये सूचना देने के लिए किया था। उसके करीबी साथियों का काम होने के बाद उपर्युक्त मोबाईल बंद करके दूसरा नया सिम कार्ड लेने के लिए उनसे कहा गया था ऐसा अहवाल में कहा है। अहवाल में यह भी कहा है कि, पुरोहित को जब पुछा गया कि, क्या उनका अभिनव भारत के अपराधी रमेश उपाध्याय और भोसला मिल्ट्री अकॅडेमी से ताल्लुक हैं? इसपर वो भड़क गया। अहवाल में यह भी कहा है कि, बम विस्फोट के मामले में मात्र वह कितनी हद तक लिप्त है इसका उसने जरा भी पता नहीं चलने दिया।''

दुसरी ख़बर : इंडियन एक्सप्रेस– दि.२६ अगस्त, २०१७:–

शस्त्रास्त्र के गैरकानूनी गतिविधियों में पुरोहित अपराधी है यह गुत्थी आर्मी की तहक़ीकात में खुल गई।

दीप्तिमान तिवारी/नई दिल्ली :

मालेगाँव बम विस्फोट २००८ के अपराधी लेफ्टनंट कर्नल प्रसाद पुरोहित को सुप्रिम कोर्ट ने सोमवार जमानत मंजूर की। दो दिनों बाद लेने के लिए आई हुई आर्मी के साथ पुरोहित ने नई मुम्बई का तलोजा कारागर को छोड़ दिया। आर्मी की वरदी पहनने के लिए वे फिर से उत्तेजित है ऐसा उसने कहा। किन्तु डायरेक्टर जनरल ऑफ मिल्ट्री इंटेलिजन्स के (डीजीएमआय) अहवाल में उसका क्रियाकलाप 'आर्मी अफसर बनने के लिए अवरोधक' है यह टिप्पणी होने की वजह से फिर से आर्मी अफसर बनने के लिए यह अहवाल उनकी राह में रुकावट पैदा कर सकता है।

पुरोहित का नाम बम विस्फोट मामले में आने के बाद तुरंत शुरु हुई डीजीएमआय की तहक़ीकात अहवाल २७ जुलै, २०११ को पेश किया गया। इस अहवाल में यह स्पष्ट किया कि, पुरोहित यह केवल कर्मठ हिन्दूत्ववादी के साथ मिला हुआ ही नहीं बल्कि मालेगाँव बम विस्फोट में अपराधी होने और सेना के

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

शस्त्रास्त्र के गैरकानूनी सौदे तथा कारोबार में वह अपराधी था यह उपर्युक्त अहवाल में कहा गया है। इस अहवाल में यह भी कहा गया है कि, ''आर्थिक लाभ के लिए शस्त्रों का सौदा तथा कारोबार में पुरोहित लिप्त था।'' उसमें ऐसा भी कहा गया है कि, शुरुआत में उसके पुणे के आयुध विक्रेता से ताल्लुकात थे। किन्तु उसके बाद उसने राकेश धावडे के साथ कारोबार शुरु किया। (राकेश धावडे यह मालेगाँव मामले में अपराधी है।) डीजीएमआय के मुताबिक गैरकानूनी शस्त्रास्त्र तथा हथियार धावडे को आसानी से मिलते थे।

लेफ्टनंट कर्नल पुरोहित को हथियार आसानी के साथ प्राप्त होने से हिंसक कारवाई करने के लिए उत्सुक गुट के प्रमुख सदस्यों में पुरोहित की अहमियत बढ़ गई ऐसा अहवाल में कहा है। ''शस्त्रास्त्र की लेन-देन में पुरोहित शामिल'' इस शीर्षक तले अहवाल में ऐसा भी कहा गया है कि, ''०१ मई, २००५ को, पुरोहित ने उसका एनपीएस ७.६५ एमएम पिस्तुल पुणे के आर्म्स डिलर को बेचा। उपर्युक्त हथियार की बिक्री गैरकानूनी है। उसी दिन उसने .३२ एमएम एनपी बोअर रिवाल्वर यह हथियार अंबरनाथ की मशीन टाईप प्रोप्रो टाईप फॅक्ट्री में से प्राप्त की। वेपन लायसन्स के रजिस्टर में उपरोक्त मामलें दर्ज हुये है। भरोसा जितकर तथा आर्थिक लाभ देकर उपर्युक्त अफसर ने दोनों सरोकार किये।

अहवाल में कूल पाँच लेन-देन का जिक्र है। इसी तरह की लेन-देन एक सेवानिवृत्त लेफ्टनंट कर्नल अफसर ने दिसम्बर २००६ से जनवरी २००७ के दौरान उसका .३२ एमएम पिस्तौल पुणे में बिक्री के लिए भेजकर किया। वह हथियार (अब लेफ्टनंट कर्नल) पी.एस. पुरोहित इन्हें देवलाली के मनिपुर से स्पेशल कुरिअर ने भेजा गया था। उपर्युक्त औजार पुणे के आर्म्स डिलर को ३५,०००/- रुपये में गैरकानूनी ढंग से बेचा गया।

तहक़ीकात में यह भी पता चला कि, पुरोहित के पास आर्म्स डिलर से खरीदा गया .३२ वेबले अँड स्कॉट रिवाल्वर भी मौजूद है। अगस्त २००७ में पुरोहित ने .४५ रिवाल्वर देवलाली में पोस्टिंग हुये कर्नल से प्राप्त की और वह धावडे को ३०,०००/-रुपये में बेच दी। ''प्रथम अहवाल के मुताबिक लेफ्टनंट कर्नल प्रसाद पुरोहित यह औजारों के गैरकानूनी लेन-देन में लिप्त है।'' ऐसा

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

अहवाल में कहा गया है।

अहवाल में यह भी कहा गया है कि, ''धावडे ने पुरोहित की ओर से ९ एमएम के सात रिवाल्वर प्राप्त किये जो पुरोहित ने देवलाली के आर्म्स युनिट से लिये थे।'' इन तमाम मामलों में पुरोहित ने जाँच में कबूल किया है ऐसा भी अहवाल में कहा गया है। उसने धावडे से ९ एमएम के पिस्तौल भी ५०,०००/– रुपये में खरीद लिया था। अलोक नाम के आरएसएस नेता को मारने के लिए ही यह हथियार उसने प्राप्त किया था। ऐसा अहवाल में कहा है। पुरोहित ने अभिनव भारत के अटल गुट को समझा दिया था कि ''उपर्युक्त आरएसएस का नेता आयएएस का एजंट था।'' ''लेफ्टनंट कर्नल पुरोहित ने और औजार खरीदने के लिए अजय राहिरकर को (अभिनव भारत) ३.५ लाख रुपये देने को कहा था।'' यह अहवाल में कहा है। अहवाल में पुरोहित पर यह भी इल्जाम लगाये गये है कि, ''ग्रेनेड की खरेदी के लिए पुरोहित को पैसे मिल गये थे, और झूठे मामले में कई हितचिंतक को आर्म्स लायसन्स प्राप्त करने में उसकी सहायता की थी।''

उपरोक्त दोनों ख़बरें मिल्ट्री के रिपोर्ट पर निर्धारित है और उसकी जानकारी बहुत संजीदा है। पुरोहित संघ का ही आदमी है। उसके पकड़े जाने से आरएसएस की असली आतंकवादी पहचान दुनिया के सामने उजागर हो गई थी। इसलिए संघ के भैयाजी जोशी ने मनमोहन सिंह को ख़त लिखकर संघ का पुरोहित से कोई ताल्लुक नहीं अपितु वह तो संघ प्रमुख भागवत, इंद्रेश कुमार की हत्या करने की साज़िश कर रहा था यह बोलकर अपनी गिरेबान को बचा लिया। २०१४ के ईव्हीएम घोटाला करके उन्होंने पुरोहित को, प्रज्ञा ठाकूर को रिहा करने में सहायता की। प्रज्ञा ठाकूर को २०१९ के चुनाव में चुनकर लाया गया! इससे ब्राह्मण कितने ढोंगी, षड्यंत्रकारी होते है यह बात उजागर हो गई। किन्तु एक बात सत्य है कि, सबूतों के साथ पकड़े गये ब्राह्मणी आतंकवादी कब के फांसी पर लटक जाने चाहिये थे। किन्तु वे कांग्रेस की मेहेरबानी से जिन्दा रहे!

कर्नाटक के एक कार्यक्रम के बहाने अरुण कुमार इस ओबीसी नेता से मुलाकात हो गई। उसकी पहचान आरएसएस में १४ सालों से थे इस तरह करवाई गई। उनके साथ उनके आरएसएस के जीवन के बारे में बातचीत की। बातचीत के

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

दौरान उन्होंने यह कबूल किया की, आरएसएस यह हिंसक एवं आतंकवादी ब्राह्मणों का संगठन है। संघ में वरिष्ठ अगुआई केवल ब्राह्मण वर्ग की ही होती है। ब्राह्मण नेतृत्व की जो बैठक होती है उसमें गैरब्राह्मण संघ के कार्यकर्ता को आना मना होता है। अरुण कुमार ने अंत में कहा कि, आरएसएस में काम करने से पछतावा हो रहा है और अब बॅकलॉग भरने का काम कर रहा हूँ। अब यहाँ से अगली जिन्दगी का मक़सद केवल ओबीसी को आरएसएस से बचाना यहीं है।

लोकसत्ता में दि. ८ अक्तुबर, २०१९ को एक सनसनीखेज ख़बर छपकर आई जिसका शीर्षक था – ''मोहन भागवत के नेतृत्व में मैंने बम विस्फोट किया!'' ख़बर में आगे इसका खुलासा भी किया गया कि ''राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ यह दहशतवादी संगठन हैं संघ का तत्कालीन सरकार्यवाह सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत इनके नेतृत्व में मैं कई बम विस्फोट में शामिल था। संघ ने आज तक कई अतिरेकी को जनम दिया है। देशभक्ति के नाम पर और संघ की हिदायत पर मेरे हाथों कई लोग बली पर चढ़ गये इस तरह सनसनीखेज खुलासा आंध्रप्रदेश के संघ के माजी प्रचारक पी.विजय शंकर रेड्डी इन्होंने आज सोमवार को पत्रकार परिषद में किया।'' रेड्डी इन्होंने 'देशभक्त के नाम पर आरएसएस के काले कारनामे' यह किताब प्रसिद्ध की। आगे उस ख़बर में और सनसनीखेज सत्य उजागर किया – ''संघ का काम बर्दाश्त के बाहर हो गया तो किसी ने ज़हर पिकर तो किसी ने फांसी लगाकर ख़ुदकुशी की। इस तरह निराश हुये प्रचारक मेरे सम्पर्क में है। इन लोगों का मैं जल्द ही दिल्ली के संघ के बड़े रहनुमा के नामों का खुलासा कर रहा हूँ ऐसा विजय शंकर इन्होंने बताया। इस सन्दर्भ में मैंने सरसंघचालक से आमने सामने बहस करने के लिए भी तैयार हूँ आगे विजय शंकर इन्होंने स्पष्ट किया।''

खास तौर पर यह ख़बर दसरा के दिन ही छपकर आ गई। नागपुर में मोहन भागवत ने भाषण किया किन्तु रेड्डी इन्होंने जो उनपर इल्जाम लगाया उस बारे में एक शब्द भी वे नहीं बोले। याने भागवत ने वह इल्जाम मान्य किये यही उसका अर्थ है। नागपुर के भाषण में भागवत ने मॉब लिचिंग यह अपनी संस्कृति नहीं ऐसा वक्तव्य दिया। किन्तु देशभर में ३०० से अधिक मॉब लिचिंग को

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

भाजपा एवं आरएसएस से जुड़े लोग सीधे शामिल थे। ग्रियर्सन इन्होंने कहा ही है कि, 'ब्राह्मण चेहरे से भोला-भाला नजर आता है मगर वह ह्रदय से कसाई होता है। एक रोटी के टुकडे के लिए वह अपने भगवान को बेच देता है।' ब्राह्मण यह ब्राह्मणों के वर्चस्व के लिए किसी भी हद तक गिर सकता है।

ब्राह्मणों का 'हिन्दू राष्ट्रवाद' यह झूठा राष्ट्रवाद है। हिन्दू यह संकल्पना मृगजल है। गोलवलकर को एक बार पत्रकारों ने सवाल किया कि, ''स्वामी दयानंदजी ने तो कहा है कि 'हिन्दू' नाम विदेशीयों द्वारा दिया हुआ है जिसका अर्थ है 'डाकू' इसका क्या?'' इसपर गोलवलकर हक्का-बक्का हो गये किन्तु चालाकी से जवाब देकर विषय बदल दिया - ''मैं इतिहासतज्ञ होने का दाँवा तो नहीं करता, किंतु 'हिंदू' शब्द को हम केवल इसलिए स्वीकार करते है कि प्रचलित है तथा लोगों ने उसे अपना भी लिया है।''[२४] हिन्दू यह शब्द १२ वी सदी में भारत आया। हिन्दू यह पर्शियन शब्द है जिसका अर्थ काला-चोर, डाकू, गुलाम यह होता है। गोलवलकर पत्रकारों को जवाब नहीं दे सके और अन्त में अरुण शौरी ने २००६ में लिखी हुई 'उलेमा, फतवे और उनकी दुनिया' इस किताब में यह बात कबूल की कि हिन्दू यह एक गाली है!

'हिंदू राष्ट्रवाद' यह छली तथा मिथ्या है। उसके जरिये ब्राह्मणों का वर्चस्व स्थापित किया गया है। वैदिक धर्म यह राष्ट्र विरोधी है। विषमता, जातिव्यवस्था, वंशानुगत गुलामी यह जो ब्राह्मणों की विचारधारा है वह राष्ट्र एवं राष्ट्रवाद के अनुकूल नहीं। वह केवल धोका है। उसने अल्पसंख्य ब्राह्मण को बहुसंख्य बनने में सहायता होती है बस इतना ही!

इस तमाम विवेचन के बाद मेरे कुछ निष्कर्ष :-

१) राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ नाम की संस्था कांग्रेस ने भविष्य के लक्ष्य को पूरा करने के लिए स्थापन की। डॉ. केशव बळीराम हेडगेवार यह विदर्भ कांग्रेस के जनरल सेक्रेटरी थे। उन्होंने तथा मुंजे ने योजना बनाकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की। नॅशनल कांग्रेस में भी 'राष्ट्रीय महासभा' यह शब्द है। कांग्रेस यह संस्था अंग्रेज ह्यूम एवं पूणे-बंगाल के ब्राह्मणों ने अंग्रजों के पैर धोने के लिए

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

स्थापन की थी। १९१८ के बाद जो राजनीतिक तब्दीली भारत में हो रही थी और गैरब्राह्मण लोग विधिमण्डल में अपने स्वतन्त्र प्रतिनिधित्व की माँग कर रहे थे यह देखकर प्रतिक्रिया के तौर पर हिन्दू महासभा, कम्युनिष्ट दल के साथ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की गई। आरएसएस यह संगठन १९३७ तक एवं उनके बाद भी खुलेआम कांग्रेस के साथ वफादार रहा और आज भी उनके ताल्लुकात गहरे प्रेम के ही है। १९२० को सिंधु सभ्यता का उत्खनन शुरु हुआ तथा तमाम दुनिया में महान सभ्यता की पूरे जोरों पर चर्चा शुरु हो गई उसकी प्रतिक्रिया के तौर पर १९२५ को आरएसएस की स्थापना एक मक़सद के लिए की गई। क्योंकि सिंधु सभ्यता के बहाने यह चर्चा होने लगी थी कि, ब्राह्मण विदेशी है एवं उन्होंने सिंधु सभ्यता पर आक्रमण किया और उसे नष्ट कर दिया। यह चर्चा यदि इसी तरह जारी रहती तो विदेशी ब्राह्मणों के तथाकथित आज़ादी के आन्दोलन को नकेल कस गई होती। असली मूलनिवासी राष्ट्रवाद का उदय होता तथा भारत विदेशी ब्राह्मणों की गुलामी से कब का आज़ाद हो चुका होता। ब्राह्मणों ने भविष्य का लक्ष्य साधकर सिंधु सभ्यता के वंशजों के खिलाफ हिन्दू राष्ट्रवाद बढ़ाने के लिए, भड़काने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की निर्मिती की गई। भारत आज़ाद होने के पहले सिंधु सभ्यता का हिस्सा भारत से तोड़ा गया। इस तथाकथित हिन्दू राष्ट्रवाद के जज्बात यह से किया गया। इसके पिछे एक ही मक़सद यह था कि, मूलनिवासी भारतीयों को उनकी महान सिंधु सभ्यता से तोड़ा जाये याने प्रेरणा नष्ट की जाये। दूसरा मक़सद याने अल्पसंख्य विदेशी ब्राह्मणों का वर्चस्व बरकरार रहे। इन दोनों ही मक़सदों में ब्राह्मणों को कामयाबी मिली थी।

२) विदेशी ब्राह्मणों ने २००१ को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित हुये डॉ. मायकेल बामशाद इनके डीएनए रिपोर्ट से गहरा सदमा लगा। उसकी पहले नंबर की प्रतिक्रिया थी, टाईम्स ऑफ इंडिया के अलावा उस रिपोर्ट के बारे में भारत की ब्राह्मण-बनिया मीडिया ने उसकी मामूली दखल तक नहीं ली। तब ब्राह्मण विदेशी है यह विज्ञान ने सिद्ध किया इस तरह की जानकारी की जनता को भनक भी लगने नहीं दी। यह एक सबसे बड़ी विदेशी ब्राह्मणों की प्रतिक्रिया थी! विदेशी ब्राह्मणों को अपना विदेशीपन छिपाने के लिए आज तक 'हिन्दू' शब्द का

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

सहारा लेना पड़ा था। ब्राह्मण यह आर्य ही नहीं तो वे विदेशी स्टेप युरेशियन है इसका जाहिर खुलासा उस रिपोर्ट ने किया था। इतना ही नहीं बल्कि ब्राह्मण विदेशी होने से उन्होंने जाति व्यवस्था की निर्मिती की है यह डीएनए विज्ञान ने प्रमाण के साथ सिद्ध किया है। लिहाजा विदेशी ब्राह्मणों को इस मुद्दे को दबाना ज्यादा जरूरी लगा। यह एक सबसे बड़ी प्रतिक्रिया थी।

३) तीसरी प्रतिक्रिया यह है कि, सन २००१ पश्चात् तमाम देशभर आरएएस ने अभिनव भारत के जरिये बम विस्फोट करवाऐं। डीएनए अनुसंधान से ब्राह्मण विदेशी सिद्ध हो गये यह देखकर ब्राह्मणों ने बम विस्फोट करवाये। जिसके लिए बेकसूर मुस्लिम युवाओं को हिरासत में लिया गया और उसीसे भारत में एस.सी., एस.टी., ओबीसी इन्हें हिन्दू बनाने का एक सर्वसमावेशी षड्यंत्र शुरु हो गया। मालेगाँव बम विस्फोट की तहक़ीकात के बाद भी उन्होंने उनके हिंसक कार्यकलापों पर लगाम नहीं लगाई। नांदेड में तो आरएसएस के कार्यकर्ता के घर में ही बम विस्फोट हो गया। उसकी वजह वह बम विस्फोट दूसरे दिन करना था किन्तु टाईमर के तन्त्र में PM के बजाए AM गलती से हो गया और विस्फोट हो गया। कांग्रेस ने उसकी गहराई से जाँच करने के आदेश नहीं दिये। संघ के दृष्कृत्य को कांग्रेस का पोषण था ही। फरीदाबाद की बैठक में लेफ्टनंट कर्नल प्रसाद पुरोहित ने यह कबूल किया कि, ब्राह्मण यह भारत के ना होने से वे पराये, विदेशी होने से राष्ट्र तथा संविधान की ख़िलाफ़त करने के लिए बम विस्फोट करते है। ब्राह्मण यह विदेशी है इसे २००१ को डीएनए ने प्रमाणित किया था, उसकी प्रतिक्रिया के तौर पर पूरे देशभर में किये गये बम विस्फोट है यह बात प्रमाण के साथ सिद्ध होती है। कार्यकारण भाव के सिद्धान्त के मुताबिक यह मामला सत्य होता है।

४) चौथी प्रतिक्रिया यानी वैज्ञानिक अनुसंधान ने ब्राह्मण विदेशी सिद्ध हो गये यह देखकर २००४ से २००९ को ईव्हीएम घोटाला करने के लिए विदेशी ब्राह्मणों को जल्दी हो गई। ईव्हीएम घोटाला यह डीएनए रिपोर्ट ने ब्राह्मणों को विदेशी सिद्ध किया यह देखकर एक बड़ी प्रतिक्रिया है। ईव्हीएम घोटाले के बारे में कांग्रेस एवं भाजपा-आरएसएस का जो समझौता हुआ उसके सबूत इस डीएनए

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

रिपोर्ट के रहस्य में है। ८ अक्तुबर, २०१३ को सुब्रमण्यम स्वामी के मुक़दमे पर कोर्ट यह बात मान्य करता है कि, ईव्हीएम में घोटाला किया जा सकता है। फिर भी ईव्हीएम मशीन के अलावा चुनाव बैलेट बॉक्स के द्वारा क्यों ना लिया जाये ऐसी गुहार सुब्रमण्यम स्वामी तथा कोर्ट ने भी क्यों नहीं लगाई? २०१४ एवं २०१९ के चुनाव कांग्रेस के सहकार्य से ही भाजपाने ईव्हीएम घोटाला करके जीती थी। ईव्हीएम घोटाले की बुनियाद ब्राह्मणों के विदेशीपन में है। अपना वर्चस्व बरकरार रखने के लिए ब्राह्मणों को सत्ता की लालसा होती है। विदेशी ब्राह्मणों ने ईव्हीएम घोटाला करके अनियन्त्रित सत्ता हांसिल कर ली और उसके भयंकर दुष्परिणाम पूरा देश भुगत रहा हैं। हाल ही में भारत भूखबली की संख्या में ११७ देशों में से १०२ रे नंबर पर याने अव्वल आ चुका है। पाकिस्तान, बांग्लादेश, चीन, श्रीलंका यह देश भारत से उन्नत साबित हो गये। उसकी वजह उन देशों पर उनके ही प्रजा का राज्य है किन्तु भारत पर विदेशी ब्राह्मणों का ईव्हीएम में घोटाला करके जबरन हांसिल किया हुआ राज्य है! भारत में वंश भेद होने का मूल कारण ब्राह्मण विदेशी है और विदेशी ब्राह्मणों के हाथ में शासन-सत्ता है।

५) राखीगढ़ी के कंकालों से प्राप्त ४७०० सालों पहले डीएनए यह ब्राह्मणों से मेल नहीं करते तो वे द्रविडों के साथ मेल करते है। क्योंकि ४७०० सालों में युरेशियन स्टेप (ब्राह्मण) भारत में आने के ही थे। फिर विदेशी ब्राह्मणों को राखीगढ़ी रिपोर्ट के बारे में मिथ्या प्रचार करने की ब्राह्मण-बनिया मीडिया की सहायता से क्यों जरुरत आन पड़ी? तो ११७ वैज्ञानिकों की और एक डीएनए रिपोर्ट का झटका लग गया था। ब्राह्मणों को यूँ ही भारत के मूलनिवासी घोषित करने तक डॉ. वसंत शिंदे समान दलाल व्यक्ति काँटे में फंस गया। स्वार्थ के चलते शिंदे जो जी में आये बकने लगे थे।

इन सारे विवादों से ब्राह्मणों का विदेशीपन एवं उनका मिथ्या राष्ट्रवाद नग्न हो गया। डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने ब्राह्मण को जवाब देते हुये कहा था कि, ‘‘दुष्टों का अंतिम सहारा राष्ट्रवाद होता है।’’ वही दुष्ट अब डीएनए विज्ञान से सबूतों के साथ विदेशीपन के साथ पकड़े गये। विदेशी युरेशियन ब्राह्मणों की झूठे राष्ट्रवाद को नग्न करने के बाद अब भारत में असली एवं सत्य एक ही राष्ट्रवाद

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

शेष रहता है वह यानी मूलनिवासी राष्ट्रवाद!

मूलनिवासी राष्ट्रवाद :-

बंजारा समाज हजारों सालों से भटक रहा है। उनकी महिलाओं का लिबास सिंधु सभ्यता की निशानी बयान करता है। गोरमाटी (गोरबोली) भाषा यह भारत में कम से कम १३ राज्यों में एक समान ही बोली जाती है। उनके बेशुमार लोकगीत है जिसमें सिंधु सभ्यता की संस्कृति के अवशेष छुपे हुये हैं। उनमें से एक मिसाल ...

“सिंधू नदीरे पाळेमं, सप्त सिंधू रे राळेमं आर्य दामडिया दामड लगा गेरे मार सेनानायक। आपणई मोवना नगरेम कना,

जाया रे मार सेनानायका।

मोवना नगरेन बाळन बाळन खाक,

करनाकेरे मार सेनानायका।”

मतलब : “सिंधू नदी के किनारे सिंधू नदी के पडोस में विदेशी युरेशिया के ब्राह्मणों ने नाग लोगों की जमापूंजी लेके गए रे सेनानायका। मोहेंजोंदरो या मोहना नगर को नेस्तनाबूत कर दिया रे सेनानायका। हम लोग मोहेंजोदरो और हडप्पा नगर में कब जायेंगे रे मेरे नायका?” इस बंजारा लोकगीत को नज़रअंदाज करना उचित नहीं होगा। इस समाज का बहुजन समाज पर बहुत बड़ा एहसान है क्योंकि यह महान सभ्यता अल्प या अचेत दशा में क्यों ना हो उन्होंने जिन्दा रखी।

योगा यह प्राचीन परम्परा सिंधु सभ्यता में मौजूद थी। आगे चलकर वही परम्परा बौद्ध परम्परा में भी आ गई। सिंधु सभ्यता में जो कुछ प्राचीन प्रतीक बरामद हुये है वे सब की सब बौद्ध धम्म में भी नज़र आती है। स्वस्तिक दोनों ओर नज़र आता है। उसे ही नोबल पथ कहा गया है। चक्र यह धम्मचक्र के रुप में मशहूर है। सम्राट अशोक ने उसे राष्ट्रप्रतीक बनाया वही आगे संविधान ने स्वीकार किया। नागों की परम्परा यह श्रमणों की परम्परा आगे हमें दिखाई देती है। विदेशी ब्राह्मणों ने जब सिंधु सभ्यता पर हमला किया तब उन्होंने उनके मूल ग्रंथों को नष्ट

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

किया एवं वेदों में आज भी ना सुलझनेवाली गुत्थी में कुछ ऐसे शब्द है इसका दाँवा मशहूर इतिहासकार लालमणि जोशी इन्होंने उनके शोधग्रंथ में किया है। वे आगे कहते है कि– ''मोहेंजोदरो और हडप्पा की मूर्ति कला में हमें हिरण, शेर, घोड़े, हाथी, बैल, गेंडा और पवित्र सर्प समान धार्मिक दृष्टि से पूजे जानेवाले प्राणी दिखाई देते है। ऐतिहासिक काल की बौद्धकला और वाङ्मय में भी इन प्राणियों को बहुत तवज्जो दिया गया है। इन प्रागैतिहासिक संस्कृति में पवित्र धार्मिक वृक्ष को याने अश्वत्थ या पिपल वृक्ष को धार्मिक पूज्य वस्तु का स्थान प्राप्त हुआ है। बौद्ध धम्म में वहीं प्रतीकात्मक बोधिवृक्ष बन गया। इससे भी ज्यादा अहम बात यह है कि वहाँ पर ऐसे चार शिल्प दिखाई दिये है कि, जिसमें श्रमण या मुनी विशिष्ट तरीके से बैठकर ध्यान करते हुये दिखते है। इससे वेदपूर्व काल के भारत में योग और योगाचार का अस्तित्व था, यह सिद्ध होता है।''[२५]

हडप्पा मोहेंजोदोरो कालीन प्राचीन नागों की संस्कृति का इतिहास वे बुद्ध की श्रमण परम्परा का इतिहास इनमें कमाल की समानता है। क्योंकि उस सभ्यता का मक़सद मानव का कल्याण करना यही था।

विदेशी युरेशियन ब्राह्मणों के अब तक के तमाम षड्यंत्र का अध्ययन करने के बाद यही राय बनती है कि, वे लोग कभी भी सुधरनेवाले नहीं है। भारत पर विदेशी ब्राह्मणों ने हजारों सालों से सत्ता पर कब्जा करके उनके खिलाफ जिन्होंने जिन्होंने आन्दोलन किया उन सबको उन्होंने हत्या करके खत्म किया और उसके बाद ब्राह्मणीकरण करके खत्म किया। मूलनिवासी बहुजन महापुरुषों ने मूलनिवासी राष्ट्रवाद का जतन संस्कृति के जरिये किया। अब हमें हमारा देश बचाना है तो भारत का कल्याण करना है तो मूलनिवासी राष्ट्रवाद का जतन करना चाहिये उस राष्ट्रवाद का ज्यादा से ज्यादा प्रचार करना चाहिये।

–प्रा. विलास खरात

डायरेक्टर, डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर रिसर्च सेंटर, नवी दिल्ली

****

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

संदर्भ

१) महात्मा फुले समग्र वाड्.मय (आवृत्ति- ५ वी, १९९१) पृ.४९७.

२) उपरोक्त, पृ. ४६१

३) उपरोक्त, पृ. ६०२.
"सारांश, शूद्रादि अतिशूद्रास दासानुदास मानणाऱ्या आर्यभट ब्राह्मण जातीसह त्यांच्या अनुयायांची सुधा माझे शवावर व ततसंबंधी करीत असलेल्या विधीवर सावली सुद्धा पडू देवू नये!" (अर्थ -शूद्रा अतिशूद्र को दास समान माननेवाले आर्य भट ब्राह्मण जाति तथा उनके अनुगामी के भी मेरे शव पर या उससे जुड़ी रिती रिवाज पर भी उनकी परछाई तक ना पड़ने दो!)

४) भटमान्य तिळक बनाम शाहू छत्रपती महाराज : एक ऐतिहासिक संघर्ष लेखक- प्रा. विलास खरात, पृ. २९५.

५) उपरोक्त, पृ. ४६३

६) डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर रायटिंग्ज अँड स्पीचेस-खंड-७, पृ.८०

७) मनुस्मृती- (सन १७९२) -सर विल्यम जोन्स इनके मूल अंग्रेजी अनुवाद का मराठी भाषांतर - अनुवाद व संपादन-प्रा.विलास खरात, पु.श्री.सदार, पृ.३६

८) डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर रायटिंग्ज अँड स्पीचेस खंड-१८, भाग-३, पृ. २५७.

९) उपरोक्त, पृ. ३८०.

१०) इतिहासाचार्य वि.का.राजवाडे समग्र साहित्य, खण्ड- ७ व ८ (संयुक्त), संपादन-डॉ.मु.ब. शहा, पृ.६२.

११) डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर रायटिंग्ज अँड स्पीचेस. खंड-१८, भाग-३, पृ. ५१४-५१५

१२) उपरोक्त, पृ. ५६३.

१३) आर्य लोकांचे मूलस्थान अथवा उत्तर ध्रुवा के करीब आर्यों की बस्ती के बारे में वेदों से प्रमाण।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

लेखक- बा.गं.टिळक, अनुवाद-केशव लक्ष्मण ओगले, (सन १९१०), पृ.१२

१४) उपरोक्त, पृ. ३१६.

१५) The South African Gandhi - Strethcher- Bearer of Empire लेखक-Ashvin Desai, Goolam Vahed पृ.३०.

१६) Letters from father to his daughter by Jawaharlal Nehru पृ.११२-११३

१७) चित्पावन, लेखक- ना.गो.चापेकर. पृ. २९१. (ग्रंथ प्रकाशन-१९३८)

१८) मेरी जीवन यात्रा-लेखक-राहुल सांस्कृत्यायन, पृ.८३.

१९) वोल्गा से गंगा. लेखक-राहुल सांस्कृत्यायन, पृ. ८४.

२०) उपरोक्त, पृ. ९२

२१) उपरोक्त, पृ. ८०

२२) उपरोक्त, पृ. ८५-८६

२३) श्री गुरुजी समग्र साहित्य खंड-७, पृ. ३८.

२४) श्री गुरुजी समग्र साहित्य खंड-९, पृ. ११३.

२५) Brahmanism, Buddhism and Hinduism लेखक- लालमणि जोशी, पृ. ३२.

****

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

अध्याय –८

मूलनिवासी राष्ट्रवाद से ही विश्व का कल्याण होगा!

–डॉ. प्रताप चाटसे

मानवी जीवन यह धरती पर मौजूद कुदरती साधन संपत्ति पर निर्भर है। किन्तु दिक्कत यह है कि यह साधन संपत्ति सीमित है; इसके विपरीत मानवी आबादी दिन–ब–दिन बढ़ती तथा विस्तारित होती है। उसी तरह मानवी उम्मीदों पर भी सीमा नहीं होती है। इसलिए वक्त के साथ मानवी समूहों में प्राकृतिक संसाधनों से संघर्ष निर्माण होता है।

इतिहास देखा जाये तो यही समझ में आता है कि, प्राचीन काल से मानवी समूहों में प्राकृतिक संसाधनों के लिए संघर्ष हुआ है। संक्षेप में कहा जाये तो, मानवी इतिहास और कुछ नहीं हैं बल्कि प्राकृतिक संसाधनों–संपत्ति के लिए दो मानवी समूहों के बिच हुआ संघर्ष का इतिहास है।

प्राकृतिक संसाधनों का इस्तेमाल उचित तरीके से करने के लिए अलग अलग समूह के तथा एक ही प्रदेश के लोग एक ही मक़सद से तथा समान आनुवंशिक सम्बन्ध से इकट्ठे होते है और वहीं से राष्ट्रीयता के साथ ही राष्ट्र का जनम होता है। एक राष्ट्र के तौर पर वे समूह उनके प्रदेश के संसाधनों का अपने कल्याण के लिए दोहन करते है और इसी से स्वयं की तथा तमाम राष्ट्र की उन्नति करते है। किन्तु उन मूलनिवासी समूहों में कुछ विदेशी वंश के समूह शिरकत करते है और झूठे छली राष्ट्रवाद का बुरखा ओढ़कर मूलनिवासी समूहों पर वर्चस्व स्थापित करते है और वक्त के साथ उनका शोषण भी करते है।

छली राष्ट्रवादी समूह यह अल्पसंख्य विदेशी घुसपैठ होते है; इसलिए स्थानिक मूलनिवासी समूहों से वे अलग तथा श्रेष्ठ है यही विकृत भावना उनमें पहले से ही होते हैं, वे विदेशी होने से स्थानिक, मूलनिवासी समूहों से उनका कुछ भी लेना–देना नहीं होता है। मूलनिवासी लोग कितने भी दुःखी, परेशान हो गये फिर भी इन विदेशी घुसपैठों को उनके बारे में जरा भी करुणा या लगाव नहीं होता है। क्योंकि मूलनिवासी समूहों से उनके दिल में बिलकुल रहम नहीं होता है। उलटे

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

वे विदेशी अल्पसंख्य लोग मूलनिवासी लोगों का शोषण करने के लिए आए है इसलिए वे उनका विनाश करने तथा उनकी जिन्दगी में रुकावटें पैदा करने के लिए ही इन विदेशी समूहों को मजा आता है। स्थानिक मूलनिवासी लोगों से वे लगातार श्रेष्ठ रहे यही जज़्बा उनके दिमाग में निरंतर जलता रहता है। और इसी जज्बे से वे विदेशी लोग मूलनिवासी लोगों को लगातार निचे दबाने का प्रयास करते है। मन में द्वेष तथा तुच्छता के उमंग होने से यह विदेशी लोग स्थानिक मूलनिवासी लोगों के साथ कभी भी मिलकर या ईमानदारी से बर्ताव नहीं करते। मूलनिवासी को लगातार निचा दिखाने के लिए वे साम, दाम, दण्ड, भेद इस तमाम षड्यंत्रों का तथा कूटनीति का सहारा लेते है। स्थानिक मूलनिवासी लोगों ने उन्हें कितना भी अपनाया फिर भी वे विदेशी लोग उनसे दुश्मन की तरह ही बर्ताव करते हैं। मूलनिवासी लोगों से अपना अलगपन बरकरार रहें इसलिए वे उनके विदेशी लोगों के लिए अलग भाषा, अलग परम्परा तथा अलग रिती रिवाज अपने समूह के लिए विकसित करते है। मूलनिवासी लोगों के बारे में व उनके मूलनिवासी राष्ट्र के बारे में विदेशी घुसपैठों को बिल्कुल अपनापन ना होने से वक्त आने पर यही लोग विदेशी आक्रमकों के साथ हाथ मिलाकर मूलनिवासी राष्ट्र पर अपना वर्चस्व बरकरार करने की कोशिश करते है।

छली राष्ट्रवादी बने हुये विदेशी समूहों के इस देश विरोधी कृत्य से एवं स्वार्थी प्रवृत्ति की वजह से पूरे देश में आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक, राजनीतिक इन तमाम क्षेत्रों में असमानता निर्माण होता है, विदेशी समूहों की विकृत चाह एवं बर्ताव मूलनिवासी लोगों के भी ध्यान में आती है और वक्त के साथ शोषक विदेशी अल्पसंख्य समूह विरुद्ध पीड़ित बहुसंख्य समूह इस तरह संघर्ष होता है। शोषक विदेशी के शोषण से 'मूलनिवासी राष्ट्रवाद' का उदय होता है।

शोषक विदेशी गिनती में अल्प है, जिससे बेशुमार मूलनिवासी के लिए उनके मन में लगातार भय का माहौल बना रहता है। मूलनिवासी लोगों में उनकी एकजूटता ना हो सके और वे उनके खिलाफ पूरी शक्ति से इकट्ठे ना हो सके इसलिए विदेशी शोषक समूह षड्यंत्रों का सहारा लेकर मूलनिवासी में जाति एवं धर्म के नाम पर आपसी दूरीयाँ निर्माण करते हैं और स्वयं को महफूज कर लेते है।

विदेशी समूह द्वारा निर्मित मूलनिवासी के बिच अंतरकलह तमाम

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

मूलनिवासी राष्ट्र को ही परेशान करता है, जिससे इस राष्ट्र के लोग ख़ुशहाल, समृद्ध और संतुष्ट जिन्दगी बसर नहीं कर सकते। जिस तरह कैन्सर पीड़ित व्यक्ति को खा लेता है, उसी तरह यह विदेशी समूह मूलनिवासी राष्ट्र को ध्वस्त करते हैं। जिससे महामारी, भूखमरी, ग़रीबी ऐसी ही हजारों दिक्कतों से मूलनिवासी राष्ट्र झूलसकर कमजोर बनता है।

शोषण करनेवाले विदेशी समूहों को स्थानिक मूलनिवासी समूहों ने उनके मूलनिवासी राष्ट्र से तड़ीपार किया हैं और स्वयं का मूलनिवासी राज्य स्थापित करके इन मूलनिवासी लोगों को स्वयं को एवं अपने देश को समृद्ध बनाया है। किन्तु भारत समान दुनिया के कुछ तीसरे देशों में (Third World Countries) अल्पसंख्य विदेशी समूह आज भी जमकर बैठे हुये हैं। मूलनिवासी राष्ट्र की तमाम संसाधन, संपत्ति तथा शक्ति केंद्र पर इन विदेशीयों ने कब्जा जमाया है और उनके कानून का झूठा तथा छली राष्ट्रवाद विकसित करके उन्होंने मूलनिवासी लोगों को भी उसमें पिरो दिया है। विदेशी घुसपैठ के इन छली राष्ट्रवाद का मक़सद केवल विदेशी समूहों का कल्याण करना एवं स्थानिक मूलनिवासीयों की जिन्दगी उजाड़ना है।

मूलनिवासी लोग राष्ट्रीय स्तर पर विचार ना करें और वे लगातार उनके रोजमर्रा के जिन्दगी में उलझकर रहे इसलिए मूलनिवासी राष्ट्रपर शासन करनेवाले विदेशी समूह जानबूझकर आम इन्सानों के जिवन में महंगाई, दफ्तरों में पेचीदगी इस तरह की दिक्कतें लगातार निर्माण करते रहते है। मूलनिवासी के मूल मुद्दों से ध्यान भटकाने के लिए उँचे ओहदे पर विराजमान विदेशी आक्रमक समूह मीडिया के जरिये मूलनिवासी के इश्यू को नॉन इश्यू बनाते है और बिना वजह के मसलों को (नॉन इश्यू को) राष्ट्रीय चर्चा का स्वरुप देते है। उसी तरह मूलनिवासी जनता अलग अलग कृत्रिम रुकावटों से अपने नीजि स्वार्थ को हल करने में मसरूफ रहते है और उनके साथ राष्ट्रीय स्तर पर क्या दग़ाबाजी हो रही है इसका उन्हें जरा भी एहसास नहीं होता है।

मूलनिवासी लोगों को उनके राष्ट्र के बारे में प्रेम तथा अपनेपन का जज़्बा होना बहुत जरूरी है। मूलनिवासी समूहों में जब तक मूलनिवासी राष्ट्रवाद का जज़्बा विकसित नहीं होगा, तब तक उन्हें उनके साथ विदेशी शासक जो

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

दग़ाबाजी कर रहे है वह दग़ाबाजी समझ में नहीं आयेगी। उसी तरह मूलनिवासी राष्ट्रवाद के जज़्बे के अलावा उनके मन में अन्य मूलनिवासी समूहों के बारे में सहकार्य तथा अपनेपन का जज़्बा निर्माण नहीं होगा। हम सब इस देश के मूलनिवासी लोग है और एक ही वंश के है एवं हमपर शासन करनेवाले विदेशी अल्पसंख्य घुसपैठ सैंकड़ो सालों से हमारा शोषण कर रहे है, यह विचार एवं यह जज़्बा मूलनिवासी जनता में केवल 'मूलनिवासी राष्ट्रवाद' के जरिये ही निर्माण हो सकता है।

मूलनिवासी राष्ट्र पर मूलनिवासी लोगों का शासन होने के बजाए विदेशी घुसपैठ समूहों का शासन होना यहीं मूलनिवासी के बेशुमार दिक्कतों का मूल कारण है यह सत्य मूलनिवासी राष्ट्रवाद की संकल्पना से ही मूलनिवासी जनता को समझ में आयेगा। संक्षेप में कहा जाए तो, विदेशी समूह के वर्चस्व से मूलनिवासी लोगों को बाहर निकालने के लिए और उनमें मूलनिवासी बंधुत्व, आज़ादी तथा स्वाभिमान जागृत करने के लिए 'मूलनिवासी राष्ट्रवाद' यह संकल्पना बहुत अनमोल है।

''मूलनिवासी राष्ट्रवाद का स्वरुप मूलनिवासी राष्ट्रवाद का जाहिरनामा के जरिये निम्नांकित प्रसिद्ध किया जा रहा है।

१) 'मूलनिवासी राष्ट्र' यानी समान आनुवंशिकता, समान आचार एवं समान विचार रखनेवाले जनसमूह का प्रदेश।

२) 'मूलनिवासी राष्ट्रवाद' यानी मूलनिवासी समूहों में उनके राष्ट्र के प्रति सेल्फ रिस्पेक्ट, सेल्फ रिस्पॉन्सबिलिटी एवं सेल्फ आयडेंटिटी की पहचान निर्माण करनेवाला विचार तथा आचार है।

३) इसके लिए मूलनिवासी राष्ट्रवाद के जाहिरनामा के जरिये यह घोषित किया जाता है कि, एक ही आनुवंशिकता से एवं एक ही मक़सद से इकट्ठा होने वाले समूह यह 'मूलनिवासी राष्ट्र' बनाते है।

उनसे वांशिकता से एवं मक़सद से भिन्न अल्पसंख्य समूह 'विदेशी राष्ट्र' के तौर पर गिना जाता है।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

४) भरण पोषण के लिए एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र में स्थानान्तरित होनेवाले समूह यह उन राष्ट्र की दृष्टि से विदेशी ही है, लिहाजा मूलनिवासी राष्ट्रवाद के जाहिरनामा के मुताबिक उन्हें अन्य मूलनिवासी राष्ट्र में सेवा करने का मौका मिलेगा किन्तु उन्हें वहाँ पर शासन करने का हक बिलकुल नहीं मिलेगा।

५) स्थानान्तरित समूह की 'विदेशी' इस नाम पर अलग से गिनती होगी और राष्ट्रीय स्तर पर उनकी अलग सूची होगी।

६) मूलनिवासी राष्ट्र के समूह उन्हें उनके संवैधानिक तरीके के मुताबिक वे अपना राष्ट्रीय सरकार बनायेंगे और उनके ही राष्ट्र का वे कल्याण करेंगे। सत्ता में शामिल हुये मूलनिवासी सत्ताधारी यदि मूलनिवासी राष्ट्र का उद्धार करने में अक्षम हुये तो उन्हें निचे खिंचकर उनके स्थान पर दूसरे मूलनिवसी नेतृत्व को सत्ताधारी बनाया जायेगा। मूलनिवासी सत्ताधारी में बदलाव करने का हक केवल मूलनिवासी जनता को ही होगा।

७) अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर मूलनिवासीवाद स्थापित करने के लिए (Nativists International Co-operative Group (NICO Group) तैयार किया जायेगा।

हर राष्ट्र के मूलनिवासी समूह का शोषण नहीं होगा और उन्हें उनके ही राष्ट्र की सत्ता, संपत्ति एवं आज़ादी से दूर नहीं रखा जायेगा इसका दायित्व मूलनिवासी राष्ट्र का एनआयसीओ ग्रुप लेगा। दुनिया के तमाम राष्ट्र इस ग्रुप के सभासद होंगे।

८) एक मूलनिवासी राष्ट्र को यदि दूसरे मूलनिवासी राष्ट्र के साथ कारोबार करना हो तो ४० : ६० इस साँझेदारी तत्व पर किया जाऐगा। जिसमें निवेश करनेवाले विदेशी राष्ट्र को उत्पादन का ६०% हिस्सा दिया जाऐगा और मूलनिवासी निवेशक राष्ट्र को उत्पादन का ४०% हिस्सा दिया जायेगा। इस तरह दोहरी कानूनी कारोबार से एक राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र पर प्राकृतिक संसाधन के लिए आक्रमण करने की या युद्ध करने की जरूरत नहीं होगी। हर राष्ट्र का Self-Respect, Self-Idnentity

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

तथा Self-Creativity बरकरार रखा जायेगा और इसी तरह मूलनिवासी राष्ट्रवाद के माध्यम से जागतिक बंधुत्व (Universal Brotherhood) स्थापित किया जायेगा। और हजारों सालों से प्राकृतिक संसाधन के लिए चल रहा मानवी संघर्ष हमेशा के लिए खतम हो जायेगा तथा जग सही मायने में खुशहाल, समृद्ध एवं संपन्न होगा।

किन्तु क्या मूलनिवासी राष्ट्रवाद दुनिया के हर एक राष्ट्र में इतनी आसानी से स्थापन होगा? जिन राष्ट्रों में विदेशी घुसपैठ समूह सैंकड़ो सालों से सत्ता में बैठे है और मूलनिवासी जनता का शोषण करके मजे में जी रहे है क्या ऐसे लोगा उनके कब्जे की शासन की कुंजी वहाँ के मूलनिवासी लोगों के हाथों में इतनी आसानी से सौंप देंगे? बिलकुल ही नहीं!

सत्ता की लालसा में लिप्त अल्पसंख्य विदेशी समूहों को उनकी सत्ता तथा वर्चस्व बिलकुल त्यागने की इच्छा नहीं होगी। ऐसी परम्परागत शासन, शोहरत एवं वर्चस्व बरकरार रखने के लिए वे कड़ा मुकाबला कर सकते है। इसलिए उनसे लड़ने की शक्ति तथा मानसिकता की तैयार मूलनिवासी राष्ट्रवादी को ही करनी होगी और इसके लिए मूलनिवासी समूहों को एकजूट होना होगा और उन मुठ्ठी भर विदेशी शासनकर्ता के खिलाफ बगावत का ऐलान करना होगा। तमाम मूलनिवासी राष्ट्रवादी समूहों को इकट्ठे होकर जनआन्दोलन करना होगा। केवल जनआन्दोलन करने से ही नहीं होगा तो इसके लिए वक्त आने पर सशस्त्र तथा हिंसर्क संघर्ष भी करना होगा और सत्ताधारी विदेशी समूहों को देश से बाहर भगाना होगा, इसके लिए उन्हें काबिल तथा ईमानदार मूलनिवासी नेतृत्व को नियुक्त करना होगा, तो ही सच्चे मायने में मूलनिवासी राष्ट्र का विकास होगा और हरेक मूलनिवासी राष्ट्र के मूलनिवासी समूह खुशहाल, समृद्ध, आज़ाद तथा संतुष्ट हो जायेंगे।

मूलनिवासी राष्ट्रवाद चिरायू हो!

–डॉ. प्रताप चाटसे

(इंटरनॅशनल को–ऑर्डिनेटर, एनआयसीओ ग्रुप)

****

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

उपसंहार

ब्राह्मण आखिर विदेशी!

इस किताब के परिशिष्ट में जोड़े गये जागतिक दर्जे के दो डीएनए अनुसंधान से अब यह सूरज की तरह साफ हो चुका है कि, ब्राह्मण भारत में विदेशी है और इ.स.पूर्व २००० से १७०० के दरमियान उन्होंने भारत पर आक्रमण किया था। सेल जर्नल में प्रकाशत हुये राखीगढ़ी के अनुसंधान से यह साबित हो चुका है कि, इ.स.पूर्व २००० के पहले भारत में ब्राह्मणों के पुरखे आये ही नहीं थे जिससे राखीगढ़ी से बरामद हुये कंकालों से ब्राह्मणों के डीएनए प्राप्त नहीं हो सके। दुनिया के शोहरत प्राप्त वैज्ञानिक डेव्हिड रिच इन्होंने भी यह बात उनकी किताब 'Who we are, How We got here' में यह बात मान ली है। उसी तरह जागतिक दर्जे के ११७ वैज्ञानिकों ने मिलकर अनुसंधान किया तो उन्होंने भी उनकी खोज का यही नतीजा दिया है कि, ब्राह्मणों के पुरखे भारत में युरेशियन स्टेप इस प्रदेश से इ.स.पूर्व २००० से १७०० के दौरान आये थे। भारत के प्रस्तावित ब्राह्मण एवं उनका प्रस्तावित मीडिया इन्होंने मात्र इस जागतिक हक़ीकत को दबाकर रखने के लिए पूरी जी जान से कोशिश की। राखीगढ़ी के अनुसंधान में अव्वल स्थान पर मि. वसंत शिंदे इन्हें साथ में लेकर ब्राह्मणों ने स्वयं का विदेशीपन छिपाने का प्रयास किया। मि. वसंत शिंदे स्वयं जागतिक दर्जे के अनुसंधानकर्ता के समूह के साथ राखीगढ़ी के कंकालों का डीएनए अनुसंधान कर रहे थे। इतना ही नहीं अपितु ११७ वैज्ञानिकों की टीम में भी वसंत शिंदे शामिल थे। इन दोनों अनुसंधान का रिपोर्ट साफ़ तौर पर ब्राह्मणों को विदेशी साबित करता है। किन्तु शिंदे ने मात्र रिपोर्ट प्रकाशित होने के बाद अनुसंधानकर्ता की टीम से बाहर निकलकर ब्राह्मण को विरोध करने के बजाए अपनी जैसे थे हालात रखकर मीडिया में ब्राह्मण विदेशी नहीं है ऐसा बक रहे थे। याने एक तरफ अनुसंधानकर्ता की टीम का हिस्सा बनकर वैज्ञानिक दृष्टि से भारत में ब्राह्मण विदेशी है यह कहना चाहते थे तो दूसरी तरफ मात्र उलटा बकबक कर रहे थे। क्योंकि उनका मालिक आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत था।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

मोहन भागवत वसंत शिंदे का सीधे सीधे ब्राह्मणी वर्चस्व भारत में स्थापन करने के लिए इस्तेमाल कर रहे थे। किन्तु उसके खिलाफ भारत के बहुजन का एक भी संगठन, अखबार या नेतृत्व आगे नहीं आया। ऐसे वक्त सिर्फ और केवल बामसेफ एवं भारत मुक्ति मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष मा. वामन मेश्राम इन्होंने वसंत शिंदे को सीधे कानूनी नोटिस भेजकर कोर्ट में घसीट लिया और मोहन भागवत एवं उनके ब्राह्मणी पिल्लों को उनकी सही जगह दिखा दी। डीएनए रिपोर्ट समझने में बहुत ही क्लिष्ट होने से उन्होंने कुछ भी मनगढ़ंत बातें गढ़ दी और मीडिया के जरिये झूठा प्रचार किया फिर भी भारत के बहुजनों की कुछ भी समझ में नहीं आयेगा इसी ख़ुमार में रहकर वसंत शिंदे तथा ब्राह्मण मण्डली भारत के मूलनिवसी बहुजनों को बेवकूफ बनाना चाहते थे। मध्ययुगीन काल में झूठ-मूठ काल्पनिक पुराण में किस्से रचकर जिस तरह बहुजनों को मुर्ख बनाया उसी तरह अब नई भागवत पुराण रचकर बहुजनों को मुर्ख बनाया जा सकेगा यही शिंदे तथा मीडिया के कलम कसाई ब्राह्मण मण्डली का मक़सद था। लेकिन बामसेफ के जागृत नेतृत्व से उनका ब्राह्मणी पासा पलटा गया और तमाम भारत में उन्हें नग्न करने के लिए यह किताब हम जनता के समक्ष असलियत उजागर करने के लिए ला रहे है।

ब्राह्मणों ने अपना विदेशीपन छिपाने के लिए केवल वसंत शिंदे पर ही दबाव नहीं डाला अपितु जागतिक दर्जे के महान डीएनए अनुसंधानकर्त्ता डेव्हिड रिच इनपर भी दबाव डाला गया था, यह बात डेव्हिड रिच इन्होंने स्वयं उनकी किताब में दर्ज की है। डेव्हिड रिच इन्होंने 'Who we are, How We got here' इस किताब में पृष्ठ क्र. १३४-१३५ पर उस वाक़ये का जिक्र खुलकर किया है। युरेशियन डीएनए भारत के जिन लोगों में (ब्राह्मणों में) प्राप्त हुये है उनके लिए डेव्हिड रिच इन्होंने 'West Euresians' (वेस्ट युरेशियन्स) इस संज्ञा का इस्तेमाल किया था और शास्त्रीय दृष्टि से वह सही एवं सटीक है। मगर उन्हें यदि युरेशियन लेबल लग गया तो भारत में उनका अस्तित्व ही खतम नहीं होगा बल्कि जागतिक दर्जे के असली खलनायक के रुप में वे नज़र आयेंगे यह डर भारत के ब्राह्मणों को सता रहा था। उसी तरह उनके वर्चस्व के लिए हिन्दुत्व एवं हिन्दू राष्ट्र

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

यह मुद्दा में हव्वा हो जायेगा। ऐसा कुछ भी उलटा ना हो इसलिए भारत के ब्राह्मणों ने डेव्हिड रिच इनपर उनके भारतीय सहकर्मी की सहायता से दबाव डाला। नरसिंहम ने डेव्हिड रिच इनको 'वेस्ट युरेशियन' इस शब्द को अनुसंधान रिपोर्ट से हटाने के लिए कहा। वेस्ट युरेशियन इस शब्द के अलावा ऐसा शब्द हो कि जिस शब्द से ब्राह्मण भारत के ही है यह गलतफहमी आम पाठकों को हो ऐसा डेव्हिड रिच को सुझाया गया। वैज्ञानिक दृष्टि से गलत तथा सटीक शब्द छोड़कर उसके स्थान पर कोई भी बाहरी और चिकना चुपड़ा शब्द का इस्तेमाल करके अपने महत्वपूर्ण अनुसंधान पर पानी फेरने के लिए डेव्हिड रिच बिलकुल तैयार नहीं हुये। लिहाजा उन्हें बहुत तनाव सहना पड़ा। ''मेरे जिन्दगी का बेहद तनावपूर्ण समय'' इन शब्दों में उन्होंने वर्णन किया है। थंगराज तथा सिंग इन ब्राह्मणवादी अनुसंधानकर्ता डेव्हिड रिच एवं निक पॅटरसन को वेस्ट युरेशियन इस शब्द को निकालने के लिए बहुत दबाव डाल रहे थे और यदि उस शब्द को नहीं निकाला गया तो उनका तमाम अनुसंधान ही लपेटकर रखा जायेगा ऐसी धमकी भी उन्हें दे रहे थे। थंगराज एवं सिंग इनका यह कहना था कि, युरेशिया से भारत में आने के बजाए भारत से युरेशिया में और उसके बाद वहाँ से फिर से भारत में इस तरह ब्राह्मणों का स्थानान्तरण क्यों नहीं हो सकता यह सवाल उन्होंने डेव्हिड रिच को किया। तब डेव्हिड रिच इन्होंने उनसे कहा कि, महिला से जुड़ा मायटोकॉन्ड्रियल डीएनए भारतीय महिलाओं का युरेशियन महिलाओं में प्राप्त नहीं होता है। इसलिए भारत से युरेशिया में स्थानान्तरण होने का तो सवाल ही नहीं है। उसी तरह ब्राह्मणों ने युरेशिया से उनकी महिलाओं को साथ नहीं लाया था। इसलिए भारतीय महिलाओं में युरेशियन डीएनए प्राप्त नहीं होता है। इससे यही सिद्ध होता है कि, केवल युरेशियन आदमी ही भारत में आये थे। डेव्हिड रिच इनका यह खुलासा सुनने के लिए थंगराव एवं सिंग बिलकुल तैयार नहीं थे। यदि डेव्हिड रिच इनका यह सही अनुसंधान उजागर हो गया तो भारत के ब्राह्मणों पर कहर बरसेगा इसका थंगराज एवं सिंग को डर लग रहा था। इसलिए वेस्ट युरेशियन यह शब्द बदलकर भारतीय ढांचे में बैठनेवाला ANI (ॲन्सेस्ट्रल नॉर्थ इंडियन) याने आनुवंशिक उत्तर भारतीय तथा ASI (ॲन्सेस्ट्रल साऊथ इंडियन्स) याने आनुवंशिक दक्खन भारतीय. इन दो शब्दों को थंगराज एवं सिंग ने सुझायें। वेस्ट युरेशियन इन शब्दों के बजाए

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

ANI तथा ASI इन शब्दों से ब्राह्मण यह युरेशियन ना मानकर आनुवंशिक भारतीय माना जाये और मूल अनुसंधान की दिशा को ही भटकाया जाए इस दुष्ट मक़सद से इन दो शब्दों को सुझाया गया। यह तमाम वाक़या किस तरह हुआ यह जागतिक दर्जे के महान डीएनए अनुसंधानकर्त्ता डेव्हिड रिच इनके ही शब्दों में देखते है-

''मेरे अनुसंधान की जिन्दगी का बेहताशा तनावग्रस्त समय अक्तुबर २००८ का था, जब मेरे सहकारी निक पॅटरसन हैद्राबाद को यात्रा के दौरान सिंग तथा थंगराज से मिलने गये थे।

दि. २८ अक्तुबर, २००८ को हमारी बैठक बहुत चुनौतीपूर्ण थी। हमारा तमाम अनुसंधान लपेटकर रखने की धमकी थंगराव एवं सिंग दे रहे थें। बैठक के पहले हमने उन्हें हमारे अनुसंधान का प्राथमिक अहवाल दिखाया था। जिसमें हमने साफ़ लिखा था कि भारत के लोग प्राचीन काल के दो बड़े समूहों के मिश्रण से तैयार हुये है और उनमें से एक समूह 'वेस्ट युरेशिया' है। सिंग एवं थंगराज इन्होंने हमारे इस अनुसंधानपर एतराज जताया क्योंकि इससे वेस्ट युरेशियन लोग बड़ा जत्था बनाकर भारत में आये थे ऐसा निष्कर्ष निकलता है ऐसा उनका कहना था। किन्तु इस निष्कर्ष को कुछ भी सबूत नहीं है ऐसा उनका कहना था। उन्होंने यह भी कहना शुरु किया कि, भारत से भी पूरब की ओर तथा योरोप की ओर लोगों का स्थानान्तरण हुआ है ऐसा उनका कहना है। उन्होंने किये हुये उनके ही मायटोकॉन्ड्रियल डीएनए अनुसंधान से यह साबित होता है कि, फिलहाल भारतीय महिला का मायटोकॉन्ड्रियल डीएनए इसी उपखण्ड का है, वह युरेशिया का नहीं।'' यह सत्य होकर भी केवल मायटोकॉन्ड्रियल डीएनए संशोधन के सहारे वेस्ट युरेशियन लोगों का भारत में आगमन हुआ इस तरह के अनुसंधान का हिस्सा बनने को थंगराज तथा सिंग यह बिलकुल भी तैयार नहीं थे। यदि वेस्ट युरेशियन लोगों का स्थानान्तरण भारत हुआ था यह अनुसंधान उजागर हुआ तो भारत में बड़ी मात्रा में राजनीतिक उथल-पुथल होगी ऐसा पॅटरसन और मुझे चेतावनी देकर कहा गया। यह बात उन्होंने बिलकुल साफ़ करके नहीं बताई बल्कि उनके बोलने से यही दिखाई दे रहा था कि, भारत के बाहर से युरेशिया के (ब्राह्मणों का) स्थानान्तरण हुआ है यह कल्पना भारतीय उपखण्ड में बहुत बड़ा बदलाव करनेवाली

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

हो सकती है।

वेस्ट युरेशियन तथा भारतीय लोगों के आनुवंशिक सम्बन्ध जाहिर करने के लिए सिंग एवं थंगराज इन्होंने 'जेनेटिक शेअरिंग' (आनुवंशिक मिलावट) इस संज्ञा का इस्तेमाल करना शुरु किया। जिससे सब का उगम भारतीय आनुवंशिकता से ही हुआ है ऐसा लगे। फिर भी हमारे आनुवंशिक अनुसंधान से मात्र हमारी ये समझ में आता है कि, प्राचीन काल में दो अलग अलग वांशिक समूह का संमिश्रण हुआ है। किन्तु थंगराज तथा सिंग इनकी संकल्पना मान लेते तो इस तरह का संमिश्रण हुआ ही नहीं था ऐसा हमें कहना पड़ेगा। इतना सोचने के पश्चात् हम मौन हो गये। उस वक्त मुझे ऐसा लगा कि, भारतीय राजनीति हमें हमारा सत्य अनुसंधान उजागर करने में बाधाऐं डाली जा रही थी।

उस दिन शाम के वक्त दिवाली के त्यौहार के वक्त बाहर आतिशबाजी और पटाखे छुट रहे थे। क्योंकि दिवाली यह महत्वपूर्ण धार्मिक उत्सव है। एक लड़के ने हमारे कंपाऊंड के बाहर खड़े ट्रक के पहिये के निचे पटाखा फेंक दिया था। पॅटरसन और मि. सिंग एवं थंगराज इनके सायंटिफिक इन्स्टिट्युट के गेस्ट रुम में अवरुद्ध हो गये थे और आखिर हो क्या रहा है इस बात पर हम सोच रहे थे। हमारे अनुसंधान से क्या सांस्कृतिक असर हो सकते है इसकी हमें धिरे धिरे कल्पना आने लगी थी। इसलिए हमने ऐसा नया शब्द ढूँढना शुरु किया जो वैज्ञानिक दृष्टि से उचित एवं ईर्द-गिर्द के हालातों को लाभदायक होगा।

दूसरे दिन हमारा पूरा ग्रुप सिंग के कार्यालय में इकट्ठा हो गया। इकट्ठे बैठकर भारतीय समूह के लिए नये नाम ढूंढे गये। हमने ऐसा लिखा कि, वर्तमान भारत के लोग यह दो अलग-अलग, भिन्न आनुवंशिकता से बने हुये है। वह आनुवंशिकता का याने ''ॲन्सेस्ट्रल नॉर्थ इंडियन्स'' (ANI) तथा 'ॲन्सेस्ट्रल साऊथ इंडियन्स'' (ASI) और यह दो समूह एकदूसरे से उतने ही भिन्न है जितने मौजूदा योरोपियन तथा ईस्ट आशियन्स है। ANI यह लोग योरोपियन, सेन्ट्रल आशियन, नियर ईस्टर्न तथा कॉकेशियन लोगों से जुड़े हुये है किन्तु उनकी मूल भूमि कौनसी है या उनका स्थानान्तरण किस तरह हुआ इसके बारे में हमने कुछ भी नहीं लिखा। ASI इन लोगों का भारत के बाहर लोगों से ताल्लुक नहीं है। ANI

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

एवं ASI इन दो समूहों में भारत में यकायक एकदूसरे से मिश्रित हो गये ऐसा हमने लिखा। उसका असर यह हुआ कि, वर्तमान भारत का हर एक इन्सान कम ज्यादा मात्रा में संमिश्र आनुवंशिकता का है यह समझ (गलतफ़हमी) बनने में मदद हुई। भारत के कुछ लोग वेस्ट युरेशियन लोगों से जुड़े है तो कुछ लोग ईस्ट आशियन एवं साऊथ आशियन लोगों से जुड़े है। भारत का कोई भी समूह आनुवंशिक दृष्टि से शुद्ध नहीं यह गलतफ़हमी इन दो संकल्पना से निर्माण हो गई। ('Who we are and How we got here', पृष्ठ १३४-१३५)

उपरोक्त विवेचन से कई सनसनीखेज मामलों का खुलासा हुआ है। रिच डेव्हिड इनका तहेदिल से शुक्रिया अदा करना चाहिये क्योंकि प्रो. वसंत शिंदे समान गद्दारी ना करते हुये ब्राह्मणी दबावतन्त्र का डटकर सामना करके वास्तविक सत्य दुनिया के समक्ष रखा। रिच डेव्हिड की मिसाल से यह साबित होता है कि, ब्राह्मणों ने विदेशी अनुसंधानकर्त्ता, इतिहासकार एवं लेखक इनपर भी दबाव डालकर अपनी ओर खींचने का अब तक प्रयास किया है। किन्तु रिच डेव्हिड समान कुछ उँगली पर गिनने लायक अनुसंधानकर्त्ता विचलित ना होते हुये उनका कार्य करते रहें और यही लोग मूलनिवासी बहुजनों के लिए आदर्श मार्गदर्शक बन जायेंगे।

उपरोक्त विवेचन से ब्राह्मण कितने षड्यंत्रकारी है यह दिखाई देता है। सन २००१ में मायकेल बामशाद इन्होंने ब्राह्मण भारत में विदेशी है यह बात दुनिया में सबसे पहले अपने अनुसंधान द्वारा उजागर की थी। बामसेफ एवं भारत मुक्ति मोर्चा इन राष्ट्रीय संगठन ने मायकेल बामशाद के अनुसंधान पर देशभर में प्रबोधन किया था। जिससे ब्राह्मणों के पैरों तले जमीन खिसक गई थी और ब्रिटिश काल में तिलक, गांधी, नेहरु इनके समान स्वयं को विदेशी घोषित करने में ही हर्ष महसूस करते थे और अब यही ब्राह्मण वे विदेशी नहीं है यह जताने के लिए जमीन आसमान एक कर रहे हैं। उनका विदेशीपन छिपाने के लिए सन २००१ से २००८ इस काल में उन्होंने एक षड्यंत्रकारी कल्पना विकसित की थी वह कल्पना है - ''हम भारत के बाहर से आये हुये नहीं है बल्कि यहीं के ही मूलनिवासी है। क्योंकि हमारे पुरखे प्राचीन काल से यहीं से युरेशिया में गये और युरेशिया से भारत में

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

वापिस आ गये। इसलिए हम भारत में विदेशी नहीं है।'' पुराण के किवदन्तीयों समान यह भी ब्राह्मणों की केवल किवदन्ती ही है। किवदन्तीयाँ रचने में माहिर ब्राह्मण आज के तन्त्रज्ञान के युग में भी मूलनिवासी बहुजनों को बेवकूफ बनाना चाहते है। उनकी यह किवदन्ती वैज्ञानिक दृष्टि से असली लगे इसलिए उन्होंने रिच डेव्हिड एवं निक पॅटरसन समान जागतिक दर्जे के अनुसंधानकर्त्ता पर भी दबाव लाया और ANI एवं ASI समान शब्द डीएनए अनुसंधान में इस्तेमाल करने की जिद की।

सन २००८ में रची हुई साजिश का इस्तेमाल सन २०१८-२०१९ में प्रकाशित हुये जागतिक दर्जे के डीएनए अनुसंधान में किया गया। असल में रिच डेव्हिड इन्होंने ब्राह्मणों के लिए 'वेस्ट युरेशियन' यह सटीक संकल्पना डीएनए अनुसंधान में लागू की थी, जिसके जरिये ब्राह्मणों का विदेशीपन खुलकर सबके सामने उजागर हो रहा था। लेकिन २००८ के षड्यंत्र में थंगराज एवं सिंग इन्होंने सुझाये हुये ANI एवं ASI इन संकल्पना से वेस्ट युरेशियन यह सत्य संकल्पना पिछे रह गई। उसका नतीजा यह हुआ कि, ब्राह्मण भारतीय ही समझा जाने लगा। क्योंकि ANI एवं ASI इन शब्दों में इंडियन यानी भारतीय शब्द है और इस शब्दों के पिछे छिपकर ब्राह्मणों ने थंगराव एवं सिंग इन अनुसंधानकर्त्ता की सहायता से हो-हल्ला मचाया कि, हम भारतीय ही यानी आनुवंशिक उत्तर भारतीय (ANI) है। ANI इस शब्द से उनकी युरेशियन पहचान पिछे हट गई और काल्पनिक किस्से बनाने के लिए ब्राह्मणों को मौक़ा मिल गया। इसलिए ANI इस शब्द का इस्तेमाल करके ब्राह्मणों ने आगे यह कहना शुरु किया कि, हमारे पुरखे भारत से युरेशिया में गये और वहाँ से फिर से भारत में लौटकर आये थे। उनका कहना सिद्ध करने के लिए राखीगढ़ी के अनुसंधानकर्त्ता वसंत शिंदे इनका भी ब्राह्मणों ने इस्तेमाल किया। राखीगढ़ी अनुसंधान में युरेशियन डीएनए प्राप्त हो जाऐंगे और उसके जरिये वे अपना विदेशीपन छिपा सकेंगे यह उम्मीद ब्राह्मणों को थी। किन्तु उस अनुसंधान में ब्राह्मणों के डीएनए प्राप्त नहीं हुये तो मूलनिवासी भारतीयों के डीएनए प्राप्त हो गये। इसलिए ब्राह्मणों के भारतीय होने पर फिर से सवाल बना रहा कि, ब्राह्मण प्राचीन भारत में नहीं थे, तो फिर वे कब और कहाँ से भारत में आये? इस सवाल

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

का जवाब ११७ अनुसंधानकर्त्ता की टीम ने दिया है। जिसमें उन्होंने कहा है कि, ब्राह्मण युरेशियन स्टेप इस प्रदेश के मूलनिवासी है और इ.स.पूर्व २००० से १७०० इस दौर में उन्होंने भारत पर आक्रमण किया था। उसके पहले वे भारत में आये ही नहीं थे। राखीगढ़ी से बरामद कंकाल इ.स.पूर्व २७०० के दौर का है, याने भारत में ब्राह्मण आने के ७०० बरस पहले का है। इसलिए उसमें ब्राह्मणों के युरेशियन डीएनए प्राप्त नहीं हुये।

उसी तरह ब्राह्मण यह आक्रमणकारी, हिंसक, खूँखार एवं वहशी युरेशियन स्टेप प्रदेश के यामनया लोगों के उत्तराधिकारी हैं। यामनया लोग बेहद हत्यारे थे और उन्होंने योरोप, मध्य पूर्व आशिया एवं मेसोपोटमिया समान प्राचीन काल की विकसित सभ्यता नष्ट कर दी थी। इंग्लंड में तो स्टोन हेन्ज निर्माण करनेवाले वहाँ के मूलनिवासी लोग बहुत सभ्य, सुसंस्कृत एवं विकसित लोग थे। किन्तु हिंसक यामनया आक्रमकों ने वहाँ के तमाम आदमीयों को मार डाला और महिलाओं से संभोग करके उन्होंने उस प्रदेश में वर्चस्व स्थापित किया। इसलिए इंग्लंड के साथ तमाम योरोपियन लोग आज भी यामनया लोगों से नफ़रत करते है।

योरोप समान हालात भारतीय उपखण्ड में हुये थे। युरेशियन स्टेप प्रदेश के यामनया आक्रमकों ने भारत की सिंधु सभ्यतापर हमला करके वहाँ की सभ्यता नष्ट की, आदमीयों का कत्लेआम किया और महिलाओं के साथ भारत में उनकी जो संतान उत्पन्न की जिन्हें आज हम ब्राह्मण के नाम से पहचानते है। यामनया की हिंसक कारवाई केवल सिंधु प्रदेश तक ही सीमित नहीं थी। पूरब के पंजाब दिशा की ओर खिसकते हुये यामनया को हार कबूल करना पड़ा था। अति पूर्व की ओर के शक्तिशाली मगध प्रदेश में तो यामनया टिक भी नहीं पाये। इसलिए यामनया उनकी ब्राह्मणवादी संस्कृति भारत में लागू नहीं कर सके। मगध के उन्नत एवं सभ्य संस्कृति में यामनया लोग अल्पसंख्य विदेशी ब्राह्मण कहकर पहचाने जाने लगे। मूलनिवासी भारतीयों ने खूँखार यामनया ब्राह्मणों को कभी भी नहीं अपनाया। इसलिए आज भी ब्राह्मण विदेशी युरेशियन के नाम से ही पहचाने जाते है। उनके बर्ताव से भी वे खूँखार यामनया के उत्तराधिकारी थे यह सिद्ध होते हैं। यामनया लोग बेहद खूँखार एवं जंगली थे। उन्हें विकास एवं सभ्यता पसन्द नहीं थी। जिससे

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

जिन-जिन स्थानों पर विकसित सभ्यता नज़र आई उन-उन सभ्यता को उन्होंने नष्ट कर दिया और दुनिया के मानव को पाषाण युग में बार बार पिछे की ओर खिंच लिया। ब्राह्मणों को अन्य लोगों का विकास तथा सभ्यता क्यों पसन्द नहीं हैं? इसकी वजह यह है कि, ब्राह्मणों के उनके खून में मौजूद यामनया वंश की वर्चस्ववादी फितरत है। ब्राह्मणों को स्वयं का झूठा वर्चस्व अन्य लोगों पर लादना पसन्द है, इसके लिए वे महान सभ्यता का बली देते हैं। जो लोग सभ्य तथा उन्नत होते है वे लोग फितरतन् अविकसित एवं जंगली लोगों को कैसे तवज्जो देंगे? ब्राह्मणों को लगता है कि सभी लोगों ने उनका वर्चस्व कबूल करना चाहिये। वर्चस्व जताने की लायकी ना होने से कला-गुण के बलपर वे स्वयं को महान सिद्ध नहीं कर सकते। इसलिए मौक़ापरस्ती के कारण वे हिंसा के मार्ग की राह पर चलते है। दुनियाभर में यामनया एवं भारत में उनके उत्तराधिकारी ब्राह्मणों का इतिहास देखा जाये तो पूरी तरह से हिंसा से ही भरा हुआ नज़र आता है। ब्राह्मणों का साहित्य भी हिंसापर ही निर्भर है। उनका आदर्श परशुराम यह तो जागतिक हिंसा का नमूना ही है और ब्राह्मण यह परशुधारी यामनया के असल में उत्तराधिकारी है ऐसा परशुराम प्रतिक से दिखाई देता है। ब्राह्मण यह युरेशियन स्टेप के यामनया के ही वंशज है यह अब डीएनए अनुसंधान द्वारा साबित भी हो चुका है। इसलिए ब्राह्मण भारत में विदेशी तो है यह बात अब सूरज के समान सत्य हो चुकी है।

क्या इतने खूँखार एवं वहशी असभ्य लोगों को भारत समान सभ्य एवं सुसंस्कृत देश में रहने का हक है? भारतीयों ने पिछले चार हजार सालों से विदेशी ब्राह्मणों की हिंसा को सहा है। वक्त वक्त पर मूलनिवासी भारतीयों ने विकास किया और उनका समय समय पर पतन करने का कार्य विदेशी ब्राह्मणों ने किया। ब्राह्मण भारत को कभी भी अपना देश नहीं मानते हैं। उन्होंने कभी भी बहुजनों को अपनाया नहीं है। क्या इस तरह विकृत एवं षड्यंत्रकारी फितरत के हिंसक आक्रमकों को भारत में रहने का हक़ है? इसके बारे में विमर्श करने की नौबत आ गई है।

****

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

भाग–२ परिशिष्ट

अ) मूल डीएनए रिपोर्ट

१) Cell जर्नल की रिपोर्ट :

''अतिप्राचीन हडप्पा संस्कृति की आनुवांशिकता में स्टेप प्रदेश के घुमन्तु या ईरानी खेतिहर के गुणसूत्रों का अभाव''

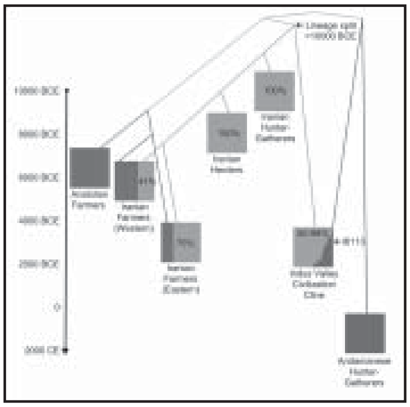

लेखक :– वसंत शिंदे, वाघीश एम. नरसिंहन, नादिन रोहलँड, निक पॅटरसन, नीरज रॉय, डेव्हिड रिच.

संपर्क पत्ता :–
vasant.shinde@dcpune.ac.in (v.s.)
vagheesh@mail.harvard.edu (v.m.n.)
nirajrai@bsip.ves.in (N.R.)
reich@genetics.med.harvard.edu (D.R)

संक्षिप्त विवरण :–

सिंधु संस्कृति के मानव समूह यह दक्खन एशियायी जनसंख्या का उगम स्थान है और उस सिंधु संस्कृति से बरामद हुये कंकाल से प्राप्त जिनोम को अनुसंधान के लिए इस्तेमाल किया गया है। सिंधु कालीन मानव समूह का आनुवंशिक ताल्लुक थंड प्रदेश के गुणसूत्र से या ॲनातोलियन (वर्तमान तुर्कस्तान) एवं ईरानी खेतिहर के गुणसूत्र से इस अनुसंधान में साबित नहीं हुआ, इसलिए पश्चिम की ओर सिंधु प्रदेश के प्राचीन काल के मानवों का स्थानान्तरण नहीं हुआ अपितु इस प्रदेश के लोगों ने ही सिंधु काल में खेती का विकास किया है।

मुख्य अंश :–

इस अनुसंधान में इस्तेमाल किया गया कंकाल यह सिंधु कालीन मानव का है और यह मानव समूह दक्खन एशिया के मानवों का प्रमुख उगम स्रोत हैं।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

* दक्खन एशिया के ईरान से जुड़ी वंशावली यह ईरानी पहाड़ी से १२ हजार बरसों पहले ही जुदा हो चुकी हैं।

* मध्य एशिया के उपजाऊ प्रदेश के खेतिहर दक्खन एशिया के बाद के मानव समूहों से आनुवंशिकता का बिलकुल भी ताल्लुक नहीं और होगा तो भी बहुत अल्प मात्रा में।

Cell (2019) https://doi.org/110-1016/.cell.2019.08.048

Article **Cell**

''अति प्राचीन हडप्पा संस्कृति के गुणसूत्रों में थंड पहाड़ी इलाके के घुमन्तु (Steppe Pastoralists) या ईरानी खेतिहर के गुणसूत्रों का अभाव''

वसंत शिंदे, १,१४, १५ वाघीश एम. नरसिंहन, २, १४ नादिन रोथलँड, २ स्वपन मल्लिक २,३,४ मॅथ्यु माह २,३,४ मार्क लिप्सन, २ नाथान नकतसुका, २ निकोल अदाम्स्की , २,३ नसरिन ब्रुमान्ड खोशबाच, २,३, १० मॅथ्यु फेरी २,३. आन मारी लॉसन २,३, मगन मायकेल २,३,११,१२ जोनास ओप्पेनहॅमर २,३,१३ क्रिस्तिन स्टिवार्डसन २,३ निलेश जाधव १, यांग जुन किम१, मालविका चॅटर्जी १, अवरदिप मुन्शी १, अमृतावल्ली पानचाम १, प्रांजली वाघमारे १, योगेश जाधव १, हिमानी पटेल ५, अमित कौशिक ६, कुमारस्वामी थंगराज ७, माथियास मेयर ८, निक पॅटरसन ४,९ नीरज राय ५,७,१५, आणि डेव्हिड रिच २,३,४,१५, १६.

१) डिपार्टमेंट ऑफ आर्कियोलॉजी, डेक्कन कॉलेज, पोस्ट ग्रॅज्युएट ॲण्ड रिसर्च इन्स्टिट्युट, पुणे- ४११००६, भारत

२) डिपार्टमेंट ऑफ जेनेटिक्स, हार्वर्ड मेडिकल स्कूल, एमए-०२११५, यूएसस

३) होवार्ड ह्युजेस मेडिकल इन्स्टिट्युट, हार्वर्ड मेडिकल स्कूल, बोस्टन, एमए-०२११५, यूएसए.

४) ब्रॉड इन्स्टिटयुट ऑफ हार्वर्ड ॲण्ड एमआयटी, कॅम्ब्रीज, एमए-०२१४२, यूएसए

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

५) बिरबल साहनी इन्स्टिट्युट ऑफ पॅलिओसायन्स, लखनौ, २२६००७, भारत
६) अमिटी इन्स्टिट्युट ऑफ बायोटेक्नोलॉजी, अमिटी युनिवर्सिटी, नोएडा, २०१३१३, भारत
७) सीएसआयआर-सेंटर फॉर सेल्युलर ॲण्ड मोलेक्युलर बायोलॉजी, हैदराबाद, ५००००७, भारत
८) मॅक्स प्लॅक इन्स्टिट्युट फॉर इवोल्युशनरी ॲन्थ्रॉपॉलॉजी, लिपझिग, ०४१०३, जर्मनी.
९) डिपार्टमेंट ऑफ ह्युमन इवोल्युशनरी बायोलॉजी, हार्वर्ड युनिवर्सिटी, कॅब्रिज, एमए-०२१३८, अमेरिका (युएसए)
१०) वर्तमान पता : डिपार्टमेंट ऑफ ॲन्थ्रॉपॉलॉजी, युनिवर्सिटी ऑफ कॅलिफोर्निया, सान्ता क्रुझ, सीए-९५०६४, युएसस.
११) वर्तमान पता : डिपार्टमेंट ऑफ ह्युमन इवोल्युशनरी बॉयलॉजी, हार्वर्ड युनिवर्सिटी, कॅम्ब्रीज, एमए-०२१३८, यूएसए.
१२) वर्तमान पता : मॅक्स प्लॅक हार्वर्ड रिसर्च सेंटर फॉर दी आर्चिओसायन्स ऑफ द एन्शिएंट मेडिटेरिनियन, कॅम्ब्रीज, एमए-०२१३८, युएसए.
१३) वर्तमान पता : डिपार्टमेंट ऑफ बायोमॉलेक्युलर इंजिनिअरिंग युनिवर्सिटी ऑफ कॅलिफोर्निया, सान्ता क्रुझ, सीए-९५०६४, युएसए.
१४) इन लेखकों ने भी उतना ही अहम सहयोग दिया।
१५) लिड कॉन्ट्रॅक्ट

संपर्क :

vasant.shinde@depune.ac.in(v.s.), vaghees@mail.harvard,edu (v.m.n),nirajrai@bsip.ves.in(N.R.), reich@genetics.med.harvard.edu (D.R.)

http://doi.org/10.10.16//cell.2019.08.048.

सारांश :-

सिंधु संस्कृति के प्राचीन जिनोम के बारे में इस अनुसंधान के जरिये हम यहाँ रिपोर्ट दे रहे है। इस अनुसंधान में लिया गया कंकाल यह प्राचीन ईरानी (यहाँ सबसे ज्यादा आनुवंशिक गुण दिखता है।) एवं दक्खन पूर्व एशियायी शिकार इकट्ठे

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

करनेवाले (Hunter Gatherers) इनके मिश्रण से तैयार हुआ ऐसा दिखाई देता है। क्योंकि इन कंकालों के गुणसूत्र यह ईरानी एवं तुर्कमेनिस्तान के ११ स्थानों से प्राप्त कंकालों के डीएनए से जुड़ते है और इससे सिंधु कालीन लोगों का इस इलाके से सांस्कृतिक ताल्लुक थे ऐसा नज़र आता है। इन तमाम कंकालों में थंडे पहाड़ी इलाके के लोगों के गुणसूत्र बहुत अल्प मात्रा में प्राप्त हुये है, जो दर्शाते है कि, वर्तमान में जिस तरह थंडे पहाड़ी इलाके के (Steppe Pastoralist) लोगों की आनुवंशिकता का संमिश्रण भारतीय लोगों से हुआ है, उसी तरह सिंधु कालीन काल में थंडे पहाड़ी इलाके के लोगों से सिंधु प्रदेश के लोगों का आनुवंशिक संमिश्रण नहीं हुआ था। सिंधु कालीन लोगों में ईरानी वंशावली जो दिखाई देती है, वह मूल ईरानी लोगों से अलग हुये आदिम ईरानी खेतिहर, पशुपालक एवं शिकारी समूहों से सिंधु कालीन लोगों के वांशिक सम्बन्ध से निर्माण हुये हैं और उससे पश्चिमी ईरानी खेतिहर का पूरब की दिशा से बड़ी मात्रा में स्थानान्तरण होने से सिंधु कालीन लोगों में ईरानी गुणसूत्र की मात्रा दिखाई देती है। इसके पहले सिद्धान्त को इस अनुसंधान से विरोध निर्माण हुआ है। जिससे सिंधु प्रदेश में पश्चिमी ईरानी लोगों का बड़ी मात्रा में स्थानान्तरण नहीं हुआ, खेती ना करनेवाले और शिकार तथा घुमन्तु जिन्दगी बिताने वाले अलग अलग ईरानी समूहों ने सिंधु प्रदेश के लोगों का आनुवंशिक सम्बन्ध निर्माण होने से उनमें से कुछ मात्रा में ईरानी वांशिक गुण प्राप्त होते है यह इस अनुसंधान से साबित होता है।

प्राक्कथन :

उन्नत सिंधु संस्कृति, जिसे हडप्पा संस्कृति भी कहा जाता है, यह संस्कृति दक्खन आशिया के उत्तर-पश्चिम हिस्से में इ.स.पूर्व २६०० से १७०० के दौरान निर्माण हो गई थी और प्राचीन दुनिया की सबसे बड़ी मात्रा में शहरीकरण में उपनिवेश बसाये गये थे ऐसी यह संस्कृति थी, जिसमें शहर का सुनियोजित इन्तजाम, उम्दा जल निकासी इन्तजाम, अनाज के भण्डार और तौलने की मशीन (तराजू) एवं नाप तौल के तरीके विकसित हो गये थे। सिंधु संस्कृति के लोग नगर की जिन्दगी जिनेवाले लोग थे और उनमें तरह तरह के सांस्कृतिक समूह हडप्पा (पंजाब), मोहेंजोदरो (सिंध), राखीगढी (हरियाणा), धौलाविरा (कच्छ/गुजरात)

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

तथा गनवेरीवाला (चोलिस्तान) ऐसे उन्नत शहर में इकट्ठे रहते थे। (आकृती १अ) (मुघल, १९९०, पोस्सेही १९८२, १९९०; शाकर व लिचतेनस्टिन १९८९). इनमें से राखीगढ़ी यह बड़ा सिंधुकालीन स्थान था। (आकृती १ बी व १ सी) और ९ से २३ मीटर गहराई में ७ जगहों से प्राप्त कोयले की उम्र इ.स. पूर्व २५०० से २३०० है, जो सिंधु संस्कृति के विकास अवस्था से जुड़ती है। (शिंदे एट.एल. २०१८; वाघीश एट.एल. २०१६) पुरातत्विक अनुसंधान के एक हिस्से के तौर पर उत्खनन से प्राप्त मानवी कंकाल का प्राचीन डीएनए डाटा हमने अनुसंधान के लिए एकत्रित किया है।

नतीजा :

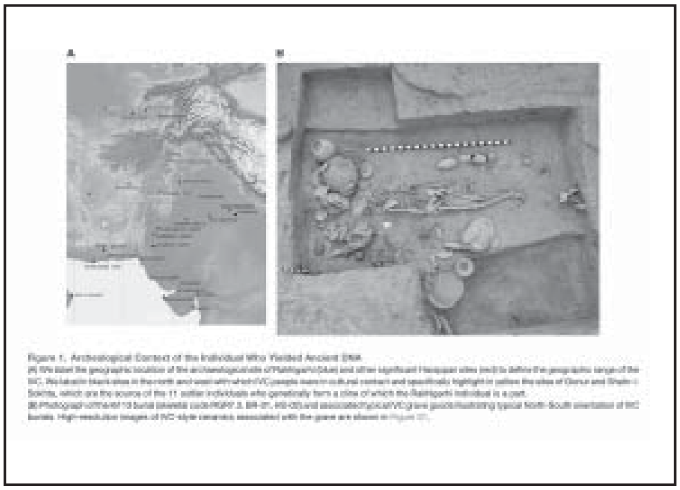

बिलकुल साफ कमरों में, राखीगढ़ी के कंकालों के ६१ नमूनों का हमने बुरादा (पाउडर) किया। उपरोक्त स्थान प्राचीन राखीगढ़ी शहर से पश्चिम की ओर तकरीबन १ किलोमीटर दूरी पर है। (टेबल ५१) हमने उसमें से डीएनए अलग किया। (डावने एट एल, २०१३; कोर्लेविक एट एल २०१५) और उन नमूनों को हमने लायब्रेरी में तब्दील किया। (रोहलँड एट एल, २०१५). प्राचीन डीएनए में

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

सिस्टोसिन–टु युरासिल के खण्डित स्थान पर गलत नतीजे आने से उसे कम करने के लिए हमने डीएनए नमूनों पर युरासिल डीएनए ग्लायकोसॅलेट (UDG) का छिड़काव किया। मायटोकॉन्ड्रीयल जिनोम तथा ~३.००० टारगेटेड न्युक्लिअर पोजिशन्स इनके सिक्वेन्स ओव्हरलॅपींग के लिए हमने तमाम डीएनए लायब्ररी को समृद्ध किया। (ओलाल्डे एट एल २०१८) और उस समृद्ध लायब्ररी को एक तो इलुमिना नेक्स्टसिक ५०० इस उपकरण पर २द्वx७६ बेस पेअर (बीपी) रिडस् बनाकर पेअर किया या २द्वx१५० बीपी रिडस्च्या पेअर इलुमिना हायसिक x१० इस उपकरण पर किया। अॅडप्टरर्स को सुव्यवस्थित करके और कम से कम १५ बीपी के सिक्वेन्स ओव्हरलॅपींग जोड़कर, हमने मायटोकाँड्रियल जिनोम rsrs (आरएसआरएस) (बेहर एट एल, २०१२) व ह्युमन जिनोम रेफरंस hg19 (ली अॅण्ड डर्विन, २०१०) इनकी मॅपींग की। (टेबल ५१) स्क्रिनिंग रिजल्ट की जाँच करने के पश्चात् हमने लायब्ररीं के सबसेटस् को ~१.२ मिलियम एसएनपी तक बढ़ाया और उसके बाद बढ़ाई हुई लायब्ररी को सिक्वेन्स करके उपरोक्त डाटा में सुधार करके hg19 के लिए केवल मॅपिंग की गई। (फु एट एल, २०१५; हाक एट एल, २०१५; मॅथिसन एट एल, २०१५) जेनेटिक आयडेंटिफिकेशन कोड १६१३१ एवं आर्किओलॉजिकल स्केलेटल कोड RGR7-3, BR-01, HS-02, इन बेहद महत्वपूर्ण नमूनों के लिए (आकृती १ बी व एस १)। हमने पाँच एक्स्ट्रॅक्शन से (मेयर एल एल, २०१२; ग्लोक व मेयर, २०१७; रोहलँड एट एल, २०१८; गनसौग एट एल, २०१७) कूल १०९ डबल तथा सिंगल स्ट्रँडेड लायब्ररीज को हमने तैयार किया, बढ़ाया एवं सिक्वेन्स किया. (उनमें से केवल पहली लायब्ररी यूडीजी ट्रीटेड थी)। एक एक्स्ट्रॅक्शन में से ४१ लायब्ररीज निकालने के पश्चात् तथा शेष ४८ लायब्ररीज का डाटा उनके साथ जोड़ने पर हम एक बार ८६,४४० एसएनपी कव्हर कर पाये। उन ६८ लायब्ररीज में से तकरीबन सभी लायब्ररीं में ह्युमन रेफरंस जिनोमसोबत ५' अॅण्ड ३' न्युक्लिओटाईडसबाबत सिस्टोसिन–टु–थायमिन मिसमॅच रेट यह भी १०% ज्यादा प्राप्त हुआ; जो प्राचीन डीएनए होने का दाँवा करता है। फिर भी सिक्वेन्स लेंग्थ के मुताबिक हमने पूल्ड डाटा स्ट्राटीफाईड किया तब हमें ५० बीपी से भी ज्यादा लम्बाई के सिक्वेन्स के लिए हमें खास तौर पर डॅमेज रेट कम मात्रा में प्राप्त हुये। (आकृती ५२; स्टार मेथड्स)। इससे सॅम्पल

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

में प्रदूषण (Contamination) हुआ यह दिखाई दे रहा था और इससे हमारा अनुसंधान प्रदुषण की वजह से एकतरफा स्वरुप का नहीं होगा यह भरोसा बढ़ाने के लिए हमने हमारा डाटा मोलेक्युल्स तक ही सीमित किया, जिसमें प्राचीन डीएनए दर्शानेवाला सिस्टोसिन-टु थायमिन मिसमॅच यह खास बात थी। इससे ३१,७६० एसएनपी तक डाटा निश्चित हो गया। Y क्रोमोझोम पर डॅमेज रेस्ट्रिक्टेड सिक्वेन्स मॅपिंग यह Y व X क्रोमोझोम पर डॅमेज रेस्ट्रिक्टेड सिक्वेन्स मॅपिंग समान ही थी, इससे वह कंकाल एक महिला का था यह स्पष्ट होता है। डॅमेज-रेस्ट्रिक्टेड सिक्वेन्सेस का इस्तेमाल करके मायटोकॉंड्रीयल डीएनए कन्सेन्सस बनाकर हमें यह दिखाई दिया कि, उसमें U_2b_2 यह हॅप्लोग्रुप है और यह हॅप्लोग्रुप सेंट्रल एशिया के तकरीबन ४०० प्राचीन सॅम्पल में से मायटोकॉंड्रीयल जिनोम सिक्वेन्सेस में प्राप्त नहीं होता है; यह विशिष्ट हॅप्लोग्रुप केवल दक्खन एशिया के लोगों में ही दिखाई देता है। (नरसिंहन एट.एल.२०१९)

प्रिंसिपल-कंपोनंट ॲनालिसीसमध्ये (पीसीए) (आकृती २ ए), पहले निश्चित हुये जेनेटिक ग्रॅडियंट्स में १६१११३ दिखाई देता है। यह ग्रॅडीएंट सेंट्रल एशिया के दो स्थानों से प्राप्त ११ मानवी कंकालों में प्राप्त हुआ है, जिसका ताल्लुक सिंधु संस्कृति के साथ था। (वर्तमान तुर्कमेनिस्तान के गोणुर में ३ कंकाल प्राप्त हुये है तो पूर्व ईरानमध्ये दूर के शहर-ए-सोख्ता से ८ मानवी कंकाल प्राप्त हुये है।) इन दो स्थानों से प्राप्त सॅम्पल में से (कूल सॅम्पल के २५%) ज्यादा से ज्यादा सॅम्पल में फॉर्मल स्टॅटिस्टिकल प्रोसिजर के जरिये यह लोग सीमा प्रान्त के है यह पहले ही निश्चित हुआ था और उन्हें इंडस पेरिफेरी क्लाईन से जाना जाता था। (नरसिंहन एट. एल, २०१९) कुछ मात्रा में थोड़ासा एसएनपी कव्हरेज छोड़कर, पीसीएमध्ये १६१११३ के इरर बार को पोजिशनिंग करते समय वे अत्यल्प नज़र आते है और इससे यही स्पष्ट होता है कि, राखीगढी से बरामद मानवी कंकाल यह अश्मयुगीन गोणूर तथा शहर-ए-सोख्ता के प्राचीन लोगों की वंशावली से बहुत अलग दिखाई देता है, इतना ही नहीं तो वर्तमान दक्खन एशियाई आनुवांशिक बदलाव में यह कंकाल नहीं बैठता हैं। हमारा डाटा हमने १६१११३ एवं ११ आऊटलियर इंडिव्हीजुअल्स के साथ भी ॲडमिक्श्चर तंत्र का (ॲलेक्झांडर एट एल, २००९) इस्तेमाल करके जाँच करने पर हमें पहले जैसा क्लालिटेटीव

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

रिजल्ट्स प्राप्त हो गये। किन्तु इन ११ लोगों में से एक भी इन्सान में ''ॲनातोलियन फार्मर-रिलेटेड'' (ॲनातोलियन (तुर्की) खेतिहर वंशावली) प्राप्त नहीं हुई। ''ॲनातोलियन फार्मर-रिलेटेड ॲन्सेस्ट्री'' यह संकल्पना ॲनातोलियातील खेतिहर से जुड़ी ७ वीं सहस्राब्दी से प्राप्त प्राचीन जिनोम के बारे में इस्तेमाल की जाती थी। (मॅथिसन एट एल, २०१५) इ.स.पूर्व १२ वी सहस्राब्दी से ८ वी सहस्राब्दी तक ईरानी पशुपालक या शिकारी व्यक्ति से प्राप्त तमाम प्राचीन जिनोम में अनातोलियन खेतिहर वंशावली प्राप्त नहीं हुई, उलटे 'ईरानी लोगों से जुड़े' दक्खन एशियाई लोगों का जो संमिश्रण वंशमिश्रण प्राप्त होता है वहीं ॲन्स्टेस्ट्री प्रोफाईल राखीगढ़ी के कंकालों से भी प्राप्त होता हैं (ब्राऊशाकी, एट एल, २०१६; लाझारीदिस, एट एल, २०१६)

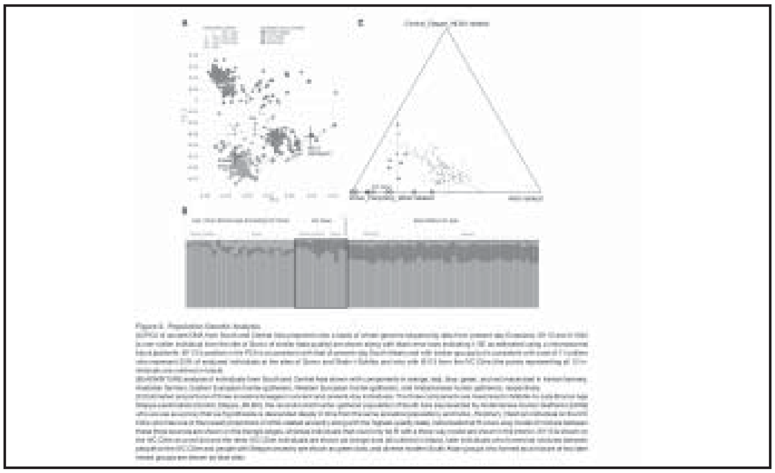

विविधता में बहुतायत जनसंख्या के लिए हमने 9pAdm इस्तेमाल किया, जो १६११३ सॅम्पल जो भिन्न पश्चिम एवं दक्खन युरेशियन समूह के लिए मुख्य स्रोत है उसके लिए फायदेमन्द हुआ। (नरसिंहन एट एल २०१९)। इनमें से कोई भी जनसंख्या इस टेस्ट में फीट नहीं बैठी फिर भी वह मुख्य स्रोत है ऐसा उसका अर्थ नहीं होता; इसके उल्टे इसका अर्थ होता है कि, जिस जनसंख्या में मूल स्रोत मौजूद हो, उसमें कोई भी संमिश्रण नहीं होता है वह वैसी ही वंश परम्परा से

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

बरकरार रहती है जैसे वह जनसंख्या प्राचीन काल के हजारों सालों पहले एकजिनसी वंशावली से बनी थी। संमिश्र वंशावली का अध्ययन करने के लिए दुतर्फा संमिश्रण का मॉडेल के तौर पर एक समूह याने ईरान के पश्चिमी झाग्रोस पर्बत माला में से घुमन्तु पशुपालक का एक समूह और दूसरा यानी शिकारी इकट्ठा करनेवाला अंदमानी लोगों का एक समूह है। (७३% + ६% ईरानी-से जुड़ी वंशावली; कूल मॉडेल के लिए पी=०.१०३; पी= ०-२४) (असल में उपरोक्त दोनों समूह संमिश्र वंशावली के लिए उचित है और वे यही दर्शाते है कि, इसी तरह के आनुवांशिक ताल्लुकात यह १६१११३ के गैर पश्चिमी युरेशियन समूह से जुड़ती है और यह वक्त के साथ हुये वंश के मिश्रण से हुआ है।) इंडस पेरिफेरी क्लाईन दर्शानेवाले ११ आऊटलियर्स को निश्चित करने के लिए यही मॉडेल पहले भी इस्तेमाल किये गये। (नरसिंहन एट.एल. २०१९) और सच में, १६१११३ यह ऐसी जेनेटिक क्लाड में मौजूद है। जिसमें 9pAdm (पी = ०-४२) की मात्रा में उस व्यक्ति में इंडस पेरिफेरी क्लाईन का पूल प्राप्त होता है। अलग अलग सबूत यही सिद्ध करते है कि, १६१११३ इस राखीगढ़ी के व्यक्ति का इंडस पेरिफेरी क्लाई व्यक्ति से आनुवांशिक समानता (Genetic Similarity) देखाई देती है और यह समानता दक्षिण एशिया से उत्तर-पश्चिम दिशा की ओर जिन फ्लो (आनुवांशिक प्रवाह) होने से निर्माण हुई है। पहली बात, गोणूर एवं शहर-ए-सोख्ता का उम्दा किस्म का प्राप्त डाटा ४४ व्यक्ति में से केवल ११ लोगों का डाटा (२५%) में उपरोक्त तरीके का ॲन्सेस्ट्रीप्रोफाईल प्राप्त होता है; यह मात्र हैरानी की बात है कि, इस तरह का ॲन्सेस्ट्रीप्रोफाईल (Ancestry Profile) हमें राखीगढ़ी के कंकालों से भी प्राप्त हुआ है और वह व्यक्ति उस प्रदेश से स्थानान्तरित व्यक्ति होना बहुत दूर की बात है। दूसरी बात याने, शहर-ए-सोख्ता के तीन इन्सानों में जिस तरह आनुवांशिक कड़ी प्राप्त हुई जो दक्षिण एशिया के बलुचिस्तान से जुड़ते है और वे तमाम IVC Cline Ourliers (सिंधु संस्कृति के दायरे के प्रदेश में से) व्यक्ति है और दक्षिण एशिया से बाहर की दिशा में स्थानान्तरण किया था यह दर्शाती है (नरसिंहन, एट एल, २०१९)। तीसरी बात याने IVC Cline व्यक्ति एवं राखीगढ़ी के व्यक्ति में वर्तमान दक्षिण एशियायी लोगों का आनुवांशिक संमिश्रण है। (यह वंशावल अंदमानी घुमन्तु शिकारी लोगों से ज्यादा मेल करती

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

है।), किन्तु यह आनुवांशिकता शहर-ए-सोख्ता के उसी तरह वहाँ के कांस्ययुगीन तुर्कमेनिस्तान एवं उझबेकिस्तान के कंकालों के नमूनों से नहीं जुड़ती, जिसके द्वारा यह अनुमान निकलता है कि, दक्षिण एशिया से शहर-ए-सोख्ता एवं गोणूर की ओर वांशिक प्रवाह (gene flow) गया है। किन्तु हमारे अनुसंधान में मात्र इस तरह का जिन फ्लो प्राप्त नहीं हुआ। इस तरह के अलग अलग सबूतों से यह अनुमान निकलता है कि, राखीगढ़ी के १६१११३ इन व्यक्ति से प्राप्त ॲन्सेस्ट्री प्रोफाईल सिंधु संस्कृति के पूरे स्थान पर फैली हुई थी और इससे यही सिद्ध होता है कि, इंडस पेरिफेरी क्लाईन से प्राप्त ११ व्यक्ति सिंधु संस्कृति के निवासी थे और सिंधु प्रान्त के बाहर स्थानान्तरित हुये थे। (नरसिंहन एट एल, २०१९)। १२ इन्सानों के संयुक्त सेट से प्राप्त जेनेटिक ग्रॅडिएंट को हमने "IVC Cline" यह नाम दिया है और १६१११३ की तरह ही इस क्लाईन का ज्यादा मात्रा में मौजूद लोगों के सॅम्पल इस्तेमाल करके इन ॲन्सेस्ट्री प्रोफाईल का उम्दा तरीके का मॉडेल हम बनानेवाले है।

दक्षिण एशिया के वर्तमान के तरह तरह के वांशिक प्रवाह मौजूद लोगों के लिए IVC Cline की तरीके पर टू-वे मॉडल इस्तेमाल करके उनकी आनुवांशिकता जाँची गई (नरसिंहन, एट एल, २०१९)। हमें यह दिखाई दिया कि, पीसीए से उम्मीद किया हुआ नतीजा प्राप्त हुआ कि, दक्षिण एशिया के संमिश्र समूहों के लिए यह मॉडेल टू-वे मिक्सचर के तौर पर लागू नहीं हो रहा। क्योंकि ईरानी से जुड़ी आनुवांशिकता की तुलना में स्टेप पॅस्ट्रोरालिस्ट रिलेटेड ॲन्सेस्ट्री (थण्डे पहाड़ी इलाके की आनुवांशिकता) उनमें मौजूद नहीं है। (टू-साईडेड २ टेस्ट के बारे में पी=०.०१८) सिंपलर टू-वे ॲडमिक्शर मॉडेल का इस्तेमाल करके IVC Cline पर निर्भर किये मॉडेलिंग सिस्टिम यह शुरुआत में थण्डे पहाड़ी इलाके की आनुवांशिकता (Steppe Pastoralist devived ancestry) यह ११ outliners से मेल करती थी। (नरसिंहन, एट.एल, २०१९) किन्तु १६१११३ यह व्यक्ति ईरानी-वांशिक प्रवाह से ज्यादा करीबी है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि, ईरान से जुड़ी आनुवांशिकता यह केवल ईरान तथा मध्य एशिया के ईर्द-गिर्द के प्रदेशों तक ही सीमित नहीं थी तो सिंधु संस्कृति के अति पूर्व की ओर प्रदेशों तक पहुँच गई थी। इस आनुवांशिकता की तादाद यह दक्षिण भारत के वर्तमान लोगों से पूरब के

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

आदिवासी समूहों में ज्यादा थी, जिससे यह स्पष्ट होता है कि, सिंधु संस्कृति के काल से दक्षिण एशिया के प्रदेशों की ओर जिन फ्लो होता गया और राखीगढ़ी यह स्थान उत्तर-पश्चिम (स्टेप ॲन्सेस्ट्री को जोड़नेवाला) एवं दक्षिणपूर्व (दक्षिण भारत के आदिवासी समूहों को जोड़नेवाला) इस तरह प्रमुख स्थान है। राखीगढ़ी के व्यक्ति का जो आनुवांशिक प्रोफाईल हमने तैयार किया है उसमें हमें थण्ड पहाड़ी इलाके की आनुवांशिकता (Steppe Pastoralist-related ancestry) प्राप्त नहीं हुई, बल्कि ईरान से जुड़ी आनुवांशिकता (Iranian-related ancestry) ज्यादा मात्रा में प्राप्त हो गई है और इसी तरह की आनुवांशिकता दक्षिण एशिया या ईरान के वर्तमान लोगों में प्राप्त नहीं होती है, जो यही साबित करता है कि, राखीगढ़ी के व्यक्ति में हमें जो आनुवांशिक डाटा प्राप्त हुआ है वह प्राचीन डीएनए है।

IVC Cline में ईरान-से जुड़ी वंशावली की ज्यादा जानकारी लेने के लिए हम IVC Cline से जुड़ी Indus Periphery-West व्यक्ति के नमूनों को 'को-मॉडेल' के तौर पर अध्ययन के लिए लिया। (जिसमें ईरान से जुड़ी वंशावली ज्यादा मात्रा में मौजूद है।) उसके साथ ही, ईरानी इलाके के घुमन्तु शिकारी एवं खेतिहर प्राचीन समूहों को अध्ययन के लिए लिया। उनमें से अलबोर्स्ट पहाड़ों के तकरीबन इ.स.पूर्व १०००० के काल के बेल्ट केव्ह के व्यक्ति का कंकाल, ईरान के झाग्रोस पर्बत के गंज डेरेह इस स्थान का इ.स.पूर्व ८००० के काल पशुपालक का जिन सम्बन्ध, झाग्रोस पर्बत के हाजी किरुज इ.स. पूर्व ६००० के आसपास का खेतिहर का (किसानों का) जिन सम्बन्ध और मध्य ईरान के इ.स.पूर्व ४००० के काल का खेतिहर का जिन सम्बन्ध 9pGraph तन्त्र का इस्तेमाल करके (पॅटरसन एट एल, २०१२) हमने उपरोक्त तमाम गुटों की वंशावली की टेस्ट ईरान से जुड़ी आनुवांशिक वंशावली के साथ की, जिसके द्वारा वांशिक संमिश्रण (admixtures) समझ में आ गया। (ॲनातोलियन खेतिहर से जुड़ी वांशिक संमिश्रण हाजी फिरुज एवं टेपे हिसार के व्यक्ति से प्राप्त हुआ तो सिंधु संस्कृति के समूहों में (IVC Cline) अंदमानी घुमन्तु-शिकारी का वांशिक संमिश्रण प्राप्त हुआ) (आकृती S_3)। जाँचे हुये मॉडेल सॅम्पल में acceptance Criterion इस्तेमाल करने पर Observed एवं expected t-statistics के Maximum (2)

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

Score ३ से कम (L3) था तो Akaike Information Criterion (AIC) यह ४ के आसपास था। (बयहाम ॲण्ड अँडरसन, २००४)। हमेशा के लिए लागू हुये मॉडेल से यह स्पष्ट हो गया है कि, ईरानी इलाके के समूहों में जो दो गुट हो चुके है उनमें से सिंधु संस्कृति से जुड़े समूह ने IVC Cline में वांशिक इजाफ़ा किया। (आकृती ३ में इस तरह के मॉडेल हमारे डाटा से मिलते है।) इन नतीजे पर हमने सिमेट्री टेस्ट इस्तेमाल करके पुष्टि की है। जो हमने पहली बार स्टिमुलेटेड डाटा के साथ में लागू किया। (आकृतीS_4) और उसके बाद ईरान से जुड़ी आनुवांशिकता के साथ मौजूद ताल्लुकात का मूल्यांकन किया, ऐसा करते हुये हमने अनातोलियन खेतिहर से जुड़े, अंदमानी शिकारी-घुमन्तु के बारे में और वेस्ट सायबेरियन शिकारी घुमन्तु के बारे में आनुवंशिक संमिश्रण को दुरुस्त किया। (स्टोर मेथड्स)। हमें यह नज़र आया कि, IVC Cline में ९४% वंशावली ने ईरान से जुड़ी आनुवांशिकता दर्शाई और अन्य आनुवांशिकता से यह वंशावली भिन्न थी और यह नतीजे हमारे मॉडेलिंग रिजल्ट के साथ जुड़ रहे थे।

हमारा अनुसंधान यह कहता है कि, अपने ईरान के मूल स्थान से अलग होने के बाद आदिम ईरानी घुमन्तु-शिकारी, पशुपालक एवं खेतिहर यह ईरान की पहाड़ी पर एवं दक्षिण आशिया में स्थानान्तरित होने से उनकी आनुवांशिकता दक्खन एशिया से प्राप्त होती है और इसके प्रमाण प्राचीन एवं आधुनिक नमूनों के डाटा से प्राप्त होते हैं। ईरान के बेल्ट केव्ह के व्यक्ति तकरीबन इ.स. पूर्व १०,००० का है और ईरान में खेती का विकास होने के पहले का यह कंकाल निश्चित ही है। इससे यह साबित होता है कि, ईरान में खेती का विकास होने से पहले ही सिंधु संस्कृति में मानवों में (IVC Cline में) ईरान से जुड़ी आनुवांशिकता (Iranian-related ancestry) मिश्रित हो गई थी। (आकृती ३) बेल्ट केव्ह के व्यक्ति में यदि ईरानी आनुवांशिकता कम मात्रा में दिखाई दी, फिर भी हमारा विश्लेषण यही दर्शाता है कि, सिंधु संस्कृति की वंशावली में ईरानी आनुवांशिकता मिलने से पहले ८००० इ.स. पूर्व के गंज दरेह व्यक्ति के काल पहले ही IVC Cline के व्यक्ति उनके ईरान के मूल लोगों से जुदा हो गये और ईरान में इ.स.पूर्व ७००० से ६००० के आसपास खेती का विकास ईरान के पहाड़ी इलाके में होने से पहले जो लोग ईरान के झाग्रोस पर्बत पर रहने लगे थे।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

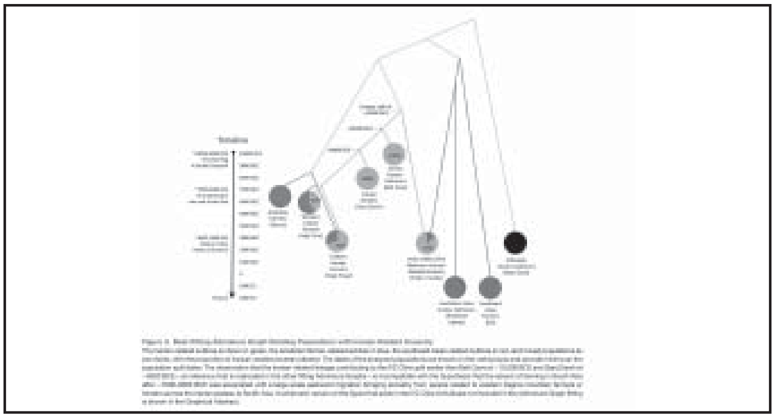

संक्षेप में कहे तो IVC Cline (सिंधु लोगों की वंशावली में) के वंशजों में ईरान से जुड़ी आनुवंशिकता यह पश्चिम ईरान के पहाड़ी के आदिम खेतिहर एवं घुमन्तु पशुपालक इनके संमिश्रण से निर्माण हुई है। एक आज़ाद अनुसंधान में यह स्पष्ट हुआ है कि, अश्मयुगीन एवं कांस्ययुगीन काल के ईरान के पहाड़ी इलाके के खेती करनेवाले खेतिहरों में अनतोलियन किसानों से जुड़ी आनुवंशिकता थी जो उसके पहले के पश्चिमी झाग्रोस प्रदेश के पशुपालक लोगों में नहीं थी। (नरसिंहन एट एल, २०१९) इनमें पश्चिमी झाग्रोस इलाके के किसान (तकरीबन ५९% अनातोलियन खेतिहर से जुड़ी आनुवांशिकता इ.स.पूर्व ६००० के आसपास हाजी फिरुज इस स्थान से प्राप्त हुई) और पहले अलबोर्स्ट खेतिहर थे। (जिनमें अनातोलियन खेतिहर से जुड़ी आनुवांशिकता की मात्रा यह इ.स.पूर्व ४००० के आसपास टेपे हिसार इस इलाके में ३०% इतनी प्राप्त हुई)। जो कि IVC Cline के १२ व्यक्ति के नमूनों से मात्र अनातोलियन खेतिहर से जुड़ी आनुवांशिकता नाम के लिए ही प्राप्त हुई, और यह एक स्वतन्त्र प्रमाण है। (इसके साथ ही ईरान से जुड़ी आनुवांशिक भिन्नता में से यह आनुवांशिकता प्राचीन ईरानी जिनोम के अबतक के अनुसंधान से प्राप्त नहीं हुई) इससे यही साबित होता है कि, ईरानी खेती करनेवाले किसानों से जुड़ी ॲन्सेस्ट्री प्रोफाईल से वहाँ के वंशज नहीं बने है। (नरसिंहन एट एल, २०१९) फिलहाल दक्खन एशिया के लोगों में अनातोलियन खेतिहर से जुड़ी आनुवांशिकता स्टेप पॅस्टोरालिस्ट स्टेप (थण्डा पहाड़ी इलाके के

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

घुमन्तु) इनसे मिलती जुलती है ओर उन्होंने वह संमिश्र आनुवांशिकता इ.स.पूर्व २००० से १५०० के दौरान दक्खन एशिया में फैलाई थी। (नरसिंहन, एट एल, २०१९)

परिचर्चा :-

उपरोक्त अनुसंधान यही साबित करता है कि, योरोप की तरह दक्खन एशिया में भी उपजाऊ पहाड़ी इलाके के लोगों ने पहले खेती का विकास नहीं किया। उल्टे योरोप के बारे में पहले अनातोलिया के घुमन्तु शिकारी लोगों ने (फेल्डमन एट एल, २०१९) और दक्खन एशिया के परीक्षण ना किये हुये स्थानों पर वहाँ के स्थानिक लोगों ने बाहरी लोग आने के पहले ही खेती की शुरुआत की थी। इसका अर्थ यह नहीं होता है कि, बाद के काल में खेती के अर्थकारण को लोगों के स्थानान्तरण का लाभ नहीं हुआ; मिसाल के तौर पर प्राचीन डीएनए अनुसंधान ने यह साबित किया है कि, पश्चिम अनातोलिया के आदिम घुमन्तु शिकारी के उत्तराधिकारी पश्चिम अनातोलिया के किसान इन्होंने तकरीबन इ.स.पूर्व ६५०० के आसपास योरोप में खेती का प्रसार किया था। (फेल्डमन एट एल, २०१९) बिलकुल उसी तरह, दक्खन एशिया में भी खेती करनेवाले समूह का विस्तार हुआ और उन्होंनें उन-उन क्षेत्रों में आर्थिक तेजी एवं जनसंख्या विस्तार में हाथ बढ़ाया। भूतकाल में इसी तरह के घटनाक्रम हुये थे क्या इसका परिक्षण होना बाकी है और यह परीक्षण दक्खन भारतीय खेती के विकास से पहले बदलाव हुये या बाद में यह प्राचीन डीएनए जाँच से खुलनेवाला है।

हमें जो नतीजे प्राप्त हुये है उसे भाषा का भी आधार है। फिलहाल पूरे दक्खन एशिया में फैले हुये इण्डो-योरोपियन भाषा के उगम के बारे में अहम सिद्धान्त ‘‘अनातोलियन हायपोथेसीस’ है, जिसमें यह कहा गया है कि, अनातोलिया के लोगों का स्थानान्तरण ईरान के पहाड़ी इलाके से दक्खन एशिया में खेती के विकास के साथ होने से इण्डो-योरेपियन भाषा का विस्तार भी इस स्थानान्तरण के साथ ही हुआ। फिर भी हमारे इस अनुसंधान में हमने यह स्पष्ट किया है कि, ईरान के आदिम खेतिहर एवं पशुपालक की तुलना में (सिंधु प्रदेश के) IVC Cline में

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

दक्खन एशिया के प्राचीन खेतिहर आनुवांशिकता में प्राचीन अनातोलियन खेतिहर एवं ईरान से जुड़ी आनुवांशिकता की मात्रा बिलकूल मामूली है। आदिम जनजातिय समूहों में भाषा का विस्तार यह लोगों के स्थानान्तरण के साथ होने से (बेलवूड, २०१३) ईरान के पर्बतीय इलाके के जरिये दक्खन एशिया की भाषा में हुआ था इस अनुमान के उपरोक्त कथन में कितनी विरुद्धता थी। (हेग्गार्टी, २०१९) फिर भी दक्खन एशिया में भाषा के प्रचार के लिए इ.स.पूर्व दूसरे सहस्राब्दी में दक्खन एशिया में मध्य एशिया मार्ग से पूर्व योरोपिय भाषा का यह एक प्राकृतिक मार्ग था, और इस तरह का विस्तार हुआ था यह प्राचीन डीएनए अनुसंधान से प्राप्त आनुवांशिक श्रृंखला से साबित होता है। हक़ीकत यह है कि, दक्खन एशिया के Steppe Pastoralist Ancestry थण्ड पहाड़ी प्रदेश की आनुवांशिकता) (जिसे हम ब्राह्मण आनुवांशिकता कह सकते है-सम्पादक) यह आनुवांशिकता कांस्ययुगीन पूर्व योरोप की आनुवांशिकता से मेल करती है (किन्तु वह पश्चिमी योरोप की आनुवांशिकता से मेल नहीं करती) (डी बारोज डॅमगार्ड एट एल, २०१८; नरसिंहन एट एल, २०१९) और यह अनुमान हमारे सिद्धान्त को और मजबूती प्रदान करती है। क्योंकि बाल्टो-साल्विक एवं इण्डो-ईरानियन भाषा में कुछ ठोस समानता है। यह इस सिद्धान्त से (theory से) स्पष्ट हाता है।

सिंधु संस्कृति के (IVC) एक राखीगढ़ी के व्यक्ति से हमें जो डाटा प्राप्त हुआ है और उसकी तुलना में सिंधु संस्कृति के सांस्कृतिक ताल्लुकात जुड़े हुये पड़ोसी मुल्क में अनुसंधान हुये पहले के ११ व्यक्ति में जो डाटा उपलब्ध है; यह दोनों ही डाटा यही दर्शाते है कि, सिंधु संस्कृति की उन्नति के काल में भारतीय उपखण्ड के उत्तर-पश्चिम की ओर बिखरे हुए प्रदेश में जो आनुवांशिक ढलानवाला क्रम पीढ़ी दर पीढ़ी वहाँ के खेतिहरों में उतरते हुये आया है और उनमें स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (थण्ड पहाड़ी इलाके के घुमन्तु (युरेशियन ब्राह्मण-संपादक)) या पश्चिमी ईरानी खेतिहर (किसान) या पशुपालक इनकी आनुवांशिक मात्रा मामूली है और सिंधु संस्कृति की आनुवांशिकता से ही (IVC Cline में से ही) बाद के काल के दक्खन एशियाई विकसित हुए हैं। सिंधु संस्कृति का (IVC का) यही आनुवांशिक प्रोफाईल (आनुवांशिक संरचना) थी यह सिद्ध करने के लिए हमारा अनुसंधान ही

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

बहुत होगा। किन्तु केवल एक नमूना या IVC के १२ नमूनों का अध्ययन करके हम अतिविशाल प्राचीन सम्पूर्ण सिंधु संस्कृति का अनुमान नहीं निकाल सकते। इसके लिए IVC के तमाम विस्तार की ज्यादा से ज्यादा प्राचीन लोगों का डीएनए अध्ययन हमें करना होगा और इससे सिंधु संस्कृति के आनुवांशिक प्रसार का विस्तारीकरण किस तरह हुआ एवं उस वक्त मानवी समूहों की संरचना किस तरह थी यह समझने में मदद होगी और भविष्य के अनुसंधान के लिए यही मार्ग उचित होगा।

****

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

REFERENCES

Alexander, D.H., Novembre, J., and Lange, K. (2009). Fast model-based estimation of ancestry in unrelated individuals. Genome Res. 19, 1655–1664.

Auton, A., Brooks, L.D., Durbin, R.M., Garrison, E.P., Kang, H.M., Korbel, J.O., Marchini, J.L., McCarthy, S., McVean, G.A., and Abecasis, G.R.; 1000 Genomes Project Consortium (2015). A global reference for human genetic variation. Nature 526, 68–74.

Behar, D.M., van Oven, M., Rosset, S., Metspalu, M., Loogva¨ li, E.-L., Silva, N.M., Kivisild, T., Torroni, A., and Villems, R. (2012). A "Copernican" Please cite this article in press as: Shinde et al., An Ancient Harappan Genome Lacks Ancestry from Steppe Pastoralists or Iranian Farmers, reassessment of the human mitochondrial DNA tree from its root. Am. J. Hum. Genet. 90, 675–684.

Bellwood, P.S. (2013). 11 Human migrations and the histories of major language families. In The Encyclopedia of Global Human Migration, I. Ness, ed. (Chichester, UK: Wiley-Blackwell), pp. 87–95.

Broushaki, F., Thomas,M.G., Link, V., Lo´ pez,S., van Dorp, L., Kirsanow, K., Hofmanova´ , Z., Diekmann, Y.,Cassidy, L.M., D1´ez-Del-Molino, D., et al. (2016). Early Neolithic genomes from the eastern Fertile Crescent. Science 353, 499–503.

Burnham, K.P., and Anderson, D.R. (2004). Multimodel Inference: Understanding AIC and BIC in Model Selection. Sociol. Methods Res. 33, 261–304.

Chang, C.C., Chow, C.C., Tellier, L.C., Vattikuti, S., Purcell, S.M., and Lee, J.J. (2015). Second-generation PLINK: rising to the challenge of larger and richer datasets. Gigascience 4, 7.

Dabney, J., Knapp, M., Glocke, I., Gansauge, M.-T., Weihmann, A., Nickel, B., Valdiosera, C., Garc1´a, N., Pa¨ a¨ bo, S., Arsuaga, J.-L., and Meyer, M. (2013).

Complete mitochondrial genome sequence of a Middle Pleistocene cavebear reconstructed from ultrashort DNA fragments. Proc. Natl. Acad. Sci.USA 110, 15758–15763.

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

Dales, G.F. (1991). Some specialized ceramic studies at Harappa. In HarappaExcavations 1986-1990, Monographs in World Archaeology No. 3, R.H. Meadow, ed. (Prehistory Press), pp. 61–69.

de Barros Damgaard, P., Martiniano, R., Kamm, J., Moreno-Mayar, J.V., Kroonen, G., Peyrot, M., Barjamovic, G., Rasmussen, S., Zacho, C., Baimukhanov, N., et al. (2018). The first horse herders and the impact of early Bronze Age steppe expansions into Asia. Science 360, eaar7711.

Feldman, M., Ferna´ ndez-Dom1´nguez, E., Reynolds, L., Baird, D., Pearson, J., Hershkovitz, I., May, H., Goring-Morris, N., Benz, M., Gresky, J., et al. (2019).

Late Pleistocene human genome suggests a local origin for the first farmers of central Anatolia. Nat. Commun. 10, 1218.

Fu, Q., Hajdinjak, M., Moldovan, O.T., Constantin, S., Mallick, S., Skoglund, P., Patterson, N., Rohland, N., Lazaridis, I., Nickel, B., et al. (2015). An early modern human fromRomania with a recentNeanderthal ancestor. Nature 524, 216–219.

Gansauge, M.T., Gerber, T., Glocke, I., Korlevic, P., Lippik, L., Nagel, S., Riehl, L.M., Schmidt, A., and Meyer, M. (2017). Single-stranded DNA library preparation fromhighly degraded DNAusing T4DNAligase. Nucleic Acids Res. 45, e79.

Glocke, I., and Meyer, M. (2017). Extending the spectrum of DNA sequences retrieved from ancient bones and teeth. Genome Res. 27, 1230–1237.

Haak, W., Lazaridis, I., Patterson, N., Rohland, N., Mallick, S., Llamas, B., Brandt, G., Nordenfelt, S., Harney, E., Stewardson, K., et al. (2015). Massive migration from the steppe was a source for Indo-European languages in Europe. Nature 522, 207–211.

Heggarty, P. (2019). Prehistory through language and archaeology (Routledge), pp. 616–644.

Kelleher, J., Etheridge, A.M., and McVean, G. (2016). Efficient Coalescent

Simulation and Genealogical Analysis for Large Sample Sizes. PLoS Comput. Biol. 12, e1004842.

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

Korlevic, P., Gerber, T., Gansauge, M.-T., Hajdinjak, M., Nagel, S., Aximu- Petri, A., and Meyer, M. (2015). Reducing microbial and human contamination in DNA extractions from ancient bones and teeth. Biotechniques 59, 87–93.

Lazaridis, I., Nadel, D., Rollefson, G., Merrett, D.C., Rohland, N., Mallick, S., Fernandes, D., Novak, M., Gamarra, B., Sirak, K., et al. (2016). Genomic insights into the origin of farming in the ancient Near East. Nature 536, 419–424.

Li, H., and Durbin, R. (2010). Fast and accurate long-read alignment with Burrows-Wheeler transform. Bioinformatics 26, 589–595.

Li, H., Handsaker, B., Wysoker, A., Fennell, T., Ruan, J., Homer, N., Marth, G., Abecasis, G., and Durbin, R.; 1000 Genome Project Data Processing Subgroup (2009). The Sequence Alignment/Map format and SAMtools. Bioinformatics 25, 2078–2079.

Lipson, M., and Reich, D. (2017). A Working Model of the Deep Relationships of Diverse Modern Human Genetic Lineages Outside of Africa. Mol. Biol. Evol. 34, 889–902.

Lipson, M., Cheronet, O., Mallick, S., Rohland, N., Oxenham, M., Pietrusewsky, M., Pryce, T.O., Willis, A., Matsumura, H., Buckley, H., et al. (2018).

Ancient genomes document multiple waves of migration in Southeast Asian prehistory. Science 361, 92–95.

Mathieson, I., Lazaridis, I., Rohland, N., Mallick, S., Patterson, N., Roodenberg, S.A., Harney, E., Stewardson, K., Fernandes, D., Novak, M., et al.

(2015). Genome-wide patterns of selection in 230 ancient Eurasians. Nature 528, 499–503.

Meyer,M.,Kircher,M.,Gansauge,M.-T.,Li, H.,Racimo, F., Mallick,S., Schraiber, J.G., Jay, F., Pru¨ fer, K., de Filippo, C., et al. (2012). A high-coverage genome sequence from an archaic Denisovan individual. Science 338, 222–226.

Meyer, M., Fu, Q., Aximu-Petri, A., Glocke, I., Nickel, B., Arsuaga, J.-L., Mart1´- nez, I., Gracia, A., de Castro, J.M.B., Carbonell, E., and Pa¨ a¨ bo, S. (2014). A mitochondrial genome sequence of a hominin

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

from Sima de los Huesos. Nature 505, 403–406.

Mughal, M.R. (1990). Further evidence of the Early Harappan Culture in the Greater Indus Valley: 1971–90. South Asian Stud. 6, 175–199.

Narasimhan, V.M., Patterson, N., Moorjani, P., Rohland, N., Bernardos, R., Mallick, S., Lazaridis, I., Nakatsuka, N., Olalde, I., Lipson, M., et al. (2019).

The formation of human populations in South and Central Asia. Science 365, eaat7487.

Olalde, I., Brace, S., Allentoft, M.E., Armit, I., Kristiansen, K., Booth, T., Rohland, N., Mallick, S., Sze´ cse´ nyi-Nagy, A., Mittnik, A., et al. (2018). The Beaker phenomenon and the genomic transformation of northwest Europe. Nature 555, 190–196.

Patterson, N., Price, A.L., and Reich, D. (2006). Population structure and eigenanalysis. PLoS Genet. 2, e190.

Patterson, N., Moorjani, P., Luo, Y., Mallick, S., Rohland, N., Zhan, Y., Genschoreck, T., Webster, T., and Reich, D. (2012). Ancient admixture in human history. Genetics 192, 1065–1093.

Possehl, G.L. (1982). The Harappan Civilization: A contemporary perspective. Harappan Civilization (Oxford University Press), pp. 16–28.

Possehl, G.L. (1990). Revolution in the Urban Revolution: The Emergence of Indus Urbanization. Annu Rev Anthropol. 19, 261–282.

Posth, C., Nakatsuka, N., Lazaridis, I., Skoglund, P., Mallick, S., Lamnidis, T.C., Rohland, N., Na¨ gele, K., Adamski, N., Bertolini, E., et al. (2018). Reconstructing the Deep Population History of Central and South America. Cell 175, 1185–1197.e22.

Ringe, D., Warnow, T., and Taylor, A. (2002). Indo-European and Computational Cladistics. Trans. Philol. Soc. 100, 59–129.

Rohland, N., Harney, E., Mallick, S., Nordenfelt, S., and Reich, D. (2015). Partial uracil-DNA-glycosylase treatment for screening of ancient DNA. Philos. Trans. R. Soc. Lond. B Biol. Sci. 370, 20130624.

Rohland, N., Glocke, I., Aximu-Petri, A., and Meyer, M. (2018). Ex-

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

traction of highly degraded DNA from ancient bones, teeth and sediments for highthroughput sequencing. Nat. Protoc. 13, 2447–2461.

Shaffer, J.G., and Lichtenstein, D.A. (1989). Ethnicity and change in the Indus Valley cultural tradition. In Old Problems and New Perspectives in the Archaeology of South Asia, Wisconsin Archaeological Reports, Vol. 2, J.M. Kenoyer, ed. (Madison: University of Wisconsin,), pp. 117–126.

Shinde, V.S., Kim, Y.J., Woo, E.J., Jadhav, N., Waghmare, P., Yadav, Y., Munshi, A., Chatterjee, M., Panyam, A., Hong, J.H., et al. (2018). Archaeological and anthropological studies on the Harappan cemetery of Rakhigarhi, India. PLoS ONE 13, e0192299.

Skoglund, P., Northoff, B.H., Shunkov, M.V., Derevianko, A.P., Pa¨ a¨ bo, S., Krause, J., and Jakobsson, M. (2014). Separating endogenous ancient DNA from modern day contamination in a Siberian Neandertal. Proc. Natl. Acad. Sci. USA 111, 2229–2234.

Vahia, M.N., Kumar, P., Bhogale, A., Kothari, D.C., Chopra, S., Shinde, V.S.,

Jadhav, N., and Shastri, R. (2016). Radiocarbon dating of charcoal samples

from Rakhigarhi using AMS. Curr. Sci. 111, 27–28.

Weissensteiner, H., Pacher, D., Kloss-Brandsta¨ tter, A., Forer, L., Specht, G., Bandelt, H.J., Kronenberg, F., Salas, A., and Scho¨ nherr, S. (2016).

HaploGrep 2: mitochondrial haplogroup classification in the era of high-throughput sequencing. Nucleic Acids Res. 44, W58–W63.

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

STAR★METHODS

KEY RESOURCES TABLE

REAGENT or RESOURCE	SOURCE	IDENTIFIER
Biological Samples		
Ancient skeletal element	This study	Sample ID: I6113
Chemicals, Peptides, and Recombinant Proteins		
Pfu Turbo Cx Hotstart DNA Polymerase	Agilent Technologies	Cat#: 600412
Herculase II Fusion DNA Polymerase	Agilent Technologies	Cat#: 600679
2x HI-RPM hybridization buffer	Agilent Technologies	Cat#: 5190-0403
50% (w/v) PEG 8000	Anatrace	Cat#: OPTIMIZE-82 100 ML
0.5 M EDTA pH 8.0	BioExpress	Cat#: E177
Silica magnetic beads	G-Biosciences	Cat#: 786-915
Sera-Mag Magnetic Speed-beads Carboxylate-Modified (1 µm, 3EDAC/PA5)	GE LifeScience	Cat#: 6.51521E+13
USER enzyme	New England Biolabs	Cat#: M5505
Uracil Glycosylase Inhibitor (UGI)	New England Biolabs	Cat#: M0281
Bst DNA Polymerase2.0, large frag.	New England Biolabs	Cat#: M0537
T4 RNA Ligase Reaction Buffer	New England Biolabs	Cat#: B0216L
PE buffer concentrate	QIAGEN	Cat#: 19065
Buffer PB	QIAGEN	Cat#: 19066
Proteinase K	Sigma Aldrich	Cat#: P6556
Guanidine hydrochloride	Sigma Aldrich	Cat#: G3272
3M Sodium Acetate (pH 5.2)	Sigma Aldrich	Cat#: S7899
Water	Sigma Aldrich	Cat#: W4502
Tween-20	Sigma Aldrich	Cat#: P9416
Isopropanol	Sigma Aldrich	Cat#: 650447
Ethanol	Sigma Aldrich	Cat#: E7023
5M NaCl	Sigma Aldrich	Cat#: S5150
1M NaOH	Sigma Aldrich	Cat#: 71463
20% SDS	Sigma Aldrich	Cat#: 5030
PEG-8000	Sigma Aldrich	Cat#: 89510
1 M Tris-HCl pH 8.0	Sigma Aldrich	Cat#: AM9856
dNTP Mix	Thermo Fisher Scientific	Cat#: R1121
AccuPrime Pfx DNA Polymerase	Thermo Fisher Scientific	Cat#: 12344032
ATP	Thermo Fisher Scientific	Cat#: R0441
FastAP Thermosensitive Alkaline Phosphatase	Thermo Fisher Scientific	Cat#: EF0651
Klenow Fragment	Thermo Fisher Scientific	Cat#: EP0052
10x Buffer Tango	Thermo Fisher Scientific	Cat#: BY5
T4 Polynucleotide Kinase	Thermo Fisher Scientific	Cat#: EK0032
T4 DNA Polymerase	Thermo Fisher Scientific	Cat#: EP0062
T4 DNA Ligase	Thermo Fisher Scientific	Cat#: EL0011
T4 DNA Ligase, HC	Thermo Fisher Scientific	Cat#: EL0013
SDS, 20% Solution	Thermo Fisher Scientific	Cat#: AM9820
Maxima SYBR Green kit	Thermo Fisher Scientific	Cat#: K0251
Maxima Probe/ROX qPCR Master Mix	Thermo Fisher Scientific	Cat#: K0231
50x Denhardt's solution	Thermo Fisher Scientific	Cat#: 750018
SSC Buffer (20x)	Thermo Fisher Scientific	Cat#: AM9770
GeneAmp 10x PCR Gold Buffer	Thermo Fisher Scientific	Cat#: 4379874

(Continued on next page)

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

Continued

REAGENT or RESOURCE	SOURCE	IDENTIFIER
Dynabeads MyOne Streptavidin T1	Thermo Fisher Scientific	Cat#: 65602
Dynabeads MyOne Streptavidin C1	Thermo Fisher Scientific	Cat#: 65002
Salmon sperm DNA	Thermo Fisher Scientific	Cat#: 15632-011
Human Cot-I DNA	Thermo Fisher Scientific	Cat#: 15279011
DyNAmo HS SYBR Green qPCR Kit	Thermo Fisher Scientific	Cat#: F410L
Critical Commercial Assays		
High Pure Extender from Viral Nucleic Acid Large Volume Kit	Roche	Cat#: 5114403001
MinElute PCR Purification Kit	QIAGEN	Cat#: 28006
NextSeq 500/550 High Output Kit v2 (150 cycles)	Illumina	Cat#: FC-404-2002
HiSeq X Ten Reagent kit v2.5	Illumina	Cat#: FC-501-2501
Deposited Data		
Raw and analyzed data	This paper	ENA: PRJEB34154
Software and Algorithms		
Samtools	Li et al., 2009	http://samtools.sourceforge.net/
BWA	Li and Durbin, 2010	http://bio-bwa.sourceforge.net/
ADMIXTOOLS	Patterson et al., 2012	https://github.com/DReichLab/AdmixTools
R	https://www.r-project.org/	https://www.r-project.org/
SeqPrep	https://github.com/jstjohn/SeqPrep	https://github.com/jstjohn/SeqPrep
smartpca	Patterson et al., 2006	https://www.hsph.harvard.edu/alkes-price/software/
ADMIXTURE	Alexander et al., 2009	http://software.genetics.ucla.edu/admixture/download.html
PMDtools	Skoglund et al., 2014	https://github.com/pontussk/PMDtools
Haplogrep 2	Weissensteiner et al., 2016	http://haplogrep.uibk.ac.at/

LEAD CONTACT AND MATERIALS AVAILABILITY

This study did not generate new unique reagents. Further information and requests for resources should be directed to and will be fulfilled by the Lead Contact, David Reich (reich@genetics.med.harvard.edu).

EXPERIMENTAL MODEL AND SUBJECT DETAILS

We attempted to generate genome-wide data from skeletal remains of 61 ancient individuals from the IVC site of Rakhigarhi. Only a single sample yielded enough authentic ancient DNA for analysis: I6113, Rakhigarhi, Haryana, India (n = 1). We report the archeological context dates for this burial in Method Details. The skeletal samples from Rakhigarhi were excavated by the archaeological team led by V.S. at the Deccan College Post-Graduate and Research Institute in Pune India and sampled by the ancient DNA group led by N.Ra. at the Birbal Sahni Institute of Palaeosciences in Lucknow India. Analysis using the methods implemented by the ancient DNA group led by D.R. at Harvard Medical School in Boston USA

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

was approved by a Memorandum of Understanding between Deccan College and Harvard Medical School executed in February 2016.

METHOD DETAILS

Contextual date for individual I6113

The collagen preservation for the human bones at Rakhigarhi cemetery is so poor that Accelerator Mass Spectrometry radiocarbon dating on skeletal remains is very difficult; multiple attempts showed a carbon-to-nitrogen ratio outside the range appropriate for dating, including five attempts we made specifically on skeletal elements from I6113.

However, the cemetery can be securely dated based on archaeological context. First, the only evidence of human occupation of the site is in the Harappan period and hence all the excavated remains are likely to belong to that period. Second, all the characteristic features of the Harappan burial customs and features are present in the cemetery, including a separation from the main habitation area (about 1 km), and typical Harappan artifacts including pottery (Figure S1), beads made of semi-precious stones, and bangles of copper, shell or terracotta, all of which are indistinguishable from artifacts found in the main habitation area. As discussed in the text, the main habitation area has 7 radiocarbon dates based on charcoal spanning 2800-2300 BCE, largely falling within the mature IVC (Shinde et al., 2018; Vahia et al., 2016).

Ancient DNA Data Generation

Table S1 presents details of genetic results on the 252 libraries we generated on 61 distinct samples. To represent I6113, we generated data from 109 libraries (27 double-stranded (Rohland et al., 2015) and 82 single-stranded (Meyer et al., 2014; Gansauge et al., 2017), and then filtered out 41 single-stranded libraries (all the libraries from a single extraction) that tended to have much lower coverage. For the remaining 68 libraries, we restricted the data to sequences with evidence of characteristic ancient DNA damage in the final nucleotide using PMDtools (Skoglund et al., 2014).

Assessing samples for authenticity of ancient DNA

We prioritized individual I6113, who yielded appreciable amounts of DNA as well as a relatively high rate of cytosine-to-thymine mismatches to the reference sequence in the final nucleotide of the libraries, for addi-

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

tional library preparation and sequencing (Table S1).

For I6113 we generated a total of 27 double-stranded libraries (Rohland et al., 2015) (1 UDG-treated and 26 not UDG-treated) using powder from both the otic capsule and semicircular canals of the petrous bone, and also generated an additional 82 single-stranded libraries (all non-UDG-treated) using powder from the semicircular canal and one of two different extraction procedures (Glocke and Meyer, 2017; Rohland et al., 2018). Out of these 109 libraries, nearly all of the 41 made from single-stranded libraries prepared using the extract made with Buffer G (Glocke and Meyer, 2017) had low coverage (< 100 targeted SNPs covered) and low damage in the final nucleotide (Table S1), consistent with the extreme sensitivity of extracts made using this buffer to inhibition especially for singlestranded libraries (Glocke and Meyer, 2017; Rohland et al., 2018). We therefore removed all libraries prepared from this extract from analysis and proceeded with the remaining 68.

The number of DNA sequences obtained from each library of I6113 was insufficient for assessment of contamination on a perlibrary basis. We therefore pooled data across the 68 libraries for I6113, and found that 208,111 SNPs were covered by at least one sequence. Examining the number of sequences mapping to the Y chromosome as a fraction of that mapping to both the X and Y, we found a ratio of 0.047. On data for many other ancient individuals subject to 1.2 million SNP enrichment, we have empirically found that this ratio is less than about 0.03 for uncontaminated libraries from females, and above 0.35 for uncontaminated males. Thus, I6113 has evidence of a mixture of human DNA from both males and females, and thus contamination.

To identify subsets of the molecules that are highly likely to be authentic, we analyzed the fraction of sequences that retained typical signatures of ancient DNA damage based on a characteristic cytosine-to-thymine mismatches to a reference sequence at their ends (Meyer et al., 2014; Skoglund et al., 2014), stratified by the lengths of the molecules (Figures S2A and S2B). We carried out this analysis not only for I6113, but also for a previously published ancient DNA sample from Southeast Asia from a similar time period (I4011) comprised of a merge of data from 21 UDG-treated double-stranded libraries (Lipson et al., 2018). The librariesfrom I6113 have high rates of damage (up to 50%) indicative of a high proportion of genuine ancient DNA. The rate of damage for I6113 decreases dramatically for lengths greater that 50 bp, suggest-

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

ing that longer molecules are more likely to be contaminated. We further found that sequences that were damaged on one end of the ancient DNA molecules (showing cytosine-to-thymine (C-to-T) mismatches relative to the reference sequence) also had an enhanced chance of damage on the other, as expected if damage restriction enriches for authentic DNA in single-stranded (Meyer et al., 2014) (Figure S2C).

The resulting dataset contains sequences covering 31,760 SNPs at least once. Its ratio of Y chromosome sequences to X+Y chromosome sequences is 0.026, consistent with being an uncontaminated female (and the anthropological determination).

Autosomal Contamination Estimates

We estimated contamination using an algorithm based on breakdown of linkage disequilibrium (Posth et al., 2018). This software measures contamination levels by comparing the haplotype distribution of a tested sample to the haplotype distribution of an external reference panel. We used Sri Lankan Tamils sampled from the United Kingdom (STU) from the 1000 Genomes Project (Auton et al., 2015) as the reference panel. The algorithm was run in the usually conservative ‘‘uncorrected’’ mode to attain maximal power.

QUANTIFICATION AND STATISTICAL ANALYSIS

ADMIXTURE clustering analysis

We pruned the data using PLINK2 to retain only sites for which at least 70% of individuals had a non-missing genotype (Chang et al., 2015). We then ran ADMIXTURE (Alexander et al., 2009) with 10 replicates and report the replicate with the highest likelihood. In Figure 2, we show the results for clustering using K = 6 components.

f-statistics We computed f-statistics using the packages in ADMIXTOOLS (Patterson et al., 2012). To test for admixture we ran f3-statistics using the inbreed:YES parameter with an ancient population as a target. To estimate the ancestry proportion for a test population given a set of source populations and a set of outgroups, we used the qpAdm methodology (18) in ADMIXTOOLS.

Hierarchical modeling

To model a given sample as part of an established genetic cline determined by a set of other populations, we used an approach described in

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

(Narasimhan et al., 2019), where the Supplemental Materials give the full details. We begin by obtaining ancestry proportions for a set of samples on a genetic cline, and jointly model these in a single generative model taking advantage of the fact that the proportions for the three ancestral sources must sum to 1. We estimate the mean and covariance of these sources using a bivariate normal distribution via maximum likelihood. We evaluate if the test population can be fit as deriving from the same original three sources as those we just modeled on the genetic cline using qpAdm, and if there is a fit, evaluate if the observed ratios of the ancestry proportions of the test population fit with the expected values from the generative model established by the cline. We compute a p value based on the empirically determined covariance matrices.

Determination of the phylogeny of Iranian-related ancestry

We wished to examine the relationship of the Iranian-related ancestry present in the IVC Cline to that of ancient Iranian plateau groups reported in the ancient DNA literature.

We first focused on a set of populations chosen to represent a diverse group of early hunter-gatherers and farmers from across the geographic area of present-day Iran. Our approach was to identify a set of phylogenies consistent with the data and then, based on the known dates of the samples, to make inferences on minimum split times between lineages.

The individuals or groups of individuals we examined were:

1. Belt_Cave_M (BC) (n = 1) – A Mesolithic individual from the Alborz mountains of Central Iran. Due to the evidence of contamination in the data from this individual, we used a damage-restricted version of this dataset resulting in 30,722 SNPs.

2. Ganj_Dareh_N (GD) (n = 8) – Early goat herders from the Zagros Mountains of western Iran. The highest coverage individual has data from 938,523 SNPs.

3. Hajji_Firuz_C (HF) (n = 5) – Late Neolithic and early Copper Age individuals from the Zagros Mountains of Western Iran. The highest coverage individual has data from 916,581 SNPs.

4. Tepe_Hissar_C (TH) (n = 12) – Copper Age and Early Bronze Age individuals from the Central Iranian Plateau. The highest coverage individual has data from 745,066 SNPs.

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

5. Indus_Periphery_West (IP) (n = 1) – Member of the IVC Cline which includes the Rakhigarhi individual I6113. We represent the Iranian-related ancestry in this cline with I8728, an individual with one of the highest proportions of Iranian-related ancestry who also happens to have the highest coverage of all individuals on this cline.

As documented in ref. (Narasimhan et al., 2019), the Hajji Firuz and Tepe Hissar pools of individuals have evidence of admixture related to Anatolian farmers while the Indus Periphery Cline individuals = have significant proportions of ancestry related (deeply in time) to southeast Asian hunter-gatherers.

Building scaffolds of all possible topologies of Iranian-related ancestry

We were interested in understanding the relationships among the Iranian-related lineages contributing to these 5 populations, treating the non-Iranian-related components such as the Anatolian farmer-related ancestry as nuisances that we need to model out assuming a topology in which the lineages leading to Tepe Hissar (PTA) and Hajji Firuz (PHA) formed a separate clade from Anatolian farmers (in the next sub-section we show that our results are robust to the choice of the topology relating the Anatolian farmer-related lineages).

There are 3 distinct topologies according to which these 5 populations could be related, which we call ‘‘Serial Founder’’ (Figure S3A), ‘‘Single Outgroup’’ (Figure S3B), and ‘‘Two Clades’’ (Figure S3C). Within these topologies there are multiple permutations for how the 5 individual populations could relate, depending on how the 5 Iranian-related populations fit into ‘‘slots’’ on the topology.

We used qpWave (Patterson et al., 2012) to evaluate all 120 possible ways for the 5 populations to be grafted onto each of the open ‘‘Slots’’ or positions, taking care to account for the correct admixing source for the populations that were admixed. In some topologies the assignment of populations to the slots did not alter the graph topology (when two populations were a clade with respect to the others. Therefore, there were only 30, 15 and 60 different models that were unique for the Serial Founder, Single Outgroup and Two Clades phylogenies respectively, though in our results we show all 120 possibilities for the assignment of a ‘‘Slot’’ to a population.

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

Methodology for model selection of admixture graphs

In the previous section we described the assignment of populations to ‘‘Slots’’ and the creation of a large number of admixture graphs.

For each admixture graph produced there are two metrics that we used to evaluate fit. The first is a list of residuals above a particular Z-score and the second is a score for the weighted error for the fitted statistics based on the graph in comparison to the empirically observed statistics, S(G) = -1/2(g - f) 0Q1(g - f). Here f is the vector of observed f-statistics. g is the corresponding vector of statistics fit on the graph with the specified topology, and Q is an estimated covariance matrix determined empirically (Patterson et al., 2012).

As a first screen for a working model, we begin by selecting models that have their largest residual with an absolute Z-score below 3. This is a standard approach in the literature and while this may provide a practical threshold for rejecting models, this alone is not sufficient to adjudicate between two models whose worst fitting residuals are both close to the threshold. We wanted to compare how similar two models were with respect to their statistical likelihood. If our admixture graph models were nested within one another, we could do this using a Likelihood Ratio Test as described in (Lipson and Reich, 2017). In this approach, the log-likelihood of two models, one involving admixture from a certain population and one without were compared and their difference can then be compared using a chi-square test.

However this approach cannot be applied in the present setting as the models we are testing are not nested within one another and the number of parameters of all of the models are the same. To enable us to determine the level of support one particular model has when compared to another we use Akaike Information Criterion (AIC) as a measure of model fit. Since the number of parameters between two models remains the same, the actual computed score remains the same whether we use AIC or a Bayesian Information Criterion (BIC).

We used a set of guidelines outlined in (Burnham and Anderson, 2004) for performing model selection using AIC. Specifically we computed di = AICi - AICmin where AICi is the AIC of the i-th model, and AICmin is the lowest AIC obtained among all the models we tested across all topologies (SO, SF and TC). The models can then be compared using the

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

following guidelines from (Burnham and Anderson, 2004):

1. di ≤ 2, the i-th model is nearly as plausible as the best fitting model;

2. 2 ≤ di % 4, the i-th model is consistent with the data but considerably less probable than the best fitting model;

3. 4 < di ≤ 7, the i-th model is much less likely than the best fitting model;

4. 7 < di , the i-th model has essentially no support.

Based on this published set of criteria we chose to accept all models for which the difference in AIC was < 4.

Among the samples we analyzed was a Mesolithic individual from Central Iran, Belt_Cave_M, which after restricting to damaged sequences (to address the evidence of contamination in this individual) reflects data from just 30,722 autosomal SNPs, and thus comodeling with this individual restricts the number of SNPs available for admixture graph fitting. To address this, we repeated the admixture graph fitting removing this particular individual which improved our SNP coverage by more than 10-fold, allowing us toremove models that were plausible simply because of a lack of data and ensuring that the fit of a particular admixture graph was not due to our inability to reject it at lower coverage. As a further criterion for model selection, we restricted to the intersection between the fitting models analyzed with and without the Belt Cave individual.

Results from the model selection of tested admixture graphs

In Table S3A, we observe that all working models exclude the ‘‘Two Clades’’ topology, regardless of how populations are assigned to ‘‘slots.’’We also observe that all fitting populations have Indus_Periphery_West or Hajji_Firuz as an outgroup with respect to all other groups at the AIC < 4 threshold, with only models with Indus_Periphery_West if we use AIC < 2.

Robustness of the model selection procedure

We explored if modifying the topology relating the South Asian hunter-gatherer-related components (Table S3B) and that relating the Anatolian farmer-related components (Table S3C) changes our inferences and found that they did not except in one notable way.

Previously our model selection criterion had not been successful at distinguishing the earliest diverging of the Iranian-related populations.

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

i.e., either Indus_Periphery_West or Hajji_Firuz_C, but under a different topology of the Anatolian farmer-related component in Hajji_Firuz_C we see that models with Indus_Periphery_West as the earliest diverging split are strongly supported over the other working models.

We also exploring allowing all the five populations to be admixed with all source populations thereby allowing a much freer model.

We find that our results showing that the Indus_Periphery_West being the first to split are robust to this perturbation (Table S3D).

Taken together, this analysis shows a clear branching structure that involves the Indus_Periphery_West ancestry as the first to split, followed by the others which are not distinguishable. There are two marginally fitting models in which Hajji_Firuz is the first to split (Table S3A), but even if these models are correct they do not change the inference that the Iranian-related ancestry in Indus_Periphery_West split from the lineages leading to those in Belt Cave, Tepe Hissar, and Ganj Dareh before they separated from each other, which is the only inference we need for our main conclusions.

Alternative approaches to determining phylogeny

The major confounder when inferring trees and examining their topology as determined by shared drift amongst different populations is admixture. In analyses described above, we dealt with this by modeling known admixtures into populations, which showed that the changing of the topology of the admixing sources does not affect the inference we obtain about the internal phylogeny of the Iranian related component of the ancestry of the test populations. As an alternative approach to exploring these issues, we obtained unbiased estimates of the allele frequencies for the Iranian-related component in each of the samples by subtracting the expectation from the admixing sources, and then performed symmetry tests to reconstruct the phylogenetic relationships.

Prior to implementing this procedure on real data, we began by confirming that if the relevant admixing source populations or populations related to those source populations were available and the proportion of their admixture known, then it was possible to recover the internal phylogeny of the populations even though there is significant admixture present in the data.

To verify this we simulated the phylogeny described in Figure S4

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

using the msprime coalescent simulator (Kelleher et al., 2016). We used standard mutation and recombination rates and sampled 1 million positions in 10 individuals from each population. We converted these to haploid genotypes by random sampling.We were interested in whether we could recover the internal phylogeny of the pp5 node. The choice of this particular topology and set of admixing populations mirrors the structure of the admixture graph that we think may be a reasonable match to our real data.

In the first step of the process, we computed the allele frequencies per SNP for the populations for which we were interested in obtaining a phylogeny, namely 3, 4, 5 and 6. We then subtracted the relevant allele frequencies of the admixing populations which were known in this setting. For example, we subtracted the allele frequency of population 8 from population 6, weighted by the admixture proportion 50%. Wethen computed all statistics of the form f4(0,A,B,Test), where A, B and Test could be any of the populations 3, 4, 5 and 6.

In Table S3E, we show that for samples without admixture correction there are no simple trees that are compatible with the data (at the jZj>3 level). However, after subtacting the allele frequencies in the appropriate manner, we obtain passing symmetry statistics for exactly the pairs of populations we expected based on the simulated topology (Table S3F). This suggests that if we account for the correct admixing population as well as the proportion of admixture, it is possible to recover the phylogeny of a set of populations even though they might be admixed even to levels of 50% as was the case in simulations. In the next section, we apply this procedure to the admixture graph that we constructed using the real data.

Applying this approach to real data, we estimated admixture-corrected allele frequencies fo the Iranian-related ancestry in four populations carrying it: Ganj_Dareh_N, Hajji_Firuz_C, Tepe_Hissar_C and Indus_Periphery_West (we dropped Belt_Cave_M as it was too low in coverage to produce meaningful results). As part of our inference we needed to infer proportions of non-Iranian-related ancestry in these populations, and to do this we utilized the qpAdm framework developed in (Narasimhan et al., 2019), to estimate the proportions of AHG- and Anatolia_N-related ancestry in each. This produced admixture point estimates that were in line with our admixture graph fits as well as a cova-

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

riance matrix measuring uncertainty.

To account for uncertainty, we carried out this procedure sampled 1000 times from the point estimates and covariance matrix of admixture proportions and produced 1000 samples. For each of these samples we subtracted the allele frequencies in AHG and Anatolia_N (weighting by the admixture proportion), related ancestries and computed all possible triplets of f4-statistics as we had done for the simulated data. We computed f4-statistics using a jZj>3 threshold to determine whether there continued to remain significant evidence of admixture relating the populations. Unlike with the simulated data where we knew a priori the exact mixing proportions and admixing sources, uncertainty about the true admixture proportion in this context reduced power. We observed 465 cases where the inferred tree was (IP,(GD,(HF,TH))), 29 cases where the inferred tree was (IP,(HF,(GD,TH))), and 506 cases where no tree fit. Thus, using this procedure we only observe two viable tree topologies, both of which involve Indus_Periphery_West as the population splitting first, mirroring the topology produced using the admixture graph methodology.

DATA AND CODE AVAILABILITY

All newly reported sequencing data are available from the European Nucleotide Archive under accession number ENA: PRJEB34154.

ADDITIONAL RESOURCES

The Supplemental Data includes an Excel spreadsheet listing results on all 252 libraries generated for this study, an Excel spreadsheet listing all 61 samples for which attempts were made to extract ancient DNA, and an Excel spreadsheet reporting other statistics described in the paper.

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

Supplemental Figures

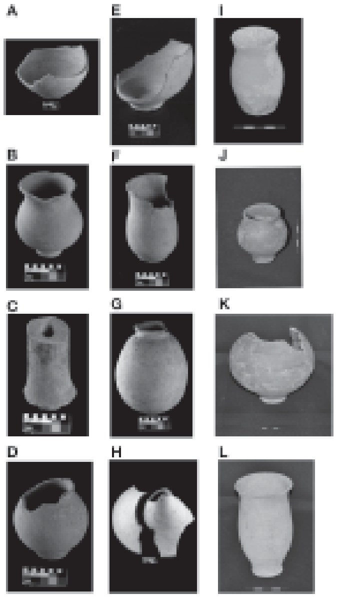

Figure S1. Ceramics in the Grave of Individual I6113 / RGR7.3, BR-01, HS-02, Related to Figure 1 and STAR Methods

All objects are from the Harappan level and were recovered from north of the head of the buried individual unless otherwise noted (see Figure 1B). In the notations that follow we specifically indicate aspects of the ceramics that are characteristically Harappan. (A) Lower portion and base of red wheel-made vessel of Harappan style. (B) Complete medium-size red globular pot of Harappan style. (C) Central column of a ceramic stand broken at both ends and burned. See vessel (H) for the base of such a stand. Dishes-, plates-, and bowls-on-stands are characteristic Harappan ceramic vessels often found intact in graves. (D) A red-slipped ware medium-size globular pot. There are lines as well as indentations on the upper right side just below the neck of the vessel. These could be examples of ancient graffiti or possibly even of the "Indus script". (E) Broken specimen of a medium-size red globular pot. There are a series of linear marks both near the base and on the inside that suggest that such a pot was wheel-thrown, which was common for Harappan vessels. (F) Broken specimen of a red ceramic beaker. (G) Nearly complete specimen of a large red vessel. The distinct rim suggests that it was made separately and then attached to the upper body of the vessel. The light brown clay that now only partially covers the vessel may have been intentionally applied before the vessel was put into the grave. (H) Broken stand of a dish- or plate- or bowl-on-stand. The red color can be seen peeking through the light brown clay. The photograph of the grave (Figure 1B) reveals that almost all ceramic vessels are covered with such clay. This is a phenomenon that is known from the site of Harappa itself where even elaborately decorated vessels were covered with clay before being lowered into the tomb (Dales, 1991). (I) Complete beaker placed near the head of the skeleton. (J) Complete goblet of an unusual dark red-brown color. (K) Broken red vessel with black-painted horizontal lines. (L) Complete beaker placed near the right leg of the skeleton.

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

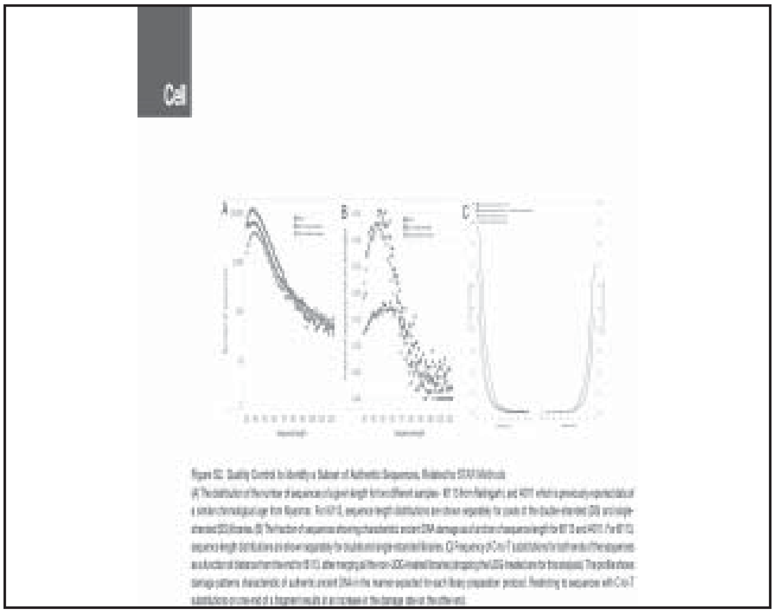

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

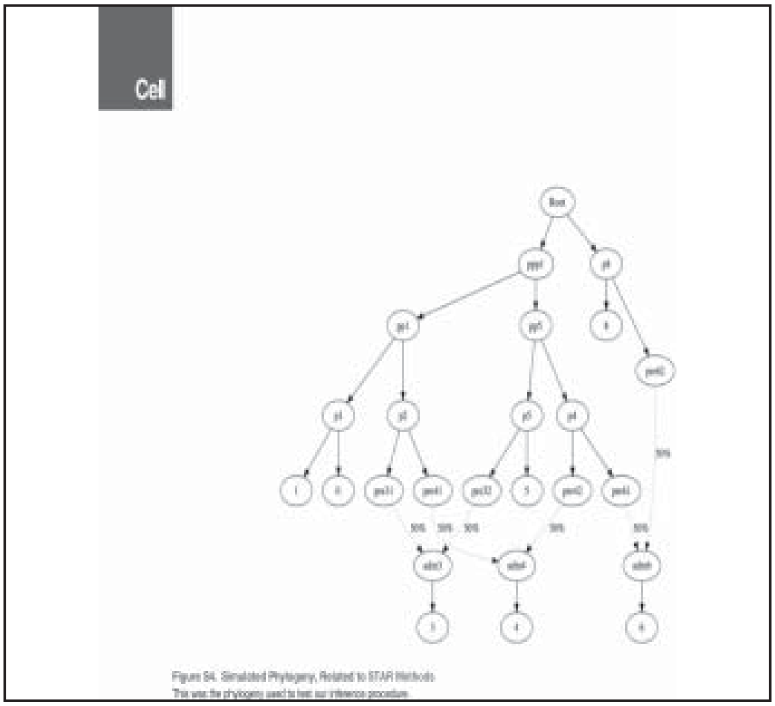

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

२) दि. ३१ मार्च, २०१८ के ९२ अनुसंधानकर्त्ता का डीएनए रिपोर्ट दक्षिण व मध्य एशिया की आनुवांशिक संरचना

लेखन–वाघीश एम नरसिंहन तथा अन्य (नाम की तालिका)–

संलग्न संशोधन संस्था :

मुख्य लेख–

प्राचीन डीएनए डाटा एवं उसके ॲनलिसिस का तरीका –

प्राचीन व्यक्ति जिनका पहले रिपोर्ट नहीं बना हो ३६२ ऐसे इन्सानों का प्राचीन डीएनए का होल जिनोम डाटा (पूरा आनुवांशिक डाटा) प्राप्त किया और जिनका रिपोर्ट नहीं बना उन १७ इन्सानों का उम्दा दर्जे का डाटा प्राप्त किया। यह तमाम डाटा हमें तीन अहम स्थानों से प्राप्त हुआ – १३२ लोगों का डाटा हमें ईरान एवं मध्य एशिया का मध्य हिस्सा (वर्तमान का तुर्कमेनिस्तान, उझबेकीस्तान एवं ताजिकीस्तान जिन्हें हम तुरान कहते है) वहाँ से प्राप्त हुआ, १६५ इन्सानों का डाटा यह पश्चिम मध्य स्टेप (युरेशियन) एवं वर्तमान कझाकस्तान व रशिया (फॉरेस्ट झोन/स्टेप) से प्राप्त हुआ। और ६५ इन्सानों का डीएनए डाटा यह उत्तर पाकिस्तान (दक्षिण एशिया) से प्राप्त हुआ। हमारे डाटा सेट में पहले ही प्रकाशित हुआ प्राचीन डीएनए डाटा निम्नांकित है –

(१) अश्मयुगीन तथा कांस्ययुग कालीन पूर्व ईरान एवं तुरान (५६०० से १२०० इ.स.पूर्व के नमूने १२ स्थानों से)।

(२) प्राथमिक मिट्टी के बर्तन इस्तेमाल करनेवाले सायबेरिया फॉरेस्ट झोन का शिकारी समूह (६२०० से ४००० इ.स.पूर्व के नमूने दो स्थानों से),

(३) अश्मयुगीन तथा कांस्ययुगीन उरला पर्बत के पूरब की ओर स्टेप इलाके से घुमन्तु चरवाहे (पशुपालक)जिनमें कांस्ययुगीन कझाकिस्तान का पहला प्राचीन डीएनए डाटा है। (४७०० से १००० इ.स.पूर्व के २० स्थानों से नमूने), और

(४) दक्षिण एशिया के लोग युग के पहले ही से प्राप्त प्राचीन डीएनए और पाकिस्तान के स्वात घाटी की ऐतिहासिक बस्ती से डाटा (१२०० इ.स.पूर्व से इ.स. का प्रथम वर्ष यहाँ के सात स्थानों से नमुने) (आकृति १, अतिरिक्त सामग्री, डाटा एस–१)

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

यह डाटा प्राप्त करने के लिए हमने एक नियत कमरों में सॅम्पल तैयार किया। उनसे डीएनए अलग किया (१,२) उसके बाद इल्युमिना सिक्वेन्सिंग के लिए (३,४) लायब्ररीज तैयार की और पहले ही स्पष्ट किये प्रक्रिया के मुताबिक उनका स्क्रिन किया। (५-६) डीएनए ओहर लॅपिंग के लिए हम तकरीबन १.२४ लाख सिंग न्युक्लियोटाइट, फॉलिमॉर्फिझ्मस (SNPS) को एनरिच किया। उसके बाद इल्युमिना इन्टुमेंट्स पर प्रोडक्ट का सिक्वेन्सिंग किया एवं उसकी गुणवत्ता की जाँच की। (डाटा एस १) (५,६,८).

१८६ नमूनों के मानवी अस्थि पर डायरेक्ट रेडिओ कार्बन के मुताबिक काल निश्चित किया गया। (डाटा एस २) पुरातात्विक एवं श्रृंखलाबद्ध जानकारी के सहारे उपरोक्त मानवों के गुट बनाने के बाद और उनकी पहले से प्राप्त डाटा रिपोर्ट के साथ जाँच-पड़ताल की। हमारे डाटा सेट में ६१२ प्राचीन व्यक्ति थे जिनकी तुलना वर्तमान व्यक्ति के जिनोमवाईज डाटा के मुताबिक तकरीबन छह लाख SNPS के साथ की। उनमें से १७८९ यह दक्खन एशिया के २४६ मानववंश समूहों में से थे। (डाटा एस ३, अतिरिक्त साहित्य) (९ से ११)। प्राचीन सॅम्पल पर ॲनॅलिसिस की प्रक्रिया हमने कम से १५ हजार SNPS तक कव्हर की। जेनेटिक ग्रुपिंग के लिए हमने इटालिक फॉन्ट का इस्तेमाल किया और पुरातात्विक स्थानों या सॅम्पल के लिए नॉर्मल फॉन्ट का इस्तेमाल किया।

वर्तमान युरेशियन्स में मौजूद आनुवांशिक बदलाव के पॅटर्न के मुताबिक हमने प्राचीन व्यक्ति को प्रोजेक्ट किया और उसके मुताबिक प्रिन्सिपल कम्पोनंट ॲनॅलिसिस (पीएलए) किया। (आकृती १) (१२-१३)। जिसमें तीन बड़े समूह प्राप्त हुये जो फॉरेस्ट झोन/स्टेप, ईरान/तुरान एवं दक्खन एशिया इन भौगोलिक प्रदेशों से मेल करते है। उनका पॅटर्न हमने ॲडमिक्सचर पल्टरिंग (१४) में रिफिलीकेट किया। एक ही इलाके के लोगों में आनुवांशिक भिन्नता है क्या यह जाँचने के लिए हमने सिमेट्री-एफ ४. स्टॅटेस्टिक मिझरिंग किया। जिससे हरेक तीसरे व्यक्ति में एक जोड़ी की आनुवांशिक भिन्नता कितने जिन्समें मौजूद है यह समझ में आता है और आणि ॲडमिक्स्चर-एफ ३- स्टॅटेस्टिक के मुताबिक संमिश्रण को जाँचा जाता है। (अतिरिक्त साहित्य) मिक्सचर मॉडल की काबिलियत हमने 9pAdm के मुताबिक जाँच ली जिसके अनुसार यह स्पष्ट होता है कि, जाँच

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

पड़ताल किये हुये लोगों के सेट की एफ ४- स्टॅटेस्टिक यह बाहरी व्यक्ति के साथ मेल नहीं करती यह स्पष्ट होता है और यदि जुड़ती भी हो तो आनुवांशिकता की मात्रा कितनी है यह समझ में आता है (५)। तकरीबन बहुत भिन्न एवं दूर की आनुवांशिक उगम का संमिश्रण हम उसे मॉडेल के तौर पर इस्तेमाल कर सकते है। (आमतौर पर जिन समूहों का डाटा उपलब्ध है उनसे ही इनके ताल्लुकात है। किन्तु कुछ मामलों में यह मुद्दा ज्यादा नजदीकी का है।)

* '**अनातोलियन कृषि से जुड़ी**' : पश्चिमी अनातोलियन किसानों से इ.स.पूर्व ७ वी सहस्त्राब्दी के दौरान से जुड़ी।

* '**पश्चिम योरोपियन शिकारी समूह से जुड़ी (WHG)**' : अश्मयुगीन पश्चिमी योरोपियन लोगों को दर्शाता है। (५, १०, १५, १६)

* '**ईरानी खेतिहरों से जुड़ी**' : ईरान के झाग्रोस पर्बत की इ.स.पूर्व ८ हजार के काल के घुमन्तु समूहों को दर्शाती है।

* '**पूर्व युरोपियन शिकारी समुहाशी संबंधित**' : पूर्व योरोप के भिन्न स्थानों से शिकारी समूहों को दर्शाती है। (५,६).

* '**पश्चिम सायबेरियन-शिकारी समूह से जुड़ी (West ± Siberian HG)**'' : युरेशियन वंशावली की बहुत नजदीकी एवं नये सिरे से प्रकाशित हुए ३ सॅम्पल इसके जरिये दर्शाया है।

* '**पूर्व आशिया जुड़ी**' : यह समूह इस अनुसंधान में हान चायनीज के तौर पर दिखाया हुआ है।

* '**प्राचीन आनुवांशिक दक्खन भारतीयों से जुड़ी (AASI)**' : मानी हुई दक्खन एशिया की शिकारी वंशावली से जुड़ी जमाति जो फिलहाल अंदमान द्वीप की मूलनिवासी है। (१९).

हरेक ग्रुप के लिए प्रॉक्झिमल मॉडेल की पहचान होने के लिए अल्पकालिक स्वरुप की संमिश्र प्रक्रिया के तौर पर हमने 9pAdm तरीके का इस्तेमाल किया। इस डाटा के लिए समान मात्रा में अच्छा तरीके का कई अलग अलग मॉडेल्स को जानने के लिए यह प्रक्रिया कारगर है। इस ॲनालिसिस की प्रक्रिया जरूर कारगर थी क्योंकि उसके जरिये हम यह पॅटर्न ढूँढ सकते थे जो तमाम मॉडेल्स में गुणवत्ता की दृष्टि से समान प्रमाण में थे। उसके बाद जो विमर्श किया गया है उसमें इन

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

अलग अलग ॲनालिसिस प्रक्रिया पर विमर्श किया गया है, तो सप्लीमेंट मटेरियल्स में बहुत ब्यौरेवार जानकारी दी गई है। हमारे ॲनालिसिस में जो कुछ अहम जानकारी आगे आई है वह टेबल १ में संकलित करके रखी है।

ईरान/तुरान :

पहले प्रकाशित हुये डाटा के साथ हमने हमारे अनुसंधान से उजागर किया नया डाटा जाँचकर देख लिया और उसके द्वारा इ.स.पूर्व ७००० के दरमियान ईरान से पूरब की ओर खेती का विस्तार होते हुये आनुवांशिक प्रसारण (२०, २१) हमारे ॲनालिसिस में ये साफ हुआ कि, ईरान के झाग्रोस पर्बत के किसानों में अलग ही तरी के के पश्चिम युरेशियन आनुवांशिकता मौजूद है। (१७, १८) (फिगर १) फिर भी उस दौरान विस्तृत भौगोलिक प्रदेश में बाद के काल के समूहों में इस किस्म की आनुवांशिकता में एवं प्राचीन अनातोलियन खेतिहर की आनुवांशिकता में संमिश्रण हुआ था। इस पेपर में 'खेतिहर' यह शब्द हमने खेती करनेवाले एवं पशुपालन करनेवाले इन दोनों समूहों के लिए इस्तेमाल किया है। और यह शब्द हमने झाग्रांस पर्बत के लोगों के लिए इस्तेमाल किया है। क्योंकि वे लोग खेती के साथ साथ बकरी को भी पालते थे (१७, २२, २३)। इस अनुसंधान में हमने सिद्ध किया है कि, पश्चिम से पूरब की ओर जाते हुये अनातोलियन खेतिहर से जुड़ी आनुवांशिक संमिश्रण कम होती गई। शुरुवात के अश्मयुगीन अनातोलिया के अनातोलियन खेतिहर से जुड़े वांशिक संमिश्रण ७०% तक प्राप्त हुआ है। आगे पूर्व ईरान में वे ३३% के आसपास था तो पूर्व तुरान में वह करीबन ३% तक था। (फिगर १ अतिरिक्त साहित्य)। इस तरह के आनुवांशिक श्रृंखला का दौर गेहु एवं बाजरा (जुवार) इनके पश्चिम से पूरब की ओर प्रसार के काल से मेल करता है। (इ.स.पूर्व ७००० से ६००० में), यही स्पष्ट करता है कि, अनातोलियन वंश के लोगों से खेती के अर्थकारण का प्रसार केवल पश्चिम दिशा से योरोप की ओर नहीं हुआ बल्कि पूरब से ईरान की दिशा में भी हुआ। (२१, २४,२५) पहले नातुफियन शिकारी समूह की तुलना से लेव्हाल्ट के मूर्त काम करनेवाले खेतिहरों में अनातोलियन कृषि से जुड़ी आनुवांशिकता ज्यादा प्राप्त होने से हमारे इस सिद्धान्त को ज्यादा

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

बल मिलता है। फिर भी मेसोपोटेमिया के प्राचीन किसान इनमें अनातोलियन/ ईरानियन खेती से जुड़ी आनुवांशिकता का विस्तारीकरण किस तरह हुआ इसका डाटा समझे बगैर उन प्रदेशों में आनुवांशिक श्रृंखला किस तरह तैयार हुई यह समझ में नहीं आयेगा। इस आनुवांशिक श्रृंखला के अति पूरब के प्रदेशों में भी (पूर्व ईरान एवं तुरान) हमें West ± Siberian HG से जुड़ी आनुवांशिक संमिश्रण हमें प्राप्त हुये है। जो यह साबित करता है कि, उत्तर युरेशियन आनुवांशिक संमिश्रण से यामनया सम्बन्धित स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (घुमन्तु युरेशियन) (Steppe EMBA) यह आनुवांशिकता प्रसारित होने से पहले तुरान में उत्तर युरेशियन आनुवांशिक संमिश्रण से बहुत ज्यादा असर डाला था।

कांस्ययुगीन तुरान में बॅक्ट्रिया मार्ग को आर्किऑलॉजी कॉम्प्लेक्स (BMAC) एवं उनके ईर्द-गिर्द के उत्तराधिकारी इनसे जुड़े चार शहरी स्थानों से इ.स.पूर्व २३०० से १४०० के दौरान ६९ प्राचीन व्यक्ति के नमूने हमने प्राप्त किये। उनमें से बहुत से व्यक्ति की आनुवांशिक गुण समान तो हैं ही किन्तु वे एकदूजे के बहुत नजदीक हैं। और तुरान में उनके पहले रहनेवाले समूहों में से बड़ी मात्रा में प्राप्त होनवाले प्राचीन ईरानी कृषक से जुड़ी आनुवांशिकता (BMAC में तकरीबन ६०%) और अनातोलियन कृषक से जुड़ी आनुवंशिकता तकरीबन २१% एवं West Sibrain HG से जुड़ी आनुवांशिकता तकरीबन १३% की तुलना से उनकी आनुवांशिकता नजदीक ही है। जो यह दर्शाता है कि, BMAC से जुड़ी सामुहिक आनुवांशिकता यह तुरान के शहरीकरण से पहले के समूहों से निर्माण हुई है। (जो ईरान में पहले से पूरब की ओर फैलते हुये समूहों से निर्माण होने की सम्भावना लगती है।) Steppe EMBA से जुड़ी आनुवांशिकता की BMAC समूहों की गैर हाजिरी जो वर्तमान में दक्खन एशिया में सब तरफ फैली हुई है। उसके साथ ही दक्खन आशिया की आनुवांशिकता में BMAC यह मूल नहीं ऐसा 9pAbm ॲनालिसिस से सिद्ध होने से (आकृती ३A)- यह स्पष्ट होता है कि, बाद के काल में दक्खन एशिया में जो भौगोलिक बदलाव का असर BMAC इस आनुवांशिकता पर हुआ था। उसका असर बाद में दक्खन एशिया के समूहों पर हुआ था। (मध्य से बाद के कांस्ययुगीन स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट इनके (युरंशियनों के) दक्खन के स्थानान्तरण की जानकारी आगे दी गई है।) किन्तु यह असर इस ग्रुप

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

के लोगों ने बायपास किया था। क्योंकि वे बहुत अल्प मात्रा में BMAC समूह से मिल गये थे। और इसके उल्टे वे उसके निचे दक्खन की ओर लोगों के साथ बड़ी मात्रा में मिल गये थे। असल में हमारा डाटा कहता है कि, दक्खन एशिया के समूहों पर BMAC के समूह ने मानववंश शास्त्र की दृष्टि से ज्यादा असर नहीं डाला। तो उसके विपरीत वहाँ पर बड़ी मात्रा में उलटी दिशा से आनुवांशिक प्रवाह (जिन फ्लो) हुआ था। क्योंकि उसके पहले तुरान के समूहों की तुलना ने BMAC आनुवांशिक समूह थोड़ासा अलग है। जिसमें AASI से आनुवांशिकता तकरीबन ५% इतनी नज़र आई है।

हमने बाहरी इन्सानों के भी कई स्थानों से जाँच परीक्षण किया है। जिसमें उनका आपसी ताल्लुक है यह स्पष्ट हुआ है। किन्तु सॅम्पल की बड़ी मात्रा में जाँच किये बगैर उसके बारे में हम ज्यादा अनुमान निकाल नहीं सकते।

पहले इ.स.पूर्व २३०० के आसपास तुरान में गोणुर के BMAC साईटपर हमें दो बाहरी नमूने प्राप्त हुये, जिसमें पहले एवं बाद के सहस्राब्दी के कझाकस्तान के कई स्थानों में West Siberian HG से जुड़ी जो आनुवांशिकता प्राप्त हुई वहीं उपरोक्त दो नमुनों में भी प्राप्त हुई है। इसके बारे में बहुत उचित खुलासा कर सकते है कि, उपरोक्त आनुवांशिकता यह केल्टेमिनार संस्कृति के मूलनिवासी समूहों के बारे में है। केल्टेमिनार संस्कृति के मूलनिवासी समूह यह उस प्रदेश के शिकारी समूह थे, जिन्होंने BMAC के पहले मध्य आशिया का बड़े इलाके पर कब्जा किया था। (२६)। आगे कहना हो तो केल्टेमिनार से जुड़ा प्राचीन डीएनए उपलब्ध होने के बाद ही तय कर सते है कि, केल्टेमिनार लोगों की आनुवांशिकता West Siberian HG से जुड़ती है या नहीं। मतलब इ.स.पूर्व ३००० में यामनया से जुड़े जिसमें स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट की आनुवांशिकता मौजूद हो ऐसा एक भी इन्सान तुरान प्रदेश में प्राप्त नहीं हुआ। इसका अर्थ यह कि, Steppe EMBA यह आनुवांशिकता तुरान के प्रदेश में उस वक्त तक फैली नहीं थी।

दूसरी बात याने इ.स. पूर्व २१०० से १७०० के दौरान हमें उपरोक्त तीनों स्थानों के BMAC आऊटलियर्स में Steppe EMBA यह आनुवांशिकता खास करके संमिश्र स्वरुप में प्राप्त हुई और ओर मध्य काल के बाद में वे उसके बाद कांस्ययुगीन स्टेप समूहों के (Steppe MLBA) लोग लेकर गये थे। इससे यह

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

साबित होता है कि, स्टेप समूहों की आनुवांशिकता की हलचल दक्खन दिशा से इस प्रदेश में हुई थी। और उसका असर इ.स.पूर्व दूसरे सहस्राब्दी में बड़ी मात्रा में दिखाई दिया।

तीसरी बात याने इ.स.पूर्व ३१०० से २२०० हमें BMAC के गोणूर स्थान पर उसी तरह पूर्व ईरान के शहर-ए-सोख्ता इस स्थान पर दो आऊटलिअर प्राप्त हुये और इस तमाम आऊटलिअर का आनुवांशिक प्रोफाईल यह उत्तर पाकिस्तान से प्राप्त ४१ प्राचीन व्यक्ति समान ही था। जो लोग उत्तर के सिंधु संस्कृति में स्वात इस स्वतन्त्र जगह पर तकरीबन एक हजार सालों बाद रहने के लिए गये थे। (इ.स. पूर्व १२०० ते ८००)। इन इन्सानों की आनुवंशिकता में AASI से जुड़ी आनुवांशिकता की मात्रा १४ से ४२% इतनी थी। और शेष प्रमाण प्राचीन ईरानी खेतिहर एवं West Siberian HG इनके आनुवांशिकता से जुड़ी थी। ईरान/तुरान के समकालीन एवं प्राचीन सॅम्पल समान ही इस सॅम्पल में भी हमें स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (युरेशियन) से जुड़ी आनुवांशिकता मौजूद होने के सबूत प्राप्त नहीं हुये। ईरान/तुरान के अन्य तमाम सॅम्पल की तुलना में इन इन्सानों में भी अनातोलियन खेतिहर से जुड़ी आनुवांशिकता की मात्रा हमें बहुत अल्प मात्रा में प्राप्त हुई, जो यह दर्शाती है कि, अनातोलियन खेतिहर आनुवांशिकता की मात्रा कम होती गई अति पूरब के भागों से यह लोग इस प्रदेश में स्थानान्तरित हुये होंगे। सिंधु संस्कृति के डायरेक्ट सॅम्पल किया हुआ डीएनए फिलहाल हमारे पास नहीं है। किन्तु (a) उसकी उत्तर की ओर BMAC एवं पूरब की ओर शहर-ए-सोख्ता (२७) इन प्रदेशों से किये हुये लेन-देन से जुड़े जो पुरातत्विक सबूत प्राप्त हुये है उस आधार पर। (b) सिंधु संस्कृति के उत्तर कालीन स्वात घाटी के इन्सानों की समानता अगले सेक्शन में स्पष्ट की गई है। (२७), उसी तरह (c) इन सॅम्पल में निर्णायक मात्रा में (AASI) संमिश्र आनुवांशिकता की मात्रा प्राप्त हुई है, जिससे यह लोग दक्खन आशिया से स्थानान्तरित होने का खुलासा है। और (d) हक़ीकत यह है कि, 9pAdm मॉडेल के फिलहाल भारतीय ग्रुप की प्राचीन वांशिक समूहों के साथ उपरोक्त इन्सानों में आनुवांशिकता हूबहू मेल करती है। इससे हम इस नतीजे पर पहुँचे है कि, यह आऊटलियर लोग सिंधु संस्कृति के प्रदेश से हाल के वर्षों में ही स्थानान्तरित हुये

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

थे। सिंधु संस्कृति के प्रदेश में दफनाए हुए किसी इन्सान का प्राचीन डीएनए जब तक बरामद नहीं होता तब तक इन आऊटलियर इन्सानों का ग्रुप हमने इंडस पेरीफेरी (सीमा की ओर का हिस्सा) ग्रुप ऐसा कहा है। वह ग्रुप वाक़ई में सिंधु प्रदेश का ही भाग था ऐसा हम नहीं कह सकते क्योंकि सिंधु प्रदेश उत्तर की ओर दोमुँहा तक सीमित था। और इससे सिंधु पदेश के तमाम लोगों की नुमाइंदगी यह तीन आऊटलियर लोग कर रहे हैं, ऐसा हम नहीं कह सकते। असल में सिंधु संस्कृति के लोगों में आनुवांशिक विविधता थी। क्योंकि इंडस पेरीफेरी के व्यक्तियों में एक में तकरीबन ४२% AASI आनुवांशिकता की मात्रा प्राप्त हुई है, तो दूसरे दो व्यक्तियों में तकरीबन १४ से १८% AASI आनुवांशिकता की मात्रा प्राप्त हो गई। (किन्तु उनमें AASI आनुवांशिकता के दो प्रमुख एवं समान स्रोतों का ईरानी खेतिहर से जुड़े आनुवांशिकता से हमेशा संमिश्रण हुआ है दिखाई देता है।) फिर भी इन अनुसंधान का निष्कर्ष यही दिखाता है कि, इंडस पेरीफेरी यह आनुवांशिक ग्रुप ग्रुप इ.स.पूर्व ३००० से २००० के काल का विस्तृत सिंधु प्रदेश के लोगों की अहम आनुवांशिक श्रृंखला दिखाती है। क्योंकि हमने आगे स्पष्ट किया ही है कि, इस ग्रुप के लोगों ने दक्खन एशिया के बाद के काल से जनसंख्या बढ़ाने के लिए कितनी अहम भूमिका निभाई है।

प्राचीन जिनोम संमिश्रण का दौर ढूँढने के लिए हमने नये तरीका विकसित किया है। (जिनोम में एक दूसरे के पड़ोसी गुणसूत्र की जोड़ी से आनुवांशिकता पहचानने के लिए पहले जो तरीका इस्तेमाल किया जाता था उसे अपनाकर करके; (अतिरिक्त सामग्री) हमने वह दौर इस तरह निश्चित किया है कि, इंडस पेरीफेरी के तीन सॅम्पल में से ईरानी खेतिहर से जुड़ी आनुवांशिकता एवं AASI आनुवांशिकता का ५३ + १५ पिढ़ी से पहले याने एक पीढ़ी के लिए २८ साल यह दौर समझा जाये तो (२८) उसका दौर इ.स.पूर्व ४७०० से ३००० के दौरान होता है यह दौर ९५% कॉन्फिडन्स इन्टरवल से मेल करता है। उपरोक्त दो तरी के वंशों में एकदम पहली बार ही संमिश्रण होने की यह कम से कम कालावधि की गिनती हो सकती हे।

स्टेप (थण्ड पहाड़ी इलाका)

तीन इन्सान पश्चिम सायबेरिया के जंगली इलाके के (West Siberian

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

Forest Zone) प्रदेश से है। और उनका दौर इ.स.पूर्व ६२०० ते ४००० के दौरान का होने से इस अनुसंधान से उनकी भूमिका बहुत अहम है, क्योंकि इसके पहले के अनुसंधान में इस आनुवांशिकता के बारे में पहले विचार नहीं किया गया। जिन्हें हमने West Siberian HG यह नाम दिया है। उसमें : EHG से आई हुई आनुवांशिकता तकरीबन ३०% है, उत्तर युरेशियन के उत्तराधिकारी से तकरीबन ५०% आनुवांशिकता आई है (इ.स.पूर्व २२०० से १५०० के दौरान सायबेरिया के अति प्राचीन लोगों से जुड़ा हुआ (उत्तर ध्रुव) (२८, ३०) और वर्तमान पूर्व एशियायी आनुवांशिकता के तकरीबन २०% जुड़ी है। ही आनुवांशिकता दक्खन स्टेप एवं तुरान इनमें भी मौजूद थी क्योंकि इ.स.पूर्व ३००० के दौर में इस आनुवांशिकता ने स्टेप प्रदेश में ८०% तक पहुँच गई थी। जो डाली, कझाकस्तान इन प्रदेशों में घुमन्तु खोतिहर एवं तुरान प्रदेश के इ.स.पूर्व २००० के दौर में कई आऊटलियर इन्सानों में मौजूद है। (फिगर-२)

प्राचीन डीएनए से जुड़ी कांस्यपूर्व कालीन ग्रुप के साथ ही West Siberian HG का इस्तेमाल करके इ.स.पूर्व २००० से १४०० आ दौरान पूर्व योराप एवं ट्रान्स उरल स्टेप इस विस्तृत इलाके में तकरीबन एक जिनसी आनुवांशिकता के लोग रहते थे। (Steppe MLBA) (१७)। इस प्रदेश के अलग अलग समूहों में से शेष व्यक्ति बहुतसे व्यक्ति के नमूने एवं अन्य इस्तेमाल के साहित्य सूरनाया, पेट्रोका, सिंतस्था और ॲन्ट्रोनोहो कॉम्पलेक्स इस स्थान में प्राप्त हुए है और उस सबके बिच Steppe EMBA आनुवांशिकता एवं योरोप की मध्य अश्मयुगीन खेतिहर आनुवांशिकता इन दोनों से मिलकर संमिश्र आनुवांशिकता प्राप्त हुई है।

(Europe MN) यह अनुसंधान पहले के अनुसंधान के लिए अतिरिक्त जानकारी है। जिसमें कहा गया है कि, शुरुआत में पूर्व योरोपियन समूहों के पश्चिम दिशा से गतिविधि हो गई थी। और योरोप के स्थानिक खेतिहर के साथ मिलकर उसके बाद उन्होंने उरल के परे फिर पूरब दिशा से वापिस स्थानान्तरण चालू किया था। (६,१६,३१) हमारे नये डाटा सेट से हमें यह समझना और भी आसान हो गया कि, वर्तमान के कझाकस्तान एवं उसके पूरब का रशिया मिनूसिंग घाटी में Steppe MLBA इस आनुवांशिक समूह का विस्तार समझना आसान हो गया और ऐसा करते हुये इसके पहले ना जाँचे गये बहुत से स्थानों की खोज लेने में हमें

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

सहायता हो गई। इसके पहले अनुसंधान में जो कुछ सॅम्पल इस्तेमाल किया गया है वे तमाम Steppe MLBA West इस आनुवांशिक ग्रुप में मौजूद है। जिसमें Europe MN इस आनुवांशिकता का तकरीबन २६% मात्रा मौजूद है, तो Steppe EMBA इस आनुवांशिकता की मात्रा तकरीबन ७४% है। पहले विचार में ना लिये हुए Steppe MLBA East इस समूह को भी हमने हमारे नये डाटा के आधार पर पेश कर सकते है। यह समूह West Siberian HG से जुड़ी आनुवांशिकता से तकरीबन ८% से भिन्न है। (P= ७ x १०$^{-६}$ 9pAdm मुताबिक) और अन्य वंश के साथ मात्र यह ग्रुप इतना भिन्न नहीं है। जिससे यह दिखाई देता है कि, Steppe MLBA West यह आनुवांशिकता वहन करनेवाले लोग पूरब की ओर खिसकते हुये West Siberian HG से जुड़ी आनुवांशिक समूह के साथ जाकर मिल गये।

तुरान/ईरान समान इस हिस्से की सीमा प्रात के व्यक्ति (आऊटलिअर व्यक्ती) इसके बारे में ज्यादा जानकारी दे सकते है।

पहले सिंतस्था संस्कृति के कामेनयी अंबर V दफनभूमि में नये सिरे से प्राप्त ५० व्यक्ति के डीएनए अनुसंधान से पहले ४० व्यक्ति की आनुवांशिक गुट के साथ आऊटलिअर के (सीमा प्रान्त के) ३ ग्रुप उजागर हुये है। उस आऊटलेअर्स में Steppe EMBA, West Siberian HG या East Asian से जुड़ी आनुवांशिकता की मात्रा बड़ी मात्रा में पाप्त हुये है। (और उसका दौर अन्य व्यक्ति के समकालीन है।), इसका मतलब यह है कि, इस उपजाऊ स्थानों पर अलग अलग वांशिकता के लोग साथ साथ रहते थे।

अगला मुद्दा यह है कि, स्टेप दक्खन एवं पूरब की ओर इ.स.पूर्व १६०० से १५०० के दौरान तीन स्थानों से (दास्तीकोझी, तालडायसी एवं किझबुलक) सॅम्पल यह दर्शाता है कि, उनमें ईरानी खेतिहर से जुड़ी आनुवांशिकता का संमिश्रण बड़ी मात्रा में था। इसका अर्थ यह है कि, तुरान से स्टेप प्रदेश में उत्तर दिशा में आनुवांशिक प्रवाह हुआ है और इसके साथ ही Steppe MLBA आनुवांशिकता के लोगो का स्थानान्तरण तुरान से दक्खन एशिया में हुआ है। अनुसंधान में उजागर हुये कुछ बातें यही स्पष्ट करती है कि, अन्य एशिया माऊन्टेन, कॉरिडोर (अन्तर एशियायी पर्बतीय महामार्ग) इस मार्ग से उत्तर एवं दक्खन इन दोनों दिशा से स्टेप प्रदेश से मानवी समूह का बड़ी मात्रा में स्थानान्तरण

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

हुआ है। (३२, ३३)

तीसरा मुद्दा इ.स.पूर्व १७०० से १५०० के दौरान कई स्थानों के सम्पल हमारी जाँच में खरे उतरे है। (मैतान, कैरान, ओय झायलाऊ एवं झेवाकिन्सकी) जो सॅम्पल यह दर्शाते है कि, उनमें से तकरीबन २५% इतनी आनुवांशिकता इस मुख्य स्रोत से बनी थी जिस स्रोत के वंशज वर्तमान पूर्व एशियाई (ईस्ट एशियन्स) एवं शेष Steppe MLBA वंश के लोग है। इस तरह आनुवांशिक ढाँचा (Ancestry Profile) यह उत्तरकालीन कांस्ययुग विस्तृत प्रदेश में फैला हुआ था, जो हमने जाँचे हुये झेवाकिन्सकी एवं अन्य स्थानों पर इ.स.पूर्व १५०० से १००० इस काल के सॅम्पल से स्पष्ट होता है और वह लोहयुगकालीन सायशोसर्माथीन दौर से भी मेल करता है (३४)। हमारा निरीक्षण इस बात से इन्कार करता है कि, इ.स.पूर्व १००० से सन १००० इस दौर में शक, कुषाण एवं हून इन्होंने वर्तमान के दक्खन एशिया के लोगों की आनुवांशिकता में स्टेप आनुवांशिकता (युरेशियन ब्राह्मणों की आनुवांशिकता लाई थी ऐसा जो पहले समझा जाता था उसका निपटारा होता है। और उसमें पूर्व एशियाई आनुवांशिकता हमारे अध्ययन में अत्यल्प मात्रा में प्राप्त हुई है। ऐसा हो सकता है कि, मध्य एशिया के कुछ सॅम्पल ना प्राप्त होने से समूहों के अत्यल्प मात्रा में पूर्व एशियाई लोगों से संमिश्रण होकर वे बाद में दक्खन आशिया में स्थानान्तरित हुये होंगे। फिर भी दक्खन आशिया के स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट ॲन्सेस्ट्री (घुमन्तु युरेशियन की आनुवांशिकता) इसका मूल यह इ.स.पूर्व २००० में स्टेप प्रदेश से दक्खन की ओर स्थानान्तरित होनेवाले लोगों की आनुवांशिकता में छिपा है। क्योंकि हमने हमारे अनुसंधान में यह साफ किय है कि, यह आनुवांशिकता स्वात घाटी की इ.स.पूर्व १००० के आसपास लोहयुगीन व्यक्ति में प्राप्त हुई है। (इसपर निर्भर ज्यादा विमर्श निम्नांकित है।)

दक्खन एशिया :-

इसके पहले इस अनुसंधान में यह दिखाया गया था कि, भारतीय आनुवांशिकता यह पश्चिमी योरोप की आनुवांशिकता का दक्खन आशिया की आनुवांशिकता के साथ अलग अलग मात्रा में संमिश्रण होकर भारतीय आनुवांशिकता तैयार हुई है- इसकी मात्रा प्राचीन समूहों का सांख्यिकीय पुनर्रचना दो हिस्सों में करके इस तरह

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

के मॉडेल में बताया गया था। (ANI व ASI- अर्थात एशियायी उत्तर भारतीय एवं एशियाई दक्खन भारतीय) और उनका संमिश्रण शायद इ.स.पूर्व २००० के बाद हुआ था ऐसा कहा गया है। (३५,३६) प्राचीन डीएनए अनुसंधान ने इसके भी आगे जाकर यह जानकारी बाहर निकाली है कि, भारतीय वंश के लोगों से आनुवांशिकता असल में कम से कम ३ प्राचीन वांशिक समूहों से निर्माण हुई है। (१७) और प्राचीन ईरानी खेतिहर Steppe EMBA एवं Onge इन समूहों से भारतीय लोग आनुवांशिकता से जुड़े हैं।

वांशिक संमिश्रण हुये उपरोक्त मामलों पर रोशनी डालने के लिए कम से कम तीन प्राचीन आनुवांशिक समूह के दो समूहों में (ANI एवं ASI) इन दो समूहों में किस तरह तब्दीली हो गई इसकी छानबीन करने के लिए हमने 9pAdm इस तन्त्र का इस्तेमाल किया -AASI ईरान/तुरान इन समूहों से जुड़े तमाम प्राचीन सॅम्पल और सभी प्राचीन ग्रुप के सॅम्पल इसका 9pAdm इस तन्त्र की सहायता से उगम के समूह को खोजना शुरु किया। क्योंकि हमारे अनुसंधान के मुताबिक तीन ग्रुप दक्खन एशिया के लोगों का उगमस्थान है। दक्खन एशिया के टेस्ट पाप्युलेशन के तौर पर अर्वाचीन ANI एक भारतीय जिसमें आनुवांशिकता मौजूद हो Cline Group लिया (पंजाबी-DG), अत्याधिक ASI आनुवांशिकता का यह एक ग्रुप लिया (Mala DG) एवं पूर्व लोहयुगीन स्वात व्हॅली के सॅम्पल लिये (Swat Protohistoric Grave Type-SPGT), और प्राचीन ऐतिहासिक स्वात व्हॅली के सॅम्पल (Butkara IA) लिये। फिगर ३A यह दर्शाती है कि, उपरोक्त चारों एशियन ग्रुप जो इस अनसंधान के लिए लिये गये है वे ASI, Indus Periphery एवं Steppe MLBA इस आनुवांशिकता का संमिश्रण है। (अगले ॲनालिसिस में इसलिए हमने Steppe MLBA को मिलाया। दक्खन एशिया के लोगों में स्टेप ॲन्सेस्ट्री के ज्यादा मात्रा में वांशिक स्रोत है। (Steppe MLBA) यह Y क्रोमोझोम उपरोक्त सबूतों से स्पष्ट होता है। क्योंकि Z93 सबटाईब पर R1a यह हॅप्लोग्रुप वर्तमान के दक्खन आशिया में आमतौर पर प्राप्त होता है। (३७,३८) और खास बात यह है कि Steppe MLBA इस आनुवंशिकता में वह ज्यादा मात्रा में प्राप्त होता है। (६८%) (१६) किन्तु Steppe EMBA इनमें बिलकुल प्राप्त नहीं होता है। (हमारे डाटा में उसकी मात्रा शून्य है।)।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

तमाम भारतीय वंश की ज्यादा मात्रा में जानकारी प्राप्त हो इसलिए दक्खन एशिया के अलग अलग वांशिक भिन्नता के २४६ ग्रुप का पहले ही प्रकाशित हुआ जिनोमवाईज डाटा सहायता के लिए लिया। (II)। उनमें से १४० ग्रुप इस अनुसंधान के लिए हमने चुन लिये जो भारतीय वंश को (Indian Cline) दर्शाते है। (अन्य ग्रुप भारतीय वंश से मेल नहीं करते, क्योंकि वे एक तो आफ्रिकी या पूर्व एशियाई आनुवांशिकता से जुड़े है या उनकी सॅम्पल साईज छोटी है या उनमें अलग अलग आनुवांशिकता के लोग है।) इन तीन ग्रुप की आनुवांशिकता की मात्रा ढूँढने के लिए प्री-ग्रुप 9pAdm इस तंत्र का इस्तेमाल करना सांख्यिकिय दृष्टि से पेचीदा होनेवाला है, इसलिए हमने नया तरीका विकसित किया, जिससे तमाम भारतीय समूहों के आनुवांशिक डाटा चढ़ते क्रम के स्वरुप में इकट्ठे हम रच सकते है। हमार ॲनालिसिस यह प्रमाणित करता है कि, भारतीय वंश के तमाम ग्रुप में से ज्यादातर ग्रुप दो समूहों के संमिश्रण से इकट्ठे मॉडल के तौर पर दिखा सकते है। और उनके ॲनालिसिस उनके भीतर वांशिक ताल्लुक कैसे सक्रिय थे इसका अनुमान उससे निकाल सकते है। ASI में इंडस पेरीफेरी के कम से कम मात्रा जाँचने के लिए Steppe MLBA का कम से कम मात्रा शून्य तक लेने से हमें तकरीबन ३९% यह नतीजा प्राप्त हुआ। ANI में Indus Periphery आनुवांशिकता का ज्यादा से ज्यादा मात्रा ढूंढने के लिए AASI की मात्रा कम से कम शून्य किया तो हमें नतीजा तकरीबन ७२% प्राप्त हो गये। असल में Indus Periphery से जुड़ी आनुवांशिकता के पास गणितीय दृष्टि से ज्यादा से ज्यादा नज़दीकी दक्खन भारत के चार जनजातिय समूह (पल्लियार, उल्लादान, मलायमव आदियान) इन चार समूदायों में प्राप्त हुआ। और उत्तर पाकिस्तान (कुलथ के) लोकसमूह में हमें उसकी मात्रा बहुत ही अल्प प्राप्त हुआ। इसका अर्थ यह है कि, वर्तमान दक्खन एशिया ASI एवं ANI यह दो समूह स्वतन्त्र थे एवं वे आनुवांशिक दृष्टि से जिसका संमिश्रण नहीं हुआ ऐसे लोगों के दो अलग अलग गुट है।

9pGraph को-मॉडलिंग इस्तेमाल करके हम एक संमिश्र ग्राफ पल्लियार (ASI के प्रातिनिधिक लोक) और जुआंग (भारत के आस्ट्रो एशियाटिक भाषा बोलनेवाले समूह जिनमें पश्चिम युरेशियन वांशिकता की मात्रा बहुत अल्प है।) इन दोनों संमिश्र ग्राफ का संयुक्त अध्ययन करने पर यह नज़र आता कि, ASI में ईरानी

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

खेतिहर से जुड़ी आनुवांशिकता तकरीबन २७% और जुआंग इनमें मात्र ईरानी संमिश्रण नहीं हुआ उनमें केवल AASI की ही आनुवांशिकता मौजूद है। (फिगर-३) यह मॉडल यह भी दर्शाता है कि, प्राचीन ईरानी खेतिहर आनुवांशिकता में AASI आनुवांशिकता का संमिश्रण कम रखा फिर भी यह मॉडल ॲडमिक्सचर ग्राफ से मेल करता है और जिससे इसका मतलब यह होता है कि, यह आनुवांशिक पॅटर्न हमें देखने को मिलता है वह उत्तर से दक्खन एशिया में जिन का फ्लो होने से निर्माण हुये है। और उलटे दिशा से मात्र जिन फ्लो नहीं हुआ (फिगर-३) अतिरिक्त रह गया। भारत के लिए बिलकुल मिलता जुलता उचित ॲडमिक्सचर ग्राफ भी यही दर्शाता है कि, भारत के अतिप्राचीन वांशिक समूह मूलनिवासी शिकारी जनजाति भी प्राचीन एशियाई मानव के वांशिक शाखा है। जो ईस्ट एशियन Onge तथा ऑस्ट्रेलियन मूलनिवासी पुरखों के वांशिक शाखा एकदूसरे से जब जुदा हो गई थे उसी वक्त यह शाखा भी एकदूसरे से विभक्त हो गई थी। इस अनुसंधान में यह जानकारी इन मॉडेल्स की भी मिलती जुलती हो सकती है, जिसमें एशियाई लोगों का सामूहिक पूरब का विस्तार होते वक्त उनसे वर्तमान के तमाम पूर्व एशिया के एवं दक्खन एशिया के (पश्चिम युरेशियन लोगों के साथ आनुवांशिक संमिश्रण होने से पहले बिलकुल कम समय में उन्होंने AASI, ईस्ट एशियन्स एवं Onge एवं ऑस्ट्रेलियन्स इन वांशिक समूहों की निर्मिती की। (१९)

ॲडमिक्सचर लिंकेज डिसइक्वीयली ब्रीयम इस तंत्र का इस्तेमाल करके दक्खन भारतीय पल्लियार इस समूह के लोगों के साथ ईरानी खेतिहर एवं AASI आनुवांशिकता के लोगों का आनुवांशिक सम्बन्ध यह १०७ +११ इतनी पीढ़ी के पहले हुआ है, यदि एक पीढ़ी की उम्र २८ बरस मान ले तो यह दौर इ.स.पूर्व १७०० से ४०० इस काल से ९५% मेल करता है। (२८)। यह दौर इसके पहले कलश के व्यक्ति के साथ जोड़े गये ११०+१२ पीढ़ी के पहले दौर से जुड़ता है। (३९) यह निष्कर्ष यह भी कहते है कि, इ.स.पूर्व २००० में ASI एवं ANI ऐसे कुछ ग्रुप नहीं थे। और यह अनुसंधान यह भी कहता है कि, इ.स.पूर्व ३००० के शुरुआत में पश्चिम एशियाई लोगों का विस्तार भारतीय महाद्विप में होते वक्त ASI यह ग्रुप तैयार हो गया। (जिसमें यह लोग स्थानिक लोगों से मिलकर दक्खन भारत में शुरुआत को खेतिहार से जुड़ी अर्थव्यवस्था की शुरुआत की। (४०) या

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

सिंधु संस्कृति का पतन होने के बाद वहाँ के लोगों का पूरब दिशा की ओर स्थानान्तरण होने से भी यह ग्रुप तैयार हो गया होगा ऐसा हम कह सकते है। (४१) आगे और भी सबूत यह स्पष्ट करते है कि, ASI का कांस्ययुग यह हमारे अनुसंधान में जुआंग समान भारत के आस्ट्रो एशियाटिक भाषा समूह बोलनेवाले लोगों ने घेर लिया है। जिनमें ASI की तुलना में AASI की मात्रा ईरानी खेतिहर आनुवांशिकता की मात्रा से भी अधिक है। (फिगर ३ अतिरिक्त सामग्री) इ.स.पूर्व ३००० के आसपास दक्खन एशिया में आये मानवी समूहों में से आस्ट्रो-एशियाटिक भाषा बोलनेवाले लोग विकसित हुये। (हिल कल्टीवेशन सिस्टीम के साथ ऑस्ट्रो-एशियाटीक भाषा के विस्तारपर यह अनुमान निर्भर है।) (२०) और हमारा आनुवांशिक निष्कर्ष यह दर्शाता है कि, जब आस्ट्रो-एशियाटिक भाषा बोलनेवाले लोग आये तब वे ईरानी खेतिहर आनुवांशिकता की तुलना से AASI आनुवांशिकता ज्यादा मात्रा में मिश्रित हो गई। जो दर्शाता है कि, उपमहाद्विप में ASI यह लोग तब तक सबसे ज्यादा मात्रा में फैले नहीं थे।

अन्त में कहना हो तो स्वात घाटी का दौर इ.स.पूर्व १२०० से इसवीसन का पहला साल यह हमारे अनुसंधान का दौर हुआ। फिर भी गोणूर एवं शहर-ए-सोख्ता इन स्थानों पर इंडस पेरीफेरी के सॅम्पल की आनुवंशिकता यह प्राचीन सॅम्पल के समान ही (SPGT) पाई गई। किन्तु उनमें Steppe MLBA आनुवांशिकता की मात्रा कम प्राप्त हुई। (तकरीबन २२%) यह निष्कर्ष सीधा-सीधा यह प्रमाण दे रहा है कि, Steppe MLBA यह आनुवांशिकता दक्खन एशिया के लोगों के साथ इ.स.पूर्व दूसरी सहस्राब्दी में मिश्रित हुई। और Steppe MABA इस आनुवांशिकता के लोगों में तुरान मार्फत दक्खन दिशा की ओर स्थानान्तरण भी इसी वक्त हुआ। और यही स्थानान्तरण इ.स.पूर्व २००० से १५०० के दौरान अहम MABA प्लस्टर के स्वरुप में आऊटलेअर के जरिये हुआ। स्वात प्रदेश के बाद के काल के सॅम्पल इ.स.पूर्व पहिले सहस्राब्दी का होकर उनमें Steppe AASI आनुवांशिकता प्रमाण ज्यादा है और यह प्रमाण भारतीय आनुवांशिकता में भी इसी तरह नज़र आता है। जो यह दर्शाता है कि, बाद के काल में स्टेप आनुवांशिकता के लोगों का इस प्रदेश में बड़ी मात्रा में स्थानान्तरण हुआ और उनका बाद के काल में ASI आनुवांशिकता के लोगों से

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

संमिश्रण हुआ।

पुरातत्त्वशास्त्रीय एवं भाषा शास्त्रीय आधार :-

हमारा अनुसंधान यह कहता है कि, ईरानी खेतिहर एवं दक्खन एशियाई शिकारी वंश के लोग (Indus Periphery) यह इ.स.पूर्व ३ री सहस्राब्दी में सिंधु प्रदेश में स्थापित हो गये थे और उनमें ईरानी खेतिहर आनुवांशिकता का एवं AASI आनुवांशिकता के लोग यह आमतौर पर इ.स. पूर्व ४७०० से ३००० के दौरान जाकर मिले। जो यह दर्शाता है कि, ईरानी खेतिहर से जुड़े लोग यह सिंधु संस्कृति में इ.स. पूर्व ४ थी सहस्राब्दी में जाकर बसे थे। फिर भी दक्खन एशिया में इसके पहले ईरानी खेतिहर से जुड़ी आनुवांशिकता बड़ी मात्रा में फैली होगी क्योंकि इ.स.पूर्व ७ वी सहस्राब्दी से दक्खन एशिया में गेहू एवं बाजरा की खेती और इसके साथ ही भेड़ बकरी पालन की पद्धति भी विस्तारित हो गई थी। यह सिंधु संस्कृति के आसपास के मेहरगढ़ समान पहाड़ी इलाके से स्पष्ट होता है। (२०,२१) और इस तरह की घरेलु जीवन शैली उन लोगों ने अपने स्थानान्तरण के साथ अलग अलग दिशा में फैलाई होगी। खेती व्यवस्था से जुड़ी इन मानव समूह का इतिहास कुछ भी हो जेनेटिक डाटा यही दिखाता है कि, Indus Periphery से जुड़ी आनुवांशिकता ने ANI एवं ASI इन दो समूहों को बड़ी मात्रा में बढ़ाया है। और यह दोनों समूह इ.स.पूर्व २ री सहस्राब्दी में सिंधु संस्कृति के पतन के पश्चात् तथा उनके बाद भारतीय उपखण्ड में उत्तर भारत के सेटलमेंट पॅटर्न में बड़े पैमाने पर बदलाव होने से तैयार हुआ है। (४१) एक अजीबोगरीब परिकल्पना यह है कि, Steppe MLBA इस वंश के लोग दक्खन की ओर आये एवं सिंधु संस्कृति के पतन के समय Indus Periphery वंश के समूह के साथ मिश्रित हो गये और उन्होंने ANI (एशियाटिक नॉर्थ इंडियन्स) यह ग्रुप तैयार किया, बाद में Indus Periphery के वंश का समूह और आगे दक्खन की ओर एवं पूरब की ओर खिसकते हुये गये और भारतीय उपद्विप के AASI समूह के साथ मिश्रित होकर ASI (एशियाटिक साऊथ इंडियन्स) यह ग्रुप तैयार किया। यह विचार इससे पुख्ता किया जाता है कि, सिंधु संस्कृति लोगों का दक्खन की ओर विस्तार होने से उन्होंने द्रविडी भाषा के लोगों को निचे धकेल दिया (४२, ४४)

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

किन्तु दक्खन की द्रविडी भाषा यह प्रमुखता से भारतीय उपखण्ड की सिंधु पूर्व कालीन भाषा से विकसित होने से उपरोक्त विचार सहमत हो सकते है, क्योंकि ASI आनुवांशिकता यह भी प्रमुखता से AASI आनुवांशिकता से ही विकसित हुई है।

भारत एवं योरोप में बोले जानेवाले इंडो-योरोपियन भाषा समूहों के उगम के सवाल पर भी हमारा अनुसंधान रोशनी डालता है। (४५) यह ध्यान में लेने लायक है कि, इंडो-योरोपियन भाषा बोलनेवाले लोग वर्तमान में योरोप एवं दक्खन एशिया में ज्यादा मात्रा में रहते है और उनमें यामनया स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (Steppe EMBA) इस आनुवांशिकता की मात्रा भी उनमें ज्यादा है। यह जो दर्शाता है कि, "लेट प्रोटो-इंडो-युरोपियन्स" (उत्तरकालीन प्राथमिक इंडो-युरोपियन्स भाषा)- यह भाषा तमाम इंडो-युरोपियन भाषा समूह की प्राथमिक भाषा है। और यह यामनया भाषा है। (४६) किन्तु विभिन्न डीएनए अनुसंधान ने मात्र स्टेप पदेश के वहाँ के लोगों की स्थानान्तरण की दिशा पश्चिम की ओर दर्शाई है। जिससे यह आनुवांशिकता योरोप में फैल गई। (५,३१) किन्तु दक्खन एशिया में मात्र इस तरह की आनुवांशिक प्रसार का सबूत प्राचीन डीएनए अनुसंधान से प्राप्त नहीं हुआ। इ.स.पूर्व दुसरी सहस्राब्दी में Steppe MLBA समूह की आनुवांशिकता की मात्रा हमारे अध्ययन में बड़ी मात्रा में प्राप्त हुई है। और यह बात पुरातत्विक सबूतों से सिद्ध हुई है कि, मध्यकालीन से उत्तर कालीन कांस्ययुग के स्टेप प्रदेश के कझाक में संस्कृति एवं भारत की प्राचीन वैदिक संस्कृति इनमें ताल्लुक है यह आगे दिया गया है। (४६)

स्टेप आनुवांशिकता एवं इंडो-योरोपियन कल्चर इनके ताल्लुकात के बारे में हमारे अनुसंधान में भी एक अलग ही रोशनी डाली गई है। इंडियन आनुवांशिक गुट में तमाम १४० लोगों का डाटा जब हमने ANI एवं ASI इनका संमिश्रण जाँचने के लिए 9pAdm टेस्ट का इस्तेमाल किया तब उनमें से १० ग्रुप में हमें Indus Periphery आनुवांशिकता की तुलना में Steppe MLBA इस आनुवांशिकता की मात्रा खास तौर पर बढ़ी हुई नज़र आई और निर्धारित मॉडेल्स की दृष्टि से बहुत ज्यादा इस्तेमाल किया था। ($Z \geq 3$)। ब्राह्मण तिवारी ($P=2 \times 10^{-5}$) एवं Brahmin UP ($P= 4 \times 10^{-5}$) इनमें हमें स्ट्राँग सिग्नल प्राप्त हुये और

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

आमतौर पर उत्तर भारत के पारम्पारिक पुरोहित के ग्रुप में भी इसी तरह बढ़ोत्तरी दिखाई दी। (Z≥3) ब्राह्मण या भूमिहार इनके ग्रुप तलना से उत्तर भारतीयों के ग्रुप से कम याने ७४ इतने एवं अनुपात में केवल ११% इतना ही हमारी जाँच में था।) अलबत्ता उक्खन भारत के ग्रुप के ब्राह्मण एवं भूमिहार इनमें स्टेप आनुवंशिकता का प्रमाण प्रतीकात्मक पाया गया, क्योंकि यह दोनों ही लोग संस्कृत में लिखे गये ग्रन्थ के रखवालदार है। इसका खुलासा इस तरह कर सकते है कि, इ.स.पूर्व दूसरी सहस्राब्दी में Steppe MLBA आनुवांशिकता के लोग जब दक्खन आशिया में आये तब उन्होंने बड़ी–बड़ी जनसंख्या के अलग अलग समूह (ग्रुप्स) बनाये जिसमें स्टेप आनुवांशिकता की मात्रा कम ज्याद थी। किन्तु उनमें से स्टेप आनुवांशिकता का बहुत ज्यादा मात्रा के एक समूह ने प्राचीन वैदिक संस्कृति फैलाने में अहम भूमिका निभाई है। दक्खन एशिया में सगोत्रीय विवाह की मात्रा बहुत ज्यादा होने से इस तरीके से हजारों सालों पहले भारत के समूहों को पड़ोस–पड़ोस में रहने के बावजूद भी एकदूसरे से अलग रखा। (३५) इसी तरह की संरचना भारतीय लोगों में अब भी बरकरार है।

अन्त में युरेशिया के दो उपखण्ड के प्राचीन इतिहास की समानता के अहम जानकारी हम प्रस्तुत करनेवाल है। : वे दो उपखण्ड हैं दक्खन एशिया एवं योरोप। इन दोनों भागों में पश्चिम एशियायी तंत्रज्ञान का उगम इ.स.पूर्व ७ वी से ६ वी सहस्राब्दी में पूरब से हुआ है। (फिगर ४)। दक्खन एशिया में खेती का प्रचार ईरानी पहाड़ी के रास्ते से हुआ है और योरोप में पश्चिम अनातोलिया मार्ग से हुआ है और इन दोनों का प्रसार लोगों के स्थानान्तरण से हुआ है। इसी तरह आनेवाले खेतिहर तथा स्थानिक शिकारी समूहों का संमिश्रण होकर मिश्रित आबादी तैयार हो गई। दक्खन एशिया में उसका असर याने Indus Periphry आनुवांशिकता एवं ASI आनुवांशिकता निर्माण हो गई। तो योरोप में मध्य अश्मयुगीन जेनेटिक क्लस्टर से बनी हुई Europe MN यह आनुवांशिकता तैयार हो गई। योरोप एवं दक्खन एशिया इन दोनों स्थानों से उपरोक्त तरीके से खेतिहर एवं शिकारी समूहों का आपस में संमिश्रण होने के बाद यामनया स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (यामनया नाम का स्टेप प्रान्त के घुमन्तु युरेशियन लोग) यह लोग उपरोक्त दोनों ही स्थानों पर आ गये और स्थानिक जनसमूहों में मिलकर उनका संमिश्र समूह तैयार किया। और

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

उस संमिश्र समूहों ने पहले के स्थानिक खेतिहर समूहों के साथ मिलकर आनुवांशिक समूहिकरण किया और जो हमको योरोप में भुने हुये बर्तन एव मध्य योरोप में Bell Baker समान साहित्य निर्माण किये। तो दक्खन एशिया में ANI जनेटिक क्लस्टर निर्माण किये। दक्खन एशिया के लोगों के साथ एवं भाषा की दृष्टि से जुड़ी ईरानी जगत के बारे में भविष्य में और भी अनुसंधान होंगे। और वे इस विषयपर ज्यादा रोशनी डालेंगे तथा इस अनुसंधान ने जो मॉडल प्रस्तुत किया है उससे और भी ज्यादा जानकारी मिलेगी।

*** फिगर के बारे में जानकारी :-**

फिगर १-प्राचीन डीएनए डाटा की छान-बीन

(A) हमारे ॲनालिसिस में लिये गये नये नमूनों की संख्या एवं उनका कालावधि दर्शाया हुआ है।

(B) उनका स्थान ॲनालिसिस ग्रुपिंग में कलर कोड से दर्शाया हुआ है।

(C) वर्तमान के युरेशियनों को ध्यान में रखकर प्राचीन सॅम्पल के प्रोजेक्शन पीसीए पर ॲक्सिस पर दिया गया है।

(D) ॲडमिक्सचर ॲनालिसिस एवं उनके कंपोनंट West Siberian HG, अनातोलियन खेतिहर, ईरानीयन खेतिहर, मूलनिवासी मिक्सिंग एशियन एवं WHG इन्हें सिलसिलेवार निला, नारंगी, भूरा, लाल एवं हरा इन रंगों में दर्शाया गया है। E Y क्रोमोझोम हॅप्लोग्रुप दिखाया गया है।

N- अश्मयुगीन, C- मध्य अश्यमयुगीन, BA- कांस्ययुगीन, IA-लोहयुगीन, H-ऐतिहासिक, E/M/1- प्राचीन मध्यकालीन-उत्तर कालीन, O-आऊटलियर (सीमाप्रान्त)

फिगर २- मॉडेलिंग के नतीजे-

(A) दूर के सात समूहों का संमिश्रण लेकर आधुनिक भारतीय आनुवांशिकता जो हुई है उसे यहाँ भोगोलिक दृष्टि से नक्शे में दिखाया गया है। दुतर्फा (Cline) तरह के आनुवांशिक संमिश्रण समकोन में दिखाया गया है। तो तीन मार्ग का संमिश्रण (Clouds) अण्डाकार में दिखाया गया है।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

(B) दूर के सात समूहों से तैयार होनेवाली आधुनिक भारतीय आनुवांशिकता वृत्तान्त का उम्दा मॉडेल के स्वरुप में भौगोलिक दृष्टि से तैयार किया है। (C) 9pAdm तंत्र का इस्तेमाल करके समूहों के संमिश्रण की मात्रा कितनी है यह A एवं B के स्वरुप में दर्शाई गई है।

फिगर ३– भारतीयों का आनुवांशिक उगम–

(A) पिछले कुछ हजार बरसों में दक्खन एशियाई आनुवांशिकता के चार ग्रुप प्रतिनिधि के तौर पर UpAdm इस तन्त्र का इस्तेमाल किया। (Punjabi. DG, Mala DG, SPGT एवं Butkara IA) यह ग्रुप ONGE, ईरान/तुरान आनुवांशिकता एवं स्टेप आनुवांशिकता इनका यह ग्रुप संमिश्रण आहे और उनके निष्कर्ष में कम से कम P व्हॅल्यू प्राप्त हुई है। सक्रीय मॉडेल्समध्ये केवल Indus Periphery एवं Steppe MLBA इनकी आनुवांशिकता का संमिश्रण प्राप्त हुआ है। (Steppe MLBA West इस ग्रुप में Sintashta MLBA एवं Srubnya यह दो उप गुट हैं।

(B) कूल १४० Cline ग्रुप के लिए हमने Maximum A Posteriori Fits यह मॉडेल लिये। उनमें से सिग्नीफिकंट आऊटलेअर्स (1>1>2) दिखाये गये है। और उनमें से ब्राह्मण एवं भूमिहार (पूरे भरे हुये वृत्त ब्राह्मणों के लिए तो पूरे भरे हुये चौरस भूमिहार लोगों के लिए नक्शे में सांकेतिक रुप में दिखाये गये है।) क्योंकि ब्राह्मण एवं भूमिहार इनमें अन्य ग्रुप की तुलना में स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट से जुड़ी आनुवांशिकता बहुत ज्यादा है और वह पश्चिमी युरेशियन लोगों में वांशिकता की प्रमाण में है।

(C) ॲडमिक्सचर ग्राफ फिट यह नक्श ईरानी खेतिहर आनुवांशिकता का दक्खन आशिया में संमिश्रण दर्शाता है किन्तु AASI से जुड़ी आनुवांशिकतर प्राचीन ईरान में संमिश्रण हुआ था यह नहीं दिखाता है। इस नक्शे के डाटेड लाईन्स यह संमिश्रण कब हुआ यह दर्शाती है।

फिगर ४ A– दोन उपखण्ड के मामलें :–

दक्खन एशिया एवं योरोप इन दोनों खण्ड का प्राचीन इतिहास समान ही है। क्योंकि इन दो उपखण्डों पर एक के पिछे एक मानवी स्थानान्तरण हुये है। पहला

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

स्थानान्तरण इ.स.पूर्व ७ हजार में पूरब से खेतिहर लोगों का हुआ जो स्थानिक शिकारी समूहों में विलीन हो गया एवं दूसरा स्थानान्तरण इ.स.पूर्व ३००० में इंडो-योरोपियन भाषा बोलनेवाले स्टेप लोगों का हुआ। तथा मार्ग में आनेवाले लोगों के साथ संघर्ष करके वे उनमें मिश्रित हो गये। इन दोनों संमिश्रण से वर्तमान दक्खन एशिया एवं योरोप में संमिश्र आनुवांशिकता निर्माण हो गई है। (भारत से योरोप में स्थानिक शिकारी समूहों से जुड़ी आनुवांशिकता का प्रमाण अधिक बदलते हुये स्वरुप का है।) वहाँ का भौगोलिक हालातों से मिलते-जुलते है। उपरोक्त नक्श में जो बिन्दुओं की रेखा दिखाई गई है उसके पूरब से खेती का विस्तार किस तरह हुआ यह दिखाया है। मानवी स्थानान्तरण एवं संमिश्रण तथा आनुवांशिक संमिश्रण, इसके साथ ही भाषा का प्रचार इस नक्शे में बाण से दिखाया गया है।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

अहम मुद्दे का सार

टेबल– इरान/तुरान :

१) अश्मयुगीन एवं कांस्ययुगीन दौर में युरेशिया के दरमियान आनुवांशिकता का प्रचार पश्चिम की ओर से पूरब की ओर दिखाई देता है और पश्चिम की ओर से अनातोलियन खेतिहर से जुड़ी आनुवांशिकता ज्यादा पाई जाती है तो पूरब की ओर से West Siberain HG या AASI इससे जुड़ी आनुवांशिकता ज्यादा पाई जाती है और इन दोनों ही आनुवंशिकता मूल अति प्राचीन झार्गोस के खेतिहर आनुवांशिकता से जुड़ी है। अनातोलियन आनुवांशिकता के विस्तार के साथ खेती तन्त्र का विस्तार भी इस प्रदेश में हुआ है। जिससे यह दिखाई देता है कि, अनातोलियन वंश के लोगों ने खेती पैदावार एवं तंत्रज्ञान का पूर्व एवं पश्चिम इस दोनों ही दिखा से फैलाया। फिर भी इंडस पेरीफेरी सॅम्पल में अनातोलियन खेतिहर से जुड़ी आनुवांशिकता प्राप्त नहीं होती। इससे यह नज़र आता है कि, अलबत्ता अनातोलियन लोगों ने खेती की संकल्पना पूरब के ईरान तक ही सीमित रखी फिर भी उनके खेतिविषयक विचार दक्खन एशिया के अति पूरब के प्रदेश में पहुँचे थे।

२) BMAC के प्राथमिक पॉप्युलेशन यह बड़ी मात्रा में इसके पहले स्थानिक अश्मयुगीन लोगों से बनी थीं और वर्तमान दक्खन एशिया में जो स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट जो आनुवांशिकता दिखाई देती है वह उन लोगों में मौजूद नहीं थी। दक्खन एशिया में प्रसारित होने के अलावा BMAC के लोगों में दक्खन एशिया की आनुवांशिकता का मिश्रण हुआ।

३) आऊटलिअर लोगों का ॲनालिसिस यह दिखाता है कि, इ.स.पूर्व २१०० पहले BMAC के आसपास के प्रदेश में स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट आनुवांशिकता नहीं थी। किन्तु इ.स.पूर्व २१०० से १७०० के दौरान BMAC के समूह के ईर्द–गिर्द स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट आनुवांशिकता के लोग निर्माण हो चुके थे।

४) सिंधु संस्कृति के नजदीकी सांस्कृतिक ताल्लुकात रखनेवाले दो स्थानों से हमने अलग अलग एवं स्पष्ट दो आनुवांशिकता को प्रस्तुत किया हे। वे है ५८% से ८६% ईरानी खेतिहर संमिश्रण हुई एवं थोड़ी मात्रा में अनातोलियन खेतिहर

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

संमिश्रण हुई आनुवांशिकता और १४% से ४२% AASI आनुवांशिकता। एक हजार बरसों बाद हमें इस तरह की आनुवांशिकता सिंधु संस्कृति के पतन पश्चात् निर्माण हुये स्वात घाटी में नज़र आई। जो सिंधु संस्कृति की इंडस पेरिफेरी के रुप में बाद के काल में दर्शाती है और यह संमिश्र आनुवांशिकता इ.स. पूर्व ४७०० से ३००० इस दौर में तैयार हो गई है।

***स्टेप :-**

(१) मध्यकालीन से उत्तर कलीन कांस्य युग में कझाक स्टेप एवं मिनुसिंग घाटी में वेस्टर्न स्टेप (Steppe MLBA West) इस आनुवांशिकता के लोग इसके पहले West Siberian HG आनुवांशिकता के लोगों से उनका संमिश्रण हुआ और उससे Steppe MLBA East यह आनुवांशिक समूह तैयार हुआ।

(२) आऊटलेअर ॲनालिसिस यह दिखाती है कि, इ.स. पूर्व १६०० में मध्य से उत्तर कालीन कांस्ययुगीन कझाक स्टेप में बहुत से लोग उस वक्त ऐसे थे जिनमें तुरान की आनुवांशिकता का संमिश्रण हुआ था। यह आनुवांशिक सबूत यह सिद्ध करता है कि, उस वक्त तुरान से स्टेप में उत्तर दिशा से लोगों का स्थानान्तरण हुआ है।

(३) इ.स.पूर्व १५०० के आसपास कझाक संमिश्रित हुये बहुत से लोग प्राप्त होते है और इसी तरह की आनुवांशिकता शक काल में भी बड़ी मात्रा में सब तरफ दिखाई देती थी। (३४) इस तरह की आनुवांशिकता दक्षिण आशिया के ANI एवं ASI इस ग्रुपमध्ये दिखाई नहीं देती है। जो यह दर्शाता है कि, बाद के काल में दक्षिण एशिया में जो स्टेप आनुवांशिकता सब तरफ बड़ी मात्रा में फैली हुई दिखाई देती है उसकी अहम वजह है स्टेप आनुवांशिकता के लोगों का दक्षिण की ओर हुया स्थानान्तरण है।

*** दक्षिण एशिया :-**

१) प्राचीन दक्षिण एशिया के एवं वर्तमान मॉडेल का बहुत गहराई से अध्ययन करने के बाद हमें इस तरह का एक खास मॉडेल उपलब्ध हुआ है जो भौगोलिक दृष्टि से एवं कुछ वक्त के लिए दक्खन एशिया को लागू होता है। वह मॉडल यानी

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

AASI, Indus Periphery एवं Steppe MLBA दक्खन एशियाई के लिए BMAC यह आनुवांशिक उगम का प्रमुख स्त्रोत है इससे हम इनकार करते है।

२) जिन जनसंख्या से इंडस पेरीफेरी के सॅम्पल लिये थे, उनकी दक्खन एशिया में ANI एवं ASI यह दो ग्रुप तैयार करने में उन्होंने अहम किरदार निभाया है। भारतीय आनुवांशिकता के यह दो सिरे इंडस पेरीफेरी के संमिश्रण के दो हिस्से हैं। वह याने ASI में ३९% एवं ANI में ७२% अब वर्तमान दक्खन आशिया में ऐसे ग्रुप है जिनकी आनुवांशिकता ANI तथा ASI समान ही है।

३) इ.स.पूर्व दूसरी सहस्राब्दी में ANI व ASI का निर्माण हुआ है। मतलब सिंधु संस्कृति के पतन के बाद जो कुछ गतिविधियाँ हो गई थी उनमें से ANI एवं -ASI यह दो समूह तैयार हुये थे।

४) ASI आनुवांशिकता के लोग दक्खन एशिया के पहले शिकारी लोगों से जुड़े नहीं है (AASI) किन्तु उनमें ईरानी खेतिहर की आनुवांशिकता बड़ी मात्रा में प्राप्त होती है। और यह आनुवांशिकता उन्हें सिंधु संस्कृति के जरिये मिली होगी।

****

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

Fig. 1 Overview of ancient DNA data

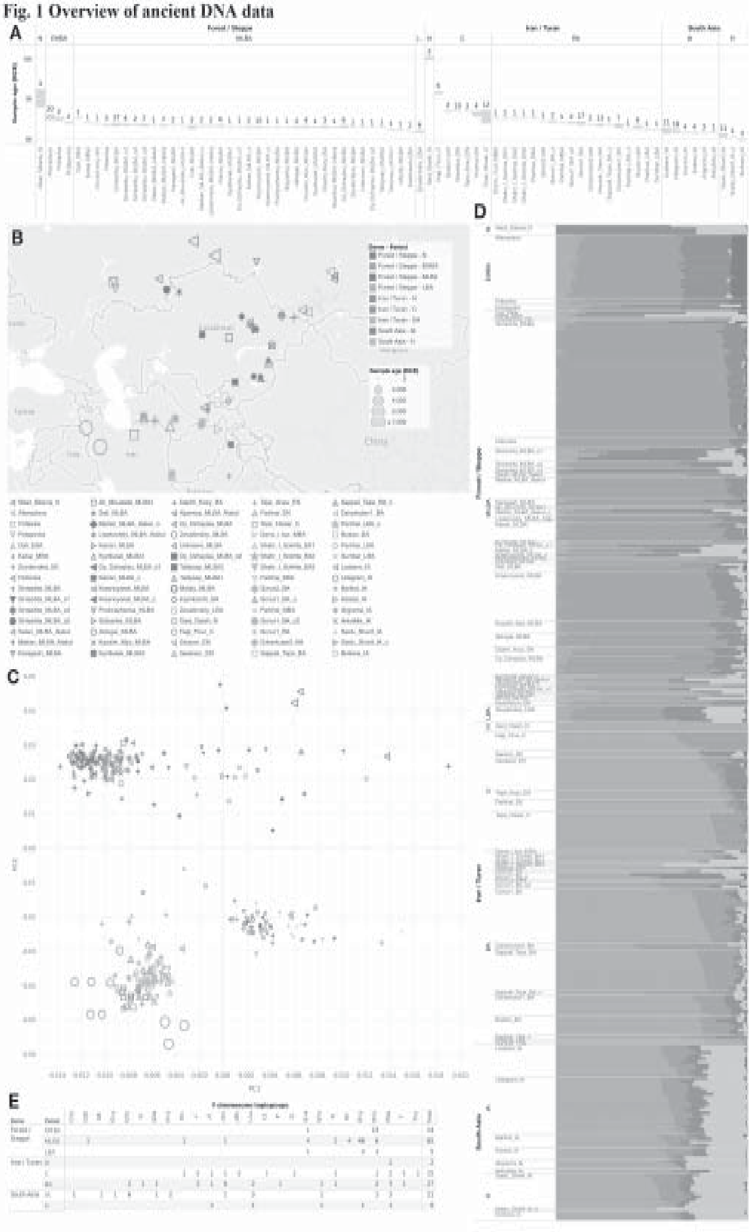

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

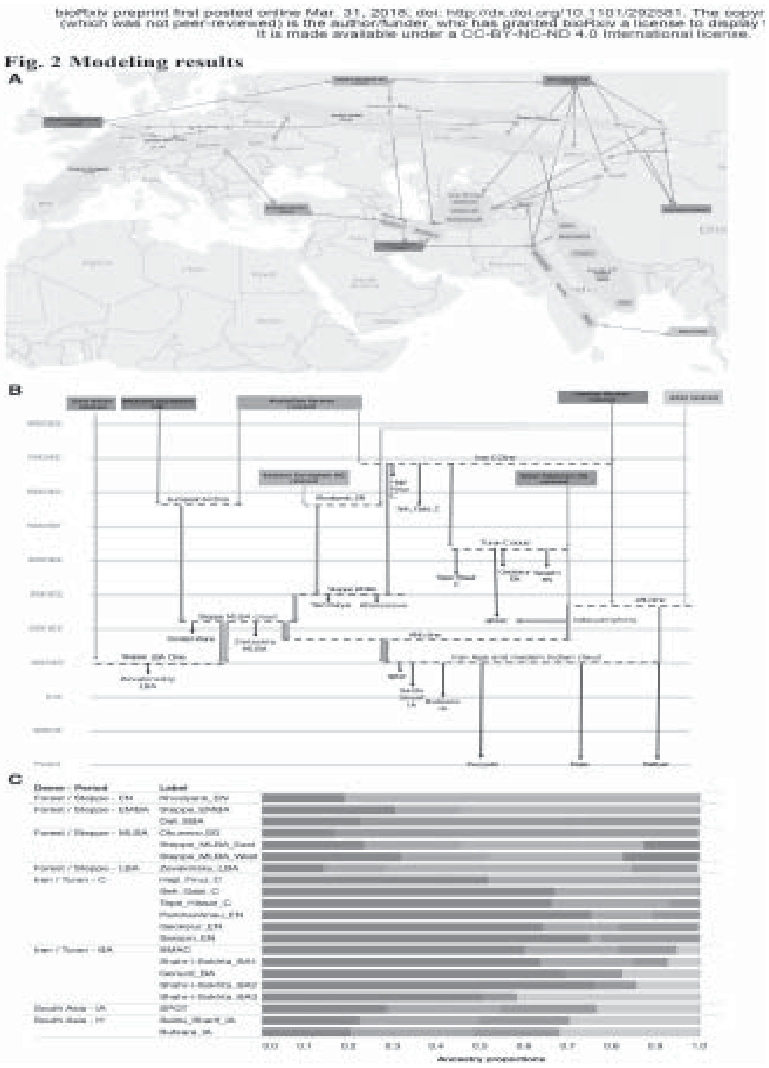

Fig. 3 The genomic origin of Indians

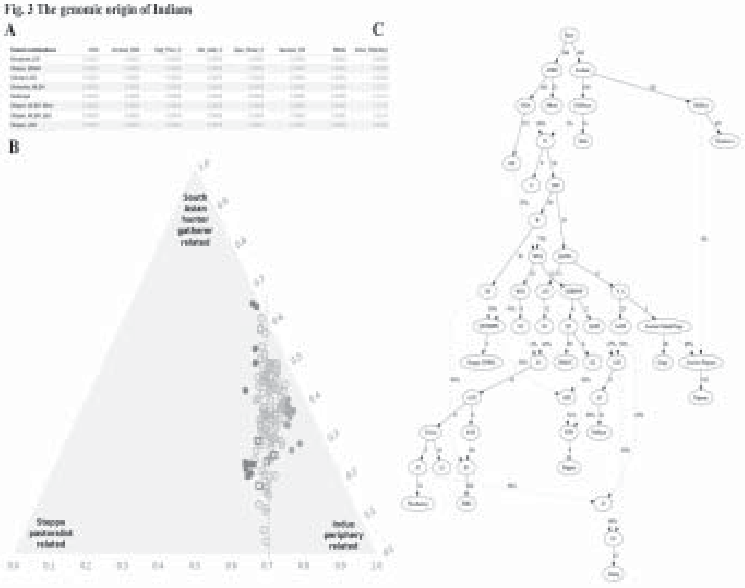

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

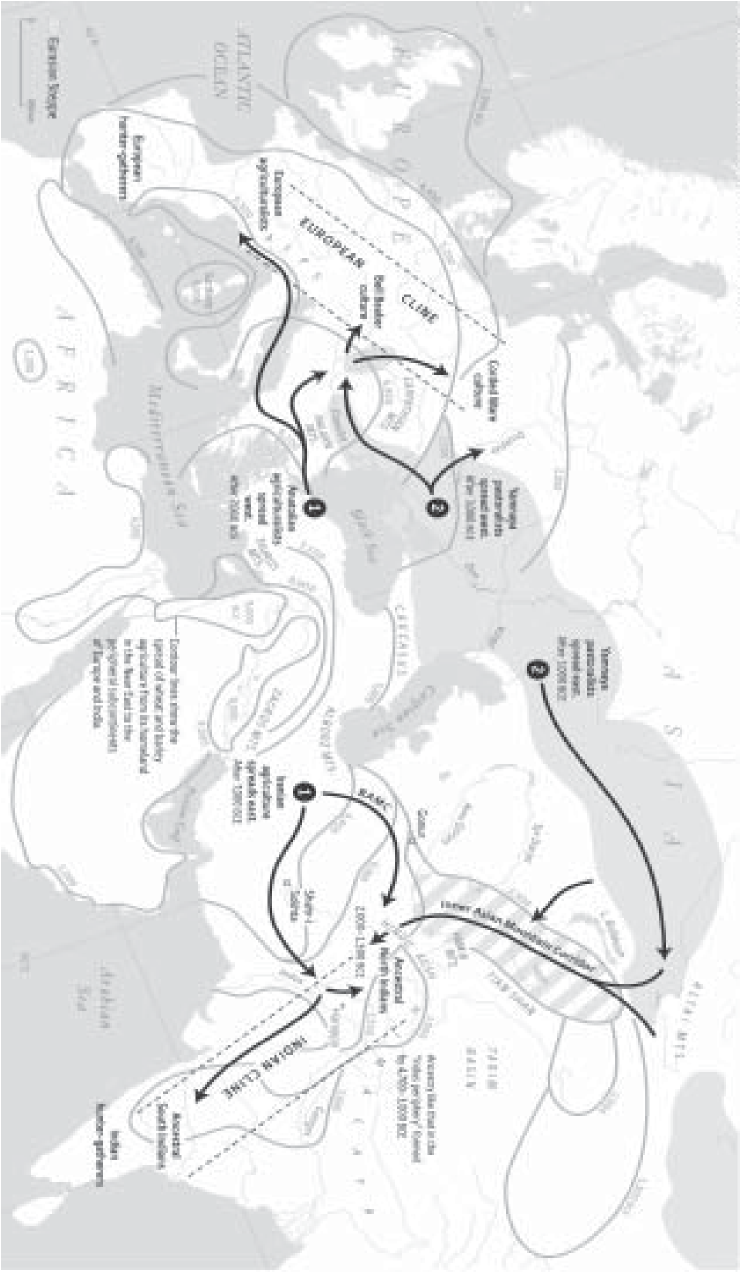

Fig. 4 A Tale of Two Subcontinents

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

MATERIALS AND METHODS

Ancient DNA Laboratory Work We prepared powder from human skeletal remains either at field sites using a method for extracting petrous bone powder by drilling directly from the cranial base (47), or in dedicated clean rooms at Harvard Medical School, University College Dublin, or the Max Planck Institute for Evolutionary Anthropology in Leipzig Germany.

All the molecular work except for that of a single sample (Darra-i-Kur) was carried out at Harvard Medical School (HMS). At HMS, we extracted DNA using a method that is optimized to retain small DNA fragments (1, 2). We converted the DNA into a form that could be sequenced using a double-stranded library preparation protocol, usually pre-treating with the enzyme Uracil-DNA Glycosylase (UDG) to reduce the characteristic cytosine-to-thymine errors in ancient DNA (4). For some libraries, we substituted the MinElute columns used for cleaning up reactions with magnetic beads, and the MinElute column-based PCR cleanup at the end of library preparation with SPRI beads (48, 49). We enriched the libraries both for sequences overlapping mitochondrial DNA (50), and for sequences overlapping about 1.24 million nuclear targets after two rounds of enrichment (5, 17 6, 8). We sequenced the enriched products on an Illumina NextSeq500 using v.2 150 cycle kits for 2×76 cycles and 2×7 cycles, and sequenced up to the point that the expected number of new SNPs covered per 100 additional read pairs sequenced was approximately less than 1.

To analyze the data computationally, we separated read pairs into individuals based on searching for the expected two indices and two barcodes, allowing up to one mismatch from the expected sequence in each case. We removed adapters and merged together sequences requiring a 15 base pair overlap (allowing up to one mismatch), using a modified version of Seqprep (https://github.com/jstjohn/SeqPrep), which takes the highest quality base in the merged regions.

We mapped the resulting single-ended sequences were mapped

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

to the GRCh37 human reference (from the 1000 Genomes project) using the samse command of the Burrows-Wheeler Aligner tool (BWA) (version 0.6.1) (51). We trimmed two nucleotides from the end of each sequence, and then randomly selected a single sequence at each site covered by at least one sequence in each individual to represent their genotype at that position ("pseudo-haploid" genotyping). For each sample we generated "pseudo-haploid" calls at the 1.24 million target sites, selecting sequences that have a minimum mapping quality of MAPQ=10, restricting to nucleotides with a minimum base quality of 20, and trimming 2 base pairs from each end of the reads.

It is made available under a CC-BY-NC-ND 4.0 International license. (which was not peer-reviewed) is the author/funder, who has granted bioRxiv a license to display the preprint in perpetuity.

bioRxiv preprint first posted online Mar. 31, 2018; doi: http://dx.doi.org/10.1101/292581. The copyright holder for this preprint 26 For Darra-i-Kur, we prepared a single-stranded DNA library (L5082) at the Max-Planck-Institute for Evolutionary Anthropology (MPI-EVA) in Leipzig, Germany, as part of a previous project (52).

The previous study only analyzed mitochondrial DNA, and for the current study, the library was enriched for molecules overlapping target the same panel of 1.24 million nuclear targets using two rounds of hybridization capture (5, 6, 8). We sequenced the enriched libraries on 2 lanes of an Illumina HiSeq2500 platform in a double index configuration (2x76 cycles) (53), and we called sites using FreeIbis (54). We merged overlapping paired-end and trimmed using leeHom (55). We used BWA to align the captured data to the human reference genome (GRCh37 from the 1000 Genomes project) (51). Only sequences showing a perfect match to the expected index combination were retained for downstream analyses.

We assessed evidence for ancient DNA authenticity by mea-

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

suring the rate of damage in the first nucleotide (flagging individuals as potentially contaminated if they had a less than 3% cytosine to thymine substitution rate in the first nucleotide for a UDG-treated library and less than 10% substitution rate for a non-UDG-treated library). We used contamix to determine evidence of contamination based on polymorphism in mitochondrial DNA (56), and ANGSD to determine evidence of contamination based on polymorphism on the X chromosome in males (57).

Principal component analysis (PCA) We carried out PCA using the smartpca package of EIGENSOFT 7.2.1 (13). We used default parameters and added two options (lsqproject:YES and numoutlieriter:0 options) in order to project our ancient samples onto the PCA space. We used two basis sets for the projection: the first based on 1,340 present-day Eurasians genotyped on the Affymetrix Human Origins array, and the second based on a subset of 991 present-day West Eurasians (5, 10, 58). These projections are shown repeatedly in the Supplementary Materials, and the whole-Eurasian projection is shown in Fig. 1. As part of this analysis, we also computed the FST between groups using the parameters inbreed:YES and fstonly:YES.

ADMIXTURE clustering analysis Using PLINK2 (59), we first pruned our dataset using the geno 0.7 option to ensure that we only performed our analysis on sites that had at least 70% of samples with a called genotype. We then ran ADMIXTURE (14) with 10 replicates, reporting the replicate with the highest likelihood. We show results for K=6 in Fig. 1, as we found in practice that this provides the most resolution for disambiguating the sources of pre-Chalcolithic ancestry in our newly reported samples.

It is made available under a CC-BY-NC-ND 4.0 International license. (which was not peer-reviewed) is the author/funder, who has granted bioRxiv a license to display the preprint in perpetuity.

f-statistics We used the qp3pop and qpDstat packages in ADMIXTOOLS 69 to compute f3-statistics and f4-statistics. We used the inbreed:YES parameter to compute f3-statistics as a test

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

for admixture with an ancient population as a target, with all published and newly reported ancient genomes as sources. Using the f4Mode:YES parameter in qpDstat, we also computed two sets of f4-symmetry statistics to evaluate if pairs of populations are consistent with forming a clade relative to a comparison population. The first is a statistic where we compare all possible pairs of newly reported ancient groups (Reported1 and Reported2) to a panel of Test populations that encompass diverse pre-Chalcolithic and more widespread genetic variation (Test is one of Iran_Ganj_Dareh_Neolithic, Karelia_HG, Han, Onge, LBK_EN, AfontovaGora3, Ukraine_Mesolithic). Thus, we compute a statistic of the form f4(Reported1, Reported2; Test, Mbuti African outgroup). The second is a comparison of each newly reported group in turn against all possible pairs of Test populations, using statistics of the form f4(Test1, Test2; Reported, Mbuti).

Formally modeling admixture history We used the qpAdm methodology (5) in the ADMIXTOOLS package to estimate the proportions of ancestry in a Test population deriving from a mixture of N 'reference' populations by exploiting (but not explicitly modeling) shared genetic drift with a set of 'Outgroup' populations. We set the details:YES parameter, which reports a normally distributed Z-score for the fit (estimated with a block jackknife).

Hierarchical model of the Indian Cline We used qpAdm as described above to obtain estimates for the proportion of Steppe-related, Iranian agriculturalist-related and AASI-related ancestries and their relevant covariance matrices for each population on the Indian cline. We then jointly modeled these estimates using a bivariate normal model (since the three proportions sum to 100%) and inferred the mean and covariance of the two parameters across all samples on the Indian cline using maximum likelihood estimation. Then, using this inferred matrix, we tested whether the cline could be modeled by a mixture of two populations, the ANI and the ASI, in two ways. First, we examined whether the covariance matrix is singular, implying that knowledge of one estimated pro-

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

portion of ancestry of one of the ancestry components revealed knowledge of the other two, as expected in a two-way mixture. Second, if we were able to establish that this was the case, we examined the difference between the expected and observed ratios of the ancestry proportions of individual populations in this generative model obtained from fitting all the populations simultaneously.

This process resulted in a handful of populations deviating from expectation, as discussed in the main text and Supplementary Materials.

It is made available under a CC-BY-NC-ND 4.0 International license. (which was not peer-reviewed) is the author/funder, who has granted bioRxiv a license to display the preprint in perpetuity.

Supplementary 102 Materials:

Materials and Methods

Online Tableau Server for visualizing data.

Data S1-S3

It is made available under a CC-BY-NC-ND 4.0 International license. (which was not peer-reviewed) is the author/funder, who has granted bioRxiv a license to display the preprint in perpetuity.

REFERENCES AND NOTES

1. J. Dabney et al., Complete mitochondrial genome sequence of a Middle Pleistocene cave bear reconstructed from ultrashort DNA fragments. Proceedings of the National Academy of Sciences of the United States of America 110, 15758-15763 (2013).

2. P. Korlevic et al., Reducing microbial and human contamination in DNA extractions from ancient bones and teeth. BioTechniques 59, 87-93 (2015).

3. M. Meyer et al., A high-coverage genome sequence from an archaic Denisovan individual.

4 Science 338, 222-226 (2012).

5 N. Rohland, E. Harney, S. Mallick, S. Nordenfelt, D. Reich,

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

Partial uracil-DNA-glycosylase

6 treatment for screening of ancient DNA. Philosophical transactions of the Royal Society of

7 London. Series B, Biological sciences 370, 20130624 (2015).

W. Haak et al., Massive migration from the steppe was a source for Indo-European languages in Europe. Nature 522, 207-211 (2015). I. Mathieson et al., Genome-wide patterns of selection in 230 ancient Eurasians. Nature 121 528, 499-503 (2015). I. Olalde et al., The Beaker phenomenon and the genomic transformation of northwest Europe. Nature 555, 190-196 (2018).

8. Q. Fu et al., An early modern human from Romania with a recent Neanderthal ancestor. Nature 524, 216-219 (2015).

9. N. J. Patterson et al., Ancient Admixture in Human History. Genetics 192, 1065-1093 127 (2012).

10. I. Lazaridis et al., Ancient human genomes suggest three ancestral populations for present129 day Europeans. Nature 513, 409-413 (2014).

11. N. Nakatsuka et al., The promise of discovering population-specific disease-associated genes in South Asia. Nat. Genet. 49, 1403-1407 (2017).

12. N. Patterson, A. L. Price, D. Reich, Population structure and eigenanalysis. PLoS genetics, e190 (2006).

13. K. J. Galinsky et al., Fast Principal-Component Analysis Reveals Convergent Evolution of

ADH1B in Europe and East Asia. American journal of human genetics 98, 456-472 (2016).

14. D. H. Alexander, J. Novembre, K. Lange, Fast model-based estimation of ancestry in Eunrelated individuals. Genome research 19, 1655-1664 (2009).

15. I. Olalde et al., Derived immune and ancestral pigmentation alleles in a 7,000-year-old Mesolithic European. Nature 507, 225-228 (2014).

16. I. Mathieson et al., The genomic history of southeastern Europe. Nature 555, 197-203 (2018).

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

17. I. Lazaridis et al., Genomic insights into the origin of farming in the ancient Near East. Nature 536, 419-424 (2016).

18. F. Broushaki et al., Early Neolithic genomes from the eastern Fertile Crescent. Science, (2016).

19. S. Mallick et al., The Simons Genome Diversity Project: 300 genomes from 142 diverse populations. Nature 538, 201-206 (2016).

20. D. Q. Fuller, in Examining the Farming/Language Dispersal Hypothesis. (McDonald Institute for Archaeological Research, 2003), pp. 191-213.

21. D. Q. Fuller, in The evolution and history of human populations in South Asia, M. D. Petraglia, B. Allchin, Eds. (Springer, Dordrecht, The Netherlands, 2007), pp. 393-443.

22. M. Gallego-Llorente et al., The genetics of an early Neolithic pastoralist from the Zagros,

Iran. Sci Rep 6, 31326 (2016).

It is made available under a CC-BY-NC-ND 4.0 International license.

(which was not peer-reviewed) is the author/funder, who has granted bioRxiv a license to display the preprint in perpetuity.

23. G. Barker, Goucher, C., in The Cambridge World History: 154 Volume 2: A World with Agriculture, 12,000 BCE–500 CE, G. Barker, Goucher, C., Ed. (Cambridge University Press, Cambridge, 2015), pp. 1-25.

24. A. J. Ammerman, L. L. Cavalli-Sforza, The neolithic transition and the genetics of populations in Europe. (Princeton University Press, Princeton, N.J., 1984), pp. xv, 176 p.

25. C. J. Stevens et al., Between China and South Asia: A Middle Asian corridor of crop dispersal and agricultural innovation in the Bronze Age. The Holocene 26, 1541-1555 (2016).

26. L. Sverchkov, Tokhary, drevnie indoevropeytsy v tsentral'noy Azii. 2012, Ed., (SMI-ASIA,Tashkent).

27. G. L. Possehl, The Middle Asian Interaction Sphere: Trade and contact in the 3rd millennium BC. Expedition 49, 40-42 (2004).

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

28. P. Moorjani et al., A genetic method for dating ancient genomes provides a direct estimate of human generation interval in the last 45,000 years. Proceedings of the National Academy of Sciences of the United States of America 113, 5652-5657 (2016).

29. M. Raghavan et al., Upper Palaeolithic Siberian genome reveals dual ancestry of Native Americans. Nature 505, 87-91 (2014).

30. Q. Fu et al., The genetic history of Ice Age Europe. Nature advance online publication, (2016).

31. M. E. Allentoft et al., Population genomics of Bronze Age Eurasia. Nature 522, 167-+ (2015).

32. M. D. Frachetti, Multiregional Emergence of Mobile Pastoralism and Nonuniform Institutional Complexity across Eurasia. Current Anthropology 53, 2-38 (2012).

33. M. D. Frachetti, C. E. Smith, C. M. Traub, T. Williams, Nomadic ecology shaped the highland geography of Asia's Silk Roads. Nature 543, 193-198 (2017).

34. M. Unterlander et al., Ancestry and demography and descendants of Iron Age nomads of the Eurasian Steppe. Nature communications 8, 14615 (2017).

35. D. Reich, K. Thangaraj, N. Patterson, A. L. Price, L. Singh, Reconstructing Indian population history. Nature 461, 489-494 (2009).

36. P. Moorjani et al., Genetic evidence for recent population mixture in India. American journal of human genetics 93, 422-438 (2013).

37. P. A. Underhill et al., The phylogenetic and geographic structure of Y-chromosome haplogroup R1a. European journal of human genetics : EJHG 23, 124-131 (2015).

38. M. Silva et al., A genetic chronology for the Indian Subcontinent points to heavily sex biased dispersals. BMC evolutionary biology 17, 88 (2017).

39. G. Hellenthal et al., The Kalash Genetic Isolate? The Evi-

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

dence for Recent Admixture. American journal of human genetics 98, 396-397 (2016).

40. C. A. Murphy, Fuller, D. Q., in A Companion to South Asia in the Past, G. R. G. R. Schug, Walimbe, S.R., Ed. (2016).

41. L. Giosan et al., Fluvial landscapes of the Harappan civilization. Proceedings of the National Academy of Sciences of the United States of America 109, E1688-1694 (2012).

42. I. Mahadevan, Dravidian Proof of the Indus Script via the Rig Veda: A Case Study. Bulletin of the Indus Research Centre 4, (2014).

43. A. Parpola, The Roots of Hinduism : The Early Aryans and the Indus Civilization. (Oxford University Press, New York, 2015), pp. xvi, 363 pages.

44. V. Kolipakam et al., A Bayesian phylogenetic study of the Dravidian language family. Royal Society Open Science 5, (2018).

45. C. Renfrew, Archaeology and language : the puzzle of Indo-European origins. (Cambridge University Press, New York, 1988), pp. xiv, 346 p., 348 p. of plates.

It is made available under a CC-BY-NC-ND 4.0 International license.

(which was not peer-reviewed) is the author/funder, who has granted bioRxiv a license to display the preprint in perpetuity.

46. D. W. Anthony, The horse, the wheel, and language : how 203 bronze-age riders from the Eurasian steppes shaped the modern world. (Princeton University Press, Princeton, NJ, 2007), pp. xii, 553 p.

47. K. A. Sirak et al., A minimally-invasive method for sampling human petrous bones from the cranial base for ancient DNA analysis. BioTechniques 62, 283-289 (2017).

48. M. M. DeAngelis, D. G. Wang, T. L. Hawkins, Solid-phase reversible immobilization for

209 the isolation of PCR products. Nucleic acids research 23, 4742-4743 (1995).

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

49. N. Rohland, D. Reich, Cost-effective, high-throughput DNA sequencing libraries for multiplexed target capture. Genome research, (2012).

50. T. Maricic, M. Whitten, S. Paabo, Multiplexed DNA sequence capture of mitochondrial genomes using PCR products. PloS one 5, e14004 (2010).

51. H. Li, R. Durbin, Fast and accurate long-read alignment with Burrows-Wheeler transform. Bioinformatics 26, 589-595 (2010).

52. K. Douka et al., Direct radiocarbon dating and DNA analysis of the Darra-i-Kur (Afghanistan) human temporal bone. Journal of human evolution 107, 86-93 (2017).

53. M. Kircher, S. Sawyer, M. Meyer, Double indexing overcomes inaccuracies in multiplex sequencing on the Illumina platform. Nucleic acids research 40, e3 (2012).

54. G. Renaud, M. Kircher, U. Stenzel, J. Kelso, freeIbis: an efficient basecaller with calibrated quality scores for Illumina sequencers. Bioinformatics 29, 1208-1209 (2013).

55. G. Renaud, U. Stenzel, J. Kelso, leeHom: adaptor trimming and merging for Illumina sequencing reads. Nucleic acids research 42, e141 (2014).

56. Q. Fu et al., A revised timescale for human evolution based on ancient mitochondrial genomes. Current biology : CB 23, 553-559 (2013).

57. T. S. Korneliussen, A. Albrechtsen, R. Nielsen, ANGSD: Analysis of Next Generation Sequencing Data. BMC bioinformatics 15, 356 (2014).

58. N. Patterson et al., Ancient admixture in human history. Genetics 192, 1065-1093 (2012).

59. C. C. Chang et al., Second-generation PLINK: rising to the challenge of larger and richer datasets. Gigascience 4, 7 (2015).

It is made available under a CC-BY-NC-ND 4.0 International license.

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

(which was not peer-reviewed) is the author/funder, who has granted bioRxiv a license to display the preprint in perpetuity.

Acknowledgments: We are grateful to Richard Meadow and Ajita Patel for critical comments. We are grateful to the Minusinsk Regional Museum of N. M. Martyanov for sharing some of the skeletal samples analyzed in this study. We are grateful to Orazak Ismagulov and Ainagul Ismagulova for facilitating access to some of the Kazakh material. Funding: N.P. carried out this work while a fellow at the Radcliffe Institute for Advanced Study at Harvard University. P.M. was supported by a Burroughs Wellcome Fund CASI award. N.N. is supported by an NIGMS (GM007753) fellowship. T.C. and A.D. were supported by the Russian Science Foundation (project no. 14-50-00036). D.P., S.S. and D.L. were supported by European Research Council ERC-2011-AdG 295733 grant (Langelin). M.R. acknowledges support from RFBR grant ? 18-09-00779. Radiocarbon work supported by the NSF Archaeometry program BCS-1460369 to D.J.K. and B.J.C. and by the NFS Archaeology program BCS-1725067 to D.J.K. and T.Ha. K.T. was supported by the Council of Scientific and Industrial Research (CSIR), Government of India, New Delhi. N.B., A.N., and Z.M. were supported by the Max Planck Society. D.R. was supported by the U.S. National Science Foundation HOMINID grant BCS-1032255, the U.S. National Institutes of Health grant GM100233, by an Allen Discovery Center grant, and is an investigator of the Howard Hughes Medical Institute. Competing interests: The authors declare no competing interests. Data and materials availability: All sequencing data are available from the European Nucleotide Archive, accession number XXXXXXXX [to be made available on publication]. Genotype data obtained by random sampling of sequences at approximately 1.24 million analyzed positions or at approximately 600,000 positions (when merged with genotyping data from diverse present-day individuals) are available to researchers who write David Reich

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

(reich@genetics.med.harvard.edu) a signed letter containing the following text: “For the data that is indicated as “signed letter only”

(a) I will not distribute the data outside my collaboration;

(b) I will not post the data publicly;

(c) I will make no attempt to connect the genetic data to personal identifiers for the samples;

(d) I will use the data only for studies of population history;

(e) I will not use the data for any selection studies;

(f) I will not use the data for medical or disease-related analyses;

(g) I will not use the data for commercial purposes.’’

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

ब) अख़बारों की ख़बरें :–

१) दि. २१ मई, २००१–दि टाइम्स ऑफ इंडिया ''अन्तरराष्ट्रीय उच्चवर्णीय भारतीय पुरुष योरोपियन वंश के, अनुसंधान का निष्कर्ष

वाशिंग्टन :– (चिदानंद राजघात्ता से) भारत के उँचे वर्ण के पुरुष यह आनुवंशिक दृष्टि से योरोपियन लोगों के ज्यादा करीब है। इसके उलटे भारत के निचले वर्ण के लोग आनुवंशिक दृष्टिसे 'आशियन' लोगों के ज्यादा करीब है, यह निष्कर्ष बहुत विवादपूर्ण नये अनुसंधान से निकला है, जो ''ह्युमन जिनोम' इस जर्नल के आनेवाले संस्करण में प्रकाशित हो रहा है।

यह निष्कर्ष प्रस्तुत करनेवाले अनुसंधानकर्ताओं का कहना है कि, पिछले १०,००० सालों से पश्चिम युरेशिया से जिन लोगों ने भारत में स्थानान्तरण किया, उसमें ज्यादातर पुरुष ही थे। इस ऐतिहासिक हक़ीकत को उनका अनुसंधान अनुपूरक है। आनुवंशिक घटक की जाँच करनेपर यह नज़र आता है कि, ''भारत की महिला–पुरुषों के पुरखे यह दुनिया के अलग अलग हिस्से से आये है।'' ऐसा उताह युनिव्हर्सिटी के मायकेल बामशाद इन्होंने कहा। जो उपरोक्त अनुसंधान के ग्रुप के अध्यक्ष थे।

अनुसंधानकर्त्ता का यह भी कहना है कि, इस तरह का लिंग एवं आनुवांशिक भेद होना यही भारत की जाति व्यवस्था की बुनियाद हो सकती है। स्थानान्तरित हुये आक्रमणकारी युरेशियन पुरुषों ने स्वयं के उत्तराधिकारी को उँची जाति में रखकर अन्य मूलनिवासी जनता को निचली जाति में धकेल दिया और इस तरह जाति व्यवस्था की निर्मिती की। बृहस्पतिवार को हमारे इस वार्ताहर से साक्षात्कार में बामशाद ने ऐसा कहा।

बामशाद का अनुसंधान यह दर्शाता है कि, हरेक जाति का मायटोकॉन्ड्रियल डीएनए जो कि, केवल माता से ही बच्चों में स्थानान्तरित होता है, वह डीएनए (भारतीय लोगों का) योरोपियन लोगों की बजाए आशियन लोगों से ज्यादा मेल करता है। किन्तु उँचे वर्ण की जाति से निचली जाति का इस तरह ज्यादा मेल करता है। इसके उलटे 'वाय' गुणसूत्र जो कि, कवेल पिता से बच्चों में स्थानान्तरित

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

होता है, यह दर्शाता है कि, भारत के उँचे वर्ण की जाति के पुरुषों के योरोपियन पुरुषों से ज्यादा समानता है। इसकी वजह यह है कि, युरेशियन महिलाओं की बजाए युरेशियन पुरुष केवल भारत में स्थानान्तरित हुये है। इस अनुसंधान से यह भी निष्कर्ष निकलता है कि, भारतीय उपखण्ड की महिलाऐं पुरुषों से ज्यादा भारतीय है। अपने अनुसंधान की गहनता बढ़ाने के लिए बामशाद एवं उनके सहकर्मी ने माता-पिता से बच्चों में प्रसारित होनेवाले और ४० गुणसूत्रों का अध्ययन किया। यह तमाम ख़ाका यही प्रभावपूर्ण ढंग से दर्शाता है कि, भारत के उँचे वर्ण के पुरुष यह निचली जाति के लोगों की बजाए योरोपियन लोगों से ज्यादा संलग्न है ऐसा अनुसंधान में कहा है।

''यह निष्कर्ष बहुत विवादापूर्ण है'' बामशाद ने कहा - ''किन्तु हम बिना शक व शुबह यह साबित करने में कामयाब हो गये है कि, उँचे वर्ण की जाति यह निचली जाति की बजाए योरोपियन लोगों से ज्यादा संलग्न है और दूसरा याने भारतीय महिलाऐं ज्यादा अस्थिर है - जातिव्यवस्था में ज्यादा मात्रा में उनका उँची जाति में स्थानान्तरण हुआ है।''

अनुसंधान में यह हक़ीकत सामने आई है कि, ब्राह्मण एवं योरोपियनों में सबसे कम भिन्नता (०.१०%) उसके बाद क्षत्रियों में (०.१२%) और वैश्यों में (०.१६%) मौजूद है।

''समाकलीन योरोपियन लोगों का पश्चिम युरेशियन लोगों से शादी-ब्याह होती थी। यह मानकर चले तो उपरोक्त सार यह दर्शाता है कि, भारत की जाति रचना समान भारत की जनता में पश्चिम युरेशियन लोगों का उतनी मात्रा में मिश्रण हुआ ऐसा अनुसंधान में कहा गया है।''

आंध्रा युनिव्हर्सिटी, युनिव्हर्सिटी ऑफ मद्रास तथा अँथ्रोपॉलॉजिकल सर्व्हे ऑफ इंडिया के अनुसंधानकर्त्ता ने इस अनुसंधान में बामशाद को सहकार्य किया। इस हिस्से में इस टीमने इसके पहले भी काम किया है। इसके पहले 'नेचर' इस मॅगझिन में प्रकाशित हुये रिसर्च पेपर में बामशाद की टीम ने कहा है कि, भारत की हरेक जाति का और उसपर भी पुरुषों का अनूठा जेनेटिक प्रोफाईल (आनुवांशिक

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

ख़ाका) तैयार हुआ है और अन्तरजातिय विवाह कम होने से वह और भी ज्यादा प्रबल बना है। किन्तु महिलाओं के गुणसूत्रों में ज्यादा साामजिक अस्थिरता प्राप्त हुई है।

उपरोक्त अनुसंधान में यह भी दिखाई दिया है कि, कभी कभी उँची जाति के पुरुषों से महिलाओं के विवाह होने से उन्हें होनेवाली संतान उनके पति से अधिकृत उँचे स्तर में गिनी जाती थी, जिससे हिन्दू जाति व्यवस्था हमेंशा महिलाओं पर निर्भर है ऐसा अनुसंधानकर्त्ताओं ने कहा है।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

(२) आर्य को भारतीय साबित करने में अनुसंधानकर्त्ता को कामयाबी/ एबीपी माझा दि. ३ सितम्बर, २०१९

(डॉ.वसंत शिंदे इनकी एक १७ मिनट की साक्षात्कार इस चॅनेलवर प्रसारित किया गया जिसका निम्नांकित सार था) -

आज एक ओर अन्तरिक्ष विज्ञान क्षेत्र में बड़ी उड़ान भरी जा रही है तो दूसरी ओर भारतीय संस्कृति की प्राचिनता के बारे में और भारतीयों के भारतीय जड़ों के बारे में एक बहुत बड़ा अनुसंधान दुनिया के सामने उजागर हुआ है। प्राचीन भारतीय संस्कृति रोपनेवाले आर्य यह भारतीय ही है और वे भारत के बाहर से नहीं आये थे, यह अनुसंधान सिद्ध करने में आखिर अनुसंधानकर्त्ता को कामयाबी मिली।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

(३) दि. ७ सितम्बर, २०१९–दि टाईम्स ऑफ इंडिया–पृ.१ बॉटम न्यूज

''आर्यों का आक्रमण हुआ ही नहीं, ऐसा सिंधु संस्कृति का आनुवांशिक संशोधन ने कहा!''

नई दिल्ली :

हरियाणा के राखीगढ़ी के पुरातात्विक अनुसंधान से नये अहवाल ऐसा प्रकाशित हुआ है कि, सिंधु संस्कृति के निवासी यह दक्खन एशियाई प्रवर्ग के यहाँ के ही मूलनिवासी थे। जिसका मूल यह इसवी सन के पूर्व ७ हजार तक ढूंढा जा सकता है।

राखीगढ़ी में एक व्यक्ति के मानवी कंकाल से जिनोम नमूने का अध्ययन करके इस अनुसंधान में अध्ययन करके अहवाल तैयार किया गया है, जो कहता है कि, सिंधु प्रदेश में अर्थपूर्ण तरीके से कोई भी स्थानान्तरण नहीं हुआ और इससे आर्य आक्रमण का सिद्धान्त 'खारिज होता है' ऐसा उनका कहना है। सिंधु संस्कृति में इतनी बड़ी मात्रा में विकास हुआ था कि, इ.स.पूर्व २००० में मेसोपोटेमियन सभ्यता के साथ उसकी बराबरी कर सकते है ऐसा अहवाल कहता है।

इस अनुसंधान के प्रमुख पहलू याने खेती का विकास यह भारत के मूलनिवासी लोगों ने ही किया था। उसके उलटे ईरान से स्थानान्तरण करके भारत वापिस आने के बाद ईरान के स्थानान्तरित लोगों ने खेती का विकास किया था। इससे पहले के नये भरोसे में दरारें पड़ गई हैं। ख़ास बात यह है कि दक्खन एशियाई लोगों में हडप्पा के लोगों के गुणसूत्र कम ज्यादा मात्रा में प्राप्त होते है ऐसा अहवाल कहता है।

''इस चौंकानेवाले अनुसंधान ने आर्य आक्रमण का सिद्धान्त खारिज किया है। मोहेंजोदरो के उपरी हिस्से में जो प्राचीन कंकाल प्राप्त हुये है वे बाढ़ में दबकर मृत हुये लोगों के है। और सर मॉर्टिमर व्हिलर इनके मुताबिक आर्यों के नरसंहार से मृत हुये लोगों के वे कंकाल नहीं है।

आर्य आक्रमण का सिद्धान्त बहुत खोखलें प्रमाणों पर निर्भर है।'' ऐसा डेक्कन महाविद्यालय के माजी व्हाईस चान्सलर और इस संशोधन के लेखकों में

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

से एक डॉ. वसंत शिंदे ने कहा है।

बिरबल साहनी इन्स्टिट्युट के अश्म अवशेष शास्त्र के अनुसंधानकर्त्ता डॉ. नीरज रॉय इन्होंने भी राखीगढ़ी में प्राप्त कंकालों पर आनुवंशिक अनुसंधान किया है। वहाँ से प्राप्त जिनोम सॅम्पल में डाटा के आधार पर अपनी राय देते है कि, ‘‘एक नमूना करोड़ों लोगों की बराबरी का होता है। अनुवंश शास्त्र में (जेनेटिक्स) इतनी ताकद है। हमारे पास अब अन्तिम निर्णायक डाटा एवं सबूत है जो यह सिद्ध कर सकता है कि, आर्यों का आक्रमण हुआ ही नहीं।’’

रॉय ने यह भी कहा कि, इस उत्खनन में ऐसे प्रमाण प्राप्त हुये है जो यह सिद्ध करते है कि मूलनिवासी भारतीय लोग १८०० से १६०० के दौरान उत्तर से दक्खन की ओर स्थानान्तरित हुये थे और सरस्वती नदी सुखने की वजह से सिंधु प्रदेश के उस संस्कृति के लोग बड़ी मात्रा में स्थानान्तरित हुये।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

४) दि. ७ सितम्बर २०१९- दि हिंदू ''सिंधु संस्कृति के निवासी में अलग ही आनुवांशिक वंशावली थी।''

-जिनोम रिपोर्ट यह दर्शाता है कि, उनमें स्टेप प्रदेश के घुमन्तु या ईरानी किसान के गुणसूत्र मौजूद नहीं है।

विशेष प्रतिनिधी-

नई दिल्ली : राखीगढी में हडप्पाकालीन मज़ार से प्राप्त डीएनए पर अनुसंधान से सिंधु संस्कृति की वंशावली पर नई रोशनी डालते हुये अनुसंधानकर्त्ताओं ने यह राय व्यक्त की है कि, दक्खन एशियाई शिकारी की जिन्दगी बसर करते हुये लोग सिंधु संस्कृति के काल में स्थायिक हो गये थे और उनका स्वतन्त्र अभ्युदय है। उसपर अनुसंधान करनेवाले अनुसंधानकर्त्ताओं ने ऐसा कहा है कि, हडप्पाकालीन लोगों का अभ्युदय थण्डे पहाड़ी इलाके के (Steppe Pastoral) (युरेशियन) या प्राचीन ईरानी खेतिहर लोगों से हुआ है। इसके पहले के अनुसंधान को इस अनुसंधान से दरार हो गई है। उसी तरह हडप्पा काल में दक्खन एशिया में बाहर से बड़ी में स्थानान्तरण हुआ था। इस विचार की भी धज्जियां उड़ चुकी है।

राखीगढ़ी प्रोजेक्ट के प्रमुख प्रो. वसंत शिंदे ने शुक्रवार को वार्ताहर से बातचित के दौरान कहा था कि, अनुसंधानकत्ताओं ने हडप्पा काल के बरामद हुये व्यक्ति का जिनोम पहली बार कामयाबी से सिक्वेन्स किया है और वह पुरातत्विक डाटा के साथ मेल करके देखा है। जिसमें उन्हें यह नज़र आया कि, सिंधु काल के पहले लोग दक्खन एशियाई शिकारी की भांति थे और उनकी आज़ाद मौजूदगी थी और वे उनके काल में स्थायिक जिन्दगी बसर कर रहे थे।

''उनमें स्टेप प्रदेश के (युरेशिया) या प्राचीन ईरानी किसानों के गुणसूत्र प्राप्त नहीं हुये। डीएनए के इस अनुसंधान में प्राचीन शिकारी जिन्दगी से आधुनिक काल तक की आनुवांशिक श्रृंखला स्पष्ट हो गई है।'' ऐसा डेक्कन कॉलेज पोस्ट ग्रॅज्युएट ॲण्ड रिसर्च इन्स्टिट्युट पुणे के पुरातत्व विभाग के प्रो. शिंदे ने कहा है।

उपरोक्त अनुसंधान में यह भी स्पष्ट हुआ है कि, प्राचीन सिंधु काल के वही शिकारी जिन्दगी बसर करनेवाले लोग आगे चलकर खेती-बाड़ी करनेवाला समाज में विकसित हो गया और उन्होंने हडप्पा संस्कृति निर्माण की।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

अनुसंधानकर्ता ने यह भी जाहिर किया है कि, सिंधु प्रदेश में हडप्पा लोगों का स्थानान्तरण पूरब से पश्चिम की ओर हुआ है। यह ईरान का तुर्कमेनिस्तान एवं शहर-ए-सोख्ता के सबूतों से स्पष्ट होता है। ‘‘हडप्पा लोग यह मेसोपोटेमिया (इराक), इजिप्त, पर्शियन गल्फ एवं तकरीबन सभी दक्खन एशियाई प्रदेश के साथ कारोबार करते थे जिससे लोगों का स्थानान्तरण होकर संमिश्र आनुवांशिक संरचना निर्माण होना लाज़िमी था। भारत में प्राचीन काल से भिन्न आनुवांशिक संरचना के लोग रहते है ऐसा प्रो. शिंदे ने कहा। दक्खन एशिया से पश्चिम एशिया में स्थायी जिन्दगी एवं घरेलु जिन्दगी विकसित हो गई है।’’

राखीगढ़ी का अहवाल ‘सेल’ इस जर्नल में बस्तरवार को ‘‘प्राचीन हडप्पा वंशावली के स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (थण्डा पहाड़ी इलाके के घुमन्तु मतलब युरेशियन) या ईरानियन खेतिहर (किसान) इनके गुणसूत्र मौजूद नहीं है।’’ इस शीर्षक तले डीएनए रिपोर्ट प्रकाशित हुआ था।

*** खेती का अभ्युदय :-**

योरोप के प्राचीन डीएनए अनुसंधान से यह नज़र आया है कि, अनातोलिया याने वर्तमान तुर्की देश से लोगों का योरोप में स्थानान्तरण होने से वहाँ पर खेती का विकास हुआ है।

नये अनुसंधान से इसी तरह दर्शाया है कि, ईरान एवं तुरान (दक्खन मध्य एशिया) में भी इसी तरह खेती का विकास हुआ है, जिसमें अनुसंधानकर्ताओं को यह दिखाई दिया कि, जिस वक्त योरोप में खेती का विकास हो रहा था उसी वक्त इन प्रदेशों में भी अनातोलियन से जुड़ी वंशावली एवं खेती का विकास हुआ।

दक्खन एशिया में मात्र अलग ही मंजर है। सिंधु संस्कृति के लोगों में अनुसंधानकत्ताओं को अनातोलिया से जुड़ी वंशावली तो प्राप्त नहीं हो सकी, किन्तु तकरीबन ९ हजार बरसों पहले प्राचीन ईरानी किसान एवं शिकारी जमाति इनसे एक आनुवांशिक समूह विभक्त हुआ था। उस समूह की ईरान से जुड़ी आनुवांशिकता अनुसंधानकत्ताओं को सिंधु कालीन लोगों में प्राप्त हो गई।

इससे अनुसंधानकर्त्ता ने यह निष्कर्ष निकाला कि, पश्चिम के खेती-बाड़ी करनेवाले लोगों ने सिंधु प्रदेश में आकर यहाँ पर खेती का विकास नहीं किया,

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

बल्कि स्थानिक लोगों ने ही सिंधु काल में खेती का विकास किया हैं।

''पश्चिम की ओर खेती के विकास का कारण अनातोलियन से जुड़ी आनुवांशिकता अनुसंधानकर्त्ताओं को सिंधु कालीन लोगों में प्राप्त नहीं हो सकी। किन्तु उनमें भी ईरानीयन से जुड़ी आनुवांशिकता प्राप्त हो गई है और यह आनुवांशिकता बहुत प्राचीन काल से ईरानियन किसान एवं शिकारी समूह एकदूसरे से विभक्त हुये उनसे उन्हें प्राप्त हुई है '' यह बात इस अनुसंधान में खास करके प्राप्त हुई ऐसा अनुसंधानकत्ताओं का कहना है।

''चार हजार सालों पहले इंडो-योरोपियन भाषा लेकर आनेवाले स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट (युरेशियन) इन लोगों के आगमन से पहले दक्खन एशिया में बड़ी मात्रा में स्थानान्तरण होने का प्रमाण प्राप्त नहीं होता है।'' युनायटेड स्टेट्स में फिलहाल रहनेवाले एवं अनुसंधान के सहलेखक और अनुवंशशास्त्रज्ञ डेव्हिड रिच इन्होंने यह बात बताई।

५) दि.७ सितम्बर, २०१९– राजस्थान पत्रिका : बडा खुलासा–
''हरियाणा के राखीगढी में मिले ६ हजार साल पुराने अवशेष का अध्ययन–
आर्यों ने भारत पर नहीं किया था आक्रमण, वे यहीं के मूलनिवासी थे!''

पत्रिका देश-दुनिया

बड़ा खुलासा : हरियाणा के राखीगढ़ी में मिले 5000 साल पुराने अवशेषों का अध्ययन

आर्यों ने भारत पर नहीं किया था आक्रमण, वे यहीं के मूल निवासी थे

9000 साल पहले कृषि की शुरुआत

2015 में राखीगढ़ी के आसपास के 300 एकड़ क्षेत्र में खुदाई के दौरान 7 टीलों से नरकंकाल मिले थे

आर्य और द्रविड़ एक

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

६) दि. १५ सितम्बर, २०१९– राजस्थान पत्रिका– बाडमेर संस्करण इतिहास का वर्तमान : साइंस जर्नल में प्रकाशित हुआ ११७ वैज्ञानिकों का अध्ययन, हाल ही में दाँवा किया गया था कि आर्य भारत के रहनेवाले थे–

“नए शोध से २०१८ के शोध की फिर पुष्टि, आर्य बाहर से ही भारत में आए थे!”

पत्रिका देश-दुनिया

नए शोध से 2018 के शोध की फिर पुष्टि, आर्य बाहर से ही भारत में आए थे

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

७) दि. ७ सितम्बर, २०१९-दैनिक जागरण-प्रयागराज संस्करण- ''विदेशी नहीं, भारत के मूलनिवासी थे आर्य''

नई दिल्ली :

आर्य न तो विदेशी थे और न ही उन्होंने कभी भारत पर आक्रमण किया। आर्य भारत के मूलनिवासी थे। हरियाणा के हिसार जिले के राखीगढी में पुरातत्व विभाग की खुदाई में मिले दो मानव कंकालों (एक महिला व एक पुरुष) की डीएनए रिपोर्ट के अध्ययन और कई सँपल से जुटाए गए आर्कियोलॉजिकल व जेनेटिक डेटा के विश्लेषण से वैज्ञानिक इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं। तीन साल से यह शोध किया जा रहा था। रिपोर्ट के मुताबिक आर्य और द्रविड एक ही थे।

राखीगढी हडप्पा सभ्यता के सबसे बडे केंद्रो में से एक है। करीब ३०० एकड में वर्ष-२०१५ में पुरातत्वविदों ने खुदाई शुरु की थी। राखीगढी साइट की रिसर्च टीम के सदस्य और पुणे स्थित डेक्कन कॉलेज डीम्ड युनिवर्सिटी के पूर्व वाइस चांसलर प्रो. वसंत शिंदे और जेनेटिक साइंटिस्ट डॉ.नीरज राय ने शुक्रवार को इंटैक में प्रेसवार्ता कर यह जानकारी दी। प्रो. शिंदे की यह रिपोर्ट प्रतिष्ठित जर्नल Cell में ऑनलाइन प्रकाशित हो चुकी है। यानी इस शोध रिपोर्ट को दुनिया भर के वैज्ञानिकों ने भी पुख्ता माना है। प्रो.शिंदे न बताया कि राखीगढी में चल रही हडप्पा कालीन सभ्यता की खुदाई में पांच हजार साल पुराने दो मानव कंकाल मिले थे। इनकी डीएनए जांच के लिए सँपल जुटाए गए। अध्ययन में पता चला कि अफगाणिस्तान से अंडमान तक सभी का एक ही जीन है। इसमें कोई बड़ा बदलाव नहीं हुआ है। करीब १२ हजार साल से संपूर्ण दक्षिण एशिया वासियों का एक ही जीन रहा है यानी सबके एक ही पूर्वज रहे है। इससे आर्य के बाहर से आने की थ्योरी गलत साबित हो जाती है। शिंदे ने कहा वह भारत सरकार से अनुरोध करेंगे कि इतिहास की पुस्तको में इन नए तथ्यों को शामिल किया जाए।

बदलेगा इतिहास :

* हिसार के राखीगढी गाँव की खुदाई में मिले दो मानव कंकालों की डीएनए रिपोर्ट से सामने आया सच

* आर्य ने कभी भारत पर आक्रमण नहीं किया, संपूर्ण दक्षिण एशिया के लोगों के पूर्वज एक ही थे।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

भारत में विदेशियों के आने से जीन में मिलावट होती रही

डॉ.नीरज राय ने बताया कि, भारत में बडी तादाद में बाहरी लोगों के प्रवेश का साक्ष्य नहीं मिला है। अगर आर्य बाहर से आए होते और नरसंहार किया होता तो वे अपनी संस्कृति लाते और हमारी संस्कृति को नष्ट कर देते। मानव कंकाल पर कहीं चोट या घाव के ऐसे निशान नहीं मिले है, जिनसे नरसंहार की बात साबित हो। व्यापार आदि के लिए भारत में विदेशियों के आने से समय-समय पर जीन में मिलावट होती रही। वही, बहुत से भारतीय भी विदेश जाते रहे और वापस आकर वे भारत के अलग-अलग हिस्सों में बस गए। हालांकि, प्रो. शिंदे ने बताया कि भाषा की उत्पत्ति कैसे हुई, इस बारे में उन्हे नहीं पता है।

कृषि, बागवानी, मत्स्यपालन की भारत में हुई थी शुरुआत :

शोध के मुताबिक करीब साढे नौ हजार साल पहले भारत के लोगों ने ही कृषि, बागवानी व मछली पालन शुरु किया था। इसके बाद ये ईरान व इराक होते हुए पूरी दुनिया में पहुंचा। भारत में कृषि से लेकर विज्ञान तक का विकास होता रहा है। प्रो. शिंदे ने बताया कि राखीगढी में अलग-अलग आकार व आकृति के हवन कुंड मिले है। उनके पास कोयले के अवशेष मिले है। इससे साबित होता है कि करीब पांच हजार साल पहले भी भारत में हवन होता था। सरस्वती नदी के किनारे भी हडप्पा सभ्यता के निशान मिले हैं, ये लोग सरस्वती की पूजा भी करते थे।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

८) दि. ७ सितम्बर, २०१९– दै.लोकमत–''डेक्कन कॉलेज का अनुसंधान डीएनए द्वारा दाँवा – आर्य मूल भारतीय!''

पुणे : आर्य बाहर से आये और उन्होंने हडप्पा संस्कृति का विकास किया यह ब्रिटिश एवं कुछ भारतीय इतिहासकारों ने थोपी हुई समझ को डेक्कन कॉलेज अभिमत विश्वविद्यालय ने अनुसंधान के जरिये मिथ्या करार दिया। आर्य यह मूल भारतीय ही थे और उन्होंने हडप्पा संस्कृति निर्माण की इसके ठोस सबूत डीएनए और पुरातत्वशास्त्र के जरिये मिल गये यह दाँवा डेक्कन कॉलेज के अभिमत विश्वविद्यालय के कुलगुरु डॉ. वसंत शिंदे ने किया।

आर्य मूल भारतीय थे या बाहर से आये थे, इसपर वाद–विवाद होते थे। हडप्पा संस्कृति के काल में दक्खन एशिया में बाहर से स्थानान्तरण हुये। यह दाँवा प्राचीन डीएनए के नये अनुसंधान ने जिरह किया है। हडप्पा की आबादी की जड़े प्राचीन ईरानी किसानों में मौजूद है यह दाँवा भी नये डीएनए अनुसंधान ने मिथ्या करार दिया है। सन २०११–१२ से डेक्कन कॉलेज के कुलगुरु डॉ. शिंदे इनकी अगुआई में राखीगढ़ी में अन्तरराष्ट्रीय परियोजना की शुरुआत हो गई। हरयाणा सरकार के पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग ने खुदाई शुरु की। हैद्राबाद के सेंटर फॉन सेल्युलर और मोलेक्युलर बायोलॉजी (सीसीएमबी) के डॉ. नीरज रॉय अमेरिका के हार्वर्ड स्कूल ऑफ मेडिसीन विभाग के प्रो. डेव्हिड रिच इन्होंने प्राचीन डीएनए का अध्ययन किया। इससे नये सिरे से सामने आये हुये निष्कर्ष ''आर्य बाहर से आये थे'' को निरस्त्र करता है।

अतिक्रमण ढकोसला है :

आर्यों ने भारत में स्थानान्तरण किया या आर्यां ने टोली से भारत पर आक्रमण किया इस समझ को नकारने के लिए सबूत प्राप्त हो गये है। मोहेंजोदरो के गढ़ के ऊपरी हिस्से से प्राप्त कंकालों से वह इन्सान आर्यो के आक्रमण में मारा गया था यह पूर्वधारणा सर मॉर्टिमर व्हिलर इन्होंने रचा था। असल में यह इन्सान बाढ़ में डूबकर मर गया यह सिद्ध हुआ है।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

९) दि.४-१०-२०१९- दै.अमर उजाला-''भारत में मूलनिवासी प्रश्न खड़ा करना विदेशियों की साजिश।''

वाराणसी : भारत में मूलनिवासी का प्रश्न खड़ा करना विदेशियों की साजिश का परिणाम है। इसमें भारत की कुछ आदिवासी जातियों को मूलनिवासी कहा गया जब कि वे जातियाँ आस्ट्रो एशियाटिक वर्ग की है। डीएनए के नमूने इस बात की ओर इशारा करते हैं। उक्त विचार प्रो. ज्ञानेश्वर चौबे ने व्यक्त किए। वह गुरुवार को बीएचयू के भारत अध्ययन केंद्र में भारत का वाला आनुवांशिक सत्य राखीगढ़ी के पूर्व और पश्चात विषयक व्याख्यान को संबोधित कर रहे थे।

डीएनए विशेषज्ञ डॉ. नीरज राय ने बताया कि राखीगढी विश्व में सबसे बडा पुरास्थल है। वहां से प्राप्त मानव कंकालों के डीएनए के प्रमाण इस बात की ओर इशारा करते हैं कि भारत में मध्य एशियाई जातियों के डीएनए के कोई प्रमाण नहीं हैं। अध्यक्षता करते हुए प्रो. युगल किशोर मिश्र ने कहा कि अंग्रेजों द्वारा किस प्रकार हमारी शैक्षणिक रीढ़ जो कि वेदों के रूप में उपस्थित थीं, उसको तोड़ने का काम किया। इस दौरान प्रो. राकेश उपाध्याय, प्रो. राकेश पांडेय, डॉ. अर्पिता चटर्जी, डॉ. अशोक सोनकर, डॉ. गीता योगेश भट्ट आदि मौजूद रहे।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

१०) दि. १ अक्तुबर, २०१९– दै.भास्कर (अकोला आवृत्ती)–''संघ प्रमुख मोहन भागवत ने कहा–भारत हिंदू राष्ट्र है, इस सच को कोई नहीं बदल सकता।''

–एजेंसी/नई दिल्ली

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत ने एक बार फिर भारत के हिंदू राष्ट्र होने की बात कही है। 'द आरएसएस : रोडमैप्स फॉर २१ सेंचुरी' किताब का विमोचन करते भागवत ने मंगलवार को कहा, भारत हिंदू राष्ट्र है, यह सत्य है, इसे कोई नहीं बदल सकता। संघ द्वारा किसी 'वाद' पर चलने की बात से साफ इनकार करते हुए भागवत ने कहा कि संगठन में एक ही विचारधारा सतत रुप से चलती चली आयी है कि जो 'भारत भूमि की भक्ति' करता है, वही 'हिंदू' है। संघ द्वारा केवल हिंदू–की बात करने के दावों पर वे बोले, हमने हिंदू नहीं बनाए। ये हजारों वर्षों से चले आ रहे है। उन्होंने कहा कि भारत को अपनी मातृभूमि मानने वाला और उससे प्रेम करने वाला एक भी व्यक्ति अगर जीवित हैं, तब तक हिन्दू जीवित है। भागवत ने कहा कि भाषा, पंथ, प्रांत पहले से ही हैं।

अगर बाहर से भी कोई आए हैं, तब भी कोई बात नहीं है। हमने बाहर से आए लोगों को भी अपनाया है। हम सभी को अपना ही मानते हैं। भागवत ने 'द आरएसएस : रोडमैप्स फॉर २१ सेंचुरी' किताब को संघ के बारे में गलतफहमी को दूर करने वाली किताब बताया। उन्होंने कहा यह किताब समाज को संघ दिखाएगी और संघ में चर्चा का विषय भी होगी। भागवत ने इस मौके पर कहा, 'जो सब लोगों को जोडकर रख सकता है, जो कहे कि आप जो भी हैं, हमारे हैं, ये मानकर कि पूरा समाज समृद्ध बने, ये संघ है।' उन्होंने कहा, 'विचारों की स्वतंत्रता संघ में मान्य है। यहाँ अनेक मत होने के बाद भी मतभेद नहीं होता।' अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुनील आंबेकर ने संघ के काम करने के तौर–तरीकों को लेकर 'द आरएसएस : रोडमैप्स २१ सेंचुरी' नामक किताब लिखी है।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

११) दि.११ अक्तुबर, २०१९ – दै. लोकमत(जालना संस्करण)– डॉ.वसंत शिंदे : अन्तरराष्ट्रीय जर्नल में अनुसंधान प्रसिद्ध; भारतीय होने का ठोस सबूत – ''हडप्पा संस्कृति के आर्यों का थ्री–डी चेहरा तैयार''

पुणे : हडप्पा संस्कृति के लोग बाहर से आये नहीं बल्कि वे मूल भारतीय ही है यह पुरातत्विक एवं जनुकीय प्रमाणों से नज़र आया है। उसपर भी कम्प्यूटर प्रोग्राम की सहायता से यह लोग कैसे दिखते होंगे इसका थ्रीडी चेहरा भी तैयार किया है। इसलिए पहली बार हडप्पा संस्कृति के लोगों का चेहरा भी दुनिया के सामने आ गया। इस सबूत के आधार पर हडप्पा लोग भारतीय ही थे, यह जोर देकर कह सकते है, ऐसा डेक्कन कॉलज के माजी कुलगुरु डॉ. वसंत शिंदे इन्होंने लोकमत से बोलते हुये कहा।

भारत अमेरिका और जर्मन इन देशों के शास्त्रज्ञों ने इकट्ठे अनुसंधान करके हडप्पा संस्कृति के लोग बाहर से नहीं आये थे इसे शास्त्रीय आधार पर कहा है। उनमें डॉ. वसंत शिंदे इन्होंने अमेरिका की ॲनॅटॉमिकल सायन्स इंटरनॅशनल इस जर्नल में क्रेनियोफेशियन रिकन्स्ट्रक्शन ऑफ दी इंडस व्हॅली सिव्हिलायजेशन अ इंडिव्हिज्युअल्स स्पाऊंडस ॲट ४,५०० इयर्स ओल्ड राखीगढ़ी सिमेट्री यह पेपर प्रसिद्ध किया है।

डॉ. शिंदे ने कहा है कि, हडप्पा काल से अब तक के मनुष्य शरीर के डील–डौल कुछ भी अन्तर नज़र नहीं आता है। इससे वे बाहर से आये और यहाँ पर

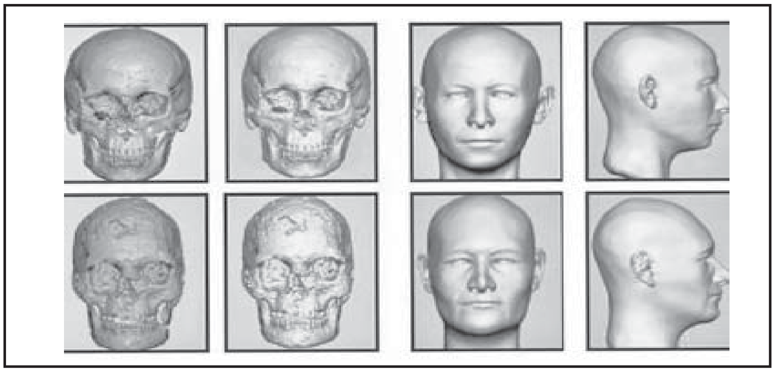

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

संस्कृति स्थापित की, यह साफ़ झूठ सिद्ध होता है। कोरिया की फॉरेन्सिक लॅब में कोरियन लोगों के पुराने कंकालों पर किये गये प्रयोग के आधार पर हडप्पा के लोगों के कंकालों का अध्ययन करके यह लोग कैसे दिखते होंगे, इसका थ्रीडी तसवीर बनाई है।

यह अध्ययन भारतीय, ब्रिटिश एवं अमेरिकन शास्त्रज्ञों ने किया। मूल के हडप्पा संस्कृति के लोग फिलहाल हरयाणा के लोगों की तरह ही उँचे, गोरे, गठीले बदन के थे। यह पर कुछ लोग दक्खन, भारत, महाराष्ट्र से गये होंगे। कारोबार के बहाने भारत से कुछ लोग यहाँ पर आये होंगे। इसका भी अध्ययन कर सकते है, ऐसा डॉ. शिंदे ने कहा।

(किस तरह तैयार हुआ चेहरा : हडप्पा संस्कृति के लोगों का चेहरा तैयार करने के लिए राखीगढ़ी के कब्रस्तान से अच्छे किस्म का कंकाल लिया। खोपडी का हिस्सा लेकर हड्डीयों को अच्छे से नाप लिया। गर्दन के तमाम हिस्सों का सिटी स्कॅन एवं कम्प्युटर प्रोग्रॅम के मुताबिक खोपड़ी पर चमड़ी की सतह लगाई। इस तरह हडप्पा संस्कृति के लोगों का थ्रीडी चेहरा सामने आया।)

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

१२) दि. ११ अक्तुबर, २०१९–''दै.भास्कर, भोपाळ संस्करण– ''पहली बार; वैज्ञानिको ने सिंधु घाटी सभ्यता के लोगो के चेहरे को आकार दिया; वे कैसे दिखते थे यह अनुमान लगाना आसान हुआ।''

प्रयोग/सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों के चेहरे तैयार; वे कैसे दिखते थे, यह पता लगाना आसान हुआ

वैज्ञानिकों द्वारा तैयार किए गए अनुमानित चेहरे। वैज्ञानिकों द्वारा तैयार किए गए अनुमानित चेहरे।

दैनिक भास्कर, भोपाल संस्करण, ११ अक्तुबर, २०१९

नई दिल्ली/हिसार : भारत समेत तीन देशों के वैज्ञानिकों ने पहली बार सिंधु घाटी सभ्यता के निवासियों के चेहरे की हूबहू आकृति बनाने में सफलता हासिल की है। वैज्ञानिकों ने ४,५०० साल पुराने हरियाणा के राखीगढ़ी में मिले ३७ में से २ लोगों की खोपड़ी से चेहरे बनाए। १५ वैज्ञानिकों और ६ शिक्षाविदों की टीम ने खोपड़ियों का असली चेहरा बनाने के लिए उनके कंप्यूटेड टोमोग्राफी (सीटी) डेटा के जरिए क्रेनियोफेशियल रीकंस्ट्रक्शन (सीएफआर) तकनीक का इस्तेमाल किया। वैज्ञानिकों की इस उपलब्धि के बाद सिंधु घाटी के निवासी कैसे दिखते थे, इसका अनुमान लगाना आसान हो गया है। केस स्टडी में भारत, दक्षिण कोरिया और यूके के वैज्ञानिक शामिल हुए। यह केस स्टडी प्रोफेसर वसंत शिंदे और दक्षिण कोरिया के प्रोफेसर वॉन जू ली के नेतृत्व में की गई, जो एनाटॉमिकल साइंस इंटरनेशनल में प्रकाशित हुई है। नेशनल ज्योग्राफिक सोसायटी ने इस प्रोजेक्ट के लिए आर्थिक सहायता दी थी। राखीगढ़ी हरियाणा के हिसार जिले का गांव है, जो सिंधु घाटी सभ्यता का सबसे बड़ा पुरातात्विक स्थल माना जाता है।

प्रिस्ट किंग की मूर्ति अलावा कोई अनुमान नहीं था।

विशेषज्ञों का कहना है कि अब तक हमें इसका कोई अंदाजा नहीं था कि सिंधु घाटी सभ्यता के लोग कैसे दिखते थे, लेकिन अब उनके चेहरे की आकृतियों का कुछ-कुछ अनुमान लग गया है।' सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों की शारीरिक आकृति का ढांचा तैयार कर पाना अब तक कठिन था, क्योंकि इस सभ्यता की अब तक पर्याप्त खोज नहीं हुई थी और अब तक मिले इसके आंकड़े इस सभ्यता के निवासियों की शारीरिक आकृति के पुनर्निर्माण के लिहाज से पर्याप्त नहीं थे।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

मोहेंजोदड़ो से मिली प्रिस्ट किंग की प्रसिद्ध मूर्ति के अलावा यहां एक भी कलाकृति नहीं मिली, जिससे तब के लोगों की शारीरिक ढांचे को तैयार किया जा सके।

हरियाणा भारतीय सभ्यता का पालक

आज का राखीगढ़ी, उस दौर में देश का पहला सुनियोजित नगर (प्लांड सिटी) हुआ करता था। यह खोज प्रोफेसर वसंत शिंदे के नेतृत्व में २०१५ में की गई थी। इसमें कई कंकाल और सभ्यता के अवशेष मिले थे। अब तक पाकिस्तान के सिंध में सिंधु घाटी के आसपास बसी ४५०० साल पुरानी हड़प्पा सभ्यता को देश की सबसे पुरानी सभ्यता माना जाता था। हड़प्पा सभ्यता बाहरी नहीं, हमारे लोगों ने ही बसाई थी, इसलिए हरियाणा को भारतीय सभ्यता का पालक माना जाता है।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

१३) पांचजन्य-आरएसएस का मुखपत्र दि.२० अक्तुबर, २०१९: डॉ. वसंत शिंदे की पांचजन्यने ली मुलाकात

''फर्जी है आर्य-द्रविड संघर्ष सिद्धांत''

डॉ.वसंत शिंदे देशके जाने-माने पुरातत्वविद् हैं। डेक्कन कॉलेज (मानद् विश्वविद्यालय) के कुलपति रहे डॉ.शिंदे इन दिनों समुद्री विरासत परिसर, गांधीनगर (गुजरात) के महानिदेशक हैं। डॉ.शिंदे और उनके दल ने पुरातात्विक स्थल राखीगढी (हरियाणा) में तीन साल तक खुदाई की। खुदाई से प्राप्त नरकंकाल और अन्य वस्तुओं का वैज्ञानिक अध्ययन किया गया। इन नरकंकालों का डी.एन.ए. मध्य एशिया के लोगों के डी.एन.ए.से नहीं मिलता है। जबकि वामपंथी इतिहासकारों के मुताबिक आर्य भारत में मध्य एशिया से आए थे और उन्होंने द्रविड़ों को पराजित कर सत्ता हथिया ली थी।' डॉ. शिंदे के अनुसार यदि ऐसा होता तो यहां के लोगों और मध्य एशिया के लोगों का डी.एन.ए.एक होता। इसलिए आर्य-द्रविड संघर्ष सिद्धांत मनगढ़ंत है। आर्य बाहर से नहीं आए थे, बल्कि यहीं के मूल निवासी थे। शोध से यह भी पता चला कि सभी भारतीय हड़प्पा संस्कृति के वंशज हैं। यह हमारी मूल सभ्यता है। कुछ दिन पहले ही राखीगढ़ी की खुदाई से संबंधित रपट को अंतिम रूप दिया गया है। पाञ्चजन्य के वरिष्ठ उपसंपादक अरुण कुमार सिंह ने डॉ.वसंत शिंदे से राखीगढी की खुदाई और उससे टूटे अनेक भ्रमों के संदर्भ में बातचीत की, जिसके प्रमुख अंश प्रस्तुत हैं-

*** आपका दावा है कि राखीगढ़ी की खुदाई से जो तथ्य मिले हैं, वे आर्य-द्रविड़ संघर्ष के मिथकों को तोड़ते हैं, लेकिन वामपंथी इतिहासकार तो इससे उलट बोलते हैं। इस पर क्या कहेंगे?**

राखीगढ़ी में जो चीजें मिली हैं, वे स्पष्ट करती हैं कि आर्य बाहर से नहीं आए थे। अब जो लोग कहते हैं कि आर्य बाहर से आए थे, उनसे मैं कहता हूं कि इस पर वे मुझसे बहस कर सकते हैं। हमारे पास वैज्ञानिक पद्धति से सिद्ध किए हुए तथ्य हैं। मुख्य रूप से कहा जाता है कि आर्य मध्य एशिया से भारत आए थे, लेकिन राखीगढ़ी में जो नरकंकाल मिले हैं, उनका डी.एन.ए. मध्य एशिया के लोगों के डी.एन.ए, से नहीं मिलता। राखीगढ़ी में ४० नरकंकाल मिले हैं। उनके डी.एन.ए. की जांच दुनिया के जाने-माने डी.एन.ए, विशेषज्ञों से कराई गई है।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

जिन्हें आर्य कहा जाता है, वे बाहर से नहीं आए थे, बल्कि वे भारत के मूल निवासी थे। इसको दूसरी तरह से भी समझ सकते हैं। एक सामान्य-सी बात है कि यदि कोई कहीं जाता है तो वह अपने साथ अपनी संस्कृति, अपना पहनावा, खानपान सब ले जाता है। आज भी भारत से जो लोग दूसरे देशों में जाते हैं, वे अपने साथ अनेक चीजें ले जाते हैं। विदेश में रहने वाली भारतीय महिलाएं साड़ी भी पहनती हैं। यदि आर्य बाहर से आए होते तो अपने साथ अपनी पोशाक भी लाते, अपनी संस्कृति भी लाते, लेकिन इन सबके सबूत कहीं नहीं मिलते। हां, यह बात सही है कि जो लोग बाहर से आते थे, वे लोग यहां के लोगों के साथ घुलमिल जाते थे, आपस में विवाह भी करते थे। लेकिन बड़े पैमाने पर लोग आक्रमण की दृष्टि से भारत आए हों, इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता। इसलिए यह नहीं कहा जा सकता है कि आर्यों ने भारत पर हमला किया था। राखीगढ़ी में मिले नरकंकालों के डी.एन.ए. का मिलान ईरान, मध्य एशिया और पश्चिम एशिया के लोगों के डी.एन.ए. से किया गया है। इनमें से किसी का भी डी.एन.ए. एक नहीं है। वहीं दूसरी ओर भारत या दक्षिण एशिया में जो लोग हैं, उनका डी.एन.ए. एक है।

अंदमान से लेकर कश्मीर तक और अफगानिस्तान से लेकर बंगाल तक जितने भी लोग हैं, चाहे वे किसी भी जाति या पंथ के हों, सबका डी.एन.ए. एक है। यह डी.एन.ए. हड़प्पाकालीन लोगों के डी.एन.ए. से मिलता है। इसका मतलब यह है कि उस समय आर्य-द्रविड़ का भेदभाव नहीं था। ये सब भेद बाद में गढ़े गए हैं। हमारे शोध से यह भी स्पष्ट हो गया है कि हड़प्पा सभ्यता किसी बाहरी आक्रमण से समाप्त नहीं हुई थी। खुदाई में जो बर्तन, गहने, चूड़ियां इत्यादि मिली हैं उनके आकार वगैरह को देखकर अंदाजा लगाया जा सकता है कि वे किस तरह से रहते थे, कैसे खाना बनाते थे। ये सारी वस्तुएं हड़प्पा संस्कृति का ही प्रमाण हैं।

*** राखीगढ़ी में आप लोगों ने खुदाई कब शुरू की थी?**

राखीगढ़ी में खुदाई करने की योजना डेक्कन कॉलेज, पुणे की टीम ने बनाई थी और २०१३ में खुदाई का काम शुरू कर दिया गया था। खुदाई करने वाली टीम में देश के अन्य भागों के पुरातत्वविद् भी शामिल थे। ४० से ज्यादा पुरातत्वविदों ने खुदाई की देखरेख की और वहां से नरकंकाल, बर्तन, मकान आदि के सबूत

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

इकट्ठे किए। उन नरकंकालों का परीक्षण करने के बाद ही हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि आर्य-द्रविड़ संघर्ष की कहानी मनगढंत है।

*** नरकंकालों की जांच में कौन-सी वैज्ञानिक पद्धति अपनाई गई?**

कान के नीचे की हड्डी का ऊत्तक लेकर हमने उसकी जांच प्रयोगशाला में कराई। उससे उसके जीन का पता चला। यह जीन दक्षिण एशिया के लोगों के जीन से नहीं मिलता। जब भारत में यह जांच पूरी हुई तो जर्मनी और अमेरिका के विशेषज्ञों से उसकी दुबारा जांच कराई गई। प्राचीन डी.एन.ए. की जांच करने के लिए हॉवर्ड में दुनिया की सबसे बड़ी प्रयोगशाला है और डेविड रिच आज की तारीख में सबसे बड़े डी.एन.ए. विशेषज्ञ माने जाते हैं। भारत में जो जांच हुई, उसकी रपट डेविड रिच को दिखाई गई। उन्होंने भी गहन अध्ययन करने के बाद उस पर अपनी सहमति दी है। इसके बाद अंतिम रपट तैयार की गई है।

*** वामपंथी आरोप लगा रहे हैं कि आपने भाजपा सरकार के इशारे पर यह रपट तैयार की है?**

ऐसे लोग केवल अपनी पुरानी बातों पर टिके हुए हैं। वे यह क्यों भूल जाते हैं कि आज इतिहास की जांच वैज्ञानिक पद्धति से हो रही है इसलिए कोई बात अंतिम नहीं हो सकती। विज्ञान जैसे-जैसे प्रगति करेगा वैसे-वैसे हमें इतिहास का परीक्षण करके निष्कर्ष निकालने होंगे। मैंने और मेरी टीम ने वही किया है। ऐसे लोगों को यह भी पता होना चाहिए कि हम लोगों ने फरमाना (हरियाणा) में खुदाई का काम २००८-०९ में उस समय शुरू किया था, जब देश में कांग्रेस की अगुआई में संप्रग सरकार थी। यदि उस समय ही नरकंकाल मिलते तो वैसी ही रपट होती जैसी आज है। लेकिन दुर्भाग्य से फरमाना में हमें सफलता नहीं मिली और अब राखीगढ़ी की खुदाई में सफलता मिली है। दरअसल, कुछ लोग हमारा विरोध करने के लिए विरोध कर रहे हैं, उन्हें तथ्यों से कोई मतलब नहीं है। राखीगढ़ी में जो तथ्य मिले हैं, वे उनके (वामपंथियों) झूठे इतिहास को ही बदलने वाले हैं। इसलिए वे तथ्यहीन बातें कर रहे हैं। पर हमें और हमारी टीम को अपने शोध पर गर्व है। एक बात और। हमारी अंतिम रपट को लेख के रूप में 'साइंस'

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

और 'सेल' जेसी दो विश्वविख्यात पत्रिकाओं ने प्रकाशित किया है। इन दोनों के ५ सितंबर, २०१९ के अंक में यह लेख प्रकाशित हुआ है। लेख प्रकाशित होने के बाद ही हम लोग ६ सितंबर, २०१९ को प्रेस के सामने आए। में यह बता दूं कि इन दोनों पत्रिकाओं में कोई लेख आसानी से नहीं छपता। इन दोनों पत्रिकाओं के पास दुनियाभर के विशेषज्ञ हैं। पहले संबंधित विशेषज्ञों का एक बोर्ड उस लेख को देखता है और बताता है कि लेख छपने योग्य है या नहीं। यदि बोर्ड छपने योग्य बताता है तब संपादकीय टोली उस पर निर्णय लेती है और कुछ सवाल होने पर लेखक से उसके उत्तर पूछे जाते हैं। संपादकीय टोली जब हर तरह से संतुष्ट हो जाती है तभी इनमें कोई लेख छपता है।

कहां है राखीगढ़ी

राखीगढ़ी गांव दिल्ली से १५० किलोमीटर की दूरी पर है। यहां कुल नौ टीले हैं। इनका नामकरण शोध की सूक्ष्मता के आधार पर आरजीआर-१ से आरजीआर-९ तक किया गया है। आरजीआर-५ की खदाई बताती है कि इस क्षेत्र में घनी जनसंख्या थी। इस समय भी इस क्षेत्र में बड़ी आबादी है इसलिए आरजीआर-५ में अधिक खदाई संभव नहीं है, लेकिन आरजीआर-४ के कुछ हिस्सों में उत्खनन संभव है। रेडियो-कार्बन डेटिंग के अनुसार २०१४ में यहां से प्राप्त वस्तुओं का संबंध हड़प्पा-पूर्व और प्रौढ़-हड़प्पा काल के अतिरिक्त उससे भी हजारों वर्ष पूर्व की सभ्यता से है। आरजीआर-६ से मिली वस्तएं भी इस सभ्यता को करीब ८,००० वर्ष पूर्व तक ले जाती हैं।

१९२१ में हड़प्पा संस्कृति की खोज के बाद १९५८ में हड़प्पा पूर्व का इलाका पुरातत्व विभाग के महानिदेशक एफ.ए. खान द्वारा कोटडीजी में देखा गया था और १९६०-६१ में प्रो. बी.बी. लाल ने कालीबंगा में देखा था। २०वीं सदी के अंत में और २१वीं सदी की शुरूआत के आसपास खुदाई में शुरूआती हड़प्पा स्तर से पहले की सभ्यता कुनाल, गिरवाड़, परवना और राखीगढ़ी की खुदाइयों में देखी गई थी। बहरहाल, भारत में भिराणा, राखीगढ़ी, गिरबाड़ और पाकिस्तान में मेहरगढ़ से प्राप्त रेडियो मीट्रिक तिथियां उस सभ्यता के उदय को सुनिश्चित करती

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

हैं, जो सातवीं, आठवीं सहस्राब्दी बी.सी. के आसपास की सभ्यताओं से उभरी थी।

अब सभी पुरातत्वविद् इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि जनसंख्या की दृष्टि से उस समय राखीगढ़ी सबसे बड़ा शहर था। राखीगढ़ी और उसके आसपास के क्षेत्र में विकास की तीन-तीन परतें मिली हैं। पूरी तरह से नियोजित इस शहर की सभी सड़कें १.९२ मीटर चौड़ी थीं। यह चौडाई काली बंगा की सड़कों से भी ज्यादा है। एक ऐसा बर्तन भी मिला है, जो सोने और चांदी की परतों से ढका है। इसी स्थल पर एक 'फाउंड्री' यानी ढलाईघर के भी चिन्ह मिले हैं, जहां संभवत: सोना ढाला जाता होगा। इसके अलावा टेराकोटा से बनी असंख्य प्रतिमाएं तांबे के बर्तन और कुछ मर्तियां एवं एक 'फर्नेस' यानी भट्री के अवशेष भी मिले हैं। एक श्मशान-गृह के साक्ष्य भी मिले हैं, जहां ८ कंकाल हैं। कंकालों का सिर उत्तर दिशा की ओर था। उनके साथ कुछ बर्तनों के अवशेष भी हैं।

दरअसल, कुछ लोग हमारा विरोध करने के लिए विरोध कर रहे हैं, उन्हें तथ्यों से कोई मतलब नहीं है। राखीगढ़ी में जो तथ्य मिले हैं, वे उनके (वामपंथियों) झूठे इतिहास को ही बदलने वाले हैं। इसलिए वे तथ्यहीन बातें कर रहे हैं। परहमें और हमारी टीम को अपने शोध परगर्व है।

हड़प्पा की अनूठी बातें

* राखीगढी-भिराणा की खुदाई बताती है कि यह सभ्यता भी हड़प्या कालीन अन्य सभ्यताओं की तरह चार चरणों से गुजरी। पहले दो चरणों में कृषि और ग्राम व्यवस्था की प्रमुखता थी। २६००-१९०० ईसा पूर्व का कालखंड तीसरा चरण है।जब यह सभ्यता एक मजबूत नगरीय सभ्यता के तौर पर ढल चुकी थी, जबकि १९००-१३०० ईसा पूर्व के कालखंड कोइसकेक्षय का चरण कहा जा सकता है।

* भिराणा के ही करीब फरमाना से मिले साक्ष्य गेहूं और जौ की फसलों में भारी गिरावट का संकेत करते हैं। यह उस समय की बात है जब सभ्यता अपने विकास काल से क्षय की ओर बढ़ रही थी। इससे संकेत मिलते हैं कि लोगों ने खुद को मानसून के अनुसार ढालना सीख लिया था और ये ऐसी बात थी जो वे पहले नहीं करते थे।

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

*१९००-१३०० ईसा पूर्व के दौरान इस सभ्यता के लोगों ने बड़े मोटे दाने वाली गेहूं जैसी फसल की बजायजौ की खेती शुरू कर दी थी। इसके अलावा वे सूखा झेलने में सक्षम छोटे अनाज और चावल की कुछ किस्मों को भी आजमाने लगे थे। यानी भूख मिटाने के लिए उचित अन्न और मौसम की परख ये दोनों ज्ञान उस सभ्यता के पास थे।

*** हडप्पा संस्कृति का विकास किन लोगों ने और कब किया?**

हड़प्पा संस्कृति का विकास भारतीयों ने ही किया था। इसमें किसी बाहरी के योगदान का सबूत नहीं मिला है। इसलिए हड़प्पा ही हमारी मूल सभ्यता है, जो लगभग १२,००० ईसा पूर्व पुरानी है। इसकी शुरूआत ईसा पूर्व ६,००० के आसपास मानी जा सकती है। ऐसा अनुमान है कि इसको विकसित होने में ३०००-४००० वर्ष का समय लगा होगा। राखीगढ़ी में अभी भी हड़प्पा सभ्यता के अनुसार ही घर वगेरह मिलते हैं। राखीगढ़ी के लोग बर्तन भी उसी प्रकार के इस्तेमाल करते थे। राखीगढ़ी और मेहरगढ़ (पाकिस्तान) में हड़प्पा संस्कृति के जो प्रमाण मिले हैं, उनमें समानता है। साक्ष्य बताते हैं कि इन्हीं लोगों ने हिंदू सभ्यता का विकास किया था।

****

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

१४) मीडिया में झूठी ख़बरें फैलाने के लिए डॉ.वसंत शिंदे इन्हें भारत मुक्ती मोर्चा के जरिये कानूनी नोटीस

लिगल नोटीस

(मूल अंग्रेजी कानूनी नोटीस का हिन्दी अनुवाद)

प्रति,
मि. वसंत शिंदे,
पुरातत्व विभाग,
डेक्कन कॉलेज पोस्ट ग्रॅज्युऐट अँड
रिसर्च इन्स्टिट्यूट, पुणे
येरवडा, पुणे
महाराष्ट्र- ४११ ००६

विषय :- सेल इस जर्नल में ''हडप्पा जिनोम में स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट या ईरानी खेतिहर की आनुवंशिकता की कमी'' इस शीर्षक तले जो अनुसंधान प्रकाशित किया गया है उसके बारे में मीडिया में (इलेक्ट्रॉनिक व न्यूजपेपर मीडिया) आपने जो गलत जानकारी देकर लोगों में भ्रांती निर्माण करने के दुष्ट मक़सद से जो जानकारी दी है उससे आप पर फौजदारी गुनाह क्यों ना दर्ज करें इस नोटीस को लिखित जवाब देने के लिए।

('सेल' इस जर्नल में आपके अनुसंधान के रिपोर्ट में जो जानकारी दी है उसके खिलाफ आपने मीडिया में गलत जानकारी देकर भारत के लोगों को गुमराह किया इसके लिए।)

महोदय,

मेरे क्लायंट भारत मुक्ती मोर्चा के नोंदणीकृत कार्यालय हाऊस नं.५२-ए, गल्ली नं.०२, जोशी रोड के पास, फैज रोड, करोल बाग, नई दिल्ली-११००५,

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

की सूचना से तथा उनके निर्देश के अनुसार व उनकी फ़रियाद में उन्होंने कहा कि, सेल जर्नल में आप एवं आपकी टीम ने जो अनुसंधान प्रकाशित किया है, उसके बारे में आपने मीडिया में गलत जानकारी दी जो कि, भारतीय पीनल कोड तथा इंडियन सीविल व क्रिमिनल लॉ के तहत दण्डनीय है, इसलिए हम आपको नोटीस दे रहे है और उसके मुताबिक आपके जवाब की उम्मिद है।

१) टाईम्स ऑफ इंडिया के मैसूर संस्करण में ७ सितम्बर, २०१९ की आवृत्ति में आपने वार्ताहर से गलत जानकारी साँझा करने से उपरोक्त अख़बार में बहुत गलत ख़बर छपकर आई है। लिहाजा मेरे क्लायंट बेहद हैरान और आशंकित हुये है और अख़बार में इस तरह की गलत जानकारी फैलाने के पहले ही आप एक सभ्य इन्सान के तौर पर उचित कानूनी कदम उठाने चाहिये थे।

२) टाईम्स ऑफ इंडिया के मैसूर संस्करण में ७ सितम्बर के अख़बार में आपके उपरोक्त ख़बर में बारे में जो जानकारी प्रसारित की गई थी वह तत्वतः गलत, झूठी होने से क्रिमिनल लॉ ऑफ इण्डिया के तहत आपको दोषी करार दिया जा सकता है।

३) जो कि, उपरोक्त अख़बार में जो ख़बर छपकर आई है वह केवल सत्य घटना का गलत तरीके से रिपोर्टिंग नहीं करता बल्कि भारतीय लोगों को इतिहास का जो साफ़ एवं पारदर्शी ज्ञान प्राप्त होना चाहिये था उसपर भी वह ख़बर दुष्ट मख़सद से उनका मन दुषित करता है। फरियादी को पता था कि आप अनुसंधान एवं जानकारी के खिलाफ इस तरह के अख़बार में छपवा रहे हैं किन्तु हक़ीकत क्या है यह बताने का या गलत जानकारी आपके नाम से छप रही है उसे सही करने का आपकी ओर से कोई भी प्रयास नहीं हुआ है।

४) मीडिया के उपरोक्त ख़बरों की संक्षेप में जानकारी इस तरह हैं-

ए) टाईम्स ऑफ इंडिया के मैसूर संस्करण में ७ सितम्बर, २०१९ को सेल जर्नल में आपके प्रकाशित हुये अनुसंधान के बारे में आपने निम्नांकित गलत जानकारी दी है :-

''इस चौंकानेवाले अनुसंधान से आर्य आक्रमण का सिद्धान्त खारिज

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

होता है। मोहेंजोदरो के उँचाई वाले ऊपरी हिस्से में जो प्राचीन कंकाल प्राप्त हुये है वे बाढ़ में मृत हुये लोगों के हैं। और सर मॉर्टिमर व्हिलर इनके कहने के मुताबिक आर्यो के नरसंहार से मृत हुये लोगों के वे ककाल नहीं हैं।

आर्य आक्रमण का सिद्धान्त बहुत ही खोखलें प्रमाणों पर निर्भर है। ऐसा डेक्कन महाविद्यालय के माजी व्हाईस चान्सलर और इन अनुसंधान के लेखकों में से एक डॉ. वसंत शिंदे ने कहा है।''

बी) दै. लोकमत जालना संस्करण का पहला पन्ना, दि. ११ अक्तुबर, २०१९ एवं टाईम्स ऑफ इंडिया ऑनलाईन आवृत्ति १० अक्तुबर, २०१९ के ''सिंधु संस्कृति के आर्यों का चेहरा शास्त्रीय थ्री-डी तंत्रज्ञान की सहायता से बनाया'' यह गलत जानकारी देनेवाली ख़बर उपरोक्त दो अख़बारों में छपी गई है।

सी) दै. भास्कर, भोपाल संस्करण दि. ११ अक्तुबर, २०१९ की ख़बर ने भी गलत जानकारी आपके नाम से छापी है।

डी) एबीपी न्यूज चॅनल के ऑनलाईन संस्करण में https://abpmajha. abplive.in /videos/arya-are-indians-special-research-696580/amp इस लिंकपर आपने मुलाकात के दौरान गलत जानकारी दी है।

इ) यह कि, आपकी रिपोर्ट में (प्राचीन हडप्पा जिनोम में स्टेप पॅस्टोरॅलिस्ट या ईरानी किसान की आनुवंशिकता मौजूद नहीं) और युट्यूब के https:// www.youtube.com/watch?v=MfVN97XQIM इस लिंकपर मुलाक़ात में कहीं भी आपने यह निष्कर्ष नहीं लगाया कि, आर्य आक्रमण का सिद्धान्त उपरोक्त उपरोक्त अनुसंधान से सिद्ध हुआ है या आर्य भारत में आये नहीं थे ऐसा आपने निष्कर्ष बिलकुल भी नहीं निकाला। उसी तरह यू-ट्युब पर हडप्पा आनुवंशिकता की खोज अलग अलग किस्से एवं खोज इस व्हिडिओ की साक्षात्कार में जो युआरएल ॲड्रेस https:// m.youtube.com/watch?feature=youtu.&v=vSbn xv303co इस लिंगपर १७ बजे तक दिखाया गया था उनमें कुछ भी सबूत ना देते हुये आपने ऐसा कहा था कि, संस्कृत यह तमाम भाषा की मूल भाषा है। आपने आगे यह भी कहा कि, मैंने जो कहा वह केवल संभावना है और मुमकिन कुछ भी हो सकता है। (किन्तु आपने जो कहा वह मुमकिन ही हो यह शाश्वत नहीं है!)

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

संभावना से जुड़ी परिभाषा लॉ कॉम इस लॉ डिक्शनी में दी गई है। ''संभावना याने ऐसी अनिश्चित बात जो हो सकती है।'' (निजी या यथार्थ लक्षण में मुमकिन लेकिन निश्चित नहीं ऐसे हालात) आपने जो कहा उसके लिए यदि पुख्ता सबूत ना हो (संस्कृत भाषा के उगम से जुड़ी) तो वे सिव्हील एवं क्रिमिनल लॉ को भंग करना होगा एवं इतिहास का विकृतिकरण करने का तरीका होगा।

एफ) टाईम्स ऑफ इंडिया के मैसूर संस्करण में दि. ७ सितम्बर, २०१९ में गलत एवं आधारहीन एक ख़बर आपके नाम से प्रकाशित की गई है। वे मूल मुद्दे से भटका हुआ है और किसी तीसरे इन्सान को ही उपरोक्त ख़बर प्रकाशित करने की अनुमती आपने दे दी है, ताकि मेरे क्लायंट के भारतीय लोगों को दर्द देने के दुष्ट एवं बुरे मकसद से प्रकाशित किया गया है। उपरोक्त खबर भारत के लोगों की गलत एवं खराब छवी निर्माण कर सकती है। और वैसा ही उस ख़बर ने किया भी है और वह खबर भारत के असली इतिहास से भटक गई है। इस तरह की मिथ्या खबरें फैलाने के लिए आपको कुछ अर्थ लाभ प्राप्त होता होगा ऐसा कहा जाये तो गलत नहीं होगा यह हमारा अंदाज है।

५) यह कि, 'प्राचीन संरक्षण कानून १९०४' कहता है कि, इस कानून के सेक्शन २ में प्राचीन वास्तु का अर्थ बताया गया है कि, ''प्राचीन वास्तु याने ऐसा निर्माण कार्य, बनाया हुआ स्थल या गुम्बज या शिल्पकृति, शिला पर किया हुआ शिल्प या शिलालेख, शिलाशिल्प जो कि ऐतिहासिक होकर पुरातत्विक या कलाकृति की दृष्टि से अनमोल है और सौ सालों से कम कालवधि का ना हो और उसमें (१) प्राचीन स्मारक के टूटे हुये अवशेष, (२) प्राचीन स्मारकों के स्थान, (३) उस स्मारक के स्थान के नजदीक जहाँ पर चहारदीवारी या अन्य सुरक्षा से जुड़ा कार्य किया है और (४) उस प्राचीन स्मारक को भेंट देने के लिए जानेवाले रास्ते आदि।''

६) यह कि, इतिहास यह मनुष्य का अहम आधार है किन्तु इतिहास के बारे में गलत खबर प्रकाशित होने से मेरे क्लायंट का और इसके साथ भारत के लोगों का बेहद नुकसान व हानि हो गई है। भारतीय संविधान ने पहले ही यह बात डंके की चोट पर कही है कि, इससे भारतीय संविधान के कलम ४९ यह स्टेट

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

इपॉलिसी के डायरेक्टिव प्रिन्सिपल में ली गई है। (संविधान भाग-४) जिसक तहत हर प्राचीन स्मारक या स्थान, या वास्तु या ऐतिहासिक कलाकृति का शिल्प इनका जतन करने की जिम्मेदारी राज्य पर डाली गई है और यह कानून संसद ने पारित किया है। जानकारी के लिए कलम ४९ दे रहा हूँ -

''कलम ४९ : राष्ट्रीय दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थल, वास्तु व स्मारक इनका जतन करने के लिए राष्ट्र की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थल, वास्तु, स्मारक, ऐतिहासिक कलाकृति के शिल्प यह संसद ने घोषित किये मुताबिक इस कानून के तहत हिफाजत करने की जिम्मेदारी राज्य की होगी। और उसका विकृतिकरण, हानि पहुँचाना, उन्हें एक स्थान से दूसरी ओर लेकर जाना, या भेजना या बेचना यह सब कानूनन प्रतिबन्ध होगा।''

७) इस नोटीस के जरिये आपको इत्तला देते है कि, यह नोटीस प्राप्त होते ही आप हमारे क्लायंट की लिखित स्वरुप में बगैर किसी शर्त के तुरंत माफी मांगे और अखबारों में सत्य एवं असली जानकारी छापकर लाये। और वह यू-ट्यूब एवं अन्य सोशल मीडिया पर भी दें। और मीडिया में जिस शीघ्रता से आपने गलत जानकारी दी उसी शीघ्रता से असली जानकारी भी दें। (सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार के दिन न्या.सी.के.प्रसाद एवं व्ही.जी.गौडा इनके बेंच द्वारा कहा है कि, अखबार में क्या प्रकाशित करें या नहीं यह सम्पादक ही तय करता है और इसलिए उपरोक्त मामले की गलत खबर सम्पादक की अनुमति के बगै नहीं छाप सकते, इसलिए सम्पादक को भी कारवाई से नहीं छोड़ सकते।) इसके आगे भारत में या भारत के बाहर दुनिया में आपके अनुसंधान के बारे में गलत जानकारी ना दें। यदि ऐसा करना आपने त्यागा नहीं, तो आपके खिलाफ उचित मुकदमा तथा फौजदारी इस तरह की दोनों ही कारवाई करने के लिए समयबद्ध हूँ और इस प्रक्रिया में जो कुछ भी आर्थिक जुर्माना लगेगा वह आपसे वसूल किया जायेगा। इस तरह की जो भी भविष्य में कारवाई की जाऐगी उसे पूरी तरह से आप ही जिम्मेदार रहेंगे और इसक परिणाम के लिए भी आपको ही जिम्मेदार माना जायेगा। मेरे क्लायंट के उपरोक्त पते पर आप जवाब भेज सकते है।)

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

इस नोटीस की एक प्रतिलिपि यहाँ हमारे दफ्तर में हिफाजत से रखी है।

टाईम्स ऑफ इंडिया, मैसूर संस्करण, दि. ७ सितम्बर, २०१९ दै. भास्कर, व दै. लोकमत, जालना, मराठी संस्करण, दि. ११-१०-२०१९ इन अखबारों की खबरों की एक-एक प्रतिलिपि इस नोटीस के साथ जोड़ी गई है।

आपका
थोरात ॲंड असोशिएटस्
वकील

****

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

Genetic Evidence on the Origins of Indian Caste Populations

Michael Bamshad,[1,10,12] Toomas Kivisild,[2] W. Scott Watkins,[3] Mary E. Dixon,[3] Chris E. Ricker,[3] Baskara B. Rao,[4] J. Mastan Naidu,[4] B.V. Ravi Prasad,[4,5] P. Govinda Reddy,[6] Arani Rasanayagam,[7] Surinder S. Papiha,[8] Richard Villems,[2] Alan J. Redd,[7] Michael F. Hammer,[7] Son V. Nguyen,[9] Marion L. Carroll,[9] Mark A. Batzer,[9,11] and Lynn B. Jorde[3]

[1]Department of Pediatrics, University of Utah, Salt Lake City, Utah 84112, USA; [2]Institute of Molecular and Cell Biology, Tartu University and Estonian Biocentre, Tartu 51010, Estonia; [3]Department of Human Genetics, University of Utah, Salt Lake City, Utah 84112, USA; [4]Department of Anthropology, Andhra University, Visakhapatnam, Andhra Pradesh, India; [5]Anthropological Survey of India, Calcutta, India; [6]Department of Anthropology, University of Madras, Madras, Tamil Nadu, India; [7]Laboratory of Molecular Systematics and Evolution, University of Arizona, Tucson, Arizona 85721, USA; [8]Department of Human Genetics, University of Newcastle-upon-Tyne, UK; [9]Department of Pathology, Biometry and Genetics, Biochemistry and Molecular Biology, Stanley S. Scott Cancer Center, Louisiana State University Health Science Center, New Orleans, Louisiana 70112, USA

The origins and affinities of the ~1 billion people living on the subcontinent of India have long been contested. This is owing, in part, to the many different waves of immigrants that have influenced the genetic structure of India. In the most recent of these waves, Indo-European-speaking people from West Eurasia entered India from the Northwest and diffused throughout the subcontinent. They purportedly admixed with or displaced indigenous Dravidic-speaking populations. Subsequently they may have established the Hindu caste system and placed themselves primarily in castes of higher rank. To explore the impact of West Eurasians on contemporary Indian caste populations, we compared mtDNA (400 bp of hypervariable region 1 and 14 restriction site polymorphisms) and Y-chromosome (20 biallelic polymorphisms and 5 short tandem repeats) variation in ~265 males from eight castes of different rank to ~750 Africans, Asians, Europeans, and other Indians. For maternally inherited mtDNA, each caste is most similar to Asians. However, 20%–30% of Indian mtDNA haplotypes belong to West Eurasian haplogroups, and the frequency of these haplotypes is proportional to caste rank, the highest frequency of West Eurasian haplotypes being found in the upper castes. In contrast, for paternally inherited Y-chromosome variation each caste is more similar to Europeans than to Asians. Moreover, the affinity to Europeans is proportionate to caste rank, the upper castes being most similar to Europeans, particularly East Europeans. These findings are consistent with greater West Eurasian male admixture with castes of higher rank. Nevertheless, the mitochondrial genome and the Y chromosome each represents only a single haploid locus and is more susceptible to large stochastic variation, bottlenecks, and selective sweeps. Thus, to increase the power of our analysis, we assayed 40 independent, biparentally inherited autosomal loci (1 LINE-1 and 39 *Alu* elements) in all of the caste and continental populations (~600 individuals). Analysis of these data demonstrated that the upper castes have a higher affinity to Europeans than to Asians, and the upper castes are significantly more similar to Europeans than are the lower castes. Collectively, all five datasets show a trend toward upper castes being more similar to Europeans, whereas lower castes are more similar to Asians. We conclude that Indian castes are most likely to be of proto-Asian origin with West Eurasian admixture resulting in rank-related and sex-specific differences in the genetic affinities of castes to Asians and Europeans.

Present addresses: [10]Eccles Institute of Human Genetics, 15 North 2030 East, Room 2100, University of Utah, Salt Lake City, UT 84112-5330, USA. [11]Department of Biological Sciences, Biological Computation and Visualization Center, Louisiana State University, 508 Life Sciences Building, Baton Rouge, LA 70803, USA.
[12]Corresponding author.
E-MAIL mike@genetics.utah.edu; FAX (801) 585-9148.
Article published on-line before print: *Genome Res.*, 10.1101/gr.173301. Article and publication are at www.genome.org/cgi/doi/10.1101/gr.173301.

Shared Indo-European languages (i.e., Hindi and most European languages) suggested to linguists of the nineteenth and twentieth centuries that contemporary Hindu Indians are descendants of primarily West Eurasians who migrated from Europe, the Near East, Anatolia, and the Caucasus 3000–8000 years ago (Poliakov 1974; Renfrew 1989a,b). These nomadic migrants may

11:994–1004 ©2001 by Cold Spring Harbor Laboratory Press ISSN 1088-9051/01 $5.00; www.genome.org

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

have consolidated their power by admixing with native Dravidic-speaking (e.g., Telugu) proto-Asian populations who controlled regional access to land, labor, and resources (Cavalli-Sforza et al. 1994), and subsequently established the Hindu caste hierarchy to legitimize and maintain this power (Poliakov 1974; Cavalli-Sforza et al. 1994). It is plausible that these West Eurasian immigrants also appointed themselves to predominantly castes of higher rank. However, archaeological evidence of the diffusion of material culture from Western Eurasia into India has been limited (Shaffer 1982). Therefore, information on the genetic relationships of Indians to Europeans and Asians could contribute substantially to understanding the origins of Indian populations.

Previous genetic studies of Indian castes have failed to achieve a consensus on Indian origins and affinities. Various results have supported closer affinity of Indian castes either with Europeans or with Asians, and several factors underlie this inconsistency. First, erratic or limited sampling of populations has limited inferences about the relationships between caste and continental populations (i.e., Africans, Asians, Europeans). These relationships are further confounded by the wide geographic dispersal of caste populations. Genetic affinities among caste populations are, in part, inversely correlated with the geographic distance between them (Malhotra and Vasulu 1993), and it is likely that affinities between caste and continental populations are also geographically dependent (e.g., different between North and South Indian caste populations). Second, it has been suggested that castes of different rank may have originated from or admixed with different continental groups (Majumder and Mukherjee 1993). Third, the size of caste populations varies widely, and the effects of genetic drift on some small, geographically isolated castes may have been substantial. Fourth, most of the polymorphisms assayed over the last 30 years are indirect measurements of genetic variation (e.g., ABO typing), have been sampled from only a few loci, and may not be selectively neutral. Finally, only rarely have systematic comparisons been made with continental populations using a large, uniform set of DNA polymorphisms (Majumder 1999).

To investigate the origin of contemporary castes, we compared the genetic affinities of caste populations of differing rank (i.e., upper, middle, and lower) to worldwide populations. We analyzed mtDNA (hypervariable region 1 [HVR1] sequence and 14 restriction-site polymorphisms [RSPs]), Y-chromosome (5 short-tandem repeats [STRs] and 20 biallelic polymorphisms), and autosomal (1 LINE-1 and 39 *Alu* inserts) variation in ~265 males from eight different Telugu-speaking caste populations from the state of Andhra Pradesh in South India (Bamshad et al. 1998). Comparisons were made to ~400 individuals from tribal and Hindi-speaking caste and populations distributed across the Indian subcontinent (Mountain et al. 1995; Kivisild et al. 1999) and to ~350 Africans, Asians, and Europeans (Jorde et al. 1995, 2000; Seielstad et al. 1999).

RESULTS

Analysis of mtDNA Suggests a Proto-Asian Origin of Indians

MtDNA HVR1 genetic distances between caste populations and Africans, Asians, and Europeans are significantly different from zero ($p < 0.001$) and reveal that, regardless of rank, each caste group is most closely related to Asians and is most dissimilar from Africans (Table 1). The genetic distances from major continental populations (e.g., Europeans) differ among the three caste groups, and the comparison reveals an intriguing pattern. As one moves from lower to upper castes, the distance from Asians becomes progressively larger. The distance between Europeans and lower castes is larger than the distance between Europeans and upper castes, but the distance between Europeans and middle castes is smaller than the upper caste-European distance. These trends are the same whether the Kshatriya and Vysya are included in the upper castes, the middle castes, or excluded from the analysis. This may be owing, in part, to the small sample size ($n = 10$) of each of these castes. Among the upper castes the genetic distance between Brahmins and Europeans (0.10) is smaller than that between either the Kshatriya and Europeans (0.12) or the Vysya and Europeans (0.16). Assuming that contemporary Europeans reflect West Eurasian affinities, these data indicate that the amount of West Eurasian admixture with Indian populations may have been proportionate to caste rank.

Conventional estimates of the standard errors of genetic distances assume that polymorphic sites are independent of each other, that is, unlinked. Because mtDNA polymorphisms are in complete linkage disequilibrium (as are polymorphisms on the nonrecom-

Table 1. MtDNA (HVR1 Sequence) Genetic Distances between Caste Groups from Andhra Pradesh and Continental Populations

Caste group	Africans	Asians	Europeans
Upper	.179	.037	.100 (0.106)[a]
Middle	.182	.025	.086 (0.084)[b]
Lower	.163	.023	.113
All castes	.196	.026	.077

[a]Genetic distance between upper castes and Europeans if the Kshatriya and Vysya are excluded from the analysis.
[b]Genetic distance between the middle castes and Europeans if the Kshatriya and Vysya are grouped in the middle castes.

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

bining portions of the Y chromosome), this assumption is violated. Alternatively, the mtDNA genome can be treated as a single locus with multiple haplotypes. However, even if this assumption is made, mtDNA distances do not differ significantly from one another even at the level of the three major continental populations (Nei and Livshits 1989), the standard errors being greater than the genetic distances. Considering that the distances between castes and continental populations are less than those between different continental populations, the estimated mtDNA genetic distances between upper castes and Europeans versus lower castes and Europeans would not be significantly different from each other. Therefore, to resolve further the relationships of Europeans and Asians to contemporary Indian populations, we defined the identities of specific mtDNA restriction-site haplotypes.

The presence of the mtDNA restriction sites *Dde*I$_{10,394}$ and *Alu*I$_{10,397}$ defines a haplogroup (a group of haplotypes that share some sequence variants), M, that was originally identified in populations that migrated from mainland Asia to Southeast Asia and Australia (Ballinger et al. 1992; Chen et al. 1995; Passarino et al. 1996) and is found at much lower frequency in European and African populations. Most of the common haplotypes found in Telugu- and Hindi-speaking caste populations belong to haplogroup M (Table 2) and do not differentiate into language-specific clusters in a phylogenetic reconstruction (Fig. 1). Furthermore, these Indian haplogroup-M haplotypes are distinct from those found in other Asian populations (Fig. 2) and indicate the existence of Indian-specific subsets of haplogroup M (e.g., M3). As expected if the lower castes are more similar to Asians than to Europeans, and the upper castes are more similar to Europeans than to Asians, the frequencies of M and M3 haplotypes are inversely proportional to caste rank (Table 2).

Of the non-Asian mtDNA haplotypes found in Indian populations, most are of West Eurasian origin (Table 2; Torroni et al. 1994; Richards et al. 1998). However, most of these Indian West-Eurasian haplotypes belong to an Indian-specific subset of haplogroup U, that is, U2i (Kivisild et al. 1999), the oldest and second most common mtDNA haplogroup found in Europe (Torroni et al. 1994). In agreement with the HVR1 results, the frequency of West Eurasian mtDNA haplotypes is significantly higher in upper castes than in lower castes ($p < 0.05$), the frequency of U2i haplotypes increasing as one moves from lower to higher castes. In addition, the frequency of mtDNA haplogroups with a more recent coalescence estimate (i.e., H, I, J, K, T) was fivefold higher in upper castes (6.8%) than in lower castes (1.4%). These haplotypes are derivatives of haplogroups found throughout Europe (Richards et al. 1998), the Middle East (Di Rienzo and Wilson 1991), and to a lesser extent Central Asia (Comas et al. 1998). Collectively, the mtDNA haplotype evidence indicate that contemporary Indian mtDNA evolved largely from proto-Asian ancestors with Western Eurasian admixture accounting for 20%–30% of mtDNA haplotypes.

Table 2. MtDNA Haplogroup Frequencies in Dravidic and Hindi-Speaking Indians

	Dravidic (%)			Hindi (%)	
Haplogroup	upper	middle	lower	total	
Asian	61 (5.5)	64.6 (3.8)	71.4 (5.3)	65.7 (2.7)	55.7 (2.9)
A	0	0	0	0	0.3 (.32)
B	0	0	0	0	0
F	0	0	0	0	2.7 (.94)
M	61 (5.5)	64.6 (3.8)	71.4 (5.3)	65.7 (2.7)	52.7 (2.9)
M3	18.6 (4.4)	3.5 (1.5)	1.4 (1.4)	6.6 (1.4)	6.0 (1.4)
M-C	0	0	0	0	0.7 (.48)
M-D	0	0	0	0	1.0 (.57)
M-G	0	0.9 (.74)	0	0.4 (.36)	0
M-E	0	1.8 (1.1)	0	0.8 (.51)	0
West Eurasian	23.7 (4.8)	14.2 (2.8)	7.1 (3.0)	14.5 (2.0)	27.4 (2.6)
U2i[b]	16.9 (4.2)	9.7 (2.3)	5.7 (2.7)	10.3 (1.7)	15.3 (2.1)
W	1.7 (1.5)	0	0	0.4 (.36)	3.7 (.29)
H	3.4 (2.0	0	0	1.2 (.62)	2.3 (.87)
I	0	0	0	0	1.3 (.65)
J	0	0.9 (.75)	0	0.4 (.36)	0.7 (.48)
K	1.7 (1.5)	0	0	0.4 (.36)	0
T	0	2.7 (1.3)	1.4 (1.4)	1.7 (.73)	1.7 (.75)
X	0	0	0	0	0.7 (.48)
Others	15.3 (4.1)	21.2 (1.3)	21.4 (4.8)	19.8 (2.3)	16.7 (2.2)

± standard errors are in parentheses.
[a]These haplotypes belong to super-haplogroup R (ancestral to haplogroups B, F, H, T, J, V, and U) but do not belong to any previously recognized haplogroup.
[b]U2i is differentiated from haplogroup U by the presence of a transition at np 16051.

Y-Chromosome Variation Confirms Indo-European Admixture

Genetic distances estimated from Y-chromosome STR polymorphisms differ significantly from zero ($p < 0.001$) and reveal a distinctly different pattern of population relationships (Table 3). In contrast to the mtDNA distances, the Y-chromosome STR data do not demonstrate a closer affinity to Asians for each caste group. Upper castes are more similar to Europeans than to Asians, middle castes are equidistant from the two groups, and lower castes are most similar to Asians. The genetic distance between caste populations and Africans is pro-

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

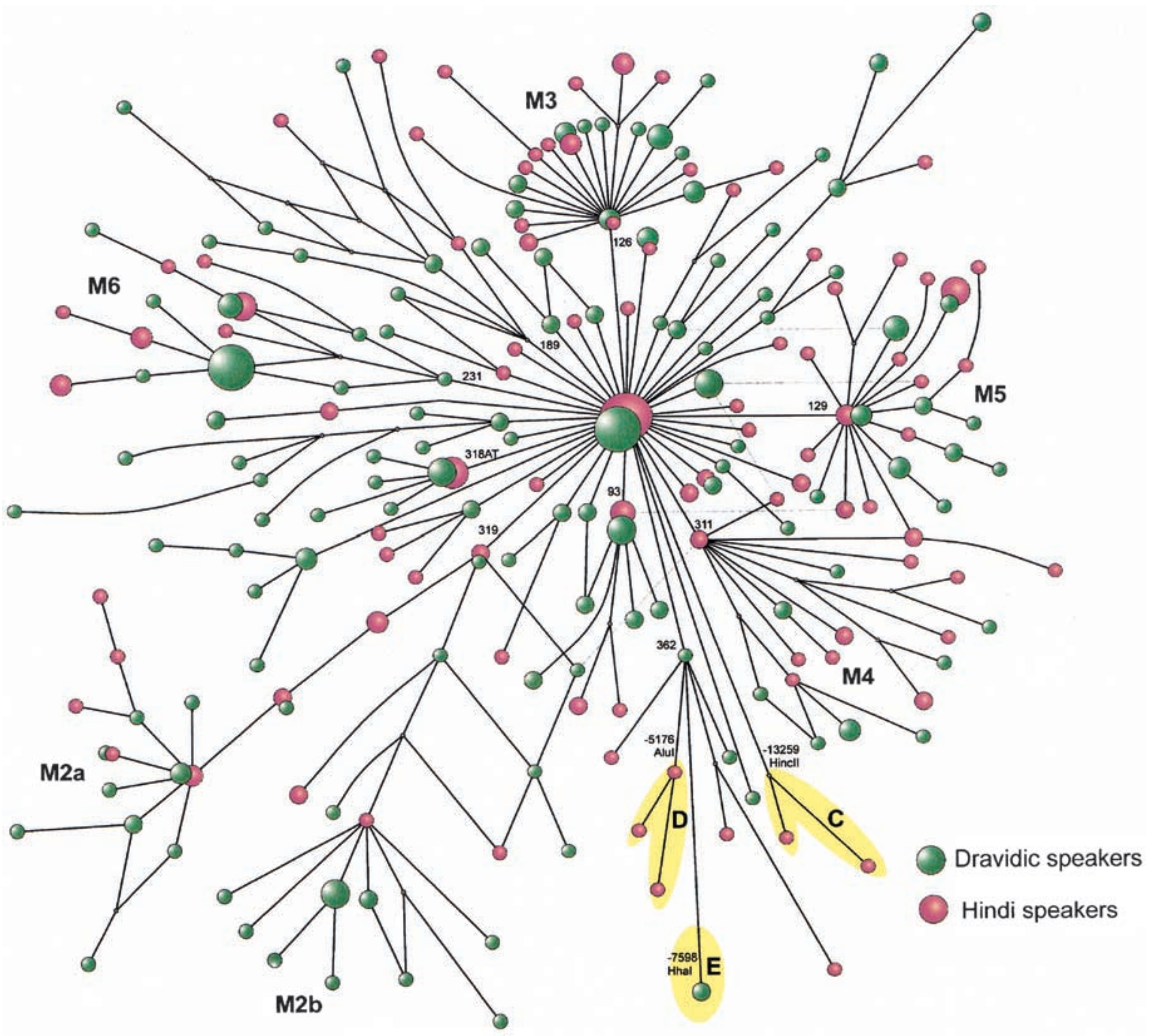

Figure 1 Phylogeny of haplogroup M in India. Phylogenetic relationships between HVR1 haplotypes were estimated by constructing reduced median networks. The size of each node is porportional to the haplotype frequency. Reticulations indicate parallel mutational pathways or multiple mutations. The identities of HVR1 mutations (numbered according to the Cambridge reference sequence +16000; Anderson et al. 1981) that define major haplogroup subsets are depicted along selected internodes. The coalescence estimate of Indian haplogroup-M haplotypes is 48,000 ± 1500 yr, suggesting that Indian-specific mtDNA haplotypes split from a proto-Asian ancestor in the late Pleistocene.

gressively larger moving from lower to middle to upper caste groups (Table 3).

Genetic distances estimated from Y-chromosome biallelic polymorphisms differ significantly from zero ($p < 0.05$), and the patterns differ from the mtDNA results even more strikingly than the Y-chromosome STRs. For Y-chromosome biallelic polymorphism data, each caste group is more similar to Europeans (Table 4), and as one moves from lower to middle to higher castes the genetic distance to Europeans diminishes progressively. This pattern is further accentuated by separating the European population into Northern, Southern, and Eastern Europeans; each caste group is most closely related to Eastern Europeans. Moreover, the genetic distance between upper castes and Eastern Europeans is approximately half the distance between Eastern Europeans and middle or lower castes. These results suggest that Indian Y chromosomes, particularly upper caste Y chromosomes, are more similar to European than to Asian Y chromosomes. This underscores the close affinities between Hindu Indian and Indo-European Y chromosomes based on a previously reported analysis of three Y-chromosome polymorphisms (Quintana-Murci et al. 1999b).

Overall, these results indicate that the affinities of Indians to continental populations varies according to

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

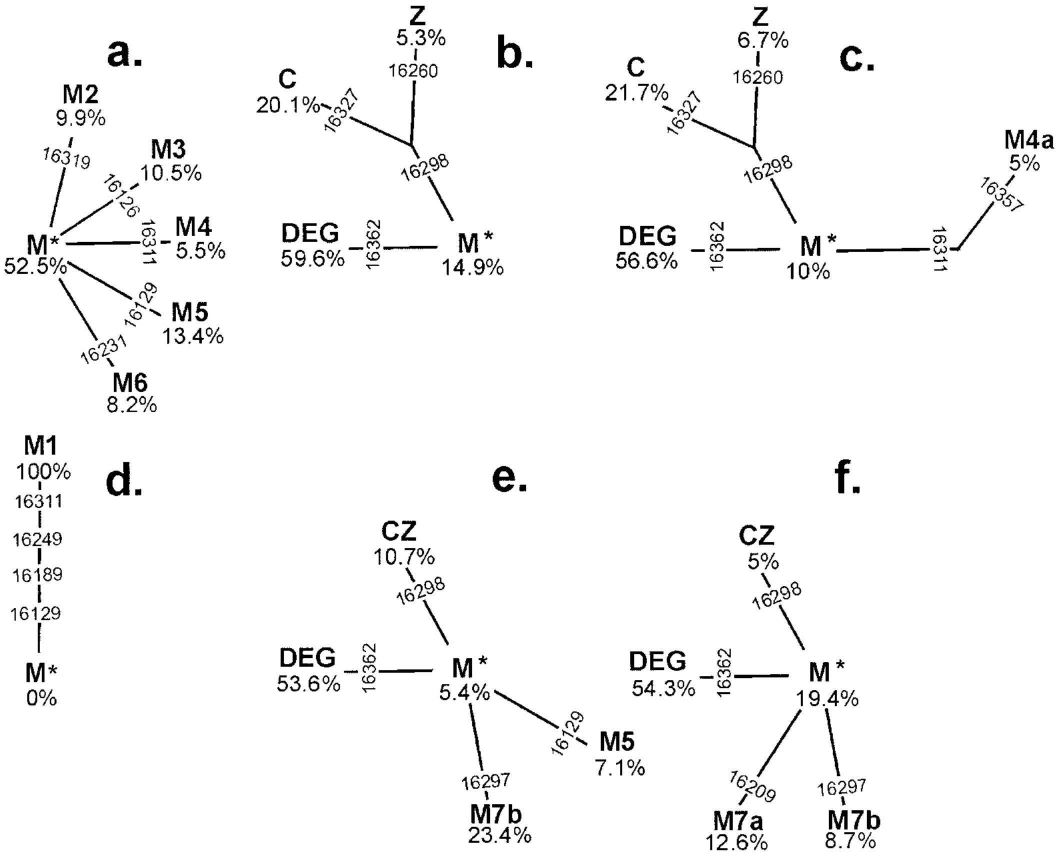

Figure 2 Major subsets of haplogroup M. Phylogenetic relationships of HVR1 haplotypes assigned to haplogroup M were estimated for: (*a*) 343 Indians (Quintana-Murci et al. 1999a; this study); (*b*) 16 Turks and 78 Central Asians (Comas et al. 1998; this study); (*c*) 60 Mongolians (Kolman et al. 1996); (*d*) 25 Ethiopians (Quintana-Murci et al. 1999a); (*e*) 56 Chinese (Horai et al. 1996; this study); (*f*) 103 Japanese (Horai et al. 1996; Seo et al. 1998). The founding node of each network (M*) differs from the CRS (Anderson et al. 1981) by transitions at np 10398, 10400, and 16223. The frequency of each subset of haplogroup M is indicated. Each phylogenetic network was pruned by eliminating branches containing haplotypes summing to a frequency of <5% (these branches were binned with the founder haplotype, M*). The identities of HVR1 mutations (numbered according to the CRS −16,000; Anderson et al. 1981) that define major haplotype subsets are depicted along selected internodes.

caste rank and depends on whether mtDNA or Y-chromosome data are analyzed. However, conclusions drawn from these data are limited because mtDNA and the Y chromosome is each effectively a single haploid locus and is more sensitive to genetic drift, bottlenecks, and selective sweeps compared to autosomal loci. These limitations of our analysis can be overcome, in part, by analyzing a larger set of independent autosomal loci. Consequently, we assayed 1 LINE-1 and 39 unlinked *Alu* polymorphisms.

Table 3. Y Chromosome (STRs) Genetic Distances between Caste Groups from Andhra Pradesh and Continental Populations

Caste group	Africans	Asians	Europeans
Upper	.0166	.0104	.0092
Middle	.0156	.0110	.0108
Lower	.0131	.0088	.0108
All castes	.0151	.0101	.0102

Affinities to Europeans and Asians Stratified by Caste Rank

Genetic distances estimated from autosomal *Alu* elements correspond to caste rank, the genetic distance between the upper and lower castes being more than 2.5 times larger than the distance between upper and middle or middle and lower castes (upper to middle, 0.0069; upper to lower, 0.018; middle to lower, 0.0071). These trends are the same whether the Kshatriya and Vysya are included in the upper castes, the middle castes, or excluded from the analysis (data not shown). Furthermore, a neighbor-joining network of genetic distances between separate castes (Fig. 3) clearly differentiates castes of different rank into separate clusters. This is similar to the relationship between genetic distances and caste rank estimated from

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

Table 4. Y Chromosome (Bi-Allelic Polymorphisms) Genetic Distances between Caste Groups from Andhra Pradesh and Continental Populations[a]

Caste group	Asians	Europeans	W. Europeans	S. Europeans	E. Europeans
Upper	.388	.135	.265	.168	.073
Middle	.291	.146	.249	.156	.133
Lower	.376	.173	.283	.189	.155

[a]Includes comparisons to unpublished data of M.F.H.

mtDNA (Bamshad et al. 1998). It is important to note, however, that the autosomal genetic distances are estimated from 40 independent loci. This afforded us the opportunity to test the statistical significance of the correspondence between genetic distance and caste status. The Mantel correlation between interindividual genetic distances and distances based on social rank was low but highly significant for individuals ranked into upper, middle, and lower groups ($r = 0.08$; $p < 0.001$) and into eight separate castes ($r = 0.07$; $p < 0.001$). Given the resolving power of this autosomal dataset, we next tested whether we could reconcile the results of the analysis of mtDNA and Y-chromosome markers in castes and continental populations.

Genotypic differentiation was significantly different from zero ($p < 0.0001$) between each pair of caste populations and between each caste and continental population. Similar to the results of both the mtDNA and Y-chromosome analyses, the distance between upper castes and European populations is smaller than the distance between lower castes and Europeans (Table 5). However, in contrast to the mtDNA results but similar to the Y-chromosome results, the affinity between upper castes and Europeans is higher than that of upper castes and Asians (Table 5). If the Kshatriya and Vysya are excluded from the analysis or included in the middle castes, the genetic distance between the upper caste (Brahmins) and Europeans remains smaller than the distance between the lower castes and Europeans and the distance between upper castes and Asians (Table 5). Analysis of each caste separately reveals that the genetic distance between the Brahmins and Europeans (0.013) is less than the distance between Europeans and Kshatryia (0.030) or Vysya (0.020). Nevertheless, each separate upper caste is more similar to Europeans than to Asians.

Because historical evidence suggests greater affinity between upper castes and Europeans than between lower castes and Europeans (Balakrishnan 1978, 1982; Cavalli-Sforza et al. 1994), it is appropriate to use a one-tailed test of the difference between the corresponding genetic distances. The 90% confidence limits of Nei's standard distances estimated between upper castes and Europeans (0.006–0.016) versus lower castes and Europeans (0.017–0.037) do not overlap, indicating statistical significance at the 0.05 level. Significance at 0.05 is not achieved if the Kshatriya and Vysya are excluded. These results offer statistical support for differences in the genetic affinity of Europeans to caste populations of differing rank, with greater European affinity to upper castes than to lower castes.

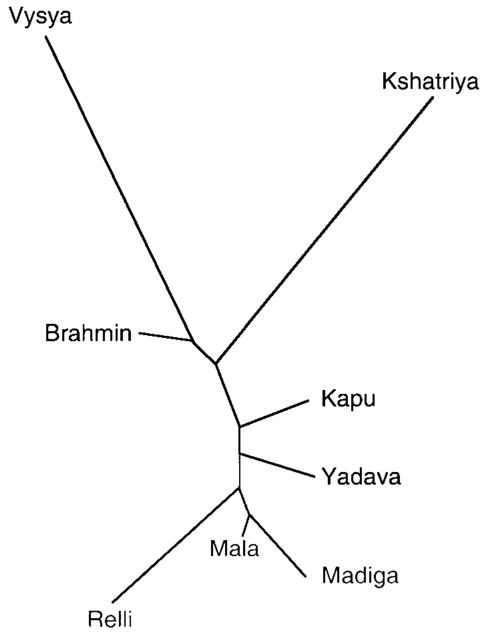

Figure 3 Neighbor-joining network of genetic distances among caste communities estimated from 40 *Alu* polymorphisms. Distances between upper castes (U; Brahmin, Vysya, Kshatriya), middle castes (M; Yadava, Kapu), and lower castes (L; Mala, Madiga, Relli) are significantly correlated with social rank.

DISCUSSION

Previous genetic studies have found evidence to support either a European or an Asian origin of Indian caste populations, with occasional indications of admixture with African or proto-Australoid populations (Chen et al. 1995; Mountain et al. 1995; Bamshad et al. 1996, 1997; Majumder et al. 1999; Quintana-Murci et al. 1999a). Our results demonstrate that for biparentally inherited autosomal markers, genetic distances between upper, middle, and lower castes are significantly correlated with rank; upper castes are more similar to Europeans than to Asians; and upper castes are significantly more similar to Europeans than are lower castes. This result appears to be owing to the amalgamation of two different patterns of sex-specific genetic variation.

The majority of Indian mtDNA restriction-site haplotypes belong to Indian-specific subsets (e.g., M3)

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

Table 5. Autosomal Genetic Distances[a] between Caste Groups from Andhra Pradesh and Continental Populations

Caste group	Africans	Asians	Europeans
Upper	.140 (0.074 ± .018)	.058 (0.024 ± .009)	.032[b] (.011 ± .003)
Middle	.149 (0.082 ± .018)	.032 (0.013 ± .005)	.057[c] (.020 ± .006)
Lower	.147 (0.083 ± .017)	.044 (0.017 ± .005)	.073 (.027 ± .006)
All castes	.147	.039	.045

[a]Nei standard distances ± standard errors are in parentheses.
[b]If the Kshatriya and Vysya are excluded, the genetic distance between the upper castes and Europeans is 0.038.
[c]If the Kshatriya and Vysya are grouped in the middle castes, the genetic distance between the middle castes and Europeans is 0.050.

of a predominantly Asian haplogroup M, although a substantial minority of mtDNA restriction site haplotypes belong to West Eurasian haplogroups. A higher proportion of proto-Asian mtDNA restriction-site haplotypes is found in lower castes compared to middle or upper castes, whereas the frequency of West Eurasian haplotypes is positively correlated with caste rank, that is, is highest in the upper castes. For Y-chromosome STR variation the upper castes exhibit greatest similarity with Europeans, whereas the lower caste groups are most similar to Asians. For Y biallelic polymorphism variation, each caste group is more similar to Europeans than to Asians, and the affinity to Europeans is proportional to caste rank, that is, is highest in the upper castes.

Importantly, five different types of data (mtDNA HVR1 sequence, mtDNA RSPs, Y-chromosome STRs, Y-chromosome biallelic polymorphisms, and autosomal *Alu* polymorphisms) support the same general pattern: relatively smaller genetic distances from European populations as one moves from lower to middle to upper caste populations. Genetic distances from Asian populations become larger as one moves from lower to middle to upper caste populations. It is especially noteworthy that the analysis of Y biallelic polymorphisms, which involved an independent set of comparative Asian, European, and African populations, again indicated the same pattern. Additional support is offered by the fact that the autosomal polymorphisms yielded a statistically significant difference between the upper-caste–European and lower-caste–European genetic distances. With additional loci, other differences (e.g., the distances between different caste groups and Asians) may also reach statistical significance.

The most likely explanation for these findings, and the one most consistent with archaeological data, is that contemporary Hindu Indians are of proto-Asian origin with West Eurasian admixture. However, admixture with West Eurasian males was greater than admixture with West Eurasian females, resulting in a higher affinity to European Y chromosomes. This supports an earlier suggestion of Passarino et al. (1996), which was based on a comparison of mtDNA and blood group results. Furthermore, the degree of West Eurasian admixture was proportional to caste rank. This explanation is consistent with either the hypothesis that proportionately more West Eurasians became members of the upper castes at the inception of the caste hierarchy or that social stratification preceded the West Eurasian incursion and that West Eurasians tended to insert themselves into higher-ranking positions. One consequence is that shared Indo-European languages may not reflect a common origin of Europeans and most Indians, but rather underscores the transfer of language mediated by contact between West Eurasians and native proto-Indians.

West Eurasian admixture in Indian populations may have been the result of more than one wave of immigration into India. Kivisild et al. (1999) determined the coalescence (~50,000 years before present) of the Indian-specific subset of the West Eurasian haplotypes (i.e., U2i) and suggested that West Eurasian admixture may have been much older than the purported Dravidian and Indo-European incursions. Our analysis of Indian mtDNA restriction-site haplotypes that do not belong to the U2i subset of West Eurasian haplotypes (i.e., H, I, J, K, T) is consistent with more recent West Eurasian admixture. It is also possible that haplotypes with an older coalescence were introduced by Dravidians, whereas haplotypes with a more recent coalescence belonged to Indo-Europeans. This hypothesis can be tested by a more detailed comparison to West Eurasian mtDNA haplotypes from Iran, Anatolia, and the Caucasus. Alternatively, the coalescence dates of these haplotypes may predate the entry of West Eurasians populations into India. Regardless of their origin, West Eurasian admixture resulted in rank-related differences in the genetic affinities of castes to Europeans and Asians. Furthermore, the frequency of West Eurasian haplotypes in the founding middle and upper castes may be underestimated because of the upward social mobility of women from lower castes (Bamshad et al. 1998). These women were presumably more likely to introduce proto-Asian mtDNA haplotypes into the middle and upper castes.

Our analysis of 40 autosomal markers indicates clearly that the upper castes have a higher affinity to Europeans than to Asians. The high affinity of caste Y chromosomes with those of Europeans suggests that the majority of immigrating West Eurasians may have

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

been males. As might be expected if West Eurasian males appropriated the highest positions in the caste system, the upper caste group exhibits a lower genetic distance to Europeans than the middle or lower castes. This is underscored by the observation that the Kshatriya (an upper caste), whose members served as warriors, are closer to Europeans than any other caste (data not shown). Furthermore, the 32-bp deletion polymorphism in CC chemokine receptor 5, whose frequency peaks in populations of Eastern Europe, is found only in two Brahmin males (M. Bamshad and S.K. Ahuja, unpubl.). The stratification of Y-chromosome distances with Europeans could also be caused by male-specific gene flow among caste populations of different rank. However, we and others have demonstrated that there is little sharing of Y-chromosome haplotypes among castes of different rank (Bamshad et al. 1998; Bhattacharyya et al. 1999).

The affinity of caste populations to Europeans is more apparent for Y-chromosome biallelic polymorphisms than Y-chromosome STRs. This could be attributed to the use of different European populations in comparisons using STRs and biallelic polymorphisms. Alternatively, it may reflect, in part, the effects of high mutation rates for the Y-chromosome STRs, which would tend to obscure relationships between caste and continental populations. A lack of consistent clustering at the continental level has been observed in several studies of Y-chromosome STRs (Deka et al. 1996; Torroni et al. 1996; de Knijff et al. 1997). The autosomal *Alu* and biallelic Y-chromosome polymorphisms, in contrast, have a slower rate of drift than Y-chromosome STRs because of a higher effective population size, and their mutation rate is very low. Thus, the Y-chromosome biallelic polymorphisms and autosomal *Alu* markers may serve as more stable markers of worldwide population affinities.

Our analysis may help to explain why estimates of the affinities of caste groups to worldwide populations have varied so widely among different studies. Analyses of recent caste history based on only mtDNA or Y-chromosome polymorphisms clearly would suggest that castes are more closely related to Asians or to Europeans, respectively. Furthermore, we attempted to minimize the confounding effect of geographic differences between populations by sampling from a highly restricted region of South India. Because of the ubiquity of the caste system in India's history, it is reasonable to predict similar patterns in caste populations living in other areas. Indeed, any genetic result becomes more compelling when it is replicated in other populations. Therefore, comparable studies in caste populations from other regions of India must be completed to test the generality of these results.

The dispersal and subsequent growth of Indian populations since the Neolithic Age is one of the most important events to shape the history of South Asia. However, the origin and dispersal route of the aboriginal inhabitants of the Indian subcontinent is unclear. Our findings suggest a proto-Asian origin of the Indian-specific haplogroup-M haplotypes. Haplogroup-M haplotypes are also found at appreciable frequencies in some East African populations— ~18% of Ethiopians (Quintana-Murci et al. 1999a) and 16% of Kenyans (M. Bamshad and L.B. Jonde, unpubl.). A comparison of haplogroup-M haplotypes from East Africa and India has suggested that this southern route may have been one of the original dispersal pathways of anatomically modern humans out of Africa (Quintana-Murci et al. 1999a). Together, these data support our previous suggestion (Kivisild et al. 1999) that India may have been inhabited by at least two successive late Pleistocene migrations, consistent with the hypothesis of Lahr and Foley (1994). It also adds to the growing evidence that the subcontinent of India has been a major corridor for the migration of people between Africa, Western Asia, and Southeast Asia (Cavalli-Sforza et al. 1994).

It should be emphasized that the DNA variation studied here is thought to be selectively neutral and thus represents only the effects of population history. These results permit no inferences about phenotypic differences between populations. In addition, alleles and haplotypes are shared by different caste populations, reflecting a shared history. Indeed, these findings underscore the longstanding appreciation that the distribution of genetic polymorphisms in India is highly complex. Further investigation of the spread of anatomically modern humans throughout South Asia will need to consider that such complex patterns may be the norm rather than the exception.

METHODS

Sample Collection

All studies of South Indian populations were performed with the approval of the Institutional Review Board of the University of Utah, Andhra University, and the government of India. Adult males living in the district of Visakhapatnam, Andhra Pradesh, were questioned about their caste affiliations and surnames and the birthplaces of their parents. Those who were unrelated to any other subject by at least three generations were considered eligible to participate.

We classified caste populations based upon the traditional ranking of these castes by *varna* (defined below), occupation, and socioeconomic status. According to various Sanskrit texts, Hindu populations were partitioned originally into four categories or *varna*: Brahmin, Kshatriya, Vysya, and Sudra (Tambia 1973; Elder 1996). Those in each *varna* performed occupations assigned to their category. Brahmins were priests; Kshatriya were warriors; Vysya were traders; and Sudra were to serve the three other *varna* (Tambia 1973; Elder 1996). Each *varna* was assigned a status; Brahmin, Kshatriya, and Vysya were considered of higher status than the Sudra because the Brahmin, Kshatriya, and Vysya are considered the twice-born

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

castes and are differentiated from all other castes in the caste hierarchy. This is the rationale behind classifying them as the upper group of castes (Tambia 1973).

The Kapu and the Yadava are called once-born castes that have traditionally been classified in the Sudra, the lowest of the original four *varna*. However, the status of the Sudra was actually higher than that of a fifth *varna*, the Panchama. This fifth *varna* was added at a later date to include the so-called untouchables, who were excluded from the other four *varna* (Elder 1996). The untouchable *varna* includes the Mala and Madiga. The position of the Relli in the caste hierarchy is somewhat ambiguous, but they have usually been classified in the lower caste group. Therefore, prior to the collection of any data, males from eight different Telugu-speaking castes ($n = 265$) were ranked into upper (Niyogi and Vydiki Brahmin, Kshatriya, Vysya [$n = 80$]), middle (Telega and Turpu Kapu, Yadava [$n = 111$]), and lower (Relli, Madiga, Mala [$n = 74$]) groups (Bamshad et al. 1998). This ranking has been used by previous investigators (Krishnan and Reddy 1994).

After obtaining informed consent, ~8 mL of whole blood or 5 plucked scalp hairs were collected from each participant. Extractions were performed at Andhra University using established methods (Bell et al. 1981).

MtDNA Polymorphisms

The mtDNA data consisted of 68, 116, and 73 HVR1 sequences and 79, 159, and 72 restriction-site haplotypes from largely the same individuals in upper, middle, and lower castes, respectively. These data were compared to data from 143 Africans (15 Sotho-Tswana, 7 Tsonga, 14 Nguni, 24 San, 5 Biaka Pygmies, 33 Mbuti Pygmies, 9 Alur, 18 Hema, and 18 Nande), 78 Asians (12 Cambodians, 17 Chinese, 19 Japanese, 6 Malay, 9 Vietnamese, 2 Koreans, and 13 Asians of mixed ancestry), and 99 Europeans (20 unrelated males of the French CEPH kindreds, 69 unrelated Utah males of Northern European descent, and 10 Poles) (Jorde et al. 1995, 1997). Mitochondrial sequence data from these 597 individuals are available at: http://www.genome.org/supplemental/.

In addition to our samples, the phylogenetic analyses also included data from 98 published HVR1 sequences from two castes (48 Havlik and 43 Mukri), and a tribal population (7 Kadar) living in south-western India (Mountain et al. 1995) and restriction-site haplotypes from one caste (62 Lobana) from Northern India, three tribal populations from Northern (12 Tharu and 18 Bhoksa) and Southern (86 Lambadi) India, and 122 individuals from various caste populations in Uttar Pradesh (Kivisild et al. 1999). Phylogenetic relationships of HVR1 sequences assigned to haplogroup M were estimated for Indians (this study), Turks (this study), Central Asian populations (Comas et al. 1998), Mongolians (Kolman et al. 1996), Chinese (Horai et al. 1996), and Japanese (Horai et al. 1996; Seo et al. 1998).

The mtDNA HVR1 sequence was determined by fluorescent Sanger sequencing using a Dye terminator cycle sequencing kit (Applied Biosystems) according to the manufacturer's specifications (Bamshad et al. 1998). Sequencing reactions were resolved on an ABI 377 automated DNA sequencer, and sequence data were analyzed using ABI DNA analysis software and SEQUENCHER software (Genecodes). To identify mtDNA haplotypes and haplogroups (a group of haplotypes that share some sequence variants), major continent-specific genotypes (Torroni et al. 1994, 1996; Wallace 1995) for the following polymorphic mtDNA restriction sites were determined: *Hpa*I_{3592}, *Dde*I_{10394}, *Alu*I_{10397}, *Alu*I_{13262}, *Bam*HI_{13366}, *Alu*I_{5176}, *Hae*III_{4830}, *Alu*I_{7025}, *Hinf*I_{12308}, *Acc*I_{14465}, *Ava*II_{8249}, *Alu*I_{10032}, *Bst*OI_{13704}, and *Hae*II_{9052}.

Y-Chromosome and Autosomal Polymorphisms

Y-chromosome-specific STRs (DYS19, DYS288, DYS388, DYS389A, DYS390) were amplified using published conditions (Hammer et al. 1998). PCR products were separated on an ABI 377 automated sequencer and scored using ABI Genotyper software. Y-chromosome STR data were collected from 622 males including 280 South Indians, ~200 Africans (Seielstad et al. 1999; this study), 40 Asians, and 102 Europeans. Autosomal data were collected from 608 individuals including 265 South Indians, 155 Africans, 70 Asians, and 118 Europeans.

The Y-chromosome-specific biallelic polymorphisms tested included: $\mathrm{DYS188}_{792}$, $\mathrm{DYS194}_{469}$, $\mathrm{DYS211}_{105}$, $\mathrm{DYS221}_{136}$, $\mathrm{DYS257}_{108}$, DYS287, M3, M4, M9, M12, M15, SRY_{4064}, $\mathrm{SRY}_{10831.1}$, $\mathrm{SRY}_{10831.2}$, p12f2, PN1, PN2, PN3, $\mathrm{RPS4Y}_{711}$, and Tat (Hammer and Horai 1995; Hammer et al. 1997, 1998, 2000; Underhill et al. 1997; Zerjal et al. 1997; Karafet et al. 1999). All individuals tested negative for the Y *Alu* insert (DYS287). A complete description of the Y-chromosome STR loci can be found in Kayser et al. (1997). A table of the biallelic Y-chromosome haplotype frequencies in the upper, middle, and lower castes is available at http://www.genome.org/supplemental/.

For the Y-chromosome biallelic dataset, comparisons were made to a different set of worldwide populations including: East Asians from Japan, Korea, China, and Vietnam ($n = 460$); Western Europeans from Britain and Germany ($n = 77$); Southern Europeans from Italy and Greece ($n = 148$); and Eastern Europeans from Russia and Romania ($n = 102$) (M.F. Hammer, unpubl.). The complete dataset of Indians consisted of 55 Brahmin, 111 Yadava and Kapu, and 74 Relli, Mala, and Madiga.

Autosomal polymorphisms were amplified using conditions specifically optimized for each system. Further information on these conditions is available at the Web site: http://www.genetics.utah.edu/~swatkins/pub/Alu_data.htm or http://www.genome.org/supplemental. With minor exceptions caused by typing failures or other causes, the same individuals from each population were used to create each dataset (i.e., mtDNA, Y chromosome, and autosomal). The complete dataset of genotypes from all 40 autosomal loci is available at: http://www.genome.org/supplemental/.

Statistical Analyses

Genetic distances for Y-chromosome STRs were estimated using the method of Shriver et al. (1995), which assumes a stepwise mutation model. Genetic distances for mitochondrial and autosomal markers were calculated as pairwise F_{ST} distances, using the ARLEQUIN package (Schneider et al. 1997). For autosomal polymorphisms, Nei's standard distances and their standard errors were estimated using DISPAN (http://www.bio.psu.edu/IMEG); and 90% confidence intervals were estimated by multiplying the standard error by 1.65. The significance of the F_{ST} distances between populations was estimated by generating a null distribution of pairwise F_{ST} distances by permuting haplotypes between populations. The *p*-value of the test is the proportion of permutations leading to an F_{ST} value larger than or equal to the observed one. Genotypic differentiation was estimated using GENEPOP (Raymond and Rousset 1995) vers. 3.2 (http://www.cefe.cnrs-mop.fr/). The null hypothesis tested is that there is a random

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

distribution of K different haplotypes among r populations (the contingency table). All potential states of the contingency table are explored with a Markov chain, and the probability of observing a table less than or equally likely to the observed sample configuration is estimated.

Estimates of significance for the correlation between interindividual caste rank differences and interindividual autosomal genetic distances were made by forming two $n \times n$ matrices, where n is the number of individuals. For the first matrix, interindividual genetic distances were based on the proportion of *Alu* insertions/deletions shared by each pair of individuals. To form the second matrix, each individual was assigned a score according to his rank in the caste hierarchy for caste groups (i.e., upper caste = 1, middle caste = 2, lower caste = 3) and also for separate castes (i.e., Brahmin = 1, Kshatriya = 2, Vysya = 3, Kapu = 4, Yadava = 5, Relli = 6, Mala = 7, and Madiga = 8). An interindividual matrix of score distances was formed by comparing the absolute value of the difference between the scores of each pair of individuals. The matrix of genetic distances was compared to 10,000 permuted matrices of score distances using a Mantel matrix comparison test (Mantel 1967).

To illustrate phylogenetic relationships we constructed reduced median (Bandelt et al. 1995) and neighbor-joining networks (Felsenstein 1989). Coalescence times were calculated as in Forster et al. (1996), using the estimator ρ, which is the average transitional distance from the founder haplotype.

ACKNOWLEDGMENTS

We thank all participants, the faculty and staff of Andhra University for their discussion and technical assistance, as well as Henry Harpending for comments and criticisms. We acknowledge the contributions of an anonymous reviewer who suggested that the Kshatriya and Vysya be analyzed separately from the other upper castes. Genetic distances between STRs were estimated by the program DISTNEW, kindly provided by L. Jin. This work was supported by NSF SBR-9514733, SBR-9700729, SBR-9818215, NIH grants GM-59290 and PHS MO1–00064, the Estonian Science Fund (1669 and 2887), and the Newcastle University small grants committee.

The publication costs of this article were defrayed in part by payment of page charges. This article must therefore be hereby marked "advertisement" in accordance with 18 USC section 1734 solely to indicate this fact.

REFERENCES

Anderson, S., Bankier, A.T, Barrell, B.G., de Bruijn, M.H., Coulson, A.R., Drouin, J., Eperon, I.C., Nierlich, D.P., Roe, B.A., Sanger, F., et al. 1981. Sequence and organization of the human mitochondrial genome. *Nature* **290:** 457–465.

Balakrishnan, V. 1978. A preliminary study of genetic distances among some populations of the Indian sub-continent. *J. Hum. Evol.* **7:** 67–75.

———. 1982. Admixture as an evolutionary force in populations of the Indian sub-continent. In *Proceedings of the Indian Statistical Institute Golden Jubilee International Conference on Human Genetics and Adaptation* (eds. K.C. Malhotra and A. Basu), **Vol. I:** 103–145. Indian Statistical Institute, Calcutta.

Ballinger, S.W., Schurr, T.G., Torroni, A., Gan, Y.Y., Hodge, J.A., Hassan, K., Chen, K.H., and Wallace, D.C. 1992. Southeast Asian mitochondrial DNA analysis reveals genetic continuity of ancient Mongoloid migrations. *Genetics* **130:** 139–152.

Bamshad, M., Fraley, A.E., Crawford, M.H., Cann, R.L., Busi, B.R., Naidu, J.M., and Jorde, L.B. 1996. mtDNA variation in caste populations of Andhra Pradesh, India. *Hum. Biol.* **68:** 1–28.

Bamshad, M., Bhaskara, R.B., Naidu, J.M., Prasad, B.V.R., Watkins, S. and Jorde L. 1997. Letters to the editor. *Hum. Biol.* **69:** 432–435.

Bamshad, M.J., Watkins, W.S., Dixon, M.E., Bhaskara, B.R., Naidu, J.M., Rasanayagam, A., Hammer, M.E., and Jorde, L.B. 1998. Female gene flow stratifies Hindu castes. *Nature* **395:** 651–652.

Bandelt, H.J., Forster, P., Sykes, B.C., and Richards, M.B. 1995. Mitochondrial portraits of human populations using median networks. *Genetics* **141:** 743–753.

Bell, G.I., Karem, J.H., and Rutter J.R. 1981. Polymorphic DNA region adjacent to the 5′ end of the human insulin gene. *Proc. Natl. Acad. Sci. USA* **78:** 5759–5763.

Bhattachayya, N.P., Basu P., Das, M., Pramanik, S., Banerjee, R., Roy, B., Roychoudhury, S., and Majumder, P. 1999. Negligible male gene flow across ethnic boundaries in India, revealed by analysis of Y-chromosomal DNA polymorphisms. *Genome Res.* **9:** 711–719.

Cavalli-Sforza, L.L., Menozzi, P., and Piazza, A. 1994. *The history and geography of human genes*. Princeton University Press, Princeton, NJ.

Chen, Y.S., Torroni, A., Excoffier, L., Santachiara-Benerecetti, A.S., and Wallace, D.C. 1995. Analysis of mtDNA variation in African populations reveals the most ancient of all human continent-specific haplogroups. *Am. J. Hum. Genet.* **57:** 133–149.

Comas, D., Calafell, F., Mateu, E., Perez-Lezaun, A., Bosch, E., Martinez-Arias, R., Clarimon, J., Facchini, F., Fiori, G., Luiselli, D., et al. 1998. Trading genes along the silk road: mtDNA sequences and the origin of Central Asian populations. *Am. J. Hum. Genet.* **63:** 1824–1838.

Deka, R., Jin, L., Shriver, M.D., Yu, L.M., Saha, N., Barrantes, R., Chakraborty, R., and Ferrell, R.E. 1996. Dispersion of human Y chromosome haplotypes based on five microsatellites in global populations. *Genome Res.* **6:** 1177–1184.

de Knijff, P., Kayser, M., Caglia, A., Corach, D., Fretwell, N., Gehrig, C., Graziosi, G., Heidorn, F., Herrmann, S., Herzog, B., et al. 1997. Chromosome Y microsatellites: Population genetic and evolutionary aspects. *Int. J. Legal Med.* **110:** 134–149.

Di Rienzo, A. and Wilson, A.C. 1991. Branching pattern in the evolutionary tree for human mitochondrial DNA. *Proc. Natl. Acad. Sci.* **88:** 1597–1601.

Elder, J. 1996. Enduring stereotypes about South Asia: India's caste system *Edu. Asia* **1:** 20–22.

Felsenstein, J. 1989. PHYLIP—Phylogeny inference package (version 3.2). *Cladistics* **5:** 164–166.

Forster, P., Harding, R., Torroni, A., and Bandelt, H.J. 1996. Origin and evolution of Native American mtDNA variation: A reappraisal. *Am. J. Hum. Genet.* **59:** 935–945.

Hammer, M..F. and Horai, S. 1995. Y chromosomal DNA variation and the peopling of Japan. *Am. J. Hum. Genet.* **56:** 951–962.

Hammer, M.F., Spurdle, A.B., Karafet, T., Bonner, M.R., Wood, E.T., Novelletto, A., Malaspina, P., Mitchell, R.J., Horai, S., Jenkins, T., et al. 1997. The geographic distribution of human Y chromosome variation. *Genetics* **145:** 787–805.

Hammer, M.F., Karafet, T., Rasanayagam, A., Wood, E.T., Altheide, T.K., Jenkins, T., Griffiths, R.C., Templeton, A.R., and Zegura, S.L. 1998. Out of Africa and back again: Nested cladistic analysis of human Y chromosome variation. *Mol. Biol. Evol.* **15:** 427–441.

Hammer, M.F., Redd A.J., Wood, E.T., Bonner, M.R., Jarjanazi, H., Karafet, T., Santachiara-Benerecetti, S., Oppenheim A., Jobling, M.A., Jenkins, T., et al. 2000. Jewish and middle eastern non-Jewish populations share a common pool of Y-chromosome biallelic haplotypes. *Proc. Natl. Acad. Sci.* **97:** 6769–6774.

Horai, S., Murayama, K., Hayasaka, K., Matsubayashi, S., Hattori, Y., Fucharoen, G., Harihara, S., Park, K.S., Omoto, K., and Pan, I.H. 1996. mtDNA polymorphism in East Asian populations, with special reference to the peopling of Japan. *Am. J. Hum. Genet.* **59:** 579–590.

Jorde, L. B., Bamshad, M.J., Watkins, W.S., Zenger, R., Fraley, A.E., Krakowiak, P.A., Carpenter, K.D., Soodyall, H., Jenkins, T., and Rogers, A.R. 1995. Origins and affinities of modern humans: A comparison of mitochondrial and nuclear genetic data. *Am. J. Hum. Genet.* **57:** 523–538.

Generated for #1470 Lakshmi Kanta Mahato lkmahato1@gmail.com {{mobile}}

Jorde, L.B., Rogers, A.R., Bamshad, M., Watkins, W.S., Krakowiak, P., Sung, S., Kere, J., and Harpending, H.C. 1997. Microsatellite diversity and the demographic history of modern humans. *Proc. Natl. Acad. Sci.* **94:** 3100–3103.

Jorde, L.B., Watkins, W.S., Bamshad, M.J., Dixon, M.E., Ricker, C.E., Seielstad, M.T., and Batzer, M.A. 2000. The distribution of human genetic diversity: A comparison of mitochondrial, autosomal, and Y-chromosome data. *Am. J. Hum. Genet.* **66:** 979–988.

Karafet, T.M., Zegura, S.L., Posukh, O., Osipova, L., Bergen, A., Long, J., Goldman, D., Klitz, W., Harihara, S., de Knijff, P., et al. 1999. Ancestral Asian source(s) of New World Y-chromosome founder haplotypes. *Am. J. Hum. Genet.* **64:** 817–831.

Kayser, M., de Knijff, P., Dieltjes, P., Krawczak, M., Nagy, M., Zerjal, T., Pandya, A., Tyler-Smith, C., and Roewer, L. 1997. Applications of microsatellite-based Y chromosome haplotyping. *Electrophoresis* **18:** 1602–1607.

Kivisild, T., Bamshad, M.J., Kaldma, K., Metspalu, M., Metspalu, E., Reidla, M., Laos, S., Parik, J., Watkins, W.S., Dixon, M.E., et al. 1999. Deep common ancestry of Indian and western Eurasian mtDNA lineages. *Curr. Biol.* **9:** 1331–1334.

Kolman, C.J., Sambuughin, N., and Bermingham E. 1996. Mitochondrial DNA analysis of Mongolian populations and implications for the origin of New World founders. *Genetics* **142:** 1321–1334.

Krishnan, T. and Reddy, B.M. 1994. Geographical and ethnic variability of finger ridge-counts: Biplots of male and female Indian samples. *Ann. Hum. Biol.* **21:** 155–169.

Lahr, M.M. and Foley, R.A. 1994. Multiple dispersals and modern human origins. *Evol. Anthr.* **3:** 48–60.

Majumder, P.P. 1999. People of India: Biological diversity and affinities. *Evol. Anthr.* **6:** 100–110.

Majumder, P.P. and Mukherjee, B.N. 1993. Genetic diversity and affinities among Indian populations: An overview. In *Human population genetics* (ed. P.P. Majumder), pp. 255–275. Plenum Press, New York.

Majumder, P.P., Roy, B., Banerjee, S., Chakraborty, M., Dey, B., Mukherjee, N., Roy, M., Thakurta, P.G., and Sil, S.K. 1999. Human-specific insertion/deletion polymorphisms in Indian populations and their possible evolutionary implications. *Eur. J. Human Genet.* **7:** 435–446.

Mantel, N. 1967. The detection of disease clustering and a generalized regression approach. *Cancer Res.* **27:** 209–220.

Mlhotra, K.C. and Vasulu, T.S. 1993. Structure of human populations in India. In *Human population genetics* (ed. P.P. Majumder), pp. 207–233. Plenum Press, New York.

Mountain, J.L. Hebert, J.M., Bhattacharyya, S., Underhill, P.A., Ottolenghi, C., Gadgil, M., and Cavalli-Sforza, L.L. 1995. Demographic history of India and mtDNA-sequence diversity. *Am. J. Hum. Genet.* **56:** 979–992.

Nei, M. and Livshits, G. 1989. Genetic relationships of Europeans, Asians and Africans and the origin of modern *Homo sapiens*. *Hum. Hered.* **39:** 276–281.

Passarino, G., Semino, O., Bernini, L.F., and Santachiara-Benerecetti, A.S. 1996. Pre-Caucasoid and Caucasoid genetic features of the Indian population revealed by mtDNA polymorphisms. *Am. J. Hum. Genet.* **59:** 927–934.

Poliakov, L. 1974. *The Aryan Myth.* Basic Books, New York.

Quintana-Murci, L., Semino, O., Poloni, E.S., Liu, A., Van Gijn, M., Passarino, G., Brega, A., Nasidze, I.S., Maccioni, L., Cossu, G., et al. 1999a. Y-Chromosome specific YCAII, DYS19 and YAP polymorphisms in human populations: A comparative study. *Ann. Hum. Genet.* **63:** 153–166.

Quintana-Murci, L., Semino, O., Bandelt, H.J., Passarino, G., McElreavey, K., and Santachiara-Benerecetti, A.S. 1999b. Genetic evidence of an early exit of *Homo sapiens sapiens* from Africa through eastern Africa. *Nature Genet.* **23:** 437–441.

Raymond, M. and Rousset, F. 1995. GENEPOP (version 1.2): Population genetics software for exact tests and ecumenism. *J. Heredity* **86:** 248–249.

Renfrew, C. 1989a. Before Babel: Speculations on the origins of linguistic diversity. *Camb. Archaeol. J.* **1:** 3–23.

———. 1989b. The origins of Indo-European languages. *Sci. Am.* **261:** 82–90.

Richards, M.B., Macaulay, V.A., Bandelt, H.J., and Sykes, B.C. 1998. Phylogeography of mitochondrial DNA in Western Europe. *Ann. Hum. Genet.* **61:** 251–254.

Schneider, S., Rosslie, D., and Excoffier, L. 1997. *Arlequin ver 2.000: A software for population genetics data analysis*. Genetics and Biometry Laboratory, University of Geneva, Geneva.

Seielstad, M., Bekele, E., Ibrahim, M., Toure, A., and Traore, M. 1999. A view of modern human origins from Y chromosome microsatellite variation. *Genome Res.* **9:** 558–567.

Seo, Y., Stradmann-Bellinghausen, B., Rittner, C., Takahama, K., and Schneider, P.M. 1998. Sequence polymorphism of mitochondrial DNA control region in Japanese. *Forensic Sci.* **97:** 155–164.

Shaffer, J.G. 1982. Harappan culture: A reconsideration. In *Harappan civilization: A contemporary perspective* (ed. G.L. Possehl), American Institute of Indian Studies, pp. 41–50. Oxford and IBH Publishers, New Delhi, India.

Shriver, M.D., Jin, L., Boerwinkle, E., Deka, R., Ferrell, R.E., and Chakraborty, R. 1995. A novel measure of genetic distance for highly polymorphic tandem repeat loci. *Mol. Biol. Evol.* **12:** 914–920.

Tambia, S.J. 1973. *The character of kinship* (ed. J. Goody). Cambridge University Press, Cambridge, UK.

Torroni, A., Lott, M.T., Cabell, M..F, Chen, Y.S., Lavergne, L., and Wallace, D.C. 1994. mtDNA and the origin of Caucasians: Identification of ancient Caucasian-specific haplogroups, one of which is prone to a recurrent somatic duplication in the D-loop region. *Am. J. Hum. Genet.* **55:** 760–776.

Torroni, A., Huoponen, K., Francalacci, P., Petrozzi, M., Morelli, L., Scozzari, R., Obinu, D., Savontaus, M.L., and Wallace, D.C. 1996. Classification of European mtDNAs from an analysis of three European populations. *Genetics* **144:** 1835–1850.

Underhill, P.A., Jin, L., Lin, A.A., Mehdi, S.Q., Jenkins, T., Vollrath, D., Davis, R.W., Cavalli-Sforza, L.L., and Oefner, P.J. 1997. Detection of numerous Y chromosome biallelic polymorphisms by denaturing high-performance liquid chromatography. *Genome Res.* **7:** 996–1005.

Wallace, D.C. 1995. 1994 William Allan Award Address. Mitochondrial DNA variation in human evolution, degenerative disease, and aging. *Am. J. Hum. Genet.* **57:** 201–223.

Zerjal, T., Dashnyam, B., Pandya, A., Kayser, M., Roewer, L., Santos, F.R., Schiefenhovel, W., Fretwell, N., Jobling, M.A., Harihara, S., et al. 1997. Genetic relationships of Asians and Northern Europeans, revealed by Y-chromosomal DNA analysis. *Am. J. Hum. Genet.* **60:** 1174–1183.

Received November 29, 2000; accepted in revised form March 22, 2001.